आशुर्दम विकानग

শুক্ত আত্তেব-সংহিতা, হারীত, বাগ্ডট, রসেক্রচিন্তামণি, রদরত্বাকর ভ ভাবপ্রকাশাদি বিবিধ আযুর্ফেদিবৈ গ্রন্থহইতে সক্ষপিত সংস্কৃত মূল ও ভাষার বাদালা অমুবাদ সহিত শ্রীবিনেশিদ লাল সেন গুপ্তা কবিরশ্বজ

কর্দৃক প্রকাশিক।

তৃতীয় খণ্ড।

দ্ৰব্যস্থান

AYURVEDA VIJNANA

()1(

HINDU SYSTEM OF MEDICINE

COMPHED AND TRANSLITED FROM

SANSKRIT TREATISES ON MEDICINE SURGERY, CHEMISTRY &C.

WITH THE ORIGINAL TEXTS

RY

KAVIRAJ BINOD LAL SEN.

Vol III

কলিকাতা।

১९७ नः लायात्र हिर्भूत द्वाफ क्लोकपात्रीय लायाना ।

আয়ুর্বেদ যন্ত্রে

শীমিহিরচন্দ্র রার দ্বারা মুদ্রিত। লকাকা ৮০০।

All rights reserved

বিজ্ঞাপন।

আহুর্কেদ বিজ্ঞানের জব্যবস্থান নংকৃত মূল ও আহর মালালা অসুবাদ লাইছে
ক্রিত ও প্রচারিত হটল। চরক, অ্ফাত, ভাবপ্রকাশ ও ধরস্তরি নির্বাধী
প্রভৃতি বিবিধ আয়ুর্কেদীর প্রস্থান ইইচেত ইহা সংগৃহীত হইরাছে এডদ্বাতীত
হাতে আর কবেকটি জব্যের ওপও সন্মিবিস্ত ক্যা ইইরাছে। ইহাছে জব্য শুন্নারের পর্যায়, ওপ, মাত্র ও কাহার কোন অংশ ব্যবহার্য ইত্যাদি বিষয় বিশেষ
রূপে বিবৃত হইরাছে।

ক'লকাতা আয়ুর্বেবে।ক ঔষ্ণালয় } আয়াঢ় ১৮৮৩ শক

श्रीविद्यान नान दमन खंखा

সূচীপত্রম্।

১ অপরা ।		^f त्रम्	পৃষ্ঠা
तुष)र ^{न्} ।		७ जू वे रे व स्	₩.
दि च यः	ર્સ ફ	5 ⁴व″6नी	۵
क्रीरक्ष ७८क े	2	ভ ্ৰা ভক-ৰ	۵
्यम स्हार्याम		ब व प्:	۵
কাকোল ক্ষাবকাকোলো৷	•	युन्त जो ऋन्य भ	3.
শ্কি বৃক্ষ'	٠	मंख वड़ी महामंड रही	2,
ष्य स्टेनर्ग -	٠	क् ञ अ ' क	7
इ म श भवी	•	कांकम ठी	4
य दलनी	د	मं अ शृष्यो	*
फो न खो	•	ব্রান্ধ	2.
য "ট¹ম শ্	ų	म'र्कशने	75
अची र∙ें य प्र	•	म्।० म्का	4 2
ক'পিকচ্চ ুঃ	я		
म'्नादाहिंगे	k	े छा या। यह ।	
বলা চ হৃ ঐয় শ	P	ব'ভিছু≁ণঃ।	
काशामी	n	ध'ना कभ	. 2
বারাহ ১-৮০	q	च उमे	٠.
'यम को	4, 1	প'টলা	3 9
অশ্বদ্য	•	<i>ল</i> িতস'ডম্	¥
কোঁকলাক	•	क्ष इस	38
লারিবাদ্ য়ম্	•	। স্বৰ্গকলী	2.8
श्रुथ। धूनी	٩	वक्त धनाइनो	86
ख्यवरही			
পাতালগরুড়ী	b *	। ৪ ছা/্যাসঃ।	
২ আবি)'ষঃ।		ि लिख्युनर्ग ।	
द्रमाष्ट्रवराः।		विश्वनित्री देववामक	3.4
चावनको	8	কলিক ন্ত্ৰী	2 a
छ ळाणुरम्	*	ं मः कम्	26

	9/	9	
विषय:	मृ के।	विसम्र	श् रे।
भक्त है।	> 0	कि स्वाकः	20
বেডগঃ	35	विश्वादी	₹ ¢
स न्दर् न ः	.5	व्यक्तिष्टेः	₹ @
হিন্দ্রভাগ	35	फु ख्बम्	29
नोमपूर्य।	٠.	कर्ड् भग	₹ \$
শেওদূ র্বা	38	पूर्विका .	3 %
গতদূর্ম্বা	31	व्यवामार्गः	29
ए र जनमी	31	রক্তাপামার্গঃ .	29
ভূমিদৰঃ	39	শ্ভেপুনর্ব।	2 9
भर ोषभ व म्	39	इक्ष्मुक्रानुनगरा	২ ৭
पू क्षभाषावह	39	तम्म ।	- b-
		, व्यमम्ब।	रम
		मू " के का	٠ ٦৮
व जामागि ।		- आन ्र क्षी	٦~
		অ'প্ত্যস্থ ক	35
क राष्ट्रात ।		नका।कदक हैको	۵
রামা	سو د	जुनमी अञ्जा दृष्ट ठ	\$ 8
म:कुओ	۵	गर्यं वे	২ ৯
म िक हर्		ড জপত্ৰঃ	
मार्की	7≻	ं हेडी	
भि ण्याम्	۶~ د	ভিনিশঃ	.
एकाम	32	কাকজহা	٥.
ख _् क्वरे क वर	•	भ a च 'व	
ए'म् अवली	₹•	मी क्रतुष्क	رە
विवा:	> •		3)
न ५ ही	•	म्यू अरक्तः	•
শুটলা	3.7		
चा श्री म गढ ह	ą	७ अन्।। १	
সে)ানাকঃ	,	বমনে:পগ বর্ণা	. 1
वृषद পक्षमूनम्	₹₹,	मङ्गरूनम्	2)
र्थ'न भगी	- 3	व्यक्त्र्य द्वार	ري
भृ षिभगी	•	अ स्याम •	3)
वृष्ट्डी .	ર ૭	मू शेष्णीन १	3 (
क्लेकाही	20		•
त्वाकृत .	48	मनपूर्वा	৩১
ज्यूनक्ष्युवम् .	8	, (मरमांभो	ં
ष्णाप्रकम्	28	कर्रेजुदी	99
त्वीश्वाच्यः .		काकनामा	20
+ 41 41 414	•	चरक्याचा	,,,

विषय:		शृ	विषय:		शृ क्ष
	व काशांत्रः।		मञ्जू		80
			न्याप भय। मः		88
1	विद्रह्नीय वर्षः।		मशुभर्वः	••	88
इरोडकी		יים	বিল্পেশী		8 8
মূৰ্ণ ক্ৰিকা		90	केट रहम्	• •	8 8
আরগ্যধঃ	• •	90	আ এব জম্		88
যবাসশক্রা		94	र्थ प्र		8 t
इक्क वाक्रवी		૭૭	শ্বেতখদির:	***	8 0
न)। यती सम्	•	૭૭	व ्यटमण्ड		80
क ट्वेंटब 'हिनी	••	91	লোধঃ		8 (
क ट्रिश्वा		199	প্রিয়ন গ্রাম প্রিয়ন		8
প্ৰ চ ণণ। পীতমুন্সী		99	कुछ जा:		8
सक्रद्रकारकी		99	শাঠা		8,
সেহতঃ সেহতঃ		91	। আনাশাবলী	••	8
লাঙ্জা -		৩৯	मध्म)को		8
শান্তপা খেতাত্তিরুৎ		90	अम (भेक्समी	••	р
मामाजित्र नामाजित्र		25	बीद्र खद्र		ន .
	•	తిప	यस्त्र भी भी	,.	81
अधू पछी	• • •	- 0	পভাব জন্		8 (
वृ ष्ण की		8	∍ त्राहें	• •	8
मोको चैत्रकार		80	21781	•	8
मंद्र ाक ि	and er	ಕಂ	। तक्त्वः		o
यदादमा मूत्र'म्	910	83	ৰকাল নিগাল:		9
কুমারী	••	8 3	ছিবিনী		9
ভাগমাণা	• •	8,	जुनी ,		8
ज् भोर लो	••	92	्म [†] कड़ म 2		a
কুট বাস্ম ল		2 2	ল কোপু-		8
क्रवीधः	••		4,000		
	৮ অধ্যা য়ঃ।			क काशांत्रः।	
	স্থাহি বর্গঃ।			দোপগ ধর্গঃ।	
	न जाति तत्ताः।			*41 4 4 4 11 1	a
व १एकन	• •	83	, দ্'কুম্ভিকা	• •	•
श्रीश्रम	•	8 2	द्रमा धनम्	••	a
क्षाचमवी सम्		8.5	वर्षम्यञ्च	• •	•
ধান্তকী	••	89	মঙ্কপণী	• •	•
जिम् क्यम्	•••	8 2			
माहिका		8 5	1		

-				
	ઝુ ઢા	विषय:		পূঠা
তাপ্যায়ঃ।		, 2	ভাধ্যায়ঃ।	
(दहनीय दर्गः।		মত সং	अध्वीस वर्षः	
	۵5			•
	a >			Q ·
•••	63		•••	0.9
	6.7		•••	æ.
••	a S	दका वा ञ् का क्या	• •	19
		><	০ অধ্যাহ.।	
অধ্যায়ঃ।		; •••*±≸	र अप्रक्रीक वर्त ।	
द्रह्मीय वर्गः।			ाच्याच्या प्राधी	
	43		• •	ar-
•••			•	a >
•••			• •	ar-
			• •	G ~
***		1	• •	0 2
•		•	•	(%
***	و، ئ	व्यक्तिः		0.2
••	a o	1	-	
•••	43		च्चाशाकिरः ।	
••	18			
•••	r 8	আর্ত্ত	বস\গ্র'হ বর্ণ:।	
• •	^ 4	' অংশ'কঃ		c۵
	68	1	***	a;
	6.8	1		5
•••	c 8	1		, <u>u</u> ,
• •	C a			8
***	@ 1			સ
***	@ G			, 9
***				30
***	e-		- •	હ
	49			5
***	¢3	1	•••	3
	6.5		• •	4
	6.9			3
-48	69	i		3
			••	9
		अभा ति । (दिक्र क्लो प्र वर्ग :) (दिक्र क्लो प्र वर्ग :) (दिक्र क्लो :) (दिक्र क्लो प्र वर्ग :) (दिक्र क्लो :) (दिक्र क्लो प्र वर्ग :) (दिक्र क्लो :) (दिक्र	প্রা বিষয়ঃ ত্যাপ্যায়ঃ। ত্রেচনীয় বর্গঃ। ত্রেচনীয় বর্গঃ ত্রেচনীয় বর্গঃ। ত্রেচনীয় বর্গঃ ত্রেচনীযা বর্গঃ ত্রেচনীয় বর্গঃ ত্রেচনীয় বর্গঃ ত্রেচনীয় বর্গঃ ত্রেচনীয় বর্গঃ ত্রেচনীযা ব	প্রা বিষয়ঃ স্বাস্থ্য বর্গঃ স্বাস্থ্য বর্গ স্বাস্থ্য বর্গঃ স্বাস্থ্য বর্গিঃ স্বাস্য বর্গিঃ স্বাস্থ্য বর্গিঃ স্বাস

ययग्रः		शृक्ष।	विग्रमः		शृक्षा
वेलन)कद्रवी		45	>9	ভাগায়ঃ।	
गान्यजो भू व्याप्		6.9			
इक्षेप्		es	•	गक्रवर्गः ।	
			कखदी	. •	46
3	र जानागिः।		७ श्रृं इ म्		42
भी	পনপাচনবর্গঃ।		ठीस क ्र्रे ड कुकुम्	••	9.
वाप्रक .		(4.9	64.4	••	9.
মাজ পিপ্পাসী	• •	99	का श क्र	••	13
নি ত্রক ≀	***	i g	প্রা নঃ	• •	9:
। कथा क∙ च म ंनी	•	5 H	ऋ अना	***	1:
অজমেদা	•	4.8	मृ?काका	••	9.1
भावमा क्यामी शावमीक समामी	•	398	जुरू ल क्रम्	•	93
भडभूक्या विस्था		5 H	प्र क्तमप्	•	91
हिन्नू विन्नू		50	ক্সাতী ক ঙ্গন্		* 41
स्तूषाच्यम्	••	. a	जन म	•••	91
ভেন্সৰভী		5 0	अष्टे!मा९ मी	•••	9.
বালম্		5'	बुडाया ्मो	•	4 3
হিন্পুৰী		35	ক চচ ুর		9.
वर्णभको		35	श्रामी मेरी	·	9+
ह !८ऋत्री		**	। ভাতীপ ্র ী		91
्वा हवी	••	9 5	ক্ষোপ্		9
			গককোলিকা গদ্ধ	व शिक्ष	4
			পত্ৰকম্	*11*	٩
	১৬ ভা ধ্য ^{্ম} ঃ।		পভাকীন্ত বিক।		4
	2		बंक्रे)जी		4
স	पूरसभाग वर्गः।		जलको निर्यामः		•
কুপিসু	***	' 5	टक् नमोद्ध		•
W21	***	15.9	ड्र क		9
मश्चिमाय अही		4	নধ্য		9
र्वे <u>क</u> ें ड	••	કુ લુ	मुक्का न गहमूखक	9	9
বোলশ্		35	त्म'ल + । तमस्मिशिक		4
जी विम्ल ः	• •	17	सङ्ख्योद कृषकोद,	কালাভাজী	٩
ধুনরাজ		92	সিক্ষাক		•
প্লেজ্ফলম্	***	9.₹	टेनटनग्रकम्	,	
क्रूवोद्रा	***	40	ज् यमः		1
			নাগকেপর '		9

10/0

विषयः			विषय:		পূঠ
		र्व हा			
अस् । भव्य	•	95	সুগদ্ধাবচা	••	b -1
न्ह ेरनग्रक्ष्	••	93-	कुरुभ	• •	59
कि खरः		۹ ۵	य कडमूनम्	• •	5 1
পণ্প টী		92	मामननी	• •	b -b
म जिला		93	ভা ৰাখ্	••	۲۶
श्चरभा णको कम्		40			
न्यां श	••	bo	1	२० जागागः।	
	***************************************			কণ্ডমুবর্গঃ।	
,	১৮ সাধ্যাস্থ।		ठ ळाग्यम	• •	bb
	অবরাপ্র ।		মহামসঃ		ber
	ज्याध्य भागा		मिश्चिक्षा	*15	42
निष ः		60	विदिशा	••	b~"
কিরাভতি কং	• •	6.3	্বনহরিও: আন্রগ	क हिन्न ह	۶۵
स .के.	•	6-3	পঢ়াকম্		40
অ 'তবিষা	***	۲ ۶	গোরোচনা		**
কোছিতক	••	5 −2	এলব।লুকম্		۵۰
(संख्नुक्या नीमनुष	পা অপালিডা, চ	۲	कुछेब्रुवे		20
সিজুবার		1 2	क केरेन ही	•	20
यर्वाङ क।		t o	অগ্ৰঃ		2)
ह स्था क	••	b 3	শেতর ক গুলা		9.3
ৰাডিকা		b- 3	খেত রক্করণীর		*>
			কাঞ্চনার কোবিদ	ta: .	* 3
			मिही मह		~ ۲
2:	र वादानि-।	-	শিরীষিকা	• •	26
4	শিল্প বর্গং।	·	र्ण'न:	••	2,
বন্ধী জন্ম:		+9	७ मोल:	***	45
भेष्यको	• •	b 9	मक्तर	e	2,2
ংশরো চনা		+ B	শল্লকী		د ۾
क विम्बी	•••	be	बि९ मे श		۵, م
ऐक्न ः		b a	व्यमनः	• •	20
। वी [*]		be !	देन नी	***	es.
म कः		PG	•		1
परमृ को		b 5			
म) मकी		F-13		১ অধ্যায়ঃ।	1
मी	•••	b 5	fi	किम्ब्रुवर्भः ।	
si .	• •	+s	বিশ্বস্থঃ		. 33
। ब्रमीक वडा	•••	i		***	1
19-11-491	•••	▶ 1	পারিভারম্	• •	9.8

10	10		
पृ क्षा	विषय:		Ag1
84	वार्षिकी		2.02
26	শলিকা	***	3 • 3
20	म'धनी	•••	3-2
24	কেওক সুবৰ্ণকেও	को	202
26	কিছিয়াডঃ	***	3.3
à¢	ক বিকারঃ		١٠:
	अञ्चाष्ट्रेन:	•	2.4
	कुम्पः	***	308
	बू ह कुम्प १	• •	30 3
	डिनकः	•	>0
	वक्र्कः	•••	3 . 3
40	অগন্তি		٥٠ ا
34	'जम्म _ु द्री	• •	١ - ١
27	कृकक्र	•••	3 • 5
4.9	रेमदरप्रक (शिक्ट)) कथ्रभ्	2 • 3

	:	२० ञ्राद्यु: ।	
		म्हलनर्थ ।	
24	অংশ ক্রাঃ	• •	50
	আমাবর্ত	***	20
	नग्राह्मवश	•	5 0 0
	রাজ'ম		٥٠
	श्रेतंबाद		٠٥٤

ानु द्र क ः	***	44	অগন্তি		302
ম ডেকুন	• •	24	' ज म्मृशी		7 . 5
যশ্চিশ হারক	***	20	ን መጥ፡	•••	> 5
i for	•	49	रेमदब्रक (शिक्ट) अरम्	200
		1			
	२० जाभाषाः ।	1	:	२० ञा≼ु¦यः ।	
	🕶 ভন্নবর্গঃ।			म्हलनर्थाः।	
. च टेखब्र ः		20	अ र्गञाः		> 0
			আমাবর্ত	•••	200
	२६ व्यश्रीयः।		नग्रमहाबः	•	5 . 0
	५० व्यवभावता		রাজাম		2 • c
	পুষ্পাবগঃ।		প্ৰশঃ	• •	300
পদ্যম্	• •	29	नकृतः '	•	309
পদ্মিনী		27	কোশামুঃ	• •	7 - 5
পদাস)নবণতাণি	·	علا	কালি শ মৃ		204
कुब्बम्	•••	۵۵	धर्ति, अम्	• •	> 4
कुष्विनी	***	۵۸	ত্রপু গ্য	••	503
দেষভী	***	*2	हि क्डिय	• •	319
वामकी	***	£4	श्वां कर	***	5 • •
बाडी वर्गबाडी	•••	22	ड ंगः	• •	339
वृश्वका वर्षपृश्व	₹1	22	ভালকভোয়ন্	***	3 . 4
इक्शकः	***	700	ক পিখ ন্	***	5 of
ষকুলঃ	***	300	सर्ः	• •	3-6
बि यम्बी		300	द्रांख स्थ	1	> 0 %
रुष्य		200	रम्द्र र		3٠6

বিষয়ঃ
গোমরাজী
কান্দিল্ল
দর্পাকী
অর্কপুস্পী
মুসাকণী
প্লাকণী

২২ অধারিঃ। সন্ধানীয় বর্গ:।

-	-	
1	1	
	ā	-

4,

			110			
विषयः	1	পৃষ্ঠা	विषयः		পৃষ্	
বদরবিশেষাণাৎ লক্ষ	वांन सवान	107	পত্ৰণাকা'ন		•	
ज्यक्री ज्यकी		208	वाञ्चक सम्म	•••	338	
क त्र वर्षतः :		۵۰۵	পোডকী		33	
পিয়ালম্		200	म दिस		>>	
. । जार ब्राज्यां म भः		265	ত ্লীয়	··· .	2.2	
বিকন্তভঃ	***	330	পলক্যা		35	
पश्च कर		٥,٠	নাজিকশ্	••	3:1	
ণ্ডুৰণ প্ৰথকন্	•••	35+	পট্টশাকঃ		226	
	•••	3.30	कश्री	•	5 . 6	
ভূ তঃ দ।ক্ষিয়	•••	222	व्यानी दुरह्मानी	•••	2.34	
न्।। प न्यः व ळ् वाद्रः	•••	727	চুক্তিকা		2.58	
वृष्ट्वाद्रः कडकः	•••	222	कि का	•••	556	
	ে কীকোলালা	:3:	बिन्द्या हिन्		223	
कूप्रथकः हो. शिष्धः 	्रमा यसामामा	275	শৈভিষারঃ		> > >	
मूटलयानी	••	332 332	ৰুলকপত্ৰ ম্	••	35	
四年	• •	3.3	(अ'नमुक्तीभवम्		333	
অন্ হ ক ল শ্	• •	3.3	यतानी भ तम्	•	354	
সেবস্	•••		ठ उराध्यास्त्र		۶. ۰	
क्ष ोनां गण कम्	•••	220	সেছগ		32.	
বাড।দঃ	. •	٥. د	भक्त है:		32-	
পিলৃঃ	•	223	গোলিকা		250	
व्यटक । है ह	**	220	नट्डे'न्न क्रम्		31.	
নিখু	• •	228	ৱড়্চীপত্ৰ্		320	
बिके निष्	••	27B	कानमक्तः		52.	
वी स र्दे :	• •	>>8	চনকপঞ্		323	
मधुक कंष्टिक।	• •	7:9	কলায়পত্ৰম্	••	34	
अ शोत्र द्रम्	• •	2,4				
दुष्काञ्चम्	••	220	সর্যপ পত্রম্	***	7. 2	
बन्न त्य अमः	• •	320		পুষ্পাকান।		
চতুরায় পঞ্চায়য়োর্লছ	শ্ৰম্ .	274	অগভিশৃপান্		3:3	
ভিত্তি	• •	2200	कवनीयुव्यम्		252	
कर्मात्र म म्	***	270	শোভাগ্ধনপুস্পৰ্	•••	232	
				হৰণাকীনী		
			कुषाउम्	.,	२२ २	
ર ૭	অধ্যার: ।		कृषावी		ડરર	
ì			भोक्षक्षा ७ म्	••	ેર ર	
(44	क्रिश्		अमा तूः	••	255	
et a s		230	क्षि किः	•	કર ર	
नाक्ष		-	1			

विषय:	পৃষ্ঠা	विष्यू:		201
वर्क्काकृत्र	255		२१ व्यक्तांतः।	
តែចែម:	25.0			
काउरवस्त्र काउरवस्त्री ह	250		स्वादर्गः।	
बहादकाबाठको	150			
द्राज्यकांचांच्यो .	. >29	ধান)ম্	•••	7.0
शः ष्ठांबः	. ;२७	ना अधानाम्	• •	7/9
विषो .	. 328	मुक्त मो जि:	***	203
निश्ची दुग्रम् .	, 528	ত্ৰী হিধান্যশ্	• •	2.01
কোলশিখিঃ	\$28	व विकथानाम्	••	705
শোভাগ্ৰনফলম্	. 0	क्रु अर्थ भ)म्	••	20,
वार्डा कृष्ट	, , , , , ,	₹₹?	***	2@3
ডিডিশঃ	35.0	ठीब नः	•	20:
পিঙারম্		भागकः	***	300
কৰোটিকা		्का अव रः	• •••	2 84
ভোভিকা .	. .	61 কুকঃ	***	200
कलैकाद्रीक्षम्	5.8	व १ भवी सम्	• •	200
			भूकधानाम् ।	
* নালণাক্য	1	यत ः	• •	206
স্ৰপ্ৰাস্মূ :	. > 2%	; গোগুমঃ		7,3
			विशेषांगम्।	
क नामां कि	7 1	बूक् गः		3 30
मृ त्रनः	150	মাৰঃ	٠	30
षानुसम् .	22:6	द्रांख मां बर	••	30
षाञ्चो	139	নিষ্পাবঃ	**	3.95
ज्ञानः		वकुछ कै		30
mh-1 ma	52.0	यमुग्रः	••	2 34
	(36	व्याप्रको	• •	3.0
युगकम् भ। जडम्	. 3 -	हनकः	• 1	54
and am.	124	কলায়ঃ		30
T 127T	434	बिन् षेः	•••	>=
at = : all to am :	4 N Iv	कृत्रयः	. •	301
wlands	***	कृषुक रोश म्		300
		शदरश्रुक।	W /10	201
त्कपूकम्	. 389	किन:	• •	2.01
करमङ्गद्वप्रम्	. 3,5	व्यस्ती		301
श्रम् । (एकम्पः .	. 52%	मर्भः		308
म् १८वष्णम् .	. 500	রাজিকা	***	30
the same of the sa			र्धामाना खनाः	30

विषयः		পৃষ্ঠা	विस्य:	शृक्षे।
मी गांब:		3 2 10	বিকেশ য়াঃ	1
প্রমালঃ		2.25	ननः .	384
जा ख ः		222	ज्ञासः	756
চিপিটকঃ	***	280	প্ৰিচনাৎ নাম	160
				114
			स नाम्ह ।	
	२৮ व्यश्वासः ।		, -	78.6
	मां भवर्गः।		क्षांत्राः .	. 385
		280	वर्जिक्ष्रकः .	759
মাংসম্	••	260	কৃষ্ণ ত'ব'র	385
ज्ञाचन:	•••	310	গৌরতিভিরি .	>84
व्यानुभार	. •		· · · · ·	289
জা কলাঃ	• •	525	कुक है वसकुक (हैं)	589
रिद्धानामाः	***	3-7	अ ञ्जू म् माः	589
श्रहामद्राह	• •	262	· 위'명,	384
পৰ্মুগাঃ	•••	2,5	ধ্বস্পাঞ্	. SR4
রিক্রিরাং	•	\$ r 2 ,	गजुन्द	289
शकुमाः	•••	ં ૯૨	পাগাহতঃ	. 356
公司 章:	***	264	P(76)53	. * 380
अंग)।३	• •	382		
कृटक हराइ	• •	37.3		
क्षर । ह		323	গ্রাম্যানাৎ লক্ষ্ণারি	स्थाना ।
(क्ष्रांच्या	•	2.0	, দুৰিঃ	. 386
भ। प्रनः		7 - 5	মেছু?	544
म्दम् ।	•••	708	े बद्काः	
			ं वजीदर्भः	385
			ঘে'টকঃ	د،د
	काञ्चन मीमार नागान			
•	खेल्। ×ह ।			
ए दिने:		183	ক্লে চরবর্গ	5 1
बन्ध			ম হৈছ:	,85
कुद्रमः	• •	283	मढ्कः	3
भूष]इ	••	18:	কসছপঃ	160
	••	3 8 02	নলে।'হতদঃমা৲সম্	300
পৃষ্ডঃ	•	2.0	স্থা মৃত্য) মাংসম্	34.
म)कुः मःवद्रम्	***	. 4 6	ুক্তবালম: ৭ সম্	500
् क्रोक्रो दः जन्मम्		382	বিৰাদিম্তন্য মা৲সম্	>@•
9 2. 1		384	নাৎসদ) ভোঙৎ নিকৃষ্টত্বঞ্চ	
बुडी	•••		,	

विषयः	र्जे हैं।	विषयः	পূঠা
মংশ]বর্গং।		चां है की नू न्धम्	303
		उ क्की मू श्थम्	> 4 4
রোহিতঃ	24)	ब अने पूर्वधम्	309
र्मिनीकुः .	3 '	न बो दूर्णभ .	300
क कृ द ः	207	ध'रडाक वि मुख्यका ।	200
মোচিকা .	5 ¢	পে মূদ কিলাট ক্ষীরশাক, ভক্রপিণ্ড-	
ભાષ્ઠીના .	: 65	মোরটনাং সক্ষণানি গুণ শ্চ	3 4 4
भृ त्रो	205	সঙ্নিকা	3 @1
व हिमा १	>	च आ व मू क पू क खाना .	346
नक ृको	31	প্রভ গ্রাপ্ত বং পুরুষ	24
भर्जन्नः	~ 3	मूलरगरम ममग्रीतरनामन सन्म ह	31:
ক'বকা	743	म शहम, मूशभम अनीः	. 4:
বমিন্ ংস ্ঃ		मृत्यरक्त खना'	31
¶खम्थम्]°		ि 'मन्डमूक्षभ	٠ ٥
433:	20		
पहां म कड़ी	۶ -		
गरञ्जी	3 9	৩ আধামঃ।	
गम्ध्रः	2 , 2	afersia i	
मणायम्भारमाः "	3 7	प्र	c
नकती .	300	विकास का विकास का किए के किए	3 ¹ 2
क्टू सगरम)।	q	মন্দাৰ বাংকজন বি প্ৰাৰ্থ	5 %
ष (उक्तु प्रमर्भ)।	\ 1	त्यान ध्राप्त .	35
ए२म ्रोधः	3 *	म"इस्वस्थित्राण्"	3'
षुक्कमरम) ३	3@	্ ভুগাদ্ধি	٠.5
पक्षमध्या)। इ	6.5	भागम भ	3,
रू लका मि गरम । छवी '	243	निश्वज्ञ जुक्त पण	ود
भुक्तिरणंदस मध्मार्थितासः	2 B	श अंत्र में स	34
to Alderson destruction	. ··	। में नदी निगंध 5 वृधि .	35
		त्र'र क्रे म 'सर' छ ' ऋ म चिट्य स्ट	35
२२ जाना १४३।		शकुनिटलेट्य निर्मित्यटमो	35
क्षांत्रर्ज ।		অবিধিনা দুধিলেবনে দোষগাছ	3 %
দুস্থাবর্গঃ।		मदम् खु	36
[क्ष्	307		
भ पूज्धम्	202	०> ऋगाम ।	
['] हबोनूग्धम्	3~5	खक्तवर्गः।	
₹ [†] जीपूर्थम्	208	डक्क्यू	3 %
[भी : पूर्व थ म	3" >	क्रमटम्यन विधिः	36
मसीपूर्वम् .	566		2 9 4

विश्व वः	श्रुके।	विवयः		391
৩২ জাধু † র	: 1	क†ट६ व्ह	•••	356
		म्भोनब रेनभान् दोर्घभा		
मचगी खरर्ग	11	मोग्राभावकांवी १ छवा		748
मर्ग्नी छन् .	398	मरनः खेश्वा	•••	338
মাছিষ নবনীত্ৰ .	. 3 5 8	বালযুবা ৃকেফুগুণাঃ		7.63
পায়সোমবনীতম্ .	. >68	चक्र करमन रचन ३	•••	34:
সংখ্যাসমুদ্ধ নবনীতম্ .	368	म्हभी फिल्क्यू द्रमग्रह्मना		300
ьिइछननरनी छन् .	>>0	वक्रिक्लीक्टबकूत्रममा	i et i	263
		প্যু/ৰিভেক্রদ্স) ওণা	***	3 %
		श्करमान्द्रममाध्या .		36
. ৩৩ ছাধ্যায়	8 1	दिक्तूत्रमन्। विकाताना व	191	3 %
• মৃত বর্গঃ।		কাৰিতঃ	• •	391
	360	गश्माछी	• •	310
মৃত ন্ প্রায়াজন	> > > > > > > > > > > <	64:	• •	340
পৰ)সূত্ৰ্ . ক'নিম্ভাল্	350	পুরাতনপ্রকঃ		59
कोकिसञ्ख्य इ.भीश्रुखम्	365	नवीन छकः	• •	39
	36.5	चे उम्		31
উটুীয়ৃত্য্ .	355	দিতা		39
অ :'বিকঘৃতম্	366	निकादयम्	•••	5 4.
শারীমূত্য্	306	यधुर्गक्त्रा	•	3 4
অংশীযুত্ত্ .	366			
দুও সূহৰ -	. 355	.00 5	W7.77 0 1	
ছ, ভনদ বিজয়তম্	369	৩৫ জা		
পুরাণযুত্তম্	369	मध्य	1 : 1	
মুস্তনগৃত্দ্যবিষ্ধাঃ	3.99	मध्	•••	39,
मृड् शस्त्राशम्। विषयाः	•	মধুতে দাঃ	***	31:
		ম াক্সিক্মৃ		31
. ৩৪ জাধানি	[8	क्ष'मन्नम्	* *	٥٠
		्क` ड म्	•••	24
दि न् वर्गः		পৌৰিক্য্	• •	21
विकृ:	, 549	ছাত্ৰম্	•••	29
च ्नूट ड म्।	259	আহ্য ম্	•••	29
শে!গুৰু তীত্ৰক	5%4	डेम ानकम्	· · ·	>4
কে শকাৰঃ	·• 22F	ष्'मम्	•••	2,
#.Piss	· · · 24F	सर्गुत्रान मधुसन्।ः	•••	34
हे शंभीत वर्णकण्ड	364	वश्मः ने उम. स्वाधिका		
শতপোৰ:	29F	बूखडांग्रानिट्यशः	• •	39
ভাগণেক	٠٠, ١٠٠	मधु विक् स्थ्		39

विषयः	भूका	विवयः		ৰ্থ
৩৬ জাধ্য†ৰঃ ৷		৩৭ জ	थ ्रीश्रह ।	
योदिवर्गः ।		হৈজবৰ্গঃ।		
অস ম্	390	टेडमम्	***	240
थां ब क्षण म्	396	किन रेडनम्		228
भाषमायुक्त सम्	510	नर्ग रेडनम्	• •	218
व्यर्ग र अन्म	295	कुनते देखनम्	• •	350
ফ রকা জ্ঞান্	395	व्यवनी रेडनम्		36-0
८७ चात्र जनम्	395	কুসুন্ধ তৈপন্		334
टेक् म जान म	399	थाथगरीक रेडनम्		22.4
ভেৰ্মজন্ম	599	अव्र टेडमम्		28-6.
८७ ोमानारमव नारक्यां भीना ९		द्राम रेखमग्		. ક ાં ક
अक्रवां निद्धवं म्ह	745	শীভাংল তৈলম্	• •	33-5
छिष्डिषञ्जनम् .	398	बक्क टेडमम्	• •	22-2
टेन श्री इस्थान म्	210	वाडाय टेडमम्	••	2>0
मात्रमञ्जू	294	बादिदक्ल देखनम्	• •	300
ভাড়াগ্রলম্	312	करण टेडमप्	***	349
বাপ)জন্ম	242	भाषेको देखनम्		389
কে.পঞ্জম্ °	496	कालीकन टेल म्	•••	3 - 9
চৌডাজলম্	593	नगन टेडनम्		34.6
भोज्जाजनम्	26.	জ্বাচ ভৈলম্	•	784
বিকির্কলম্ .	74.	बोभाक देख भ्		366
टेक मात्र अभ्य	22.	মিষি তৈজম্ °	•••	36-6
ৃক্টিজপশ্ .	250	को उक रेडनम्	• •	200
(इयक्षांविकां न वित्नंदय वि 'इड		मृगानक ग्रेक रेडनम्		7 6-6
खनिदिनंबः	50.	निकृष्ठ रेडमम्		366
স্তুল প্ৰত্যাল হ	2+2	मर्यादेखन खनाः		366
জঙ্গৰ) পানবিধিঃ	343			
ৰীভদ্মলপান্দ্ৰম্	26.2			
नीसनक्षमका भागित्यमः	363	- Dh. 17	ET M T I TO .	
অপোন্ধলপানস্য বিষয়াঃ	343		চাপ্য য়ঃ ।	
স্ত্রপান দ্যাবপ্যক্তা	36.	4 2	वर्गः।	
क्षणंडः जनम् " "	32-2	certa an		
भिक्तिस्थ सवस्	345	গোযুত্তম্	•••	2+3
पूक्कमा निर्द्धायोक्तरवाशायः	340	(भषपूजम्		38-3
পীছসা অলস্য পাক্কালঃ .	310	क्। शर् कम्	***	36.
व्याधुनिक व्यवभविकादकवन श्रवामी	2P 3	মাহিদ্যুৱন্	··· J) (
		स्विष्ठम् भेरा	1) b :
•		खेके बूबम्	; ·	33.

nolo

					
विषय:		পৃষ্	विस्म :		9्र
অশা বৃত্তম্	• •	300	0.0	estima i	
शर्फ स्मृह म्		9 6 6	82 04	शायः।	
सत्रम् ॥ म्		925	গ্ৰ	12 1	
			বি ফুলা		75
ু কা	(11379.1		िक है कम्		۵۵
76 A	(1120.1		ক্রিছাতক চাতুর্জ্রভিকে	***	5.8
अर ्का	द्रवर्ग्ड I		চকুক্ষণম্		46
रेमक्रवय		> 20	পঞ্কে'লম্		3 %
সৌবজ্ঞ শ্		. n O	ষভূষণমৃ		3 %
বিভ্শ		727	कोतनीग्र गनः		46
म <i>्यु प्र</i> ज्ञनवम्		357	की दत्रकाशकारकान्यार्ज	कवानि छवान्छ	35
<i>(व्रेंच</i> कम् '		2",	का स्ता पर		۰ د
ॐ १६ व ग्		2 % 2	का भक्ते भिश		22
क्रोत्रमयनम्		٠. ۵٠	व्यर्का पि?		\$ 6
न क्ष्म् न व म्		3 ~ .	আমলক্য,দিঃ	••	۵ د
४ क सम्		१२८	জ্মাৰ সুদা দেঃ		۵۵
नद्रगादः		2~2	कु भमा पिः	.,	3 0
बदक्त'तः		225	क्ष का पिश		ર
मर्क्षिका का द्रः	•••	2 " 2	এলা দিঃ		٥ د
छे डरणांनीयानि श्रव ¹ ण्ड		י בל	क्रिकोल पिश		२०
क्रोत्रज्यः क्रोत्रव्यक		>>>	क्षक हो दिश		20
কারাইক শ্		2 = 2	ত্ৰ পূৰ্য স্থিপ		٠٠
		1	ত্রিকটুকণ্	• •	
D 9774	. 137.0		ক্ৰিক্লা		२०
৪০ আধ) - a		ত্রিবৃতাদি:	• •	₹ •
সন্ধানব	र्जर ।		न्।'दधांशां मृड		२०
(म)भ्	• •	:58	लक्ष्मक्ष्म ि	••	20
গাড়ী		728	नटिं ना पिः	••	२०
गक्तो	• •	228	পর্যক'দিঃ		₹ •
পঞ্চী		523	পিপস্যাদিঃ		२०
काष्यत्री	••	8 % &	श्चिग्रक दि:		२ •
! भूकी	••	>28	मुफ्तका'नः		20
म र इसी		226	बुखकाबिः		₹•
। स्थियार भूद्रावीर कामाना		280	दुवसा पर द्वाश्चामिक		30
ी र्वे	•••	324	न् का दिः		٩٠
र्गाश्चिकम्		120	वहारिः	•••	50
किरोज्ञम्		299	वक्रमंदिः		2.
1.	с		_{ह्यसा} ब्रोधका विः	• •	₹.8

বিৰয়ঃ		श्रु ।	विषयः		र्व
को त्रख्या दिः	• •	> • 8	- September 1	। खरमा श्रीह दर्गः ।	
বৃছন্ত া বিঃ	•••	₹•¢	चान्द्रकः		8
न्यामा दिः	••	2.0	क्रो क्षशा नः		8
माद्रियादिः	••	₹•0			
সাল্যারাদিঃ	***	200		गक्रवर्शः।	
मु ज्ञम ^१ विश	• •	₹ • €	वोक् होटक वः		¢
ছরিন্ত। বিঃ		₹•0	গৰ্পক্ৰম্		•
			क्यन सः	***	4
			আফাপদা৲সী	• •	æ
भी	রশিষ্টম্।			অবস্থবর্ণঃ।	
•	क्षमाय्यवर्गः।		शकी कर्ना	• •	
সোমলতা		3	মুৰ্বহা	874	8
वृक्तमाञ् कः		2	ধার।কদ্মঃ		٥
*****	বাভয়ুবর্গঃ।		পুতিকরপ্তঃ	••	"
পারীৰ		۵	শেফালিকা	• •	•
			সুদর্শনা		•
	(a) and			कामञ्जदभः।	
	পিশুলুবর্গঃ		प र्छार्थमम्		
बिखामः	•	3	1	क ५ मू नर्ग ।	
चामानीटचं हैः	••	ર			
আবর্ত্তকী	• •	٦.	काकामनी	•	,
ক ক্তিপূকঃ	•	ર	চিরবিশ্বঃ	• •	•
	कक्यूनर्गः।		মহাকরপ্সং	•	•
माश्र पुष्प्री		2	(छानम्यु सिका	• •	
দেবভাতঃ		2	•	व्यक्तिया विश्व	
ছ ন্তি শুঙী		2	। फ जन्मा		
কুশ্চিকাল <u>ী</u>		,	পী'ভকা	••	
प्राम्य		5	্ সিভনাগঃ	• •	
खगरी	••	,	1	as and well .	
	विटक्र मी ग्रन्थ ।		1	পুষ্পাবর্গঃ।	
লেক্ছালৈকা	च ० €	ر.	मद्भवसः		ŧ
मंड न बी		,	1	क्ष्मवर्गः।	
भुक्तक (१	••	•	1	-स्थादगढ]	
यू क्रवळ ।र शस्त्रीमयू नय्	• •		গওগাত্র মৃ	***	1
		8		न्। क्यर्गः।	
ब्रु ब	विद्युष्टभी ब्रुवर्गः।		धीयम्बद्धः		1
व १ मृं	***	8	শালিকঃ	4.	i

विवयः		शृ के।	विष्य:		मृ
	মাণ সহগ:।		31	ক্সাপরত্বর্গর।	•
व िमद्रमः	 मधुरगः।	*	मुक्ता श्वानः	***) o So
পश्चमध्	काइन्यंबरगर्।	ప		·· াপবিষ্কাগি ।	24
ह र्वम्		۵	নেপালশৃঙী	***	٥ د
শঞাদিতব্য কার্যুত্তিকা	•••	ر ب			
	ŧ	ইতি স্চিপত	রং সমাপুম্।		

অকারাদিক্রমে বাঙ্গালা

मृठीপত।

विष ग्र	भू का	[विषय		न् भू
ष्य ।		खा।		:
च्च (कृच्च) .	۹ ۵	আকনাদি		8 9
ৰধক (পীড)	67	আক্ল (খেড ও লাব	7)	91
व्यक्षनादिशन	324	আকন্ম মূল		9)
चमस्रूण	•	আক্রোট		22.2
च्यक्षमण	৩১	আক্ৰাবলী (অসক্ত	191)	8 9
অপরাজিভা (২ প্রকার)	b-+	9 415		4 , 8
व्यवक्रीवृत्रान .	3*	का '७ है ह	••	F.)
च्यादरस्य	330	আডা		۶, ۳
चन्ना हैन	203	আনুপ মাংস	••	28%
ष्पत्रहत्र	20'	আপাং (রক্ত থেত)	2 9
व्यक्तिश्वाव	322	অখব-৩৪ কী	•••	જાં , ₹
व्यक्तर्गतृकः	25	व्यामव्यामा		49
प्रमुवर्ग	* 4, 2	আমলক)। দিগৰ	• •	522
অলমুৰা .	₹₩	আমসত্ত্ব		7.4
ष्यांक	a >-	জায়		200
व्यथ्य	• २	আম (লভা)	•••	2.4
चर्षभढा	,	चाञ्चत नरश्लान	••	200
व्यवस्य	373	व्य'रमञ्जू वीक	• •	88
व्यर्थपुत्र	33.	व्यायक्रम	•••	92
অধীমৃত	2.2	व्यायमधी	•••	b
অফীবর্গ	•	আয়াপানা (বিশ্ব)ঞ্	वनी)	45
चन्न (शिग्राणील)	2 %	व्याद्र ग्रमी विषय	•••	582
षद्द्वम	83	वानवृती		8
		আন্তা		50
• প, পরিবিঞ্চ	नर्थ।	অাসু		53.00

			90		
বিষয়		পৃষ্ঠা	বিষয়		পূঠা
আলু হোখারা		4,9		4 1	
অ(র্চ)মধু		243	a স্ক		•
व्यक्ति श्रेत रहेक दर्ग		eb-		••	٠ ،
व्यक्तिमाधाः हो वर्ग	***	¢»	भ् यक्ष	•	258
অ'ড়'ক		9.3	এ ৰ]মূগ	• •	
च्यास्त्रधान)	•••	200			
चान त्रध्य	•••	જ, ર		न्त्र ।	
			একাঙ্গী	••	94
	8		এব		388
be and		و ۾	जनाष्ट्रक, त्छांचे		92
देश, हो चेम्मु इकार्नियां		≥1	जनाष्ट्रिक, राष्ट्र	1.0	• :
सन्तुप्रकाश शामा हेक्क्यर	••	яв	এল দিগ্ৰ	• •	200
रक्ष इनोर्णमध्या	•••	502	এজন'লুকা		2
रनात्तरमा देनारश्चन		: 1	এরও (> প্রাক্ র ভ	प्रदेशस्त्री ।	34
ই কা বিকা	• •	3 5 9	এরও তৈল		300
ৰ অনু শ্ৰন্ম বৰ্গ		349		***************************************	
बस्युपा इक्षुत्र जाकानित्यस्यः	rta.	2,2			
	ୟସ _∵	350		8 1	
च ्नूत्रग			49		3.4
-			उन्हें क्ष्म	•••	¢ i
	जे ।		391047401	• •	
क्षने जां त्रजा	•	٠٠ ا		<u>₹</u>	
				3 1	
	12 1		डेमानक मधु	•••	3 9
	(5)		छेडिन क्रम	• •	2 4.
क क्या		22.5		-	
खेर मनावित्र न		500			
B 87		c 4		क।	
क्रिके मूज		72.	क्रहेगश्म।		31
ब्रम् रीशृक	••	7 7 7	कञ्चामा	6-16	3/9
डेक ी मूख	<i>,</i>	5 n q	কচ্ছপথাৎস		3 0
			करें की		•
	₹ 1		कड़ें कम	••	b
	91		क्रष्ठेखी		•
खिमां विश्व	• •	: 00	কত্তক পঞ্চসুল		3 a
			क्लेकाडी	-	.3

বি বন্ধ	मुका	विष ग्न		र्वा
यन्त्रेकाद्वीयम् .	. 586	কাকন (খেড ও সাল)		25
क्ष्यूचर्व .	+ 6	कें छ। करछे द्र वृत्र	***	৬৩
क्षपं .	. 3	कैं। छै। करते व भाक	.,	339
क्षम्भाव	ऽ २७	क। है। अ	***,	300
स्कन्न वर्ग	36-	क '१७ कू		748
क्ष्मनाश्चि .	7.4	क डिमागरमा		348
क्मन'दनतु	8 2 4	कामभन्नो भुवा		3 % 6
क्दग्रख्टतम	3.6	কা'ফ		৬ ৮
क्रक्रक व्यवन .	323	কাৰাৰচিনি	• •	e:
क द्रक 'खन	295	কামরাজা		331
कृत्रक्ष रेखन	354	काशाम		. (
করবীর (শ্বেড ও ল'ল)	2.3	का अका शुभग		3 2
कद्रमहा .		क'लंदिरणंदि स्थ्य)'डक्कव	ব ধি	30,0
क इना छे छहा .	, 35%	क्षारमञ		b 8
করীর (উট্ক'টর)	. на	কালাকপুর	•••	어, 8
কর্ণিকার পুষ্পা	. 203	क माना		•
म र्भु द		কা লিয়াকড়া	***	* †,
লপুর চিনিয়া".	. 57	कामञ्ज वर्ग		b-:
हमयोगाक .	. 315	किम िम		354
দলার এটে	שינ	কুকুৱৰোকা	• •	\$
क्रिक्सकी .	54	कुक है. वसकूक है	• •	28
, কেলা	9.8	कुछ (जान (भक्)		2
. इंडिंग	. 90	কু6 ফল	• •	đ
विदेकां	,99	কুচি ল ।		4.
চাকড়াশুজী	ье	নুজ .		₽
क्षांक्यां हि	3,	कुक्ही	. •	8
होकरवांम	, 5° c	कुम्म भूग्म	•••	3 .
मंकारडापानी	. .	कृष्ण् द्रदर्थ। जी		9
াক্ড	309	कु जू क की	***	32
জাকুখশাক .	. भर	季季 季		3 a
काटकानी	ع	কুমড়া (বিলাভি)		33
हारकाम्। पि शर्ग	2	কুমঞ্ (সাচি)		54
was franc	554	কুমড়া (গোলসাচি)		52
हा अभूषे देखन	3~5	কুৰ্কুৰ		•
हांबी	ودر	कुड़ व्य	• •	>8
हैं। हक्। (वक्ष हे)	. 5°3	कुन (करप्रक श्रकात्र)		30
নাচড়া (খেড)	89	কুলখকলাই •	1	۶.۵

विवय	4	जु र्ग	विवद्य .		র্ম প
কুলেখা ড়া		5		र ।	
कूटनहरू		283	ને જ	•••	2.00
কু ৰ		42	थडा चित्रुसः पूछ		244
कुल्ड द्वजू	••	344	थे पित्र ७ श्रास	•••	8
कृ गृभवी स		5'51	चंग्रता य भग	•••	34
कू गुमक् ल		% •	शंदगम		384
कृतृय वीटकत टेलन		360	चंत्रमुख	•••	3•
কুপা দিজ াত মংস্য	• •	3 4 8	थेर्ब्क् इ ७ श्राकाइ		35
किमिन्न वर्गः	•••	8 6	थांग्रेगो		1
कृष े कृ	•••	3.43	भूबामानी दह		b
	• •	4.8	यंद्रामानी यमानी	***	৬
কুলাউ জুর যুগ কুলাজীর।	***	99		-	
ফু জ্ঞান কু জ্ঞান	***	> > 2 @		গ ৷	
কেঁট যুল	••	159	গঞ্জপিপ্ল		165
	•••		กตรท์	***	کھد
কেওড়া ফল কেওটযুক্তা	•••	200	গ ও দু পৰা		3
	• •	:05	গবিয়ারি	••	2
(क्या' क्व (क्वो क्ष्य	• •	. ত , প ৬	गॅम		8 :
(क्सांत्र २ क्षकांत्र	• •	232	গছপৰাশী		9:
	•••	13	গৰূপিড়িৎ		`b
(क् ष	••		গভবৰ্গ		35
किमात कम	•••	35.0	গন্ধ বির্ঞা	• •	e:
কোক্স ছাতা	•	3 %	গৰুবোল	***	હ
<i>रकाव्यान</i> :	•••		গকভাদুলা	• •	١٤
কোষস্থ		2 % 2	গৰূমাত্ৰা		•
কৌপঞ্জল	• •	349		••	5.91
ক্তন্ত্র বর্গ	• •	» 9	গবেধুকা গ্ৰহামক	•••	3.4
कांब्र म् श्राकात	• •	320	গবাস্থৃত গৰ া শ্	•••	3.6
কারমৃ ভিকা		et, a		•••	30
कारवृत्र शकाव (क्ष	• •	220	গৰাদুক	•••	7/3/
चान्न ज्ञान	•••	, ,52	श्व	• •	301
को इस्टाटन : जो	••	ર	शंद्रष्ट्री वश्म) श र्वा रेक्स	•	
को इट अं अ र्ब	• •	270	शक्त देखन	Des 'el-	361
कोइवृक्ष	• •	784	शक्त च्यू ड	***	390
क ्रिक ह	***	₹ 2	গাৰ্মদ	•••	
कुंग्रेशीय)	••	ડ૭ ૨	গাজর	• •	7 51
कु अप र मा	••	76.3	গাঁখা	• •	(%)
জ্ঞেত্ৰণ পদা	• •	261250	त्र । स् यम्	••	84
रकोश्च षषु	••	590	ना खाड़ी	4**	3:

विषय		र्वश	বি বন্ন	te	ુ
(প্ৰাশাক	•	4, ₩			
ध भ् छ म्	• •	۵		5 1	
44	***	310	72		
রড় (পুরান্তন)		240	PA	***	
बक् हा विश्व		₹••	हज् है शक्की	•	3
		ec	४० क्या वर्ष	• •	33
ওজ তৃণ ওলঞ	•••	P-2	ह ळूडम	• •	3
सम्बद्ध भाषा	,	25.	ह ञ्कन4	• •	7
द्वान्य	•	383	हम्मन (श्रेष्ठ	• •	
(शर् डे न)	•••	16	Б1	•	- 1
		28	চাকৃন্দ1		
গোজুরী	***		চ'কৃন্দাপত্ৰ	•	. 7
-গোকুরা বীজ	• •	48	ठ ।कृत्म		
গোজিয়া শাক	• •	230	চাতুৰ্জ্বান্তক		۵
গোড়ালের	•••	224	हाना (सर्व)		P 312
গে'মুত্র	•••	2. 9	कांगावक्या		
গোরক্চাকুল্যা (না	गरमा)	¢	চারদানা	***	
(भारताहमा	• •	۵۰	চালযুগরা		
(भागानन्त्र)	•••	P, 3	हामयुगतात देखन	***	:
গোলাপজন	•••	304	हिक्कि भेगरना		3
शीक्षिमम्	•••	300	โรโธ#1		,
গ্রাম্যমাৎস	• •	290	डिक्रां मीक	***	
			few!	• •	,
			চিতা		
	च ।		চিৰি		;
ঘলঘ'লয়া		2,4	চিনাধান্য		3
चनचनिया नोक		273	চিনার উক্সু		•
घृड		350	ি চিরান্ডা	••	
मृ डक्या दी		8 7	চিন্দাক	***	
च ुखर ग	***	250	চুকাপাল জ		3
भूटखंड विषय		369	চুবড়ীজালু		
ৰেট		જાં, ક	Σq		24
শ্বৌত্তন চ		48	(इक्ष्यरम्)		
ছোড়ানিম	••	66	চে'রকাচকী	***	
(स'इको हुक	• •	362	চৌজ্যজন	***	
ছোল	•••	250	্চাক		
যোগালক্স	••	,90 e2		• •	
- বা বালাকল	•••	44			
			1		

विषय	•	পৃ के।	विषय		পৃষ্
	ছ ।		खोड़ा (खड़ ४ करन	(for	9
			জীৱার তৈল		361
ভাগ	•	292	खूर, उ वर्ग जूरे		3
ছাগঘুভ		255	्रं व्यवस्थातर्भ		ъ
छ। ११ प्र		348			
ছাগমাৎস	•••	2 b			
ছাগমুখ		2,.2	1	না ।	
ছ ! ভিম	•	8.4	বাকি শ'ল		۵
ছারমগূ		2 9.9	সাটি (রজ-)		> * <
्रका ष्टिमापाय		5 ~ ₹	্বাটি পুষ্প গঞ্জার		3.
ट्या ना		.94	्रिका आफ्रिका	**	ુ રુજ્ય
ছোলারশাক		252	া বিজেবিটি লয় তৈল	, .	350
			क्षित्र वादसम्बद्ध		
Turning (; ;	-	
	37 (हे ।	
ब कोन गो ्न		54.613.45	ট্বালেরু		3 7 6
प्रा ष्ट्रभा श्री		9.9	छै:३भिन देख् न		9.3
লগাপুস্প (খেত ও লা	ब्र)	ક ર	(डे अवायश्मा		` \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \
न पूर्वा न		80	টেপারি		20
ज्या श्री		↔ , •>	_		
ময়পালের তৈল	,	366			
विको		9.8		G 1	
M Si		399	@ £ 3 7 5 7 8		≠ †, q
जन्भारमञ्जिष		. 15ro	छ। नकूमी	•••	প, ৭
লপরিকার করণ		2P.3	पू ष्व		4 4
क्राम्टरज्ञ (राष्ट्रदेख)		>9	ভোতিকা	**	23.0
म म िवी म		2 3			
म) प्र यम	***	92			
नाग्रकत्मत्र रेडम		. 32-9		5 1	
मां डो नु क्य	• •	**	টে রীবৃক্ষ		8.5
gia .	•••) · b	টে রোস	iar.	49,324
अप्रोनो		62	ভে:ল্যমু 'ড্ৰকা		প, ৭
सम्बद्ध		82	-21414		
লয় াপ ত্তি		93			
बो व <i>य</i>		3		@ 1	
बीयनोग्र भन		81722	64	• •	3,5
शोवडो			ড ক্র মর্গ		3 5 8

त्रवर	शृक्षे।	विषय	•	পূঠা
ভগরপাদৃকা	28		य ।	
5 ₩	12			. 1.
स्व।म	54	ब्रु टमञ्ज	***	914
ভরমুজ	dot	থুনকু জ	•••	. 53
ভাড়াগজন	343	_	-	
etfe	>=4			
ভ'মাক	6.7		भ ।	
sia	201	पथम्थम)		3 4 8
ভালযুকী	>>	प्रवि	•••	318
डामोमभ क .	b b	দ্ধিবগুঁ	•-•	> 42
ভিতৰাউ	'5 @ ,322	म्थितिरिध शका द	***	• 3%3
ভিভিরপক্ষী	3.5	म्भिद्रशंख		7.43
তিনিশ		प्रियम ज	***	200
ভিন্ন .	۶ کار د	मना	• •	어, 0
তিলক .	3 e ·	मखी		91
डिन टेडन	26.8	म र्मा द्वा	•••	2 (
তুত্ত	>>	माज्य		. و د
षु र	۶۶	मामधानि ठाउँम	• •	39
कुषुक्र (खब्भ)	9 5	मामयर्फन		a :
जूनमी (२ श्वकांद्र)	۵ - ۵	দার চিনি		93
विवस्यम्	: • ₹	দ'রচিনিরজৈন		38.
তেউড়া (খেত ও সাস) .	. აგ	দাকুহ রিজা	•	d
তেওয়া .	. 309	: क्षम्भधु	, ,	39
ভেম্মপত্র	. 18	भी शनशाह नवर्गः	***	ሳኔ
ভেজবল	. • • • •	मोर्घा भाव है क		3 30
তে হুল	, Jy9	मृ ध		31
रेडन	. 3F2	' দুফপ'ষাৰ		>
रेडनदर्ग	34.5	नू क स्वयु उ		315
टेडमगारकत्र सन् .	٠٠ عمر (पूरकंत्र श्रकांत्रसम		5 a
ভোপচিনি	>	দুগোৎপন্ন নবনীত		35
ভৌষার জল	> 5	्रूप्ता ।		28
ज्ञाभित्र	ع	' পুরাজভা		8
विकर्ष	ر به وهر	্দৃকা(খেত নীল)		3
বিষাতক		দ্ভোড়া	***	4,
বিকলা	3241103	(म्यक्षांत्र	•••	9
ত্ৰি বৃত্তাবিপৰ	2/3	(प्रमान)	ers att	•
			N	

বিষয়		পৃষ্ঠা	विषय		र्वश
	4 1		নাজিভাপাক		201228
ি য়া		5.9	নাপপাতি	•••	310
(ব্যা গ্রাভায়া	••	e>	নিশিওছন	•••	38-3
ধ্লপ্সকৈ ক		२७	নিম্ব		٠.
া ই ফুল		g o	नियंत्र सम	••	2 44
(। द्रम्	• •	49	निर्माली	***	222
	•	3.50	মিশাদল		72,
प्राच्या स्थानमञ्जू	***	30.	নি শিশা		b 2
খান)বৰ্গু ••••••	•••	321	निक्लाव (नीयवीज)		105
ধান)ায়	• •		नीवात्र थान।		۵۰۵
খামিন বৃক্ষ	***	35	नो ज		8.
ধারজন	***	390	নূতন ও পুরাতন ধানে		
वादवाक पूछ	***	201	ଷ୍ଟ		328
पुरुष		250	নো খাড়	,	303
যুকুরা	•••	39	ন্যকোধাদিগণ		2.5
ध् म1	•••	24	नाष्ट्र		350
भूमाब्रोडम		12-2	1		
	-		-		
	न ।			र्थ।	
नशी	•••	95	পক্ষীভিদ্ব		>81
मर्डे जीक		224	পক্ষী	•••	28
मफी तृष्क		હર	পচাপাত		9 , 0
म बनो छ	•••	2.58	পঞ্জোল	•••	22
मन्मो खदर्ग		১৬৪	পঞ্ <i>বল</i> ক্ষ		20
मत्र द्विका	•••	29	लक्ष्मण (वृष्ट)	•••	₹:
मण	•••	e a	शक्ष्मण (अधू)	•	21
ম'ল কা		93	পঞ্চ		220
নাকুলী	••	24	भट के। म		. 25
बाधदक्षत्र		96	পটোলাগিগৰ		₹.
न:शहना	•••	a 6	পটোলপত্ৰ	.,	39132
न'ग्रंभी		જ . ર	পটোলম্ল	ૄ 'ન્ય	역 , 8
নাগরত্তা		916	পত্ৰশ:ক	('es	33
नारमञ्जा	••	396	পদ্ধ		۵
माजिरकम रेडम	••	210	পদ্মকাঠ		•
मात्रोधुड मात्रोधुड	٠.	70.7	প্রধান	•	প,
नामा वृष	• •	263	পত্নপত্ৰ:দি	•••	۵۱, ۱,
मात्रोपू ष मान्योक	• • ,	324	नश् मव ः। भज्ञत्स		ړ

11/0

विष्ण	পূ	ी विसम		24
পদা্বীজ		৮ পুনৰ্মবা (শ্বেভ ও য়	*)	2
न स्वाच्या न स्वयं	•1,	OFFE WI	.,	30
_		২ পুরাতন গুড়	•••	39
পত্যাবভী সমস্কালিকার	••	estatoras sente	***	> 20
পক্ল ৰকাদিগ ণ প্ৰতিষ্)	etwices star		20
পৰ্যুগ	• • • • • • • • • • • • • • • • • • • •	_व श्रकत्रम्ण	/11	b
भनान 	• .	8 शुष्णवर्ग	•••	۵
শলাশ্গ ^দ 	••	ু পুজাগার	•	38
र्गा कु <i>ख्</i>	***	श्रक्षित्रक्षीत प्र'शक	ভযুত	33
শাহ্মালবৰ	>?	OF WIE		78
भारेणां क	35	cetata		23
শাত্ পক্ষ ী	36	পেয়মাছি	••	* 34
ণাঁতরকুচী		े रेनकी मन्।	•••	32
ণাতা লপ সূজী	• • •	9	• •	هر 8
শা ভবেরু			• •	
भाषी	31	পোস্তার ভৈল	••	36
শা ন	<i></i> :	् लिकिम मध्	***	39
শানা	***	व शहुप	**	3 6
শানিজ্ঞাৰলা •	5:		• •	약, 3
भाषता .	38		• •	28
ণারি শ	প,	(अग्रम)		¥
গারু ল		১ প্রিয়স্বাদিগণ		5.0
गाउटच पोन्न९णोक	3:	् क्षर	•	78
गान र ^{ाग} न गानिधामानात्र		.8		
भाग्यमञ्	SH			
	• •	2	म ।	
भाव। वर्ण्ड	>>>	काम गर्न	•••	3.
পঙৰক্ষি	٠, ٠,	海岭村 海	***	23
পণ্ডার		3590R1		>2
পভস্প বৰ্গ	3	TENTA TO THE	•	a
পপুৰ		(ma)		31
नि नुवम्ब				-
প্পজ্যা দ্বৰ	٠. ٦٠			
नयांत्र .	··· >e		₹ 1	
পজু (আক্রোট)	33		7 1	
विनोक	59	ी तश्मक देशू	***	35
डिव धमा	30	ু বংশপক্রী		u,
ভে'রমা	•	° वर्णवीस		30
विना	•	वर्गामाञ्च •		y -6

110) 0
-----	-----

		1119			~
বি ংয়		পৃষ্ঠা	। विवय		शृ के।
a Tr		220	নী ল	•••	91, 8
হ কপু শ্পা	***	2031252	বাঁৰের শিক্ত		a 8
ক্ষক ঠ	••	٤ ٤	বাক্স	,,,`	4.7
কু ল	• •	200	বিকির্মল		78.
চে (ডিন প্রকার)	• •	8-9	বিছাটী		প, ৩
চেদিগৰ		8.8	বিভঙ্গ		5 6
इन्हो क्र ड	• •	24	वि ष्टेम् वन		7>7
र है	•••	48	বিদারিগন্ধ।দিগণ		₹ • 8
वनदमशी	•••	4 4	বিদ্ধান্তক		4 , 5
বনপেঁচাজ		a.c	'বরেচনীয় বর্গ		·2.9
वनयम।नी		٠ ه	বিলাভিক্মভা		311
বজ <i>্ক•</i> ুজ্প	• •	7.03	'বজেশ্য		2:212:0
क्राकटकार्वेको		₹ ~	िफि त		783
গ্মনোপগবর্গ		5 ر	বিভিদ্ন।		: :
রেবটি (র!জমাসা)		7:4	বীরতক্ষ		g -
শুকু গ		¢ n	বীণভাষা দিগণ		₹• 8
तर्मना मिशन	•••	÷ • ²	বুচকিদানা		역, (
বর্ত্তক	• •	26%	, বুকি		:
वशीव्येक (व्याप्टेंड)		25,	ुंसम₁° म		38:
বশাভূমুর	***	r 3	द कि अन	<i>:</i> .	31
रह्नोभ कपूष		. •	दुष)वर्ग		
रस्द'द		7::	दृष्ट १ १ १ मू म	***	
र १ ए ।	• • •	৮৩	মূহ তী		3
र'গऽफ्टरम्मा		۵٦	বু হত া[দগণ		₹ 0
বাভন্নবৰ্গ	•••	3.5	বেড়েলা দ প্রকার		
বাভাগিলেরু		::8	: বেভ		:
বাঁদরা (পরগাছা)	•••	50	বৈত্যা শ'ক	. •	35
বাদ'ম		3 3 3	বেলছাল	•••	2
বাদাদের তৈল		*) '	বেজাফুজ		30
কান্মহস্য	• * *	2 - 5	(रमस्टे		8
বাপ) জল	• •	249	(र'न्या मरमा		3 0
বাবলা	••	٤ ۾	(वांग्रांज यहेम)		20
হারু ইতুল সী	**-	٠ ৯	ব্যাণা-ভূব		đ
বাযুনহ:টী		ъ ሮ	ব)গির ছুল	• •	c
বারাছীকন্দ	• •	015.2	उ।क्रीमं क	***	\$
হারিবর্গ	•••	, a č	ব্ৰী হিখান)	***	ر در
ৰাই/কৃ	٠.	> c		•••	
र'न।	٠,	r. 20	-		

		1180			
विषय		श् के।	विसम		श्रुका
	& 1		শ্ ম্যুর	•••	389
			্ ময়ুর শিখা		87
ভটেউর		96	শ র চ		2 8
ভীমরাজ		٥ ٢	भक्तातक		어, ৮
ভূঁইআমলা	•••	۲	, महाक।	- •	707
७ , ४ क्य छ।	•••	ığ.	্ম'সন†		2012.21.
र्ভ देशसमा	•,•	87	মদিনার ডৈল		۵ ا ۵
ভূঁই সহা		24	ষসূ রি	• •	2,20
ভুতরাজ		ده	মহাকর ৩		Pt, 9
ভূ ৰ্জ পত্ৰ	••	9.	' মহাদা		3 Sa.
্তিক ভেক	•	3/0	' महारमम्		, 5
<i>c</i> ⊌≠1		8	• ग्रांच स	***	282
<i>(</i> ७ मकम		\$. 4	, म िम	•••	280
ভ্রামর মধু		292	মা* স্বৰ্গ	•••	280
			মাৎস, বিহাদি মৃত		` G 0
			ग िगयुष	***	9,2
	म्।		मा" ग, मदन्।इड	• •	300
	,		क यञ्जात	•	91, 4
मक्छिक (तृष्णगुरा)		209	माञ्चिक मधु		: 42
मिक्कि		1- 10-	भाराम		2.4 3
ম ট র		339	<u>মাতিকা</u>	***	8.2
ষটর শাক	•••	357	र । जुक्छ		8 9
म १ म }	**	2 + 4	, मामाव		:09
मध्म) जिन्न		318	শাধরী পতা		3.5
মং সঃ(ক)		29	संधुकी सम्।	***	: 58
मधिउपूरकत खन	•••	3.2	मास्तीयमं।		3-8
মদ্ধার মংস)		242	±*⊶কচু		۶. ۴-
यम् ।		2>≺	মাষ্ঠকাট		300
मर्जाद मांशादन खन		323	. याचि		٠,
मधु		393	মাহিৰ যুক্ত	••	>24
मधू र र्ग	***	343	गहिसक्त		5.0
यथुद्र विषग्र		816	म किसपूर्य		305
মধু শক্তর		>95	माविषम् त		342
यन का		:33	মন্ত্রি	,	310
মন গাসী জ		520	िगिके निय		4, 30
मसुषा गृद		540	নিস্মিভিডা	***	,, oc
मदना स श्री है जा		354	शृक्यभी	•	4 , 8
यग्रन क्ल	••	7ه	युक्ता •	****	প, ১০

			No .		
	-		বিষয় ্		পৃষ্ঠা
विषय				य ।	
पुत्र		5.96			e 9
পরা (মুর্কা)	•••	প, ৬	य च्छा पूर्व व	***	391
नाव	. •	1	यत	• •	225
पुष्ट करम	• •	3/2 '	य द ऋ दि	• •	
T W		4 3	য ভি ষ্	• •	8
ু ভীমৃ গ		387	যুষপুষ্প	•	22
पू ष्ठी		25	যোয়াম	. •	58
মুভা		919	যোয়ানের তৈল		78-2
मुख्या का		어, ৮	যোয়ানের লাক		7>2
মুরামাৎসী		פיף			
মুক্তকাদি গণ		2.9		द्र ।	
যুদকরের		ar	Arro.		رة ،
মুন্তকা'দ		202	व्रक्त हम्पन	•••	50
মু'ত্ৰগৰ্ণ		ンチン	इरकाश्लनगृज	•••	ъ
मुक्त निद्रह्मी प्रवर्ग		٠٦	রুষাধন কর্ম	•	326
মুত্র বিষয়ক		29.	द्रभून	***	40
मुजन १ अह शी प्रतर्भ		64	রুগোড	• •	هو د
মূলা		25h	রাইসরিমা	• •	
মূলারশাক	, ,	225	वांशांजणणी	• •	28u 250
মূগনা ডি		৬৯	রাজিব		
मृशी मू अ		310	वादिए प्रिएकोस	न निरम्ध	?' s
(मशी	•••	9.39	द्रौषू न	••	
	•••	2	রামকপুর	• •	20
মেষ ২ প্রকার		788	হামা	. •	2,
		386	विषे	• •	Œ:
মেৰমূভ		305	কুমি শস্তক ী	***	,4, 6
(यसपूर्ध		2-3	েইউ' চ'ল	***	•
মেষমূত্র		● 50	রেগ্রু	. •	cl
त्यसभूकी टेमदब्रेशी मण्		340	(इ'श्वामिश्व		२ •
	***	C o	েরা'ছতক (ভিডা	g' w)	6
যোচর শ মোচা		253	রো ছিত মংসা		74
শেচ। মৌষ		390	i		
মোন মৌরি		30	1	ল ।	
स्यात स्योतित देखम	••	3+b			i
মোরর তেল মৌল		>>•	लक्ष्णा (स्वडक्र	 ((stack)	3
(म)ण	••		ज्ञामात्रह	ज्यामा / ••	•
٧,			লক্ষামারত লক্ষাবভী	***	
1-	*		Manida!	•••	

मडारुख ती मडारुष्ट्रे मरम मराम्बर रेडम		94	শান্তপা		
मछ।कष्ट्री मदक्ष			-412all	***	95
म रङ		७३	नाम	•••	3 6
	• •	93	শালপানি	•••	5 3
	•••	P-dc	म् । स्वर्ग	••	>67
जर ्कारू वर्ग		320	শ।লি থাখাক		₽ , ₩
नर्व रिवयूक		292	শা'লখান্য		300
		522	'শম		3 2 8
ল াউ	• •		শিবুল কৃষ্ণ	\-	34
माक्षापिशन	• •	20 -3	শিমুলফুল		50
ল:উক্তিয়ন্ত্ৰ	• •	4 , 4	শিস্থান্য	***	308
লা মজ্জ ক	••	48	ां की ब	***	ä
ল াব	•	29.2	मिद्राविद्रक्रमीय वर्ग		. 43
লা লখা লু	• •	३ २१	लिल। द्वम	•••	11
লালক চু		25%	ि वस्त्री		> 4
লাহা	•	5.	िमस्य	***	a :
সেবু		778	સ રે		۵۶
জোধ	•••	÷ a	মুজ্ফা		N. e
লোনীশাক	•••	723	स्रस्मीणीक		229
			शुक्रमध्म)	•••	208
**************************************	-		मृक्धाना		30
	1		मृक्षोग्रहम)		34:
	1 ,		লেফালক)		4,
শঙ্কর মহস্য		7 48	भ्यामकाष्ट्रीत रेडम		See
শঙ্খাদি ভ দ্ম		٠t, ۵		••	3.
मं ठी		9.9	्ने होना टेन्स न	••	3.
न ब्ली	•••	٠9.		• •	` `
শতপোরক ইকু	• •	১৯৮	#J1631	•••	7#
णक्रम ो		33	न)।यगाष्ट्राष्ट्रकू	•••	
मंद्र	•••	c o	শ্যামাপিগৰ	•••	٤.
^{त्} प्र श्रेषुर्थ		8•	শী:ামাসভা	••	
শরবাণ শরবাণ		ર %	न।मः घाम दोख	• •	7,5
मद्रदो छ	• •	2.9.9			
	•				
मग)क महाकी	••	244		. .	
	. •	b-39	1	4 1	
শাইবাবলা	••	وج د د د	वस्यन		35
叫 ;本	••		44,44	••	200
শ'ক্রগ লাঞ্পাক	• •	33% 4, b		-0	

no	9
----	---

विषय		शृ के।	विषय		श्रुवा
	म् ।		जुबि गुज्य	* **	22
			সুপারি		209
স ্প্রাছিবর্গ	••	8 5	সুরুগাদিগণ	•••	२०৫
সংযোগত (কোঁড়কজ	াড:)	>0.	जू रकगांनी	• •	225
সচলস্থ্	***	250	मृक्ताकाष्ठे शारमी	••	2 , a
স্থিমা	••	2 C	(मधे, (मद		22.0
সন্ধিনার ভাটা		7.8	সেউন্ডি	• •	ఎస
স্থিনার ফ্স		2,2	সেগুন	•••	ر د.
সঞ্চানবৰ্গ	•••	2 .8	ম্বেদোপগরণ	- •	G o
সন্ধানীয়বৰ্গ	,	20	टेमक्रत जनन	• •	\$ 70
मंटक प्र		어 ৮	। সে'দাপ	,,,	
मगूटल सनो द्वर्ग		,e 5	সোমা		23
म् प्रस्कत	, .	22	গোনামূখী		96
সর		306	গোমরাজ	*	گ د
म इल क ' छे		96	মোমগুড়া		와, :
मत्र मर्भू हि	***	300	সোহাগা	••	¢ i
मंद्रिया, काळ्या		مود ز	সোহারা	• •	>2:
স'রমার ভ'টা		321	শ্ব ল প দা	•	r :
সরিষার তৈল	**	K 4 ,	ন্ধে নৈয়ক		91
সরিষার পাক	***	333	सुन् को दूर है	-	3.6
मर्भाष्मी		o a	স্পোপ ঞ্মু ল		÷ • :
गमा		309	ভাবিকা		· ·
শাচিইকু	• •	254	41.11	•••	
সাচিকার		2 % 5	_		
मानव	•••	280 .			
मायु प्रसम	. •	3 . a		र ।	
मासः ब्रम्य	***	2 % 2	•		
मोद्रमञ्ज		392	इ ९मश्मी	• •	2,
मा'त्रवा!प्रश्		२०ँव	ब टुब	, •	4
गोणगा	• •	9	হরিণ		3 8 1
সাস্পারাদিগ্র		. 300	হ'রকাও বন ছরি:	F i	۲
माज पश्चिष्ठ वि	•••	9	ছরি দ্রা দিগণ		₹ • •
নিজ নুক্ষ	***	৩৮	ब द्रोडकी	• • •	ઝ
शि भ ्द्रो	•••	200	र'अपूर	•••	24:
সিদ্ধি		89	रिक्नी मूख	• •	241
[निक]		222	হাড়ভাসা	55	20
,जोरचंड	•••	• 5	হাতিভ ডা	• •	প :
अवसर्गन	(૭ ૨	হাপর্যাকী	• •	A, 6

	ળર	/•		
বিষয় ছারীত ছাপিম হিং	 পৃষ্ঠ। ১৪৭ ৮ ৬৫	বিষয় ভাজল ভরতর ভেচুটা		6: 5: 5:4
हिकामा क हिसाम	 355 4, 5	टेश्यक्षम (ह)गमा	•••	391 44
	স্চ}পত্ৰ	সমাপ্ত।		
	~~~			•

# वाशुद्धम विख्वानम्।

# मुवाक्षिम्।

श्रिथरमा २ शां १३ ।

### ब्यावर्गः ।

कीतकर्भ भारती।

कोसकर्यकाको (क्वरणे 'एमाझि लिथरताहुरणे । इरमासकस्पत्रकारम्पे । नगारता मुख्यस्य प्रतिके ॥ कावर्यः । प्रतिकार मन्द्रभा नद्र। कावर्यः । प्रतिकार प्रतिकार कुर्यस्य का ॥ सम्प्रा, ११८६, ११७६१ विश्वरण स्वाक्ष्म हैंड (भा । इर्द्यस्य स्टब्स १८५१) लोग्डा ख्यकस्थ्य स्वा । स्ट्रिस लिख महास्रकार्या वाडकसामारहो ॥

ভীবক ও ঝণ্ডক।

জাবক ও ঝ্যভক এই তুই প্রকার
উদ্ভিদ্ হিম.লাগ পর্কাতের শৃদ্ধে উৎপন্ন
হয়।ইহরা দার হান, ইহাদের কন্দারগুনের ন্যাব, পার স্থান। জীবক বুক্লের
আকার ক্রেকের ন্যায়, ঝ্যভকের আকৃ ভি
র্যশৃদ্ধের ন্যায়। জীবক, মধুর, শৃদ্ধ,
হুসান্ধ ও ক্রেনীয়া কি এই গুলি জীবকের
ন্ম এবং গ্রমভা, ধীর, বিষাণ ও আন্ধা এই গুলি ঝ্যভের প্রায়। জীবক ও
ঝ্যভক এই উভয়েই বলকারক, শীহল,
ভক্রজনক, ক্যবদ্ধিক ও মধুর।ইহারা
পিত্র, দাহ রক্তদোষ, কৃশভা, বাসু ও ক্ষয়
রোগ নাই করে।

#### टममा भश्रात्मरम ।

भवारमवाकिथः करम्यां स्थातकारम् अस्याग्नरकः ।
सवारमवादाने स्मान नामिकुञ्कः सूनीचरेत्रः॥
सङ्कार्क्षनिष्यः करम्यां नजाकान्यः सूनीचरेत्रः॥
सङ्कार्क्षनिष्यः करम्यां नजाकान्यः सूनीचर्त्तरः ॥
स्वारमवाकिर्धा (कर्त्वा) स्मानक्ष्यं सून्तरः ॥
स्वारमवाकिर्धा (कर्त्वा) (कर्त्वा) क्ष्यां विकास ।
स्वारम्या त्रमुक्तिका (क्ष्यां स्वारम्याक्ष्यां स्वतः ॥
स्वारम्या त्रमुक्तिका (क्ष्यो स्वरक्षां स्विः ॥
स्वारम्या त्रमुक्तिका (क्ष्यो स्वरक्षां स्वरं ॥
स्वारम्या त्रमुक्तिका (क्ष्यो स्वरक्षां स्वरं ॥
स्वारम्या त्रमुक्तिका (स्वरक्षां स्वरं स्वरं ॥
स्वारम्या स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं त्रम्याः स्वरं स्वरं ॥
स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं ॥

त्ममा ७ महारममा।

মহামেদা নামক কল মোবল প্রভৃতি ছানে জন্মে। যেথানে মহামেদা উৎপন্ন.
হল মেদাও দেই ছানে জন্মিরা থাকে।
মহামেদা দেখিতে খেতবর্ণ জাদার ন্যার,
লতা জাত কল বিশেষ, সুলর পাতৃবর্ণ।
মেদা শুরুবর্ণ কলা, নথ দ্বারা ছেদন করা
লায়, ছেদন করিলে মেদের ন্যায় আটা
নির্গত হইয়া থাকে। স্বল্পপণী, মণিছিলা, মেদা, মেদোভবা ও ধরা এই গুলি
মেদার পর্যায় ; মহামেদা, বস্ছিড়া, ত্রিদন্তী,দেবতা, মণি এই গুলি মহামেদার নাম।
মেদা ও মহামেদা গুলা, গুলু শুলু, শুলুকলক,
ন্তন্যবর্দ্ধ ক, ককজনক, পৃষ্টিকারক, শীভল,
রক্তপিত নাশক ও বাতজ্ব শান্তিকর।

কাকোলী স্মীনকাকোলো।

আয়তে ভীরকাকোলী বহুদেবে।

ব্য স্যাৎ ভীরকাকোলী কাকোলী ভ্রজায়তে ট
পীবরীসদৃশঃ কলঃ ভীর-স্রুবতি গদ্ধবান।

স প্রোক্তা ভীরকাকোলী কাকোলা লিকৃষ্টাতে ট
বর্ধা স্যাৎ ভীরকাকোলী কাকোলা লিকৃষ্টাতে ট
বর্ধা স্যাৎ ভীরকাকোলী কাকোলাপিতবা ভবেং।
এবা কিভিন্তবেং কুজা ভেলোহয়নুভয়োরপি ট
কাকোলী বায়নোলী চ বীরা কায়ভিকা তথা।
সা গুলা জ্বীরকাকোলী বয়হা জ্বীরবল্লিকা ট
কবিভা জ্বীরণী ধারা জ্বীরগ্রুলা প্রধাননী।
কাকোলী বুগলা লীতা স্তক্তলা মুধ্বা হা
বুগলা বাভ্যাহান্ত্র পিশুলোম জ্বরাপহন্ত্র

कारकाली ७ कौवकारकाली।

মেখানে মহামেদ ক্ষমে, কাকোলা ও
শীরকাকোলাও সেই খানেই জ্বাহা।
থাকে। শীরকাকোলা কল বিশেষ,
দেখিতে শত্মূলীর কলের নাায় ও
একপ্রকার বিশেষ গজহুক্ত, উহা হইতে
আঠা নির্গত হয়। কাকোলা কিঞ্চিৎ
ক্ষবর্ণ, উভয়ের এই মাত্র ভেদ। কাকোলা, বায়সোলা, বীরা ও সায়হিকা এই
তলি কাকোলার পর্যায়। শীরকাকোলা
ভক্রবর্ণ, শীরকাকোলার অনাান্য নাম
এই বয়স্থা, শীরবার্লিকা, শ্লারিণী, ধারা,
শারভক্রা ও প্রস্থিনী, দুই প্রকার
কাকোলাই শীতল, ভক্রজনক, মণ্র, গুরু,
পৃষ্টিকারক ও বায়নাশক। দাহ, রক্তপিত,
শোষ ও জর রোগে উপকারক।

### अकित्रकी।

গ্রন্থিত কমে। ছো ভবতঃ কোণ্যামলে। খেতলোমাথিতঃ কম্মে কডাজাতঃ সরজ্ কঃ॥ স এব গ্রন্থিতি ভিচ্চ ভেচ্মপৌডয়োক্র বৈ। তুলগ্রন্থিত। গ্রন্থিতি কলা চ সং॥
বু**ল্লিভ যুক্তিবাতি কলা এ**ইবিভিঃ। য়ৃষ্ঠিবেলি গাং নিদ্ধিল কোটা ব্ৰেরপ) জ্বা ইংম ।
য়্রাইনগাং বিবোষট্নী ককলা দবুরা প্রকা ।
প্রাইনগর্কী মৃক্ষ্য রক্তলিক বিনালিনী ॥
বৃদ্ধির্গর্ভপ্রদা লীজা বৃংহনী মধ্যা ক্ষাতা ।
বৃষ্যা পিন্ধান্তলমনী কতকাল ক্যাপছা ॥
রাজ্ঞানপাইবর্গত যভোহয়নভিপুর্লভঃ ।
ভক্ষাহ্বা প্রতিনিধিং গুক্ষীয়ান্তপ্রবংভিষক ॥

### ঝাছ ভা বুদ্ধ।

ঝিদি ও বৃদ্ধি ইহাবা লতা জাত কল বিশেষ, কোণ্যামল পদেশে উৎপন্ন হয়, ঐ কলের নাত্রে খেতবর্ণ লোমের নাার উৎপন্ন হইয়া থাকে, মধ্যে মুধ্যে ছিদ্র থাকে, ঝিদি ও বৃদ্ধি উভয়ের ভেদ এই—— ঝিদি ভূলার প্রস্থির নার আ ক্লি থিলিষ্ট, শেমন শঙ্খে আরুত্ত ( ে) থাকে উহাতেও বামদিকে দেইত্বা আবর্ত্ত থাকে। যোগা দিদ্ধি ও লক্ষ্মী এই গুলি পর্যায় জানিবে। ঝিদি পেলারক, নিদোষ নাশক, ভাক্তজনক, মধুর, গুরু, আয়ুর্বন্ধিক ঐশ্ব্যাপ্রদা, মূচ্চা নাশক ও রক্ত পিতনাশক। ব্যান্ধ গর্ভপ্রদ, শীতল, পৃষ্টি-কারক, মধুর, গুকুজনক, রক্তপিত্ত নাশক, ক্ষতকাদ ও ক্ষর্বোক্যে উপকারক।

এই অষ্টবর্গ রাজাদিগেরও অতি
দুর্লুভ আভএব অষ্টবর্গের পরিবর্গে ইহার
দদ্শ গুণ দ্রব্য ব্যবহার করিবে যাহা
আয়ুর্কেন্দ বিজ্ঞানের প্রথম থণ্ডের ২৩
পৃষ্ঠান্ন দ্রব্য প্রভিনিধিতে লেখা হইয়াছে।

এই অন্তবর্গেক জব্য সকলের মধ্যে করেন কোলী অপ্রাপ্য নহে। বছদেশীর চিকিৎসকগণ পীবরী শব্দের পলাওু অর্থ করিয়া তৎসদৃশ কল বিশেষকে কীর-কাঁকলা বলেন। অনেকে কাঁকলাকে কা-কোলী বলিয়া থাকেন, কিছু বাস্তবিক

ভাছা নহে। কাকলার সংস্কৃত নাম কর্কোল উহা গক্ষদ্রব্য, কল বিশেষ। কাকোলী কীরকাকোলীর ন্যায় এক প্রকার কল।

#### खद्रेवर्गः।

ল্লীংকর্বভকো মেশে কাকোলো) ধ্দিবৃদ্ধিকে।
অক্টবর্গোছকভিন্ত বিয়ং কথিতক্ষরকাদিভিঃ ॥
অক্টবর্গোছিমঃ যাদু বৃশ্ছণঃ বাজকো ওকঃ।
ভগ্রসদ্ধানকুৎ কাম বলাল বলবর্দ্ধনঃ ॥
বাজপিকাম্র ভৃত্দাছ জরনেহ ক্ষয়প্রণ্থ ॥
তাইবর্গ ।

উল্লিখিত জীবক, ঋষভক, মেদা, মহা-মেদা, কাকোলী, জীরকাকোলী, ঋদ্ধি ও বৃদ্ধি এই অন্ত দ্রব্যকে অন্তবর্গ কহে। অন্ত-বর্গ শীভল, স্বাদ্, পৃষ্টিকারক, শুক্তজনক, ক্যক্ত, ভগ্ন স্থানের সংযোজক, কামবর্দ্ধক, কফজনক ও বলকারক এবং বারু জন্য রক্তপিত, ভৃষ্ণা, দাহ, অব, মেহ ও ক্ষর-রোগে উপকাবক.

### मूम जारानी ।

মুদ্গণণী কাকপণী সৃষ্পণী প্ৰিকা সহা।
কাকমুদ্গা চ সা পোকা তথামাঞ্চ রিগতিকা ॥
মুদ্পণী ছিলা ক্লডা তিকা হাদুশ্চ শুক্রনা।
চকুষ্যা ক্লডপোধল্লী গ্রাহণী ক্লরাহ্মুৎ ॥
বোষ্ত্রকংক্লাং কাসংনাশায়ভাবিক্পোভং ॥
অন্য মাতা ৪ মাষ্কাং।

### মুগানি ( বনমাষা )।

প্র্যার। অনুদ্রপণী, কাকণণী, স্র্যাপণী অরিকা, সহা, কাক্মৃদ্রা ও মাজ্ঞারগন্ধিকা।

শুণ। শীতল, ক্লক, ভিক্ত, স্বাচ্-শুক্তব্যনক চক্ষের হিভকারক, প্রাহী, লঘূ শু ক্রিয়োষ নাশক। প্ররোগ। ক্ষত পোথ, জ্বর, দাহ, প্রহণী, জার্দঃ, জাতিদার, কাদ, বাতরক্ত ও ক্ষর প্রভৃতি রোগে ব্যবস্থের। এই প্রভার সমস্ত জংশ গ্রহণীর। মাত্রা ৪ মাষা।

#### भाष भरी ।

মাৰপনী সৃষ্যপনী কামোজী হয়পুজিকা। পাতৃ লোমগগণী চ কু অব্ধা মহাসমা ॥ মাৰপণী হিমা ডিকা ক্লা লাজবলাগকুছ। মধুরামাছিনী গোলবাডিপিজজ্বাজ্ঞজিহ।। মাত্রা ঃ মাষকাঃ।

### भ! म! (वनभाष)।

প্রয়াষ। মাষপণী, স্থাননী, কা-খোলী, হয়পুদ্ধিনা, পাণ্ডুলোমশপণী, কৃষ্ণবুজা ও মহাসহা।

ত্ব। শীতল, তিক্ত, রক্ষ, শুক্তজনক. কফকারক, মধুর ও গ্রাহী।

প্রারোগ। শোথ, বাতপিত হর ও রক্ষ দোবে বাবছেগ। এই লভার সমস্ত তাং প গ্রহণীয়। মাট্রা ৪ মাধা।

### की वस्त्री।

कोव की 'कोवनी कोवा कोवनी हा मध्यवा।

मणना नामरध्या ह नाकरळं छे श्रम्बनी ॥

कोवकी नोजना वानूर विका रहावज्ञानहा।

द्रमायनी वनकदी हकूमा आहिनी नमुः ॥

दर्जायनी वनकदी हकूमा आहिनी नमुः ॥

दर्जायनी दनकदी ।

### कीवसी।

জীবন্তী, জীবনী, জীবা, জীবনীয়া, মধুআবা, শাকজেষ্ঠা ও পয়স্থিনী এই গুলি এবং মন্থল বাচক শক সমস্ত ইহার পর্য্যায়। ইহা শীতলু, স্বাহু, স্বিগ্ধ, ত্রিদোষ নাশক, রসায়নী, বলকায়ক, চক্ষুর হিতজনক, আহী ও লঘু। এবং রক্তপিত্ত, ক্ষয়, দাহ ও স্বরদোষ নিধারক। ইহার সমস্তই আহ্য। মাত্রা। তেলো।

### গ্ৰহীম্ধু।

যতীমধু তথা যতীমধুক ক্লীতক তথা।
অন্যংক্লীডনকতত্ত্ব ভবতুপ মধুলিকা ॥
যতী হিমা প্ৰক্লং হাছী চকুষ্যা বলবৰ্ণকৃৎ।
' সুস্থিকা শুক্ৰলা কেল্যা হ্যাপিশুনিকাস্ত্ৰিৎ।
বৰণোধ বিষচ্ছ কি ত্তা প্লানিক্যাপহা।
লৌষদাহাক চিত্ৰী চ কাসানাশ্ত বিনাশয়েং ॥
মাত্ৰা ২ মাষকে।।

### यष्टीमध् ।

যষ্টিমধু, ঘষ্টামপুক, ক্লীৰক, ক্লীৰনক, উপমধ্লক। এই গুলি যি ষ্টিমধুর পর্য, দ। গুল। ঘষ্টামধু, শীতল, গুরু, মিষ্ট, চক্ষুর হিজকারক, বলকারক, বর্ণের উংকর্ম সন্তান্দক, হুলিন্ধ, গুরুজনক, কেশের পক্ষে হিজকারক ও পরের উৎক্ষিতা সন্পাদক। ঘষ্টিমধু সেবনে ত্রণ, শোখ, বিষদোষ, বমি, জ্লা, গ্লানি, জ্লারোগ, বাতপিত, শোধ, দাহ, অক্রচি ও কাসরোগ নষ্ট হয়। মাত্রা ২ নামা।

### कीवनीत्रगण।

ख्रवर्गक भनित्ती जीवशे मध्कदशः जीवनीयभनः श्रीरका जीवनक भूनवर्गः।

উল্লিখিত অষ্টবর্গ, মুদ্রপর্ণী, মাষপর্ণী, জীবন্তী ও ষষ্টীমধু ইহাদিগকে জীবনীর গণ কহে। এই দ্বাদশ দ্রব্যের মধ্য হইতে গঙ্জি ও বুজি পরিত্যাগ করিয়া অবশিষ্ট দশ দ্রব্যকে জীবনীর দশক বলাঘায়। ইহারাও জীবনীরগণ বলিয়া পরি গণিত।

### কিশিকচ্চ ঃ।

কশিকচছুরাজ্মগুরা বৃষ্যা প্রোক্তা চ মর্কটা।
আজরা কঞুরা ব্যঙ্গা দুংস্পর্লা প্রাব্যায়ণী ॥
লাকলী শৃকশিখী চ দৈব প্রোক্তা মহর্ষিছঃ।
কপিকচছু ভূশিংব্যা মধুরা বৃংহণী গুরুং॥
তিকা বাতহরীবল্যা কফ্পিগ্রাহ্রনাশিনী।
ত্রণদোষপ্রশানী খাসকাসাপনোদিনী॥
তহীজং বাতখননং সাত্ত ংবাঞ্জিরং পরম্।

### वालकूमी। शिली तक धत्राह।

প্রাাষ। কপ্রিকছ্, আত্তথ্য, র্য্যা, মকটী, অজরা; কণ্ডরা, ব্যুক্ষা, তুরস্পানী, আজরা; কণ্ডরা, ব্যুক্ষা, তুরস্পানী, আর্বা, পৃষ্টিকারক, জ্ঞা, ডিঞা, বিজ্ঞা, বিজ্ঞা, বিজ্ঞা, বিজ্ঞা, বিজ্ঞানী কালিব কালিব বিজ্ঞানী কালিব কালিব বিজ্ঞানী কালিব কালিব মাজে স্কলাৰ মাজে স্কলাৰ কালিব বিজ্ঞানা লিব কালিব মাজে স্কলাৰ বিজ্ঞানী কালিব স্কলাৰ মাজে স্কলাৰ স্কলাৰ মাজে স্কলাৰ মাজে স্কলাৰ মাজে স্কলাৰ মাজে স্কলাৰ স্কলাৰ মাজে স

### शा अहरा द्वी ।

মাৎসরোহিন্যতিরছো বৃদ্ধা চক্ষকরী কথা। প্রছারবল্লী বিক্শা বারবত্যপা কথাতে ॥ স্যান্মাৎসরোহিনী বৃষ্যা সরা দোষএয়/প্রা ॥ মাত্রা ১ মাষকঃ।

#### চামারক্ষা।

পর্য্যার। মাংসবোহিণী, অভিক্রহা, রন্তা, চর্মাকরী, কৃশা, প্রহারবল্লী, বিকশ্য ও বীরবর্তী।

ত্থা। বৃষ্য, সর ও বিলেখ নাশক। মাতা ১ মাধা।

### বলাচতুষ্টরম্।

বলা বাট্যালিকা বাট্যা সৈব বাট্যালকাহণি চ। মহাফলা পীডপুষ্পা সহদেবী চ মা অ্ভা ॥ ওতে। হ্নাতিবলা গ্রাপ্রাক্তা কছতিকা চ লা।
গালেককী নাগবলা হোৱা ছুৱা গবেধুকা ।
বলা চতুউয়৲ লাভং মধুরং বলকাভিক্ং।
বিভাং গ্রাছি সমীরাক্ত পিবাক্ত ক্ত নালনম্ ॥
বলামূল ছুচ শচ্বং পীতং সক্ষার্লকরম্।
মুত্রাতি নারংছরতি দুই মেড্ছ সংশ্রং॥
ছবেল্ছাবলা ক্চছ্ ১ ডবেছাতানুলোমনী।
ছন্যালভিবলা মেছং প্র্যা সিত্রা স্থম্॥
মাত্রা ৪ বাধা।

**हाति शकाय (राष्ट्रना ।** 

বলা, বাটা।লিকা, বাটালকা এই জিনটা খেতবলার পর্যার বাঙ্গালা খেতবেড়েলা ছিলা বাট্যা। মহাবলা, পীতপুষ্পা ও সহ-দেবা এই তিন্টা পীতবলা পর্যায় বাং, জোকা বেড়েলা ইয় ব পুষ্প পীকর্ব হয়। হিলা সহদেবী। অভিনতা প্রাপ্রোক্তা কল্পনিকা এই ভিন্টা প্রবিশার নাম হিলা কক্ছিয়া। গাড়েক্সী, নাগবলা, খুসাও গ্রেপ্কা এই কয়টা নাগবলার গ্যায়ে তিলী গুল্সকরী।

৩৫৭। বলাচভূতীর শীতল, মধুর, বলকাবেক কান্তি প্রাদ, লিগ্ন ৩০ গ্রাহী।

প্রাগ। বেড়েলার মৃলের ছক্স্ক চ্বিরিয়া চুক্ক ও চিনির নহিত দেবন করিলে মৃত্রাতীদার রোগ দ্র হয়। মহাবলা মৃত্রক্তিরোগ নিবারণ করে ও বাধ্ব জন্মলাম হয় অর্থাৎ বায়ুকে অব্যাবিকে নিন্দারিত করে। চুক্ক ও চিনির শহিত অভিবলা দেবন করিলে মেহুবোগ নির্ভ হয়। ইহার মৃল, অভাবে সমস্ত অংশই গ্রহণীয়। মাত্রা ৪ মাধা।

কাৰ্প!সী। কাৰ্শামী তুথকেয়ী চ সমুজাৰা চ কৰ্যতে। কাৰ্শামকী সমুং কোজা মধুয়া বাডমালিনী। তৃভাদাহারতি আৰি আহি মুক্ত্র প্রাণালিমী। তৎপলাশং সমীরস্ত্রং রক্তকুস্মূত বর্তন্দ্। তৎকর্ণ পীড়কামাদ পুরাস্তাব বিমাশমদ্। তদ্মিশং ভ্রমাদং বৃহাং সিধাং কক্ষরং ওলে। মাত্রা ২ মাহকৌ।

#### কার্পাস।

পর্যাষ। কার্পাসী, তুণ্ডিকেরী ও সমুদ্বান্তা এই সকল শব্দ ইহার পর্যায়।
কার্পাস লঘু, ঈ্বহুঞ, মধ্র ও বাত
নাশক। ইহা পেবন করিলে তৃঞা, দাহ,
চিত্ত বৈকলা গ্রান্তি, ভ্রম ও মৃচ্চু 1 নিবারণ হয়। ইহার পত্ত বায়নাশক, রক্ত
জনক, ইহা ব্যবহারে কর্ণের ব্রণ, কর্ণনাদ
ও কর্ণ হইতে পূয় নির্মান নিবারণ হয়।
কার্পাস বীজ্ঞ ভবন তুর্ঝোৎপাদক, রুষা,
স্লির্ম, প্রেম্ম জনক ও গুরু। ইহার ব্রীজের
মাত্রা ২ মাষা।

### वादाशीकमः।

বারাছীকল এবাইনাশ্চর্মকারালুকো বছঃ।
আনুপে স ভবেদ্দেশে বরাছ ইব লোমবান্ ।
বিদারী স্বালুকশা চ লা তু ক্রোক্তী লিডা ল্ল্ডা।
ইকুগড়া জীরবারী জীরতালা প্রতির্বা প্রবিনী ॥
বারাছবদনা গৃক্তির্বব্রতাশি কর্ব,তে।
বিদারী মধুরা লিডা বৃৎছণী জনাস্ত্রাদা ।
ভীতা, খার্যা সুক্রলা চ জীবনী বলবর্নণা।
গুরুঃ শিকান্ত্র প্রনা দাধান্ ছতি রলায়নী ॥
মাত্রা ৪ মাধ্কাঃ।

বারাহাকলকে কেছ কেছ চশ্মকারাপুক কংখন। নিম ভূমিকে জন্ম ইহার গাত্তে বরাহের ন্যার পোম উৎপন্ন হয়। এই নিমিত ইহার শাম বারাহীকলা।

हेरात भर्यात । विनाती, चाङ्गका छक्र विनातीटक ट्याड्डी, हेक्क्गका, कीत-वत्री, कीतछका, भत्रविनी, वत्राद्यक्ना, गृष्टि ७ वनत्रा कट्ट। পূব। ইহা মন্ম, মির্র, পৃষ্টিকারক, স্তনে চুর্রোদংপাদক, গুরুজনক, দীন্তন, স্মপরিকারক, মৃত্তকারক, জীবনীশক্তি সম্পাদক, বলফারক, রসায়ন, বর্ণপ্রদ ওগুরু। ইহা রক্তপিত্ত, বার্ ও দাহ নাল করে। মাত্র; ৪ মাবা।

বারাহীকক্ষ ও ভূমিকুক্মাও একজাতীয় কক্ষ। এতদেশে বারাহীকক্ষের পরিবর্ত্তে ভূমিকুক্মাও ব্যবজ্ত হইয়া থাকে।

#### विषात्री।

कोत्रसंद्धक्ष्मभकः ह द्वाको स्वा ग्रांशिकः।

गृष्वक्षा सामूक्षमा विषात्री ह विषात्रिकः।

कृत्रभकि सामूनका गरक्षिः। विषात्रिकः।

व्यावसी विकान ह मा निका सद्ता विषाः।

सक्षी वनान सममी भूकिया विद्यानिका।

तक्षित्र समस्री ह कृषा मृक्षिभदानिका।

तक्षित्र समस्री ह कृषा मृक्षिभदानिका।

वाकिमस्र समस्री वना। वृष्णा तमायको।

वाकिमस्र समस्रीः।

### ভূমিকুমাণ ।

ক্ষীরগুক্লা, ইক্ষুপন্ধা, ক্রোষ্টী, গুক্লা
শ্বালিকা, ব্যাকন্দা, স্বাদুকন্দা, বিদারী,
বিদারিকা, ভূকুমাণ্ডী, স্বাদুল তা, গজেষ্টা,
বারিবল্লভা, ব্যাবল্লী ও বিড়ালী এই
গুলি ভূমিকুলাণ্ডের শংস্কৃত নাম। ইহা
লিগ্ধ, মধুর, শীতল, গুলু, কফজনক, পুষ্টিকর, বীর্যবন্ধক বার্পিত নাশক, ব্যা ও
রসারন এবং রক্ষপিত, ভ্রম শ্রাভি, ভৃষ্ণা
ও মুদ্ধা নিবারক। এই কল্পের মাত্রা
৪ মাধা।

#### खन्त्रका।

গৰাবা বাজি নানা দিরখথকা বরাজ্যা। বরারকণা বরদা বলদা সুঠ থাজিনী । অখনতা নিল সোম বিত্রবোর করাশহাণ বল্যা রসারনা ভিক্তা ক্যায়োজাভিত্তকল। । আমহাতৎ ত্রণং কানং খামঞ্চান্ত হাপোহভি। মাত্রা ২ বাঘকৌ।

পর্যার। বরাহকণী, বরদা, বলদা, কুঠগন্ধিনী, অশ্ব-বাচক-শন্ধান্ত গন্ধাদি শন্ধ সমন্ত ইহার পর্যার।

গুণ। অখগন্ধ। বলকারক, রদারন, তিক্ত, কষার উষ্ণ ও অতিশর শুক্তজনক ইহার দ্বারা বায়ু, শ্লেমা, শিত্র (ধবলরোগ) শোথ, ক্ষরবোগ, আমবাত, ত্রন, কাস ও শাসবোগ নম্ভ হর। ইহার মূল, অভাবে সমস্ত অংশই গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাধা।

#### (काकिनानः।

কোকিলাক্ষ কাকেজু রিজুরঃ কুরগ কুরা।
ভিকুং কাভেকুরপুাক্ত উকুগডেকু বালিকা ॥
কুরকং লীডলো বৃষ্যং যাছলং শিবলভগা।
ভিজ্ঞো বাভামশোধাশা তৃষ্ণা রুচানিলাক্রজিৎ ॥
মাতা ৪ মাষকাঃ।

कूरलथाए।। हिनी-काल माथाना।

প্যায়। কোকিলাক, কাকেকু, ইকুর, কুরক, কুর, ভিলু কাতেকু, ইকুগৰাওইকুবালিকা।

তাণ। শীতল, বলকারক, স্বাদ্, আর, পিরজনক ও তিক। ইহার দারা আম-শোধ, আশারী; তৃষ্ণা. অরুচি ও বাতরক রোগ নিবারিত হর। নীরক্তাবস্থার ইহার শাক আহারার্ধ ব্যবদ্বের। ইহার বীজ অথবা সমস্ত অংশ গ,হনীর। ন্মাত্রাও মাধা

### भातिवादत्रम् ।

্ কৃষ্ণ শারিবা। ছিন্দা করিয়াবাৎসা। ইরৎ জনুক বং পত্তা সুগদ্ধা কলফন্টিকা। কৃষ্ণাভূ শারিকা শ্যাবা গোপী গোপবযুগ্ত সার শুক্লশারিবা। ছিন্দী খোয়ায়িয়া সাও।
ইয়দপি অছ ক্ষৰ পত্ৰা দুখগৰ্ডা ত্ৰঙতি উহ'ও।
মবলা শারিব। গোপী খোপকন্যা কুশোদ্মী।
ক্লোটা শ্যানা গোপবল্লী সভাক্ষোভা চ চন্দন।।

প্যামাপদেন কৃষ্ণা খেডাপি খারিবা কথাতে সাখেতেন সারিবা পদ্স্য প্রযুক্তজুত্।

इत्राखनाः ।

নারিবা যুগল থাদু বিজ্ঞ শুক্রকর প্রক্র।
আগ্নিমান্দ্র। ক্রিটান কাসামবিধনাশনমূল
দোৰক্রাত্রপ্রকৃত্বলাৎ পর্য ব্রাৎ রুসার্নন্।
উপদংশিক রোগল্প সর্প্রক্রিকার্নুথ।
আমবাত বাতরক্র স্ভ্রোগাংশ্চনাশ্যেগ্র ল

শ্যামালতা ও অন্তমুস।

সারিবা দই, প্রকাব ক্ষণ্ণ ও খেত।
এই উভরবিধ শারিবার সাধারণ নাম
খ্যামা এবং তন্মধ্যে ক্ষণ শারিবার প্র
জামপত্রের ন্যায় ইহা সুসন্ধি ইহার
পর্যায় এই 'কেল্ছ' টকা, গোপা ও
ও গোপ বধু।

খেত শাবিবার পত্রান্ত জামপানের নাার এই লাজার অভ্যন্তরে তুম্পের ন্যার পদার্থ বিশেষ থাকে। ইহার পর্য্যার ধবল., গোপী, গোপকনাা, কৃশোদারী, ক্ষোটা গোপবল্লী, লাজাক্ষোতা ও চন্দনা।

তা । শাবিবাছর স্বাদু, সৃত্ত জনক, তারু, বিষয়, ত্রিদোষ নাশক, বর্ম্ম কারক, মৃত্রকর, বলবর্দ্ধক, বৃষ্য ও রসায়ন।

প্ররোর। অধিমান্দ্য, অরুচি, বাস, কাস, আমক্ররোগ, বিষদোষ, রক্ত প্রদর, জ্বরাতীসার, উপদংশিক বিষ্ফাত বিবিধ বিফার, সকল প্রকার চন্দ্রবোগ, আমবাত বাতরক্ত ও অবিধি পারদ্দেবন জাজ বোগ সমস্ত ইয়ার স্বারা প্রশ্যিত হয়। ইহার মূল অভাবে সম্ভ অংশই গ্রহ্ণীয়। মাত্রা ৪ মাষা।

### स्थाम् नी।

मूबान्नाम् एडाका ६ वीवकत्मारिक्यार मण्डः वीवकत्मारिक्षममः खक्रत्ना वनवर्षमः ॥ वक्रत्नावद्दा हृद्दा नम्प्रत्वाक्षीनमण्ड मः। वनायनः भवर वृषा चात्रुवाः शृक्षिः स्व छः॥ माजः । सावकाः।

সুবান্লী, ষানুভোথা ও বীরক্ষ এই
সকল শক্ষ পাল্মনিছরির সংস্কৃত নাম।
ইতা অধিবর্দ্ধক, শুক্তজনক, বলকর, রজ-দোষ নিবাবক, জ্বা, কামোদীপক, রসারন;
র্ষা, আযুষ্য ও পুষ্টিকারক। শুক্তবৃদ্ধির
জন্য ইহার চুর্বাতি ভোলা। ত পোয়া দুর্গ্ধ
ও কিঞ্চিৎ চিনির সহিত পাক করির।
সেবনীর। ইহার ক্যাওও সর্কাদা ব্যবস্থা
করাসাব। মান্তা ৪ মাধা।

### व्यमद्भवती ।

खमत्रवर्त्ता, त्रवादती ७ स्वानिनी धरे छिल मालमात मरकृष्ठ नाम । हेरा दल कात्रक, त्रवा, त्रमात्रन, सृखकत, स्वक कनक, शृष्टिकात्रक, कृष्णा निवातक, त्रक विद्यांशक छेशप्रश्य दिव खाक दिविध भोन विकृष्ठि निवात्रक । धरे मछात्र सृत्र वाद्यांशा साजा ह साथा ।

### পাতাল গুরুড়ী।

ছিলিছিটো মহামূল: পাডাল গরুড়াক্ষয়:। ছিলিছিলী: পর\ বৃষ্যা কফল্প: প্রমাপহ:॥ যাত্রা ২ মায়কৌ।

পর্যায়। ছিলিহিণ্ট, মহামূল ও পাতাল গরুড।

থা। বলকারেক, বায়্নাশক ওচকফর। এই লভার সমস্ত তাংশ গ্রহণীয়। মাত্র! ২ মায়া।

# িদ্বিতীয়োহধ্যায়ঃ।

### রসায়নবর্গঃ। আমলকী।

নিজাস্তকনাখ্যাত থাকো তিয়াফলাম্তা ।
হরাতকা সমভাক্রীফলং কিন্তু বিশেষতঃ ॥
রক্তপির প্রমেহন্ত পারং বৃহাৎ রলায়নন্।
হার বাতং তদল্লভাং পিনং মাধুর্যা লৈত্যতঃ ॥
কফং কল কলায়ত্বাং তলং ধাক্রাক্রিদোর্যজ্ঞিং ।
মক্ষাস্যা হরতি প্রান্তিং তৃহাং দাহং বনিং জমন্ ॥
যাস্যা যাসা ফলসোহ বার্যাং ভবতি যাদৃশম্।
ভদ্য তদোর বার্যাণ মক্ষানমাপ নিন্দিশেং ॥
নারা ৪ মাব্দাঃ।

### द्धांमज रो।

আনলকী, আমলক, পাত্রী, কিষাফলা ও অমৃতা এই গুলি আমলকার নাম। আমলকী হবীতকার নায়ে গুণ বিশিষ্ট, বিশেষভঃ ইহা রক্তপিত্ত ও প্রমেহ নাশক ও বলকারক। অম রদ থাকাতে বায় নাশক, মিষ্ট ও দীতল বালয়া পিত্রনাশক রুল ও ক্যায় বলিয়া কফ নষ্ট করে। অভএব আমলকা ত্রিদোধ নাশক। আম-আমলকীর মক্তা প্রমা, তৃষ্ণা, দাহ, বমি ও অম্বের্মাণ নিবারণ করে। অধিকত্ত যে ফলের যে গুণ নির্দেশ করা যাইবে তাহার মজ্জারও দেই গুণ জানিবে। আমলকীর মাত্রা ৪ মাধা।

#### চন্দ্রম্।

চজ্জিকাচর্চ্চছক্রী চ পশ্ধমেছন কারিকা।
নন্দিনী কারবী শুক্তা বাসপুত্পা সুবাসর।
চক্রশূর\ ছিড়া হাড্ডেল্লোডিসারিনাম্।
অসুগ্রান্ড গদছেমি বলপুটি বিবর্দ্ধনম্॥
অসুগ্রাজ্ঞান্তঃ
মান্ত্রাক্রান্তঃ
স্বাজ্ঞান্তঃ
স্বাজ্ঞান্তঃ
স্বাজ্ঞান্তঃ

#### श्लिम।

চন্দ্রিকা, চর্মাও গ্রী, পশুমেহনকারিকা, নন্দিনী, কারবী, ভিদ্না, বাসপুষ্প, ও স্থাং-সরা এই গুলি চন্দ্রপুরের প্র্যায়। চন্দুপুর হিকা, বাত্তপ্লমা, অক্সমান ও ব ভ-রক্ত রোগে উনচা ক এবং বলক বছ ও পৃষ্টিকনক। এই বৈজন ম বা ভ্রামান

### চতুৰীজম্।

মেথিকা চক্রশ্রশ্চ কালাভালী থবানিকা। এতচতুইটার যুক্তং চতুন্ধীল নিতিকাত্ত্য। ভচ্চূবং ভক্ষিতং নিতাং নিহন্তি প্রনাম্যম। অজীবং শূলমাগ্রানং পার্শ্রশং কটিবাধান্। মাতা ২ মাধকৌ।

#### ठावमाना ।

মেৰি, চল্ৰশ্ব ক্ষেজীরা ও ম্মানী এই চারি জব্য একত্র সংযুক্ত করিলে চতুকবী জ বা চারদানা কহা যায়। প্রকাহ চতুকবী জ চূর্ব সেবন করিলে বাহুরোধি অজীর্ন, শূল, আগ্রান (পেটকাপা), পার্শ শূল ও কটির ব্যথা দূর হয়। মাত্রা ২ মাধা।

### চোৰচিনী ৷

मीशासत्र वहां किकिसिटकांचा विकिश्वित् । विवसाधामभूक्त्री संकृत युक्तिदशीक्षिणे ॥ व्याख्याधिमश्रेत्रात्रभूषा १९ उत्तरमास् । व्यादशिक्ति विद्यादश कित्रभीयस्माभिने ॥ माजा ३ मायकः ।

#### তোপচিনি।

এই দ্রব্য দ্বীপে জন্মিরা থাকে ইয়া
এক প্রকার বচ। এই দ্রব্য কিঞ্চিৎ তিক্ত
উষ্ণ, অধিদীপ্রিকারক ও নান্দ্রন্ত্র
শোধক ইহা মলবন্ধা, আধান (পেট্রালা)
শূল, বাতব্যাপি, অপক্ষার [মৃনী] জিল্ল ও গাত্রবেদনা দূর করে, বিশেষতঃ ক্রিন্ত্র রোগে [উপদংশ বিশেষ ] বিশোষ ক্রিন্ত্র । ইহার মাত্রা ২ মারা।

#### ভল্ল ভক্ষ।

ভলাতক । তিবুপোক্ত মরুকোংরকরে হিরিকঃ ।
তথৈবাগ্রিমুখী ভলাবীরবৃক্ষণত শোফকৃথ ।
ভলাতকফল । পাক । বাদুপাক রস । পদু ।
ক্ষাম । পাচন । স্কি । উল্লোভ্য গেছ দিছে দন্য ।
ক্ষাম । পাচন । স্কি । উল্লোভ্য গোদুহম্ ।
ক্ঠালোগিছনী গুলুলোফালাহ অস কিমীন্ ॥
তথ্যজ্ঞা মধুরো ব্যো বৃংহ লোবাছ পিডছা ।
বৃত্ত মারুকর । বাদু পিডল্ল । কেশ্য গিলুল ।
ভলাতকঃ ক্ষাঘোষ্ট প্রকলো মধুরে । এই ।
বাভ্রেলেগেরানার ক্ঠালো এই নাগ্রিম্ন ।
হতিগ্রেল্জর্থিত । বিশেষণা কিমিরগান্ ।
হতিগ্রেজ্জর্থিত ।

#### ভেলা:

ভন্নাত্তক, অফুক, অফুকর, অগ্নিক, অগ্নিমুখা, ভন্নী, বীরধৃক্ষ ও শোকরুং এই গুলি ভেলার নাম ।পকভন্নাতক কল পাকে স্থাদু রস, লঘু, কখার, পাচক, শ্বিদ্ধভেদক शिक्काक, क्षमन, जानमाञ्चित्रीत । श्रीकातक। रेशान मण्डा भन्न, तमकामक श्रीकातक। रेशान मण्डा भन्न, तमकामक श्रीकातक अनाव शिक्त सामक। रेशान जान, क्षेत्र, प्रभी, प्रशी, प्रशी,

### ভাগ, পাসুন

वर्षप्रत्यक्षी पुष्पाक अजे.सुक्की **नामक गुन्न र** 191 राजकर ्वित्य मंद्रक्षे**क शबस्यर्**। ा का यह को जा कम एड श्राम केरालि । भागकार राष्ट्री । विश्वविद्यान भाषामा । अस्य । হলালন্য দেখা হলাক ইভি আনুতা। 有华海市的 医内侧结节 美超级 有效的糖品 अंद पर नाम का भर गाउँ र १८ श्रीका भिका भागिक है। किञ्चन एक । इस्ते १० भागांत्र विक्रमी हिस्स् ॥ া, মান্টালো গালেলারণ হৈছাবুলছা ( ्याप्तर राष्ट्रक चक्कारलाया कराही शरद्रो 🛊 (2014) 15日 (2015年1215 ) 海岭市 特別(新港客) 1 সভাভত ভারপ্রাক্ষীত মন্ত কৈশিংক্রনাসপি য প্ৰকাল বৰ্ণ নিৰ্মান জিলাভাই সাইবৰ্ণ নিৰুত্ব সিম্পাৰ্থ লাইবৰ্ণ ই জন্মত ব নৰ ্ব্যুত ক্ষমৰাজ অধাপ্ৰীলে (मान्य) (मानामा गाना (२०) (तम क्षिणिय) हे देखा । লী বিভূত বিশ্বীয় ভেলচিকাশোর পাছস্থালয়ে কৈলিয়ে জেইয়েছে ছ ম, তাতির বালেয়াতা, ভালালয়াজা**পার্য্তি** 化分类性 化水气炉放射 经原证价 鞣酸原射性 群集 ন্নবাহা বুলজার মুখ্য পরের প্রাঞ্জনার্থকার 「劉治の帝」な同の日本(村の村の町で 現代的)村井りま सुष्ठतनः १ वर्षे वसुर दश्चा कर भूषा कि गाँचा नि गाँवा है। श्वरण। वृत्र विकरेश्वर का के बाव्य वृत्रिकरें। पुटान मुद्ध (स्टब्स्स लगुरानू कोल) बार्भकर। इत्तर अञ्चलको निक्र कार्योक्कर अस्तरहरूष् व मभाग इस्तामकार स्थापन समाप्त खनाना र भी दगक्क । আয়তে প্রপাদপা সক্ষতার এতাহত সভাপিতা ভ শীতাত্তা (শশিক্ষ) শ এগ্রন্থ রন্ত্র সুক্ষরিত

ছেয়াড । মহিবাক তুলাবপর । সংপশ্বরাগোপন ।
ভূকাত পুন দ্বুগড়িভ বিধিনাপ্রালা পরীকা ভড়ঃ।
বক্ষেত্রভাত তপনে বিলয় । প্রাত্তি
ক্লিয়াডিকোক ললিলে পর্যান সমানাঃ।
প্রাহ্যাঃ ভ্রজাঃ পরিহরেলিরকাল জাতাললার বর্ণসম পুরবিগড়বর্ণান্।
এডসা নির্যানো প্রাহ্যঃ, মাত্রা : মাহকৌ।
গুণুগুলু।

श्वन् खल्, दमवध्न, कहेत्य. दको भिक, পুর, কুভোলু, বলক, মহিধাক ও প্রব-क्य अहे शिल हेरात नाम । अग् अल् भाष्ठ का**डी**य गथा गरियांक, भशासील, क्र्मूत, शचा ७ श्विगा। शश्यिक छ्रा-श्रमूत वर्ग खगव ७ कड्ड (भव ना। य महानील धन् छन् छा छिन्य नील्पार्व, क्यमाथा ए ग्रल्य वर्ग क्यरनय ना। इ, शवा छश् छल् मानित्कात नाग छ दित-ণ্যাক্ষ গুণ কুৰ সদৃশ। মহিধাক্ষ ও মহানীল তগ্তলু হতিগণের পকে হিতকারক, কুমুদ ও পদা নামক গুগতুলু **(पार्के मिट्ये (वाट्ये ब्रिक्ड इय,** समूराज्ञात्वं शत्क वर्ष छत् छन् र वात-হার্যা ইহার আভাবে মহিষাক্ষ তগ্গুলু बादशांत कता माय। गुग्ग्लू विभान णिक, डेक्शवीर्थ, शिव कन्क, गत, कशान, करू, शारक करू, क्य, लघू, ७४ च्यात्मत्र मश्द्यायक, वलकातक, चरत्र छे एक य जनक, त्रमात्रन, जिम्ही शक **७ निव्हिल, हेरा करु, वार्, जा, जा**नही, त्मादवान, त्मर, व्यक्षेती, वानु, नवीदवद ट्रिंग, कुडे, बामदाक, शिक्का, श्रष्टीदतात, त्याथ, कार्णा, भड़माना । किम नाम कटत । देश याध्या दश्क् वायू, कवात ৰ্ণিয়া পিত ও ভিক্ত বলিক্লা কফ নষ্ট इस्त अख्या श्रम् एन् जिलाय मानका ন্তৰ ধন্তস্ পুষ্টিকারক ও বলবদ্ধ ক প্রাতন গুন্তস্ব চিক্ত এই বিশ্বন । ন্তন গুন্তস্ব চিক্ত এই বিশ্বন, অর্ণ দদশ উচ্ছল, পক অব্ ফলের ন্যার ও পিচ্ছিল । প্রাতন গ্রগ্রু ভক্ত, তুর্গক, স্বাভাবিক বর্ণাদি রহিত ও বীর্ষ্য হীন । গ্রগ্রু সেবন কালে আয়, তীক্ষ ডব্য, অভীবি ভোজন, মৈগুন, পরিশ্রম, রৌজ্পেরা, মদ্য ও জ্বোর প্রিভ্যাগ করা উচিত ।

गृग्गृत्रक मक्ल भक्राप्राम छेर-ণা হয়, গ্রীম ঋতুতে স্থাসভাপে সভা-পিত ও শিশির ঋতুতে হিমার্ত হইশা উহ'রা গুগুপুলুনামে নির্যাদ বহির্গত करत्र। अर्ी, सहित्यत हम्मूः, श्रामतानमनि, जमत ७ क्म्म श्रुण এই शांठि शन. दर्शत नााय वर्गबुक मांह अकात गृन्नु मृहे হয়। যে গুগ্লু অগ্নিতে নিকিব হইলে জলিয়। উঠে, স্বর্গভাপে জবীভূত र्य ७ डेक्कल निकिश रहेल गलिया कटलत न।।त रहेत्रा यात्र । छ।र।रे उँ५ কৃষ্ট ও প্রাহ্য। যাহ। পুরাতন ও যাহার বৰ্জিলার সদৃশ ও গন্ধ পুষের ন্যায তাহা অপক্ষ। এই রণ গুগ্গুলু खेषशार्ष वायदाय अत्र। कर्छ । नरहा गुर्ग्नुव माजा २ माभा।

### म्बली कम्य ।

डांश्रम्भी जू विष्टि यूंननी প'त्रकोर्डिङ। मा दिवा कीर्डिडा श्रोद्धः त्येडा इंग्लंतम् द्धिशः । त्येडा स्प्लंशित (श्रोद्धा खुशः) ह त्रमात्रमी ॥ सूननी मधुता त्या। मीट्योद्धा व्रम्नी श्रद्धः ॥ खिका त्रमात्रमी वृद्धि श्रम्भानामिन स्था।

### कानम्नी।

তালমূলীকে মুণলীকল বলে। ইহা খেত ও কফচেদে গৃই প্রকার। তথ্যবো খেতমুণলী স্বল্প গুণোপেত, কৃষ্ণমুশলী উংক্**ট্রপ্ত**ণ বিশিষ্ট ও রসাধন।

তা। মধুর, বলকাবক, উষ্ণবীর্থা, পৃষ্টিকর, গুরু, তিব্রু, বদাসন, বাযুনাশক ও আর্শ: প্রশামক। ইহাব মূল ব্যুবহার্থা, মাত্রা ২ মাধা।

### भटावती महाभटावती।

দাভাবরী বহুসূতা ভীক্ল রিক্ষাবরী বরী।
নারাযনী দাতপদা লভবার্যা চ পবিরী ।
মহালভাবরী চ না লভমুলার্ক কঠিকা।
সহস্র বীর্যা মহজী গুষ্যাক্রা মহেলিরী ।
লভাবরী প্রক্রং দাজা ভিকা হাদী রলায়নী।
মেষারি পৃথিদা রিক্ষা নেতা গুলাভিসার্কিং ।
সক্ষমনক্রী বল্যা বাতপিলান্ত মেহজিং ।
মহালভাবরী মেধ্যা হুল্যা র্ল্যার্নী ।
দাভবার্যা নহুত্রা প্রায়নী ।
দাভবার্যা নহুত্রা প্রায়নী ।
দাভবার্যা নহুত্রা প্রায়নী ।
দাভবার্যা নহুত্রা প্রায়নী ।

শতাবরী ও মহাশতাবরী। পর্যায়। শতাবরী, বত্ত্তা, ভাঁক, ইন্দীবরা, বরী, নারাষণী, শতপদী, শত-বীর্যা, ও পীবরী।

मरामछारतीत পर्याप्त । मरामछा-दती, मछम्त्री, खर्फका छिका नरखनीया, सर्छो, सगारशास्त्रा ७ सरहानती।

তা। শতাবরী গুল্প, শীতল, তিক্ত, খাতু, রসাবন, মেগাংছিক, অগ্নিকারক, পৃত্তিকর, স্নিন্ধ, চকুর হিভকারক, শুক্র-জনক, স্থনে মুধোৎপাছক, বলকারক ও বারুনাধক। ইছার মূল প্রাহ্য, মাত্রা ৪ মাধা। ইহা দারা ওাল, জাতীনার, সক্তপিত ও মেহরোগ উপদ্যাত হয়।

মহাশভাবরী স্বরণখন্তি বছ ক, জ্বা, বলকারক, রসারন ও শীতল বীর্যা। ইহা হাবা জ্বর্শঃ, গ্রহণী ও নেত্রবোগ উপ-শমিত হয়।

#### ভুম্বাক:।

ভ্লরাজো ভ্লরজো যার্কবোভ্ল এব চ।
আলারক কেলারাজো ভলারঃ কেলারকনঃ মূ
ভ্লার কটুকপ্তীজ্যে রুভোজঃ ক্ষরাভ্লথ।
কেলাপ্ত্রঃ ক্রিমিখাল কাললোধানগাও মূহ মূ
লথে রিলায়নো বলাঃ কুঠনেত্রলিরোরিল্থ।
নাত্রা নায়কো।

### ভীমবাজ হিন্দী ভঙ্গরা।

পর্যার। ভূসবাল, ভূসরজ, মার্ক্র, ভূস, অঙ্গারক, কেশরাজ, ভূসার ও কেশ-রঞ্জন।

তা। কটু, তীক্ষ, রক্ষ, উষ্ণ, বাত-শ্লেমনাশক, কেশ, ত্বক্ত দত্তের হিত-কারক, রসায়ন ও বলকারক।

প্ররোগ। ক্রিমি, খাস, কাস, শেথৈ, আমক্ষরোগ, পাণ্ডু, কুষ্ঠ, নেত্ররোগ ও শিরংশীড়ার প্ররোজ্য। ইহার সর্ব্বাংশ ও স্থান গ্রহণীয়। মাত্রা ২ সাধা।

কেশরাল অর্থাৎ কেন্ডরির। ভূদরাল জাতীর ক্লুপ বিশেষ। ভীমরাল অপেকা ইহা ক্লুল হইরা থাকে। উচ্চরের গুণ প্রায় একপ্রকার, কোন কোন হলে ভীম-রাজ অংশক্ষা কেন্ডরিয়া হারা অধিক উপকার পাওয়া যায়। যাহা হউক লব্ধ-ভূলেই ইহাদের একতীর প্রিবর্জে ক্লার্ডী ব্যক্ষার ক্লয় ঘাইতে পারে।

পর্যায়। শাল্মলী, মোচা, পিছিলা পূলণী, বক্তপূজা, ছিয়ায়ৄঃ, কণ্টকাড়াা ও তুলিনী।

শুণ। শীতল, আসাদে ও পাকে স্থাত্ন, রসারন, কফবর্জ ক, পিচ্ছিল, ধারক বলকর, লগুপাক ও শুক্রবর্জক। ইহা পিত্র, বাতরক্ত ও বক্তপিত্র বে'গ উপ-শম কবে। ইহাব পুলা ছত ও সৈক্ষবেব সহিত পাক করিবা খাইলে প্রদর বোগ নিবাবণ হয়। শাল্মণীর মূল ও তুগাদি গ্রহণীয়া মাত্রা স্যায়।

# তৃতীয়ো ২ধ্যায়ঃ।

বাতলবর্গঃ।

#### शानाकः।

ধানাকং ধানকং ধানাং ধানা ধানেযকং তথা।
কুনটা ধেনিকা ছতা ক্তুপুরু বিত্রকন্।
ধানাকং ত্বরং বিক্রমন্ত্রাং সূত্রকং কার।
তিকংকট্জ বাহাঞ ছীপনং পাচনং সাত্র্য়
জরল্প রোচকং আহি মৃদুপ কী ত্রিবোষণং।
তৃজ্ঞানাহ বিষয়াস কাল কাশ্য ক্রমিপ্রন্থ।
আন্তর্ধুণ্ণ মানু বিশেষাং পিতনা পিতং।
অসু ফুল্পুণ্ণ মানু মানু মানুকো।

#### भू निग्।।

ধানাক, ধানক, ধানা, গানেবক, কুনটা, গেনিকা, ছত্রা, কুস্তব্যুক্ত ও বিত্যাক এই গুলি ধনিবার নাম। ধনিরা কষার রস, লিগ্ন, বলনাশক, মৃত্যকারক, লঘু ভিক্ত, কটু, উপ্পরীর্ঘা, অগ্নিদীপক, পাচক জ্বন্ধ, বোচক, গ্রাহক, পাকে মিউরদ ও বিদোৰ নাশক। ধনিরা ভ্ষ্ণা, দাহ, ব্রি, খাল, কাদ, কুণ্ডা ও ক্রিমিনই করে 1 আন্ত (কাঁচা) ধনিরাও এই

গুণ, বিশেষকঃ উহা পিতনাশক ও স্বান্ত। ইহাৰ ফল বাৰহাৰ্য্য, মান্তা ২ মাৰা।

### जाडमी।

অতসা নালপুজ্পা চ পাৰ্কতা স্যাদুশ জুলা।
অতসা মধুরা তিকা বিঞা পাকে কটু মুক্তিঃ ।
তৈতা দৃক্ অক্রতাতমা কন্দপিত বিনাপিনী।
কাসাতিসারহরণা ত্রপদংশোধনী মতা।
অস্যা বীলংগ্রাহ্য দাক; ২ মাহকৌ।

### ভিসি, মদিনা।

গতনা, নীলপুন্দা, পাধ্বদী, উমা ও
ক্ষা এই গুলি দিনার সংস্কৃত নাম। জিনী
নার, দিজ, লিগ্ধ, পাকে কট্, গুরু, উষ্ণ
দৃষ্টিশক্তির হাসকারক, শুক্ত ক্ষরকর,
বায়িশিত কফনাশক, কাম নিবারক, অভিনার প্রশাসত ও লগদোশক। তাম শোধনার্গ পুল্টিশ রূপে ব্যবস্তুত হইয়া থাকে।
ইহার বীজ গ্রহণায়, মান্তা ২ মাধা।

### शाहेला।

পাটলা পি ছিলা প্রোকা সা বিধা কাস বারিণী। শিশ্ববোন্যোহরেলাহৎ ত্রণদাহ নিবারণী।। অস্যা বীলং গ্রাহাণ মাত্রা ২ মাবকে।

### विधिषांमा।

বিভিদ্যনার সংস্কৃত নাম পাইলা ও পিছিলা। ইহা জিন্ধ, কাসন্থ মেচুও গোনির দাধ নিবারক। ক্ষত স্থানের জালা নিবারণার্থ ইহার স্থানিক প্রয়োগ করা যায়। এই বীক্ষের মাত্রা ২ মানা, প্রান্ন জলে মর্জিত বা শিল্প করিয়া প্রয়োগ করা রায়।

### जीख्ये वय ।

चीखरीखर रैनिनहीकर रेनेड)योखक शवारछ।
बृद्धकर मीडरीजर त्रावृच्चवंड मियांत्रवम् ।
बांडवर्गरानीयनर ध्योकर खेळरम्य मियांत्रवम् ।
चांद्याना निवत्रकामा (यांकाः नीडक्यांत्रकः ॥
वांद्याना नव्यकामा (यांकाः नीडक्यांत्रकः ॥

### हेमन्त्र म ।

শীতবীজ, শৈশিরীক ও শৈত্যবীজ এইগুলি ইশপ্গুলের সংস্কৃত নাম। ইহা মৃত্রকারক, উষ্ণবাত নিবারক, বস্তিদোব সংশোধক, শুক্রমেহ প্রশমক ও আগ্রান নিবারক।

এই বীজের মাত্রা ২ মাবা। শীত কৰার রূপে অর্থাৎ রাত্রিতে ভিজাইযা রাথিয়া প্রাভে সেই জল সেবনার্থ ব্যবস্থাকরা যায়। ক্যাথাদিও অপ্রবোজ্য নহে।

#### জগর।

काकांबुनाया जगद्र क्षितः क्षु नः मञ्ज् । जनद्वः निश्वनद्वः व्यव्यक्षे च वर्षिन् । छगद्र वृद्धः ना। व वाष्ट्र व्यक्षः नच्या जम । विवालकाद्र मृजाकि द्वागरवाय जमानवन् । व्याचा जगद्रकाकारव नीजनो कन्छना बूटेवः । जनद्वार्ष्ट्रभः श्रीवाः शावतः ।

### ভগরপাছক। ।

কালাজুলার্যা, তগর, কৃটিল, লবু,
নংনত এইপুলি তগরপাছকার পর্যার।
অপর এক প্রকার তগর আছে তাহার
লাম পিওতগর, রওহতী ও বহিণ। উতর
প্রকার তগরই উষ্ণ, স্বাহ্ন, স্বিশ্ব ও পদু।
ক্রপ্রসাহক। সেবনে বিবলোব, অপুসার
কুল, পেত্রবোগ ও বাতাদি ছোব ত্রের

নষ্ঠ হয়। এই উভয়বিধ তগরের মূল গ্রাহ্য, মাত্রা ২ মাধা। তগর পাতৃকার জভাবে শীক্ষী অর্থাৎ শিউদীছোপ প্রযুক্ত হইতে পারে। উহারও গুল ও এ মাত্রা তগরের ন্যায়।

### श्वर्वन्ती।

স্বৰ্বলী রক্তফা কাকামুং কাকবল্লনী। স্বৰ্বলী পিরঃপীড়া\ ত্রিলোষান্ হতিদুখন। । স্বসাঃ স্ক্রা\শো গ্রাহ্য যাত্রা ২ মাধকে।।

### कर्वकी कृष्टे।

পর্য্যাব । স্কর্ণবন্ধী, রক্তফলা, কাকার্
ও কাকবল্পরী ।

গুণ। ত্রিদার নাশক ও শুনে দুগ্ধ জনক। প্ররোগ। শিরঃণীড়া বোগে প্রবোজ্য। ইছার সমস্ত অংশই গ্রহণীর, মাত্রা ২ মারা।

### गक्र अमात्रशी।

প্রসারণী রাম্ববলা ভদ্রপণী প্রভাপনী।
সরণী সারণী ভদ্রা বলাচাপি কটভরা ।
প্রসারণী গৃরুদুরি)। বলসদ্ধান কৃৎসরা।
বীর্যোভা বাভদ্রং ভিক্তা বাভরকককাপছা।
এতস্যাঃ সর্বা৲শো গ্রাহ্যঃ। বাবা ২ বাহকৌ।
গল্পভাদুল্যা।

পর্যাষ। প্রসারণী, রাজবলা, ভদ্র-পণী, প্রভাপনী, সবণী, সারণী, ভদ্রা, বলা ও কটছরা।

তা। গৃহদ, শুক্রজনক, বলকারক, লক্ষারক, লর, উফ্লবীর্য্য, বারুনাশক, ভিক্ত ও কফ নাশক, ইহার দ্বারা বাতরক্ত রোগ উপশ্রিত হয়। এই লভার সমস্ত অংশই প্রহণীয়, মাত্রা ২ মাবা।

## চতর্পোইখ্যায়ঃ।

शिखन्नवर्गः।

वात्रिश्री देववामक ।

वाजिश्वी क्षिकांत्राटिक्वांत्र टेनेवनक्ष्ड । वाजिश्वी क्षिडिकांत्रको वाद्यो त्रज्ञ क्ष्यूर । द्यावज्ञत्रको क्ष्या त्यांतिक क्षत्र त्यांवक्ष । टेनेवांत्र पूर्वत खिक्य मधुत्र पीखन त्रण् । सिक्य वाष्ट पुषा शिक त्रक्षकत्र वृत्रभात्रम् ॥ क्षान्यांगांका २ मावटको ।

भागा ७ (महामा।

शिकी कनकुछी, तमरात्र।

পর্যার। পানার সংস্কৃত নাম বারি-প্রণী ও কুন্তিকা। শেহালার সংস্কৃতনাম শৈবাল ও শৈবল।

গুণ। বারিপণী শীতল, তিক্তু, লবু, স্বাহু, সর, কটু, ত্রিদোষ নাশক, ক্লক্ষ, রক্ত জরও শোধ নাশক। শৈবাল ক্ষার, তিক্ত, মধুর, শীতল, লঘু ও লিগ্ধ, ইহা দাহ তৃষ্ণা, গৈত্তিক ও রক্তগত জর নিবারণ ক্রে। উভরের মাত্রা ২ মাবা।

### किन छरी।

কলিছখণী ভিজা স্যাদ্বলক্ষ্ বন্ধিবর্দ্ধিনী। অবীর্ণং নিধিলং ছঙি বালাগীনার নালিনী ॥ য়বজারমুগু বান্তিং গর্জিব্যাপ্টাপি সংহয়েৎ ॥ অন্যা মূলং প্রাহ্যং বাত্রা > সাবকঃ।

### क्लिक्सर्शी।

কলিকণ্ডী তিক্ত, বলকারক ও আমি বর্জক। অজীন ও বালক দিপের অতি-শার রোগে ইহা ছারা উপকার হয়। যব-ক্ষারের শহিত সেবন করিলে বমন নিবা-রণ হয়। গর্ভাবন্দার বমন নিবারণার্থও ষৰক্ষানের সহিত প্রযুক্ত হইরা থাকে। এই লভার মূল প্রহণীর। মাত্রা ১ নামা।

### नाष्ट्रिकम्।

নাজিক। কালশাকক আছেশাকক কালকণ ।
কালশাক। সমাক্রচাৎ বাভকুৎ কফপোথক। ।
বল্যাংক্রচিকর বেধ্যাং র ক্রপিভ্রম । হিমন ।
অপিচ। নাড়ীচপাক। হিবিধ ভিকা ম্যুরথেষ্চ।

রকাশিষ্ট্র ডিফ্র ক্রিনিশ্ন । মধুর পিচ্ছিল পড়ি বিউচি ফ্ডবাড্র । অস্পর্থ এহণীয়া মারা ২ মাধ্রে।

#### নালিত।

নাড়িক, কালশাক, প্রান্ধশাক, কালক ও নাড়ীচ ইত্যাদি শব্দ নালিভার সংখ্ ত নাম। নালিভা অর ভেদক, স্কুচ্য, বার্জনক, প্রেরশোথ নাশক, বলকারক, ক্লচিজনক, মেধাবর্জক এবং রক্তলিভ্ত, কমি ও কুট প্রশমক। মধুর নাড়ীচ অর্থাৎ পাটশাক পিছিল, শীভল, বিষ্টভী, কফজনক ও বারুবর্জক। নালিভার পত্র ব্যবহার্য্য, মাত্রা ২ মাবা।

### भभभे ।

পণ্ পটি। বর্তিক্তক ক্তঃ পর্ণ ইক্ত স। ক্রিতং পাংল পর্যায় করা ক্তঃ নামকঃ। পর্ণটোহতি পিতাক্ত ক্রম তৃতা ক্ষম্মান্। সংগ্রাহী শীতসভিজ্যে হাহমুহ্ বাতলোক্তঃ এ এতস্য সন্ধাংলো প্রায়া, নাজ্য ২ বাবকো।

क्ष्मिंगफा। शिमी परम् शानका

পর্যায়। পর্য ট, বর্মজিক্ত, পর্য টক, পাংক পর্যায় ও কবচ। গুণ। সংগ্রাহী দীতল, জিব্তা, দাহ নাশক, বাগুজনক ও লঘু।

প্রবোগ। রক্তপিত, ভ্রমরোগ, তৃষ্ণা ও কফভরে প্রোচ্য। এই ক্তুপের সমস্ত ভাংশ গ্রহণীয়, মাতা ২ মাবা।

#### COBH: !

বেওসো নম্কঃ প্রোকো বাণীরো বল্প ভথা। অজপুষ্পাক বিদুলো রগঃশী ডাঙ্গ কী বিজঃ॥ বেডসঃ শীতলো দাহ শোলাদেশি যোলিকাক্ প্রণুৎ

ছিও বিদর্পকৃতভূত্র পিতাখার বফানিগান্। অস্য মুল শাখাগঞ্জাল্য মানা ১ মাযকঃ।

दवल, दनक ।

প্র্যাস । বেত্তম, ন্মুক, ব্নীন, ত্তুন, অনুপুজা, বিহুল ও শীত ।

ধুণ। বেতস শীৰ্ল, বানাধক ও কলশ।ভিকৰ।

প্রবোগ । দাত, শেথ, জর্মতি, বে'নি বোগ, বিসর্থ, কঠিন বত পিত্র ৩০ জন্মবা রোলে ব্যবহেষ । ইহাব মূল ৩০ শাগ এ প্রহণীয় । মালা ১ মুগ ।

#### रम्पृत्वम् ।

নিসুপ্তক" পরিস্যাগো নাছেযো জলস্মতন্ত্র। জলজোগেত শংলীতঃ সুধ্লভাতকে পন । জন্ম সন্ধাৎশো গ্রাভ্যে, মারা ১ মাবকঃ।

পর্যার। নিকুঞ্চল, পরিস্থার, নাদের ও জলবেক্স।

গুণ। ইহা শীকল, বাসু প্রকোণক ও কুটনাশক। ইহার সমস্ত জংস গ্রহ-বীল। মাতা > মাধা।

#### विकामः।

ইজলো হিজ্ঞলভাপি নিচুলভাগু অন্তথা। জলবেডস বংঘলা হিজ্ঞলোহয়ৎ বিঘাপছং। অসা বীজৎ গ্রাহাৎ যাত্রা ৬ রক্তিফাঃ।

হীজল হিন্দী সমুদক্ষ। পর্যায়। ইজ্জল, হিজ্জল, নিচুল ও অধুস।

গুণ। জলবেতদের ন্যার অবিকল্প ইহাবিষয়। ইহাব বীজ গ্রহণীয়। মাত্রা খনতি।

### नोगार्का।

নীলপুরি রহানতা ভার্মনী শতপ রিক।।
শাপাংসহত্র বীমনি চ শতবনী চ কার্তিতা।
নীলপুরি হিমাভিকা মধুরা তুবর হারেং।
কফপিতাত্র বীসর্প ভূষা দাহ সুগাম্মন্।
মাত্রা সমায়ক।

### गोगलि।।

গঠিত। নীশল্দী, হৈ।, জনভা, ভার্মী, শতাংদিকিং, শৃক্ষা, সংস্কৃথিকা ও শ্ৰুম্মী।

গুণা শাৰিল, ভিক্তি, মধ্ব ও চিম্ম। প্ৰেয়েগা। বফজ বফাগিবে, বাস্থা, ভুফোং, দুহ ও তুকেৰ পাড়াৰ প্ৰেছায়। মানা ১ মামা কাৰ্যা মানা ১ কোনা হটাত ২ ভোষা।

### (भडन्ति।।

দৃৰ্বাশ্ৰক্তা কু পেচেলামী শতনীৰ্যন চ কপাতে। খেও'দৃৰ্বা কৰ'যান্যাৎ ৰাদ্বী বলনা চ ছীবনী ॥ ডিক্তাহিমা বিদ্যান্তি ভূট্পিত ক্ষদ্বাহত্ৎ॥ ৰাজা ২ মাৰকে।

### त्यक्रम्स्।।

পর্য্যায় । শুক্লদূর্কা, গোলোমী ও শত-

গুণ। কৰাৰ, স্বাতু, বলকারক, জীবনী শক্তি সম্পন্ন, ডিক্ত ও শীতল।

প্রয়োগ। বিদর্শ, রক্তদোব, জ্ফা, পিত্তবৃদ্ধি, কফর্দ্ধি ও দাহ প্রভৃতিতে বাবস্থেব। ইহার মাত্রা ২ মাবা। স্বর্গের মাত্রা ২ জোলা হইতে ২ ভোলা পর্যন্ত ।

### ग अनुर्का।

वेवनूर्वाजू वेवानी यवनाको नेक्नाककः। वेवनूर्वा दिना बादशदिवी अदिवी नेष्ट्र । जिल्ला कवाशा नदूरा वाष्ट्रव्यकृत्रिणिकती। शांद्जुका वनानास कुर्वेतिक खडालवा।। अक्रमाः मूर्वार्त्वा अद्यान, योजा > मायकः।

नणम्का ।

পর্যার। গওদ্ধী, গঙালী, মং-দ্যাক্ষীও, শকুলাক্ষক।

তাপ। শীতস, সৌহজাবক, গ্রাহী, লঘু, তিক্তে, কথায়, মধুর, বায়ুজনক ও পাকে কটু।

প্রমোগ। দাহ, তৃষ্ণা, কফ, রক্তদোষ,
কুঠ ও পিতৃত্বর নষ্ট করে। ই র সমস্ত
অংশ গ্রহণীর। মাত্রা ১ মাধা। স্তরাচ্ব
ইহার রসই পানার্থ ব্যবজ্ঞ হইরা জাকে।
ইহার মাত্রা ১ ভোলা হইতে ২ ভোলা।
পর্যান্ত।

#### एश्मश्मी।

व्यन्तर्गाषी व्यन्तर्भाषे क्षेत्रेमांका विशासिका। व्यन्तर्भाषी व्यक्तमांका वृद्धि प्रकृषिवय्यनाम् ॥ বিদর্শ বাহাজিনার জ্বা ভূডাগ্রিরোহিবীঃ। অন্যা বৃদৎ প্রায়াৎ নাত্রা ৬ রক্তিকাঃ ৪

পर्यात्र । दश्मभन्नी, दश्मभानी, कीठ-माछा, जिलानिका ।

গুণ। গুরু, শীকল, রক্তদোষ, বিষ ব্রণ, বিদর্প, দাহ, অভিদার, ল্ডা, ভূজ, ও অগ্নিরোহিণী রোগে প্রয়োজা। ইহার মূল ব্যবহার্য। মাত্রা ৬ রক্তি।

### जुमैं। नहः।

पूरीनदर्शाह्रपाक्रपाहरः वहण्यस्यः। पूरीनदस्य निद्दा हक्तिस्य अनावनः॥ मार्वा ७३किकाः।

### हिली क् देनहा।

পর্যার। ভূমিশহ, দারদারু, বর-দারু পরচ্চদ।

গুণ। শীতল ও রক্তপিত শাভিকর। ইহার 4ল গ্রাহ্য। মাত্রা ৬ রক্তি।

### "পটোলপত্রম্।

পটোলপার পিরস্থা দীপান পাচন লগু। বিক্তাত্র্যাত ভবোত্ত অরকানজিনিপ্রপুত । নাতা হনাবকো।

### गटोमगत ।

প্টোলপত্র পিতন, অধিনীপ্রিকন, পাচক, লঘ্, স্লিগ্ধ, র্যা ও উক্লেমিয়া। ইহা সেবন করিলে জ্বর, কাল ও জিমি নষ্ট হর। মাত্রা ২ মাবা।

### व्यवायानः म

দুৰপাৰাণকং কীয়ী দুৰান্দা কীয়সকৰঃ। দ্বীৱিকো কুম্বপাৰাণো দুৰী বস্তাক এবচ ॥ পুরণাবার্থকো ক্রচ্যে মাজুফো জরপিভন্ত। 
পুলন্ধরোর্থন্যমঃ ক্ষানাগ্রাম বিমান্ত্রঃ
নাত্রা ২ মাবকৌ।

मध्यभाषाय । इसी मित्रदर्शामा।

গুর্মপাষাণক, ক্রারী, গুর্মাশা, ক্রার-সম্ভব, দীপ্তিক, গুর্মপাষাণ, গুর্মা ও বজাও এই গুলি একার্থবাচক শব্দ। ইংগ ক্লান, অনতি উফ্লবীর্যাও পিত্ত নাশক। জ্বর, শ্বা, হুজোগ, কাস ও আগ্রান রোগে প্রয়োজ্য। ইছার সমস্ত অংশ গ্রহণীয়, মাজা হ মাধা।

### পঞ্চমোহধ্যায়: ।

क्यम वर्गः।

#### রাম।।

রামা যুক্তরসা প্রস্যা সুষ্টা রসনা রস।।
এলাপনী চ সুরসা সুষ্টা ভৌননী তথা ।
রামান পাচিনী ডিক্তা গুরুষা কক্ষাডিলং।
পোন্যাস স্নীরাম্ভ বাডপুলোর্য্রাপ্যা ।
কান্ত্রার বিবাপীতি বাডিকান্য দাদিনী ।
বাজা ২ দাবকো।

#### बाजा।

রাখা, মৃক্তরুগা, রস্যা, স্থবহা, রসনা, রস্মা, এলাপনী, স্থবসা, স্থান্ধা ও প্রের্মী এই সমুদার রাখার পর্যার। রাখা আম ( অপক অরর্স) পাচক্র, তিন্তা, ওরু ও উষ্ণ। ইহা বারু কফ, পোথ, খাস, বাতরক্ত, বাতশূল, উদররোগ, কাস, অর, বিষরোগ ও অশীতি প্রকার বাতব্যাধি দূর করে। রাখার সমস্ত অংশই উষধার্থ ব্যবহাত হয়। মাঞা হ সাধা

### नाकृती बाबाटकप्रश

साकृषीज्ञत्मा माधजूषका शक्याकृषी।
सकूरकका कृष्णकाको त्र्याको विषयाणियी।
साकृषो कृषता किका कृष्टिकाक विमाणात्र ।
क्षित्वा वृष्णकाथ्विषका क्षित्र विभावा ।
योजा २ माधरको।

नाकुनी बाचाविटमंग । हिः नाह ।

নাকুলী, সরসা, নাগস্থগন্ধা, গন্ধনাকুলী, নকুলেষ্টা ভ্ৰুজদান্ধী, সুৰ্য্যালী ও
বিষনাশিনী এই গুলি ইহার পর্য্যার।
নাকুলী ক্যার, ভিক্তন, কটু ও উষ্ণ।
ইহা সর্পা, লুভা (মাকড্সা) র্শ্চিক,
ইন্দুর ইহাদের বিষ এবং জর, জিমি ও
ব্রণ নম্ভ করে। ইহারও সমস্ত অংশ
গ্রহণীর। মাত্রা ২ মায়া।

### मतिह्यु ।

বরিচং বেল্লন্ধং কৃষ্ণ মূখনং ধর্ম্ম প্রদন্।
বরিচং কটুকং তীক্ষাং দীপনং কফবাডলিং ।
উষ্ণং পিত্তকরং কৃষ্ণং খাস শূল ক্রিমীন্ ব্রেং।
ভলাত্রানি মধুরং পাকে নাডু)কাং কটুকংগ্রন্থ।
কিঞ্জীক্ষ্য প্রবাং গ্রেল্ম প্রসেকি স্যাদ্পির্গদ্ধ।
বিক্ষান্ত্রাকাঃ ।

### महिष्ठ।

মরিচ, বেরজ, কৃষ্ণ, উষণ, ও ধর্মপুত্তন এই গুলি মরিচের পর্য্যার। মরিচ, কটু, তীক্ষ, দীপন, বারু ও প্লেমা নাশক, উষ্ণ, পিত্ত কারক ও রক্ষ। মরিচ ভক্ষণে খাস, শূল ও জিমি দূর হর। আজ মরিচ পাকে মধুর, নাড়াফ, কটু, গুরু কিঞিৎ তীক্ষ গুণ বিশিষ্ট ও শ্লেমা নিঃসারক, ইহা পিত্তজনক নহে। এই বীজের মাত্রা > মাযা।

### खरी।

स्की विशेष विषय मानवर विषयक्षाम्।

উবণ কটুভত্তক প্ৰবেশ বহোষধন।
অতী ক্লচানবাভন্নী পাচনী কটুকালজুঃ।
ছিডোভা দৰুৱা পাকে ককৰাত বিবন্ধমুৎ।
কুবা সৰ্বা। ধৰিদাস পূল কাল ক্লানয়ান।
হুতি দ্লীপৰ বোৱাৰ্ল আনাহোদ্য নামভান্।
আন্মে প্ৰকৃষ্টেশ ভোৱাং প্ৰসায়বোৰি মধ।
সংস্কৃতি দলং ভলু গ্ৰাহি অঠাণ্ট্যো মধা।
বিব্ৰু ভেদ্নী বাতু সা কৰ্ণ গ্ৰাহিৰী ভবেং।
প্ৰভিবিব্ৰু ভেদ্নে সাং মভোন মলপান্তনে।
নাত্ৰা ১ নামকঃ।

#### स्त्री।

শুক্তী, বিশ্বা, বিশ্ব, নাগর, বিশ্বভেষজ, स्विष, क्रोडिज, मुक्रद्वत्र ७ मटशेवश थहे গুলি শুর্তীর পর্য্যায়। শুর্তী রুচিকারক, व्यागवार नामक, शाहक, करू, नपू. क्रिक्र, डेक, शादक मधुत्र, कक, वायु ७ दिवस ( मलापित द्वांध ) नामक, तल कांत्रक ४९ সর ( मलाबित প্রবর্তক ) বমি, খাস, শূল, काम, कृत्खान, भीनम (त्नाम) भाष, ष्यभः, ष्याबाद ( मूना ), छेनत्र त्वांश ए वार मान करता। य गकन खवा अधिक পরিমাণে আপ্নের তাণ বিশিষ্ট ও অলাংশ শোষক তাহারা মলকে সংগহ (জমা) করিরা রাখে, যেমন শুষ্ঠী প্রভৃতি; কিন্তু ভাষ্ঠী বিবন্ধ অর্থাৎ বাষু প্রভৃতি দ্বারা মলরোধ নিবারণ করে, জাতএব **देश कि क्र**ां शाहक हहें एक शांद्र ? हेरात छेखत करे छ्कीम विवस एएए मंकि जाए किन्न मन विभावत्व मंकि नाहे। এই मुरमत गाजा > माया।

### निश्रनीमृजय् ।

প্রতিক্ষ পিশ্পলীবুল বুৰণ চটকাপিরঃ। বীপন্য পিশ্পলীবুল্য কটুল্য পাচন্যলয়। কল্য পিতকর্য তেকি ক্ষরাভোল্ল প্রবৃ। चांगांद श्रीष्ट क्षेत्र प्रश्न विश्वचित्र वाज व्यवाशव्य ह माजा 3 वावकः।

### लिश्नग्न ।

গ্রন্থিক, শিপ্পলীমূল, উষ্ধ, চটকাশির:
এই গুলি শিপুলমূলের পর্যার। শিপুল
মূল অমিদীপ্তিকর, কটু, উষ্ণ, পাচক,
লঘু, রক্ষ, শিত্তকর ও ভেদক। শিপুল
মূল সেবনে কফ, বায়ু, উদর রোগ,
আনাহ (মুদা) প্রীহ, গুল্ম, ক্রিমি, খাল
ও ক্ষয় রোগ দূর হয়। এই মূলের
মাত্রা ২ মায়)।

#### **हवार**।

करवक्रवाच प्रविकां कविकां मा करबांचना । क्वाडुम स्वर्भ प्रदार विरम्भेचार सर्वाभवन् ॥ माजा > मायका ।

### करे।

চব্য, চবিকা, উৰণা এই শুলি চৰ্যের পর্যায়। চব্য পিপ্লী মূলের ন্যায় শুণ বিশিষ্ট বিশেষতঃ ইহা আর্শোনাশক। ইহার তুক্ ব্যবহার্য্য, মাতা ১ মাধা।

### अक्रवरिक्वत्रथः।

খাক এরও আদং শিতবো গভর্থ ব্যক্ত।
পঞ্চাপুলো বর্জনানো দীর্ঘদ্রেবার্যকৃষ্কঃ ॥
বাডারি ভক্তণ শ্চাপি কুবুক্স নিগদ্যতে।
রক্ষোহপরো রব্কঃ স্যা দুকুবুকো কুবুজ্ঞা ॥
ব্যাসপুক্ষশ্র বাডারি শুড়ু কুভানপ্রকঃ ।
এরও পুনা বর্রযুক্ষ প্রক্র বিনাগরে ॥
খুল পৌর ক্সীবভি নিয়ঃপীজোবর অরান্।
এর খান ক্যানার কাম ক্লুকার সাক্ষোম্ ॥
এরও প্রা বাডার্য ক্লুকার বিনাগনন্।
মুরক্ত হরভাপি পিডরক প্রকোপন্।
মুরক্ত হরভাপি পিডরক প্রকোপন্।
মাডার্যার্যকিশ্ল বর্ম পরিষ্

ককবান্ত জিন্দীন ছাত্ত বৃদ্ধিৎ সপ্তা বিধানপি । এরও কল মৃত্যুক্তৎ প্রস্মুক্তানিলাপবন্। অনুৎ প্লীবোদরার্লোছ্ন কটুক্ দীপন পরন্। ভদ্মজ্ঞা চ বিভূতেদী বাতস্বয়োদরাপবঃ। সাত্রা ২ মাধকৌ।

শুকু এরও ও লোহিত এরও।

ভক্ন ( দাদা) এরতের পর্যায। আমণ, চিত্র, গদ্ধহিত্তক, পঞ্চল, বহ্নমান, দীর্ঘদত, ব্যভ্তক, বাতারি, তক্ষণ ও কব্ক।

লোহিত এরতের পর্যায়। রু বৃক, উরুবক,, রুবু, ব্যাত্রপুচ্ছ, বাতারি, চঞ্ ও উত্তানপত্রক।

ত্ত্ব। উভয়বিধ এরওই মধুর উষণ ও থায়া।

এরওপত্ত বাছম, কফনাশক, ক্রিমি-নাশক ও রক্তপিত প্রকোপক।

এরওফল অতিশর উষ্ণ, বায়্নাশক, কট ও অভিশর অগ্নিদীপক।

প্ররোগ। এরও ছর শূল, শোধ, কটি ও শিরোরোগে, উদররোগে, জ্বর, ত্রধু, খাল, কফরুদ্ধি, জানাহ, কাল, কুঠ ও আমবাত রোগ নাশ করে।

এরও পত্র মৃত্তক্ষত্রোগে ব্যব-স্থের; ইহার অগ্রপত্র গুল্ম, বস্তি-খুল, কফ, বাত, ক্রিমি ও স্থবিধ বৃদ্ধি (কোম বৃদ্ধি) নিব্যেশ করে।

তল্ম, শূল, ফরুৎ, প্রীহা, উদর রোগ ও অর্শেরোনে ইহার ফল ব্যবছের।

ইহার মক্তা ভেদক, বাত শ্রেমা ও উদর রোগ নত করে। ইহার মূল ও তৈল সর্বদা ব্যবস্ত হয়। মূলের মাত্রা২ মাধা।

### তাৰ ল বলা।

ভাষ্ক্ষলী ভাষ্কী নাগিনী নাগবল্লী। ভাষ্কাং বিশ্বং কচা ভীক্ষোজং ভুবরং সরষ্ । বশ্যং ভিক্তং কটুক্ষারং রক্ত শিশুক্রং লঘুঃ। বলাং সোমাসা দেইজিয় মলবাভ প্রমাপ্যম্। হারা । মাযকা:।

#### शान ।

প্রধাষ । দাস্বলবলী, ভাস্বলী, নাগনী ও নাগবল্লরা।

তা। বিশাস, রোচক, জীক্ষা, উফা, ক্ষাস, সর, বাদ্যা, তিব্রু, কটুক্ষার, রক্তাপিরজনক, লাবু, বলকারক, শ্লেম নাশক, মুখের দূর্গল্প নিবারক, মলাপ-হারক, বাযু নিবারক ও শ্রমশান্তিকর। ইহার পত্র ও পত্রের রদ ব্যবহার্য্য। মাত্রা ৪ মাধা।

### विलः ।

বিজ্ঞা পাণ্ডিলা পৌলুবৌ মালুর ঞ্জিকাবিপি।

ঞ্জিকল জবর ভিজেনা প্রাথী রুজোহণ্টা পিডকুৎ ।
বাতরেম্ম হরো বলো। লয়ুরজন্চ পাচনঃ।
জনা মূলভুগ্ প্রাথা। যাত্রা ১ বাধকঃ।

### विष्न ।

পর্যাব। বিলু, শাণ্ডিল্য, শৈল্য, মালুর ও প্রীফল।

ত্ত্ব। ক্ষার, তিক্তা, গ্রাহী, রক্ষা, আমিবর্দ্ধক, পিতজনক, বাতশ্রেম নাশক, বলকারক, লাবু, উষ্ণ ও পাচক। ইহার ম্লের তৃক্ গুহণীব। মাত্রা ১ মাবা।

### গান্তারী।

গভারী জন্তপনী চ জ্রীপনী মর্পর্ণিকা। কাশ্মীরী কাশ্মরী হীরা কাল্যখ্যঃ পীতরোছিনী । কুক্তর্ভা মধুরদা মহা কুসুদিফাপি চ। কান্দ্রী তুবরা ডিজা বীর্ব্যোক্তা বরুরা গ্রন্থ ।
দীপনী পাচনী বেধ্যা ডেছিনী ব্রবশোব জিং।
দোষ তুআম শূলার্ন্যে বিবদাহ অরাপহা ।
ডংক্তা স্কৃত্ব রক্ত কর মুত্র বিবজনুং ।
বাত পিত তুবা রক্ত কর মুত্র বিবজনুং ।
দ্বাদ্ধাহ তুবা বাত রক্তপিত ক্তজ্মান্।
অস্যা মুলতুগ্রাহ্যা। বাত্রা ১ দাবকঃ।

#### গান্তাগী।

পর্যাস। গান্তারী ভত্তপর্নী, প্রীপর্নী, মধুপর্নিকা, কাশ্মীর, কাশ্মীর, হীরা কাশ্মর্যা, পীতবোহিনী, রুফারুস্তা, মধুরসা ও মহাকুস্থানিকা।

গুণ। ক্ষার, জিল্ক, উষ্ণবীর্গ্য, মধুর, গুরু, অগ্নিদীপক, পাচক, ক্ষাণ শক্তি বর্দ্ধক, ভেদক, ভ্রম রোগ নিবারক, শোষনাশক।

আমরিক প্ররোগ। দোষজ তৃষ্ণা, আমশুল, আর্লঃ, বিষ, দাহ ও জার রোগে ব্যবস্থের। ইহার মূলের তৃক্ পূহ্ণীর। মারো স্থায়।

### গান্তারী ফল।

ত্তণ। পৃষ্ঠিকারক, বলকর, গুরু, কেন্দের শৌষ্টবর্গজ্বক, ব্যাধিনাশক, শীতল স্নিগ্ধ, কষার ও অন্ন এই উভর রসের বিশুদ্ধি কারক, পাকে স্বাচু ও বাতপিত্ত নাশক।

আমরিক প্রয়োগ। **ভৃষ্ণা, রক্তক্ষ**র, মৃত্রাখাত, দ**িহ**ুও রক্তপি**তাদি রোগে** ব্যবস্থের।

#### नावेना।

পাটলিঃ পাটলা মোঘা মহুদূতী কলেছেছা। কৃত্যুকা কুষেরাক্ষী কাল্যাল্যালবল্লভা ॥ ভাষপুক্তী হ কৰিতা পরাদ্যাৎ পাইলা দিছা। বুদ্ধকো বোককো ঘন্টাপাটলিঃ কাওপাটলা হ পাইলা ভুবরা ভিকানুতা বোব এরাপরা। অক্লচি যান লোবাল ছার্দ্ধ বিকা ভুবাররী ই পুকাৎ কবারৎ নধুরৎ হিষৎ জন্ম কবারপিছেও হ (কালিছালা ভাষ কাচছালীভোকে।)
অদ্যা বুলস্কুর্থ প্রাহা।। নাবা ১ নাবকং।

পারুল। ছিন্দী পাতরী, কঠপাতরী।

পর্যার। পাটলি, পাটলা মোদা,
মর্দ্তী, ফলেক্ছা ক্ষেত্রতা, কুবেরালী,
কালস্থালী, অলিবরতা ও তা্মপুলী এই
তাল এক প্রকার পাটলির পর্যার।
অপর এক প্রকার ওত্তবর্গ পাটলি আছে
তাহার পর্যার এই মুক্ক, মোক্ষক,
কণ্টাপাটলি ও কাঠপাটলা।

তাণ। ক্যার, জিজ, অমুফ ও ত্রিদোর, নাশক।

ব্যবহার ছল। অফচি, খাস, শোধ, রক্তদোষ, বমন, হিক্কা ও তৃষ্ণা নিবারণ করে। ইহার গুলের ছক গহণীর। মাত্রা ১ মাধা।

### शावेशि भूका।

তা । পাটলিপুপ্স কষার, মধুর, দীতল, হুদ্যা, কফনাশক ও রক্ত বিশোষক । প্রয়োগস্থল । শিস্তাতিনার রোগে প্রয়োজ্য পুলোর মাত্রা ১ মাষা।

পাটলিবুক্ষের ফল হিকা ও রক্তপিত্ত নাশ করে।

### अश्रियतः।

व्यक्षित्रद्धां जतः म मान्य किर्णनी विकासिका । क्षत्राक्षत्रको छर्नाती मारक्षी देवकष्रक्षिका ॥ অপ্রিবয়ং ব্যর্থপূর্বির্যাক্তঃ ক্ষরাব্যক। পাঙ্গুর্ ক্ষুক্তিক্ত ব্যৱসা বর্ষোহবিদ্য । বালা ১ বাবকঃ।

श्वितात्रि । हिम्मी व्यट्गंश, श्वितात्री ।

नयात्रात्र। खविशस्य, अत्र, जीवनी, निकात्रिका, अत्रा, अत्रक्षी, एकात्री, नांदनत्री, देवजत्रस्थिका।

তাণ। গণিরারি উষ্ণবীর্য্য, কটু, তিত্ত, ক্ষার, মধুর আধিবর্দ্ধক, কফ নাশক ও বারু নাশক।

প্রাগন্ধ। শোগ ও পাত মোগে বাব-দের। ইছার মুলের ভক্ গ্রহণীব। মাজা » মাধা।

#### (मानाकः।

স্যোনাকঃ পোষণ্ড স্যাষ্ট কট্ৰ টুকুকাঃ।
মণ্ডুকপৰ্ব পাৰোৰ শ্ৰক্ষাস কুট্ৰটাঃ ॥
খীৰ্ন বুড়ো ২ন্নপু দ্যাপি পূৰ্বিশ্বঃ কটভরঃ।
স্যোনাকোদীপন্ধ পাকে কট্টুক ক্ষবরো হিনং ॥
প্রাহী ডিক্টোহনিল প্লেম্ব পিছকাস প্রধাননঃ।
টুকুকস্য কলং বালং কন্ধং বাভ কক্ষপন্য ॥
জন্যং ক্ষামং মনুরং রোচনং সন্মুলিনাং।
শ্রন্মান্তি ক্ষিত্তিহ প্রেট্নাং শ্রন্ধান্ত প্রকোপন্য ॥
শ্রন্মান্তি ক্ষিত্তিহ প্রেট্নাং শ্রন্ধান্ত প্রকোপন্য ॥
শন্য মুলজুন্ প্রাহা। শারা ১ শাহকঃ।

त्नाना। शिकी त्नानाभाषा।

পর্যার। শ্যোনাক, শোষণ, নট, কট্ম, টুণ্ট্ক, মগুকপর্ণ, পত্তোণ, শুক-নাশ, কুটম্বট, দীর্গর্ম্ভ, অরলু, পৃথ্পিদ ও কটম্ভর।

তাৰ। আমিদীপক, পাৰে কটু, আখাৰে কৰার, শীভদ, পাৰী, তিজ, জিলোৰ নাশক। ব্যবহার ছল। কাল রোগে প্রয়োষ্য। ইহার খুলের স্থাক্ণীয়। মাত্রা ১ মাবা।

### त्माभाक कल।

ইহার কচি কল কক্ষ, বাতপিত্ত নাশক, হারা, ক্ষার, রোচন, ক্ষু ও অগ্নিদীপক। ইহার গুণ, অর্শ: ও ক্রিমি নষ্ট করে। পুকু ফল গুরু ও বায়ু প্রকোপক।

### त्रर १कमृलम्।

আক্রাং সর্বাতো ভতা পাটলা গণিকারিকা। বোনাকং পঞ্জিলৈতৈঃ পঞ্চরুলং মহন্মতন্ । পঞ্চরুণ বহুৎ ভিক্তং কথায়ং কফবাত ন্থ। মধুরং খাল কালন্ন মুখাং লখাগানু দীপনন্ ।

### त्रद ११ भम्म ।

বিলু, শাস্তারী, পারুল, গনিষারি ও লোগনাক এইপঞ্ বুফের মূলকে বৃহৎপঞ্মূল কহে। বৃহৎপঞ্মূল ডিক্তে, ক্যার, বাডগ্রেম নাশক, মধুর, উষ্ণ, লঘু ও অঘিদীপক। ইহা খাস কাদ রোগ নিবারণ করে।

### जाल गरी ।

নালপনী কিয়া সৌখ্যা ত্রিপনী পীষরীগ্রহা। বিবারিশকা দীর্ভাদী দীর্ঘপত্রা শ্রমত্যপি । নালপনী বরুজ্জী অর্থাসাভিনারজিং। নোম দোৰ ত্রমহারী বুংব্যুক্তা রসামনী । ডিক্তা বিষহারী বাসুং ক্ষক্তমাস ক্রিবিঞান্থ। অস্যাবৃদ্ধ প্রাহাৎ দাবা > বাহকঃ।

> শালপানি। হিন্দী সরিবন। পর্যার। শালপর্ণী ভিরা সৌমা,

जिननी, नीवती, छटा, विवातीनचा, वी-चांत्री, वीर्चनजा ७ व्यरक्षमधी।

গুণ। পৃষ্টিকারক, রসায়ন, **ভিক্ত**, বিষয়, স্বাচু **ও** ত্রিলোম নাশক।

আম্রিক প্রয়োগ। ব্যন, জ্বর, স্থাস, অতিসার, শোষ, ক্ষতকাস ও ক্রিমি রোগে ব্যবস্থের।

ইহার মূল, অভাবে দমত্ত অংশই গ্রহণীর। মাত্রা ১ মাবা।

### वृत्त्रिवर्गे ।

পূলিপনী পূৰক্পনী চিত্ৰপৰ্যজ্ঞ প্ৰপি।
কোন্ট্ৰিলা নি\হণুক্ষী কলনী ধাবনিপ্ৰ'লা ঃ
পূলিপনী বিলোহলী বুনোজা নহুলাসলা। ।
হঙিদাহ কর্যাস রক্ষাতি সাম্পুক্ৰমীঃ ॥
অস্যানুলং গ্রাহাং মাবাং ১ মাবকঃ।

চाक्रल। हिम्मी निष्ठेवन। निर्मात । नृज्ञिननी, नृषक्ननी, हिल्ल-न्नी, खहिननी, टक्क, है, विज्ञा, निःइ-नुष्ही, कननी, धारनी ७ छहा।

ত্থপ । ত্রিদোস নাশক, বলকারক উষ্ণ, মধুর ও সর ।

আময়িক প্রয়োগ। দাহ, জর, খান, রক্তাতীসার, তৃষ্ণা ও বর্মী নিবারণ করে। ইহার মূল, অভাবে সর্বাংশ গ্রহণীয়।

माजा > मायो।

ř

### त्रही।

वाद्यांको कूजन्मेको नवको दूबको कूको। विक् को ब्रांको का निश्ची वरवाजी पृश्क्षवर्षिको ॥ दूबको आदिवी ज्वा भारती कक्षवंक कर। कृष्टिकाना रेवप्रना मनारब्राहक मानिती ॥ क्षेत्रा कूठे क्षत्रचीन मूंन कार्नाभ वान्यक्षिर। क्षा कूठे क्षत्रचीन मूंन कार्नाभ वान्यक्षत्र। तुरकी, साक्ष्ण। दिन्नी पत्रक्था। शर्यातः। वाखाकी, क्ष्मककीकी, बरकी, तृरकी, क्ली, दिक्ली, तांहें। ख ज्ञान्तर्या।

গুৰ। গ্ৰাহী, জ্বা, পাচক, বাডপ্লেম নাশক, কটু, ভিক্ত ও উষ্ণ। "

প্রবোগছল। অরুচি, জর, খাদ, কুঠ, খূল, কাদ, অগ্নিমান্দ্য, মুখবৈরুদ্য ও মলাদি নিবারণ করে। ইহার মূল, অভাবে দমস্ত গ্রহণীর। মাত্রা > মাধা।

### कण्डेकात्री।

কণ্টকারী তু দুঃস্পার্শা স্কুপ্রা ব্যান্ত্রী নিধিঞ্চিকা।
কণ্টালিকা কণ্টকিনী ধাবনী বুহভীঙধা।
উভেচ বুহড়ো)। যত আহ গুঞ্জাতঃ।
কুপ্রায়াৎ ক্ষুপ্র ভটোকা। বুহভীতি নিগান্যতে ।
খেতা কুপ্রাচজহানা সক্ষাধা ক্ষেত্র দৃত্তিকা।
গর্ডলা চক্রডা চক্রী চক্রপুস্পা প্রিয়ন্তরী।
কণ্টকারী সরা ভিক্লা কটুকা হীপনী লঘুং।
কুক্রোজা পাচনী কান খান কার ক্ষানিলানু॥
নিহঙী পীনসং খান পার্খা পীড়া হুলমন্ত্রান্তর কার ক্ষান্তর ।
ভব্যাং কলং কটুরসে পাকে চ কটুর-ভবেই।
খক্রস্য বেচনং ভেলিভিক্রৎ পিভালি কুল্লু।
হন্যাং কৃক্র মুক্ত কণ্ডুকার ভিক্রৎ পিভালি কুল্লু।
হন্যাং কৃক্র মুক্ত কণ্ডুকার ভিক্রৎ পিভালি ক্লান্ত্র।
ভব্বং প্রোক্রা নিভা কুলা বিশেষাহ্ব ধর্ক কারিলী।
অস্যা যুলং প্রাহাৎ বাবা ২ বাবকঃ।

### कचेकात्री।

পর্যায়। কটকারী, দুঃম্পণা, জুন্তা, ব্যান্ত্রী, নিদিশ্বিকা, কটাপিকা, কটকিনী, ধাবনী ও বৃহতী।

বৃহতী ও কউন্ধানী এই উভরের সাধারণ নাম বৃহতী বে হেডু স্থমাত কহি-রাছেন। ক্রা (কণ্টকারী) ও ক্রডটাকী এই এই উভরের সাধারণ নাম বৃহতী।

বেতকণীকারীর পর্যার। চন্দ্রহাসা, লক্ষণা, ক্ষেত্রদৃতিকা, গর্ডদা, চন্দ্রভা, চন্দ্রী, চন্দ্রপুষ্পা ও প্রিরহরী।

গুণ। কণ্টকারী সর, ভিক্ত, কটু দীপন, লঘু, রূল, উষ্ণ ও পাচক।

আমরিক প্রয়োগ। কাদ, খাস, জর কক্ষ, বারু, গীনস, খাস, পার্খগীড়া ও জক্ষোগ প্রভৃতিকে নিবারণ করে।

এই উভরের ফল আখাদে ও পাকে
কটু, শুক্রেরেচক, ভেদক, ডিক্কে, গিওজনক
অধিবদ্ধ কি, লঘু ও কফ বায়ুনাশক। এই
ফল কণু, কাস, ক্রিমি ও জরাদি নিবারণ
করে।

খেতকণ্টকারী গর্ভসংস্থাপক। কণ্টকারী ও খেতকণ্টকারীর মূল, অভাবে সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্রা মাধা।

### (भाष्मुतः।

त्वाकृतः कृत्रकाश्रीनगार विक्केर

ধাক্তিকা গোজুরকো বনপ্রাট ইভালি।।
পল্পকাখন্প ট্রা চ ভ্রালানিক্সজিকা।
লোজ্রলীভলং বাদুর্বলকুদ্ বভিলোখনং।।
নধুরো দীপনোর্বাঃ পুকিদকাব্যরীহরং।
প্রক্রিলাক্ষ্প ব্যাপ্রাত্তিক কোণোক্ষ্প।
ভ্রিক্টিলাক্ষ্প ব্যাপ্রাতিক কোণো

वित्योधनम् । जनामूण् श्रीदार योजी ३ मोनकः।

গোক্ষী।—হিন্দী গোক্ষ্যপূল।
পর্যায়। গোক্ষ্য, ক্ষ্যক, ত্রিকটক,
স্বাহ্নকটক, গোক্ষ্যক, বনশৃষাট প্রদায়ৰা, অবদংষ্ট্রা ও ইক্ষুগন্ধিকা। তা । শীন্তল, স্বাচ্, বলকারক, বন্ধি-শোধক, মধুর, দীপক, শুক্রজনক, বায়ুদাশক স্থান্তকর ।

প্ররোগ। অশারী, প্রনেহ, খান, কাস অশাপ্ত কঠিন জ্জোগে ব্যবস্থা কর। যার।

গোক্সশাক র্ষ্য, ভিক্ত ও জ্যেতে।বিশোধক।
ইহার মূল, অভাবে দর্বাংশ গ্রহণীর।
মাত্রা ১ মাধা।

লঘু পঞ্যুল্যু।
লালপণী পৃথিপণী বাধাকী কটকারিকা।
গোক্ষুণপঞ্জিটেকটক কনিক পঞ্যুলক্।।
পঞ্দুন লঘুণাপু বলাং শিকানিলাপহন্।
নাত্যুক্ষ বৃংহণ প্রাহি জর খানাখারীপ্রণ্থ।।
লঘু পঞ্যুল ।

শালপর্ণী, চাকুলে বৃহত্তী, কণ্টকারী ও গোক্ষুর এই পাঁচটীর নাম লঘু পঞ্চল। লঘুপঞ্চলের ৩৭। লঘু, খাদু, বল-কারক, বাভপিত্ত মাশক, নাড্যুক্ত ও পৃষ্টিকর।

লঘু পঞ্চুল জ্বর, কাল ও অশ্বরী রোগ নষ্ট করে।

### श्रम्बम्य ।

উভাভ্যাৎ পঞ্চলাভ্যাৎ দ্পরুল মুদাহতদ্। দ্পরুলৎ ত্রিদোরত্বং দ্বাসকাশ্পিটো ক্রমঃ ছ ভজা পোর অরানাহ পার্যপিড়া ক্রচীহরেও।

मण्यम ।

লঘু পঞ্চমূল ও রহৎ পঞ্মূল এই উভর একত্র হুইলে দৃশমূল শব্দে কণিত হয়। দৃশমূল তিলোর নাশক। খাদ, কাদ, শেবেরোগ, জন্তা, শোধ, জর, আনাহ, পার্শপীড়া ও অক্তিতে দৃশমূল ন্যবন্ধের।

### (माखाक्षनः ।

( (व्याक्षांक्षमा बागाया (बारका ग्रामणा । ) लाखास्त्रवः विश्व छोक्क यस्त्रकाकोर व्याहनाः । उदीक्षा (चल्यविक्रा स्थुलिशः म्लाब्कः । निध : कर्षे: कर्षे: भारक डोटकाटका वश्रवामधूः। षेश्या द्वांक्या कृष्यः कात्रक्तिका विवादकृशः मर्घाषी सक्तामा क्रमाः भरतक अस्माभनः। **ठभूषाः कणवाखरञ्चा विश्ववि भाग्यं क्रियोन्** ॥ (यर्षाभको विष भीव श्रेनाचंड जनान व्रत्र त्यकः श्रीक्रवरना रक्षत्वा दिव्यवामाहकृष्कत्र । भोदान र विक्राधि दक्षि बन्द्वः भित्रवस्क्र । यधुनिश्वः तथाक श्रत्वा वित्नवा कोलंगः नदः। लिधे रत्कम পরাবা^९ सर्मः পরমার্ভিছ । **४ क्या १ निध्य अर्थे अर्थे अर्थे क्यां कर्ये विव्यागनम्** व्यक्षा कक्षवाख्या खन्नाम निर्द्धारिन । व्यम्। वोक्वाबिकः अंश्रे वोक्रम्। माना । मानकः। सदममा माळा २ मायटको ।

#### मिका।।

এই**, বৃক্ষ তিন জাতীব, শ্যাম, খেছ** ও লোহিছ।

পর্যাষ। শোভাঞ্জন, শিগ্রু, ভীক্ষ-গল্পক, অন্ধীয় ও মোচক। ইছার বীজকে খেত মবিচ কহে। লোহিত বর্ণ সজিনা রুক্ষের নাম মধুশিগ্রু।

গুণ। কট্, পাকে কট্, তীক্ষ, উষ্ণ, মধ্ব, লঘু, দীপক, বোচক, ক্লং, ক্ষার গুণ বিশিষ্ট, তিক্ক, বিদাহী, সংগ্রাহী, শুক্র জনক, হাদ্য, চক্ষুষ্য ও রক্তপিত প্রকো-পক।

আমরিক প্রান্তোগ বাসু, প্রেল্লা, বিজ্ঞবি, শোগ, জ্রিম, মেদোরোগ, অপচী, বিব, প্লীহা, গুলা, গুডামালা ও এব নস্টকরে।

খেতদজিন। উল্লিখিতরপ তাবিশিষ্ট, অনিকম্ভ ইহা বিশেষ বিদাহী, ইহা প্লীহা, বিজ্ঞাধি, এণ ও রক্তাপিত রোগে উপ- কারক। মধুশিপ্র ও পূর্ব্বোক্তরপ ৩৭
বিশিষ্ট, বিশেষতঃ ইছা দীণন ও নর।
দক্ষিনার ছাল ও পদ্তের শ্বরস অনেক
উপান্ধারে লাগে। সজিনার বীক্ষ তীক্ষ
উষ্ণ, বিষয়, বসনাশক ও বাতপ্রেয়নাশক,
ইং।র নদ্য শিরংপীড়ার উপান্ম করে।

শজিনার বীঞাদি গ্রহণীব। বীজের মাতা ১ মাশা। ত্বকের স্বরদের মাবা ২ ম ধা।

#### ठिश्लकः।

তিজ্ঞাকো বাওনিহারী শ্লেছপ্রো ধাউপুতিক্থ।
আগ্রেয়ে বিষবদাস্য ফল্প মংস্য নিষ্দনন্ ।
মাত্রা ১ বাষকঃ।

### रिकी हिन्द।

চিহ্লক, বাভাপসারক, কফ নাশক, আপ্নের ও ধাতুপৃষ্টিকারক। ইহার ফল বিশবৎ এই ফল দ্বারা মংস্যাগণকে নষ্ট করা যায়। ইহাব সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্রা > মাষা।

### उन्हाबी।

উভারী বাভজিভিকা জেলপ্পী নীপনী স্থা। লোলেন্ত্র বালা হজী হিডাপি চ বিদার্পনান্। নাত্রা হ-বাহকৌ।

### (हेशाबी।

টকারী বাসুনাশক, তিক্তা, কফর, অগ্নিদীপক ও লঘু। শোগ, উদ্বব্যথা ও বিবর্গ রোগে প্রয়োজ্য। ইহার সম্বত্ত অংশ গ্রহনীর। মাত্রা ২ মাধা।

### चटकाडेः।

অভোটো দীর্ঘকীলাল্যাদভোলন্ড নিফোচকঃ। অভোটকা কটুঙীক্ষা বিভোক জ্বরো নজুঃ । রেচনঃ ত্রিন্দুলান পোকগ্রহ বিধাপকঃ। বিদৰ্শ ক্ষণিভাজ যুখকানি বিষাপক। । ভৎকলং শীতলং কাবু প্লেগন্ত্ৰং বৃংকণংগ্ৰহ। বল্যংবিয়েচনং বাতগিবলাকজ্যাক্ষতিং। অস্য যুকত্বপ্ প্ৰাচ্যা দাত্ৰা ২ দাবকৌ।

ধলঅাঁকোর। হিন্দী তেরা।
পর্যার। অকোট, দার্ঘকীল, অকোল
ও নিকোচক।

তাৰ। ইহা কটু, তীক্ষ্প, প্লিক্ষে'ফ্ৰ, ক্ষায়, লঘু, বেচক ও বিষয়।

প্ররোগ। ক্রিম, শূল, সাম, শোগ,
গ্রহণীক্রন, বিদর্প ও ককত্ব রক্তণিত্র
রোগে ব্যবছের। ইহা ছারা দর্প ও
ম্যিকের বিষ নপ্ত হব। ইহার ফল শীতল
ভাত্ব, প্রেম্মনাশক, পৃষ্টিকর, ওক্তব্যক্রর। ওই ফল ব্যবহারে ব,ত
পৈত্তিক দাহ, জাররোগ ও রক্তদোষ
নিবারণ হয়। ইহার ম্লের ত্ব্ গ্রহণীর।
মাত্রা ২ মাধা।

### जुन्न ।

संस रोजस कुलोकः भूगसः जमूनध्याम् । कुल्व कु स्टास्ता माणाज्वक मिलाल ॥ कुल्व क्ट्रैक स्टिक प्रोटकासः (उठनः नयू। विगोध मोनमः कुक मानवाः मूर्थाणायमम् । स्ट्रा स्टिक्क लिखाक श्रम्यवम् । मावा २ मायाको ।

### चंत्रश्व ।

পর্যার। শুহাবীক, ভূতীক, সুগন্ধ, জমুকপ্রির, ছত্তা ও মালাতৃণক।

ত্ব। কটু, ভিজ, তীকু উষ্ণ, রেচক, লবু, বিহাহী, অৱিদীপক, রজ, চক্ষু অনিষ্টকর, ব্যশোধক, বলনাথক ভেদক ও রজনিত প্রকোপক। ইহার স্ক্রীংশগ্রহণীর। মান্তাং বার্যা।

### कर्मुगम् ।

কতুণ রৌহিব দেবসগ্ধ নৌগডিক ভবা।
ভৃতিক ব্যানপৌরও প্যানক বুনগডিকর্ম।
রৌহান ভুবর ডিজ কটুপাক ব্যাপোছভি।
ছংকঠ ব্যাধি পিরাম্র খুল কাম কক্ষরান্।
নাত্রা ব্যাবহা।

### त्रामकश्र ।

পর্যার। কর্ম্বন, রোইষ, দেবজন্ধ, সোগস্থিক, ভূতীক, ব্যামপোর, শ্যামক ও ধ্যগন্ধিক।

শুণ। ক্ষায়, ভিক্তা, পাকে কটু। প্রযোগ। ক্রেজাগ, কণ্ঠরোগা, রক্তপিন্তা, শুলা, কাস ও ক্ষত্ররে ব্যবস্থেয়। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্রো ২ মাধা।

### ब्जिकिका।

मूकी किक्शनिविद्योक्ता आंत्रकी ह उत्भावमा । आवनाक्षा मूक्षिका उसा अवनिर्विका ॥ महाआविक्ताालू मा ख्वा फ्रक्षिका । कष्यभूत्रिका ह मा प्राचालिक्षनिको ॥ मूक्षिका कृष्ट्रः भारक वीरया। आ मनूना लच्यः । स्वा गंशनही क्क्नु किषिरवानाक्षि भाव मूक्ष ॥ अधिनाक्रहानेकाव शीहरम्या समाविक्षः ॥ महामूकी ह उद्युका। स्टेन क्रका महर्विका ॥ माजा । मायका ।

### मुजूती, जूँ देकस्य।

পর্যার। মৃতী, ভিচ্কু, প্রাবণী, তপোধনা, প্রবণাহ্বা, মৃত্তিকা ও প্রবণশীর্ষক এই জাতীর আর একপ্রকার বৃক্ষ আছে তাহার নাম মহাপ্রাবণিকা, ভূকদ্বিকা, কদ্ব-পুশ্বিকা, অব্যবা ও তপদ্বিনী।

ত্ত্ব। পাকে কটু, উকাৰীৰ্য্য, মধুর, দাবু, স্মরণশক্তি বৰ্জক।

প্ররোগ। গলগণ, অপচী, মৃত্তকৃচ্ছু, ক্রিমি, যোনিরোগ, পাণু, শ্লীপদ, অক্লচি, অপন্মার, প্রীহা, মেদোরোগ ও গুহারোগ নিবারিত হয়।

মহামুতীর গুণ সামান্য মুতীর ন্যায়। স্বাংশগ্রহণীয়। মাত্রা সাধা।

#### व्यवामानः ।

অপানার্থন্ত লিখরী অধ্যন্তে। বসুরক।
নর্কটি দুর্গতা চালি কিনিছী থরদপ্তরী ।
অপানার্থ্য সরস্তীজ্ঞো দীপন ভিক্তক কটুং।
পাচনী রোচনী সন্থানি ককবেলোহনিলাপদঃ।
নিছতি জক্তবাধ্যার্প্য কও স্বোধরা পচীঃ।
নাত্রা ১ বাধকঃ।

जानाः। हिम्मी हित्रहिति।

প্র্যাব। অপামার্গ, দিধরী, অধঃ-দল্য, মৃদ্রক, মৃদ্টী, চুর্গহা, কিণিইা ও ধ্বমঞ্জী।

ত্তক। অপামার্গ সর, তীক্ষ্ণ, দীপক তিক্ত, কটু, পাচক ও রোচক। ইহার হারা বমন, কফ, মেদোরোর, বায়ু জ্ঞোর, আখান, অর্শঃ, কণু, শৃল, উদর রোর ও অপচী উপশ্মিত হয়। ইহার মূল, অভাবে সমস্ত গ্রহণীয়। মাত্রা স্থাধা।

### রক্তাপামার্গঃ।

রজোহ মোবসিরোর্ডফলো ধাধার্গকোহলি চ প্রভ্যকশনী কেশপনী করিতা কলিলিলারী । অপানার্মেহিলনো বাছবিউভী কলভূব হিনঃ। কলং পূর্বে প্রতি মূর্তিক করিছে। এ অপবার্গ কলং বাছু রলে পাকে চ চুক্তরন্। বিউভি বারলং রক্তং রক্তুপিত প্রনাদনন্। বারা ১ ধাবক:।

লাল আপাং। হিন্দী রক্তচিরটির। পর্যার। বাসির, রক্তফল, ধামার্গব প্রত্যকণণী, কেলপণী ও কণিপিঞ্গলী।
থা। লাল অপামার্গ বান্ত বিষ্ঠনী,
কমণ্ডক, লীভল ও রক্ষ। ইহা পূর্ব্বোক্ত
অপামার্গের অপেক্ষা অল্পণ্ড পাকে কটু,
ইহা জীর্ণ হয় না, এই ফল বিষ্টন্তী, বায়ু
জনক, রক্ষ ও রক্তপিত প্রসাদন।

শেতপুন্দ বা।
পুনন্বা খেড্যুলা লোবল্লী দীর্ঘপ্রিকা।
কট্টা ক্যায়ানু রসা পাও্ছী দীপনীপরা ।
লোকানিল গরয়েছহরী রুল্লের প্রবৃৎ।
কাসছভোগ দুনান প্লানিল নিক্তনী ॥
নারা ২ নাযকো।

माजा > मावा।

খেতপুনর্বা।

পর্যার। শ্বেতম্লা, শোধন্নী ও দীর্ঘ পত্রিকা।

গুণ। কটু, ঈষৎ কৰার, অভিশর ভারিকারক ও বাধুনাশক।

প্রয়োগ । পাণ্ডু, শোণ, বায়বৃদ্ধি, শ্লোমধিকা, ত্রপ্প, উদর রোগ, কাস, সংঘোগ, অর্শঃ ও শুল রোগে প্রয়োজ্য। ইহার সর্কাংশ গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মাধা।

वक्तभूना भूर्मनवा !

পুনর্মবাপরা রক্তা রক্তপুষ্পা শিলাটিকা। শোধন্নঃ ক্ষরবাড়্যু বংকজুং কপিলকঃ । পুনর্মবা লগা ভিজা কটুপাকা হিষালবুং। বাজনা প্রাহিনী লেখ শিভরক্ত বিদালিনী। মাত্রা ২ বাবকৌ।

লাল পুনর্মবা।
পর্যায়। রক্ত পুনর্মবা, রক্তপুশা,
শিলাটিকা, শোধম, ক্ষুত্রব্যাস্থ্, বৃষ্ঠেড্
ভ কশিয়ক।

### দ্ৰব্যস্থানম্।

তা। ভিজ্ঞা, পাকেকট্, দীতল, লঘু, বায়ু অনক ও গ্রাহী। ইহা কফ ও রক্ত-পিস্ত নিবারণ করে। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীর। মাতা ২ মাধা।

#### वम्मा।

বলা বৃষ্ণাৰনী বৃষ্ণভক্ষ্যা বৃষ্ণক্ষহাপি চ। বলাকঃ ন্যান্ধিন ভিক্তঃ ক্ষায়ো মধুরো রনে ॥ নামল্যঃ ক্ষবাভাস্ত রক্ষোত্রণ বিবাপহঃ। পিন্তবাহ শ্রমহরো বল্যো বৃষ্ণো রসায়নঃ॥ মাত্রা ১ মাহকঃ।

शैतनाहा, वामता।

পর্যায়। বন্দা, বৃক্ষাদনী, বৃক্ষভক্ষা বৃক্ষরুহা ও বন্দাক। ইহা শীত্রীর্যা, ভিক্ত, ক্ষাস, মধুরাস্বাদ, ক্ষম, বিষ-প্রশামক, পিত্তনাশক, দাহ নিবারক, শ্রম হর, বন্দকারক, বৃষা ও রসায়ন। বাত্র ক্র ও বাবরাগ প্রভৃতিতে প্ররোজ্য। ইংগর মামস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্র(১মারা।

जालस्या (लज्हान्टजमः)। जनस्या थेन्द्रक् इ उदी (यदन्येनाक्डाः। जनस्या नम् सामूर कियिशित क्काशमा। योजा ३ कोवकः।

' পর্যার। অলমুষা, ধরত্বক্ ও মেদোগলা।

তাৰ। লঘু, খাদু, কিনিয় ও কফ পিত নাশক। ইহার সমত অংশ গ্ৰহণীয়। মালা ১ মাৰা।

#### कृषिका ।

ष्ट्रिका विष्टुणनी त्रार कीता विकासिनी छवा। पूर्विक को छत्र कका साठमा सर्काहिनी ह নাৰু ভীরা কটুডিজা সৃষ্ট মুত্ত মলা পটুং। মুদ্বিউডিনী বুয়া কককুঠ জিমিপ্রপূৎ । যাত্রঃ ১ বাহকঃ।

की कृषे। दिन्ने कृती।

পর্যায়। ভূমিকা, স্বাত্থনী, কার। ৩৪ বিকীরিনী।

গুণ। উষণ, গুরু, রক্ষ, বার্জনক, গর্ভদংছাপক, স্বাত্, চুগ্ধবিশিপ্ত, কটু, তিক্ত মৃত্ লবণ রদ বিশিপ্ত, বিপ্তস্ত ও বল কারক। ইহা গেবন করিলে মল সূত্রাঞ্জিংস্ত হব এবং কফ, কুঠ ও ক্রিমিরোগ নাই হব। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্রা > মাধা।

### (मानभूक्री।

ভোগা চ ভোগুজ্পী চ কলেপুজ্পা চ কীৰ্ন্তিতা।
ভোগপুজ্পী গুৰুঃ স্বাদু কক্ষোজা বাতপিত কৃৎ ।
সভীক্ষ্ণ সবগাৰাদ্ পাকা কট্টী, চ ভেলিনী।
কক্ষাৰ কামলা পোৱা ভ্ৰমক্ষান ক্ষান্তিৎ।
বাবা ১ বাৰকঃ।

चलचित्रा हिन्दी श्रमा।

পর্যাব। জোণা, জোণপুন্সী ও ফলেপুন্সা।

গুণ। গুরু, সাড়, রুক্ষ, উঞ্চ, বাত-পিত্তজনক, তীক্ষলবণ রুদ বিশিষ্ট, পাকে স্থাত্, কটু ও ভেদক। ইহার দারা কফ, আম, কামলা, শোপ, তমক্ষাদ ও কীটাদি বিনম্ভ হর। ইহার সম্ভ জ্ঞাশ গ্রহণীর। মাত্রা স্মাধা।

### আদিত্যভক্তা।

সুবর্চনা সূর্যাত জা বরণা বধুরাপি চ। স্ব্যাবর্তী রবিপ্রীভাহপরা ক্রমতসুদ্ধা ৪ সুবজনা হিষারকা বাদু পাকা সরা প্রকং।
অপিন্তনা কটুং কারা বিউক্ত কক্ষাভন্তিং ধ
অন্যা ভিক্রা ক্ষান্তোকা সরা রক্ষা লঘুং কটুং।
নিহতি ক্ষপিন্তাক্ত খাল কালাক্লভিজ্ঞরান্।
বিক্রোট কুঠ মেহাক্র বোনিক্লক্ ক্রিমি পাতৃভাং।
অস্যাং প্রাহিক্স প্রাহ্য বোনিক্লক্ ক্রিমি পাতৃভাং।

### ह्र हृद्य । विन्ती ह्व ह्व ।

পর্য্যার। স্থাচিলা, সুর্য্যভকা, বরদা, বদরা সুর্য্যাবস্তা ও রবিপ্রীতা এইপুলি এক জাতীর বৃক্ষের পর্য্যার। অপর জাতীব বৃক্ষকে ব্রহ্মসুত্র্সভা কহে।

তাণ। ইহা শীতল, ক্লক, পাকে
খাত্ সর, থাকে, কটু, ক্লারতা বিশিষ্ট,
পিতজনক, নহে, ইহা ঘারা বিষ্টিন্ধ, কফ
ও বাষ্ নম্ভ হয়। অপর জাতীয় উদ্ভিদ্
(ব্রহ্ম প্রত্র্র্গতা) তিক্তা, ক্ষান, উষ্ণ, সর,
ক্ষান, লঘু ও কটু। ইহা কফজ রক্তাপিত
খান, কান, অক্তি, জর, বিক্লোট, কুঠ,
মেহ, রক্তদোষ, খোনিরোগ, ক্রিম ও
পাতুরোগ নিবারণ করে। ইহার প্রাদি
গ্রহণীয়। মাত্রা ১ মাধা।

### वसाकटक हिकी।

वक्षाक्रक कियो (वरी कमा (यात्रीयहोकि ह । मात्रीह मॅक्क्षममी विषक्षिक्मी छवा ह वक्षाक्रक कियो कच्यो क्ष्ममूच् बदलाधिमी । मर्भवर्णहारी छोक्का विमर्ग विषयाहियी ह यात्रा २ यायरको ।

### • हिन्ती वाङ्युमा।

श्योति । २क्ताकटक्छिकी, प्रियो कन्ता, रवानीचत्री, माशाति, मळवस्मनी छ विषक्ककिनी ।

७१। नघु, कम्नामक, अश्रम्।शक,

ভাক্স ও দর্শের ভেবোনাশক। ইছার দারা বিদর্শ রোগ ও বিষ নত হর। ইরার দমত অংশ গ্রহণীর। মাতা ২ মাধা।

তুলনী শুক্লা ক্ষা চ।
তুলনী সুরদা প্রায়া সুলভা বছৰগুরী।
অংশতর জনী গৌরী খুলল্পী দেবনুকুভিঃ।
তুলনী কুটুকা ভিকা ছলোড়া লাহপিডকুই।
ভৌগনী কুটকুজ্ াত্র পাখ ক্লাইকাভিজিং।
শ্বক্লা কুজা চ তুলনী প্রবৈভল্যা প্রকীর্থিত।।
মাত্রা ২ মাবকৌ।

ভক্ল তুলদী ও রফত্লদী।
পর্যার। তুলদী, সুরদা, গ্রাম্যা,
সুলভা, বছ্মজনী, অপেতরাক্ষণী, গৌরী,
লুলল্পী ও দেবতৃক্ষভী এইপালি তুলদীর
পর্যার।

তা। কটু, ভিক্ত, শ্রমা, উষ্ণ, দাহকর, পিরজনক ও দীপন। তুলদীর দ্বারা
কুঠ, মৃত্র রুজ্ব, রজদোম, পার্শ্বপীড়া, কফ ও
বায় নষ্ট হয়। উভর তুলদীর তাণ এক
রূপ। ইহার পত্তের প্রস ও ফুলাদি
তাহণীয়। মাত্রা ২ মাধা।

विष्ट जुनभी।

প্রায়। বর্কনী, তুর্নী, ভুলী, ধর-পুশ্প, অন্তগন্ধিকা ও প্রণাল ইং। কুফ্রবর্ণ হইলে কঠিয়ক ও কুঠেরক করে, শুকুবর্ণ হইলে অব্দ্রুক বলে, অন্য জাতীয়কে বটপত্র বলে। মাত্রা ২ মাবা। তথ । এই ডিন প্রকার বর্ষরী ক্লক, শী-তল কটু, বিদাহী, তীক্ষ্, ক্লচিকর, জ্বা, দীপন লখুপাকী, পিরজনক, কফনাশক ও বিষয়, ইহার হার। বাতরক্ত, কওু ও ক্রিমি নই হর। মাতা ২ মাধা।

ভূক্ত পিত্র:।
ভূক্তপত্রঃ আ্তেভিড্জ দংগ্রে বছলবল্কল:।
ভূক্তো বলকর: শ্লের কর্ণক্রক্ পিত্রক জিৎ ।
ক্বায়ঃ ক্টুক্তক বেলে। বৃহ হর:পর:।
ভিন্য ভুগু প্রাহা। যাত্র। ১ যাবক:।

পর্যার। ভূজনপত্র, ভূজন, চক্ষী, ও বছলবল্ফল।

ত্তা। ক্ষার কটু. উষ্ণ, বিষয়, বল কারক ও কফ শান্তিকর। ইহার ছারা কর্ণরোগ, রক্তণিত্ত ও মেদোরোগ নিবা-রিভ হয়। ইহার স্বক্ প্রহণীয়। মাত্রা ১ মাষা।

#### करेखी।

কটভী খালু পুল্পান্ড মনুরেন্ কটভরঃ।
কটভীতু প্রবেলার্শো নাডাত্রণ বিষধ্যিদীন্ ।
হত্তাভা কক কুঠন্নী কটু কুকাচ কীর্তিভা।
তৎক্ষণ জুবন্ধণ জ্বেন্থণ বিশেষণ কক্ষাজ্বত।
যাত্রা ১ সাহকঃ।

ख्यश्राक्षिका विदर्भय।

পর্যার। কটভী, স্বাত্ পৃষ্ণা, মধু-রেণু 'ও কটভর। ওগ। উষ্ণা, কট্ ও ক্লছা, ইহা প্রমেষ, অর্ণা, নাড়ীরণ, বিষ, ক্রিমি, কফ ও কুট নাশীকরে। ইহার ক্লমত অংশ প্রহণীয়। মার্কা ১ মারা

### ভিনিখ: ।

श्वित्वन्थः ज्ञान्यस्य स्वयो त्रश्चेक रक्ष्यं कर्या । श्वित्वित्वारः स्त्राच्च शिवाक्षः स्वयं अस्त्रम् स्वयः ॥ ভূবর: বিত্র দাতত্রো রও পাঙ ক্রিদিপ্রবৃৎ। উজো রক্তাভিনারত্রো বাভাবর বিনালনঃ। অস্য ভূগ্ আলা। মাত্রা ১ মাযকঃ।

किनिम। दिन्मी जित्रिका।

পর্যার। তিনিশ, লাক্ষন, নেমি, রথক্র ও বঞ্জুল।

গুণ। কৰার ও উষ্ণ ইছ। শ্রৈদ্মিক রক্তপিত্ত, মেদোরোগ, কুন্ঠ, প্রমেহ, স্বিত্র দাহ, ত্রণ, পাত্র, ক্রিমি, রক্তাতিসার ও বাভব্যাধি নষ্ট করে। ইছার ত্বক্ গ্রহণীর। মাতা ১ মাধা।

#### क कि क करा ।

কাক্যজ্ঞা মহীকান্তা কাক্ডিকা সুলোমশা। পারাবতপদী দাসী কাকা চাপি প্রকীর্দিতা। কাক্সজ্ঞা হিশা ডিকা ক্যায়া ক্ষপিত জিং। নিহতি অরপিতাক জর কণ্ড্রিযক্রিশীন্,। অস্যা মুলং প্রাভং মাত্রা ৬ রক্তমঃ।

कांक छड़वा। शिमी मिता।

পর্য্যায়। কাকজন্তা, ন**নীকান্তা,** কাকভিক্তা, **স্থলোমশা,** পারাবভপদী, দাসী ও কাকা।

ত্তণ। শীতল, তিক্ত, ক্ষার, কফ পিত নাশক, ইহার দারা জ্বর, রক্তপিত, জ্বকত্, বিহু ও ক্রিমি নষ্ট হয়। ইহার মুশগ্রাহ্য। মাত্রা ও রতি।

### भूजकीयः।

পूबन्नीरमं वर्षक्त्री वर्षेभूटणांश्व नावकः। পूबन्नीरमं वज्ञवृर्दणा वर्षकः स्त्रन्न वाक्क्ष्रं ह मृष्ठे बुक्ष्यका ज्ञत्का दिवश्यापृश् भट्टिश वर्ष्ट्रः। समा चुर्ष वीद्यो। वाजा ३ स्रवकः।

### की बाणि । दिन्नी भी एक। कि बा।

পর্যায়। পূত্রজীব, বর্ডফরী ষষ্টী-পূব্দ ও অর্থসায়ক।

থাপ। থাকা, বলকায়ক, গাওঁসংজনক, বাভলোগনাখক, ক্লফা দীজল, খাতু, লবণ রস বিশিষ্ট, কটু ও মলমূত্র নিঃসারক। ইহার তৃক্ গ্রহণীয়। মাত্রা ১ মাধা।

#### শাক বৃক্ষ:।

লাকঃ ক্রকচপত্রং স্থাৎ ছিরসাবো গৃহক্রনঃ। ধরপত্রঃ শ্রেষ্ঠকাঙা লরপত্রেহির্জুনোপনঃ । লাক্ত্রকঃ সরঃ বালু লাহিলিওখ্রনাপরঃ। ক্যারঃ ক্রক্তক্রেকো বল্যো অরহরো মতঃ ॥ অস্য স্থার্যা, মাত্রা ২ থাবকৌ।

#### (मक्न तुका।

শাক, ক্রক গওর, ছিরসার, গৃহক্রম, ধরপত্র, শ্রেষ্ঠকান্ঠ, শরপত্র ও অজ্জ নো-পম এইগুলি সেঞ্জবুক্ষের সংস্কৃত নাম ইহা সারক, স্বাচ্চ, দাহনাশক, পিত্তম, শ্রান্তিনাশক, ক্ষার, ক্ষম, ক্ষম, ব্লকর ও জরনাশক। স্বক্ গ্রহণীয় মান্ত্রা ২ মাবা।

### मम्बद्धनः।

সমুত্রকেনঃ কেণ্ড তিওীরোঃ বিকক্তথা।
সমুত্রকেন শুকুবো) বেখনঃ শীতল্প স: ।
ক্বাড়ো বিবশিষদ্ধঃ কর্বস্কুল্লযুঃ।
নাত্রা ও স্কুল্মঃ ।

#### नम् वटकन् ।

সমুদ্রকেন, কেন, ডি গীর, অন্ধিকফ এইগুলি সমুদ্র ফেনের পর্য্যাব। সমুদ্রক্নে চক্ষুর হিতকারক, কুণতা কারক (পোষক) শীজন, ক্যার ও লবু। ইহার বিহ্নাশিকা শক্তি আছে। ইহা কর্ণের পীড়া ও ক্ষুন ই করে। ইহার মান্ত্রা ৬ রভি।

### वर्षार्थात्रः १

वम्दमाण्य वर्गः।

### यहन राम्य।

মধনশহর্ষনঃ পিণ্ডীনট: পিণ্ডীক জরা।
করহাটী বল্লরকং পাত্যকী বিষপুষ্পাকঃ ।
নদনো বধুর ভিজ্ব বীর্ষোজো লেখনোলযুঃ।
বাভিকৃত্ বিজৰি হরঃ প্রতিপায় ত্রবাধকঃ ।
ক্লকং কুঠকংগবাহ পোর গুলুত্রবাপহঃ।
মাত্রা ২ মাবকৌ।

#### मयना कल

মদন, ছর্দ্ধন, পিণ্ড, নট, পিণ্ডীকক, করহাট, মক্রবক, শল্যক ও বিষ্পুল্বক এইপ্তলি মদন কলের প্রাার। মদন কল মধ্র, তিক্তন, উষ্ণবীর্ঘা, লেখন, লগু, বমন কারক, প্রতিশাব (মুখনাসিকামি হটতে জল্পাব) নিবারক, রুক্ত, ত্রণ ও বিদ্রধি রোগে উপকারক। বমনার্থ ইহার কল ব্যবগ্রা। মীতা ২ মাধা।

### व्यक्त्र व क् ।

বলা স্বাক্ত্সনা বেদ্দী চ রনার্মী। বাবনী হত্তালার ত্রণক্তাদারভাল্ । অন্যা দাত্রা বলসগুননার্থাৎ ৫ রাঞ্চিকাঃ ব্যনার্থাৎ ২ মাবকো।

আফিশম্লের তুক্ বলকাবক, জেদ জনক, রসারন ৩ বমনকবিক। ইংগার বারা ভাতিসার, অভ, কুঠ ও ভামবাভ বোগ নট হয়। মাত্রা বলকরণায়ি জন্য ২ রতি, বমনকরণার্থ হাষ্য।

#### बाह्यमञ्जूष

मनारविश्वयमः शृष्टिम्दर्भर्यन्त लावयः।

বামনঃ বেণ্ডাননঃ কফ্সিব্রবস্তা । অস্য প্রং প্রাহাৎ মারা বেণুনাদ্যর্থৎ ২ মুক্তিকে, বামনার্থৎ ১ মাধকঃ।

মলান্ত, পৃত্তি, অন্তপর্ণ ও লোমণ এইতালি অন্তমলের পর্যায়। অন্তমল বমন
কারক, স্বেদজনক ও কফনিংসারক।
ইহার শুক্ষ পত্র গ্রহণীয়। মাত্রা স্কেদজনন ও কফনিঃস্বেগ জন্য ২ রতি,
বমনকরণার্থ সাধা।

### . प्रथमर्भनः ।

शायमः त्यसमः त्थारका गीरगायः भूचवर्णनः । स्वत्रा भूकस्तरमा शासः छन्गाया २ मायरकः ।

স্থদর্শন অর্থাৎ বড় কানডের মলের রস বননকারক, স্পেদজনক ও উফ্টবার্য্য। এই রসের মাত্রা ২ মাধা।

#### (जाािज प्रजी।

জ্যোভিয়ভী স্যাৎ কটভী জ্যোভিজা কল্পীত চ। পারাবতপদী প্রথা লভা প্রোক্তা ক্রুন্দনী ॥ জ্যোভিয়ভী কটুভিকা স্রা ক্ল্স্মীরজিৎ। জ্ঞভুগুজা বাবনী ভীক্তা ব্লিক্সি ন্তিপ্রদা ॥ জ্বসা বুল্ গ্রাছ মাত্রা ১ নাবকঃ।

ल डाक्ट्की हिन्दी गालकात्र नी .

ক্যোতিয়তী, কটভা, জ্যোতিকা, কন্ধনী পারাবতপদী, পাণা ও কক্ষনা এইগুলি ইহার পর্য্যার। জ্যোভিয়তী লভা কটু, ভিজ্ঞা, সর (বাষু ও মলাদি সরল কবে) অভিশার উষ্ণা, বমন কারক, তীক্ষা, অগ্নি কারক, বৃদ্ধিস্কৃতি প্রদাবক ও কফ বায়্ নাশক। ইহার মূল, অভাবে সমস্ত প্রশ্নীর। মাত্রা > মাবা।

## भवन्त्री।

খবপুন্দী অনুভা ঘন্টা খবপুন্দা স্থাকৃতিঃ। খবপুন্দী কটুবিজা বাহিমী কণ্দিখাত ॥ অস্যাঃ ক্যাধিকং প্লাহাং যাত্রা ৬ রক্ষরঃ।

वानमन्हे। हिम्मो मनस्नी।

ইহার আলোকতি শণপুলোর নাায, ইহার অপর নাম ঘণ্টা।

গুণ কটু, তিক্ত, বমন কারক ও কফ পিত্ত নাশক। ইহার ফলাদি গ্রহণীয়। ফাত্রা ৬ রচি।

#### (स्वमाणी।

(ধথসাবং ফল্যভিডিঃ।)
দেবদালী তুবেৰী স্থাং কর্কটি চ গরা গরী।
দেবভাওী বৃত্তকোষ শুলা জীমুভ ইভাপি॥
পাঙাপরা ধরস্পালা বিষ্ণু গরনালিনী।
দেবদালী রসে ভিজা কফার্লং লোছ পাণ্ডুডাঃ॥
নালয়েং বামনী ভিজা কয় হিজা ক্রিনালনম্॥
দেবদালী ক্রম ভিজং ক্রিনালেনম্॥
স্বংসনং শুলু খূলম্খ মর্গোখুং বাভজিং পরম্।
অস্যাং ফলাদিকং গ্রাহ্থ মারা ১ মাষ্কঃ।

## हिन्ही (मारेनश)।

পর্যাষ। দেবদালা, বেণী কর্নী, গরা, গরী দেবতাতী, বৃতকোষ ও জীগৃত। ইহাব আর একজাজীর বৃক্ষ আছে ভাহাকে ধরস্পর্দা, বিষয়ী ও গরনাশিনী কহে। ইহাব ফল পোন্তার নাাষ।

গুণ। তিক্ত ও বমন কারক ইহার হারা হৈ মক আর্দা শোপ, পাণুতা, ক্ষর রোগ ক্রিমি ও জর নিবারিত হব। ইহার ফল ভিক্তে, ক্রিমিমু, কফনাশক, অংসন ও অতিশর বাহুনাশক। ইহার হারা গুলা, শুল ও অর্দা উপশ্বিত হর। ইহার ফলাদি গ্রহণীর। ধারা ১ মাবা।

# क्रूज़ी।

কটুমুখী ভিকৰীয়া রাজপুঞী বুণায়ক। । ছুমিনা কটুকালাবুদ্ধিয়া কটুভিজিক। । ছুমিনা কটুকোজা চ বাভিক্ৎ ককবাতন্ত। কালপোন্তব্যাস বিষ্ণাতুক্তিয়ান্ ব্রেৎ । দারা ২ বাবাকে।

## ভিতলাউ।

কটু তুবা, ভিক্তবাজা, রাজপুত্রী কটুকালাব্, ইক্ষাক ও কটুভিক্তিক। এইগুলি
ইহার সংখ্তে নাম। ইহা কটু, উষ্ণ,
ব্রনকারক, কৃষ্ণবু, বারুনাগক ও বিষয়।
ইহার স্থানা কাল, শোধ, ত্রণ, খাল,
পাণ্ড ক্রিমিনোগনাই হয়। মাত্রা ২ম, যা

#### काकनाना ।

বাকনাসা ডু কাকাকী কাকজুওকনা চ সা। কাকনাসা কথায়োজা কটুকা রূপণাকরোঃ ॥ কক্ষাী রামনী ডিক্কা শোধার্কা বিভয়ুঠ জ্ব। জ্বসা বুলাবিক্ব প্রাশ্বং শাবা ১ শাবকঃ।

কাকঠুটী হিন্দী কেন্দে।ঠোঠা। প্ৰধায়। কাকনাসা, কাকানী ও কাক-তুতফলা।

তা। কাষাব, উঞ্চ, আম্বাদে ও পাকে কটু, কদৰু, বমনকারক, তিজ । ইছা বারা, শোধ, অর্ল:, বিত্র ও কুঠরোগ উপশ্ববিত হয়। ইহার বুলাদি প্রহণীয়। বাবো । বাবা।

## मख्यार्थात्र।

विद्युष्ठनीय वर्गः।

## इबीकनी।

सहोत्रकाणमा शब्दा कालका श्रृंका। मृत्रा । देवपरकाराका स्रांत ८०वको त्यस्मी निक्ष ॥

बब्दा विकास शानि कीवती ह्याविकीह है। विकार साहिनी देवन शुक्रमा प्राकृताकशा । कोरडो रहस्को रहस्ति शब्दास्ता मक्ष साससः। चनात्रुक विकश्चा दुका वा स्त्राविती व्यक्ता । शृष्टमान्द्रमधी मुख्या कविका मा र लवावृष्टा । भक्तकाच्या श्रीका स्रोवको वर्ववर्षिको ॥ ८६७को ठामिका कुळा महामाविषयाकृष्टिः। विक्रमः मर्व्यद्वारचन् द्वादिने अन्द्रादिनी । श्राम्प शृष्टमा रहाका व्यविमार्ट्यरुष्ट्रका विका । व्यक्तिविश्वता नवा को नवी नविद्यापक्ष । हेब्राद्य (कळक) त्रका तव'तेक्रे आधावातंत । मञ्जाबायि जाडीमा श्रदान विक्रमा म्य छ। ॥ मुख्यत्वाचा मूलका मर्सात्वादवर् सम्प्रकः। रही छकी शक्तमा नवना कुरहा शह्न ह क्रटकाका क्षेत्रको त्वका काबूत्राका त्रमाप्रसी । अञ्चर्या जनुत्राञ्चया द्रश्यो श्रम्द्रवायियो ॥ चामकाम व्यव्यार्थान्यके त्यादवाच्य कियीय् । रेबबर्च) अच्बी द्वान विवस विवस्कवाम् ॥ अन्त्राभाम अवव्यक्ति विका क्ष्युव्यव्याग्यान्। कायनार जुनवानहर भोहामक वक्षता । व्यक्षेत्रो १ वृजक्ष्म ७ वृजावां ७ के नागरप्रद । ৰাপুত্তিক্তকৰ'য়ত্ত্বাৎ পিতত্ত্বৎ কপছৎ ভূ সা॥ क्ट्रेडिक क्यांग्रद्वांब्ल्य्याश्वकांब्र्याः निवक् कर्कात्र वाषावक्त कवार्मिता ॥ পर्वादा मळाम चापूः चारावरहा राज्यस्थः। वृष्क क्रिक कृष्टि कपू द्राष्ट्रकु कुरदर। ब्रमा ॥ मवा अपा चनावृत्ता करती किला ह हास्ति। निमस्कार भाषानेका ह कविकाविक्र नथा। भवा'प छन यूक् हुर उदेव कर्व 'दक्षका । ह्ये अक्याः करन वस् वस् कर्म करम् के ब्रिकारक म इन्तिका वर्कप्रकाशि (পविका मनत्याविमा । विवास १५ अ दिनो लंबा। जुका त्याका विद्यायम् ६ । विद्याणियो दुश्विरत्म क्यानाः

विमाणियो दुक्तिवाल क्षेत्रावान । विमाणियो दुक्तिवाल क्षेत्रावान । विमाणियो मुख्यक्ष् मणाणाः विणयो गावि सव क्षास्त्रम ॥ विभाणां क्षाय (पाषाम् वालां विक क्ष्यक्षियाम् । विश्वीको व्यक्तां स्टूक्तिमाणित क्षाक्षिणाः ॥ व्यव्यान क्ष्यां स्टूक्तिमाणित क्षाक्षिणाः ॥ মৃত্যন বাজ্ঞান্ রোগান্ সর্বরোগান্ রাজাবিতা ।
পিজুপ পর্বরা অঠা কণামর রাজ্য ক্রমান ।
বর্গান্ত প্রাণ্ডার বার্যন রাইনিবিধা র
অংবাজিবিরো বলবজ্ঞিক
কল্প ক্রোজিবিরো বলবজ্ঞিক
কল্প ক্রোজিবিরো বলবজ্ঞিক
বিষ্করক্তর্ভয়াল খাবেন ।
বিষ্করক্তর্ভয়াল খাবেন ।
বিষ্টার্যনি বল্প ক্রাল্ডান মাত্রা ৪ মাবকাঃ ।
বিষ্টার্যনি বিষয়া হিমাচলভা বা স্যাক্তেরন পুরুনা
বিজ্ঞানে বিষয়া হিমাচলভা বা স্যাক্তেরন পুরুনা
বিজ্ঞানি ক্রান্তিনি তু বিজয়া জাতা প্রাক্তন্ত্রা

कोदकील स्त्रोकको मिनाविका मा मखटकवा बुटेसः ।

र्दीक्की, ज्ञा, श्या, कावचा. পুতনা, অমৃতা, হৈমবতী, ভাব্যথা, চেভকা, **ट्यात्रमी, भिरा, रहण्हा, विकारा, कोरछी** ও রোহিণী এইগুলি হরীতকার নাম। एत्रीककी माख्याकीय, यथा विस्तर्श, द्या-হিণা, পুতনা, অমৃতা, অভয়া, জাবজা, 😉 চেতকা। খাহা অলাবুর (লাউ) ন্যায় গোল অধাৎ ডিমাঞ্চি তাহার দান বিজয়া, যাহা ঠিক পোলাকার তাহার নাম রোহিনী, সুক্ষ আছি বিশিষ্ট হরী-তকীর নাম অমৃতা, মাংসল অর্থাৎ সাধিক খদ্য বিশিষ্ট হ্রীক্টী অম্ভা, মাহাতে लांठि तथा ब्यास्ट खारात नाम व्यवसा, कीवली दबीककीत वर्ग श्रदर्गत नाहत, टिष्की चूल ७ क्ष्मवर्ग, ( हेशदक জাপীহরীতকী কছে।) বিজয়া সকল রোগে ব্যবস্থের, রোহিণী হরীভঞ্চী ত্রণ-त्त्रालन करत व्यर्थार उत्न खरनन मिरल উহা বদিয়া যায়। প্রদেশ কার্ষো পুতনা इत्रीककी छारा, त्याधन व्यर्थार त्युगनि कार्या अम्छ। इत्रीककी अवस्ति, ठक् রোগে অভরা, জীবজী সমুদার রোগ নালক, চুৰ্কার্থো চেডফী হরীভঞ্চী প্রশস্ত এই সমুদার বিবেচনা দুক্তিবুক্ত মতে বিশেষ বিশেষ হরীভকী ব্যবহা করিবে। উল্লিখিত সাভজাতীর হরী তকীর মধ্যে বিজরা প্রধান, কারণ উহা স্থাদেবা, স্থাভ ও সকল রোগে হিত

ছ্রীতকী স্প্রস বিশিষ্ট, তল্মধ্যে न्य तम विभिष्ठे रवीककी त्या है। रवी-क की तक, डेक. अधि मीशिकत, अवन मंक्ति वर्षक, शांटक वाष्ट्रवम, ब्रमायन ( वा) पि नाभक ) ठक्क् व विष्कत, लघु, আধ্বদ্ধক, বলকারক, অমুলোমক ( মলা-प्रित अधः अवर्खक)। रत्रोककी त्नवत्न শ্বাস, কাস, প্রমেহ, অর্শঃ, কুষ্ঠ, শোথ, अबदनाय, धर्गी, डेमबद्यान, कि.म, विवस (सनामित वक र छता), विसम জ্বর, গুল্ম, আখান ( খেটকুঁপা ) ত্রা, वमन, रिका, कणू, छाउचांत्र, कामन!, मृल, जानार, झोरा, शक्र, जामती, मृत-কৃচ্ছ ও মৃত্রাখাত রোগ নষ্টহয়। হরাতকী স্ব, ত্রু ও ক্ষার রস বিশিষ্ট বলিরা পিত্ত ও কফ নাশ করে, কটু, ভিক্ত. ক্ষার ও অনুরস থাকাতে বারু নাপক, को ७ अम्रतम थाकाटक निखकात्रक किन्छ কথনও বায়ুজনক নহে।

হরীজনীর সজ্জার মিষ্টরস, স্বারুছে অম, বৃত্তে (বোটার) ডিক্তে, স্বংক কটু ও অহিতে (আটিতে) ক্বার রস বিদ্যানা আছে। ফুর্ডন, স্বিশ্ব, কঠিন, গোলাকার, গুরু, জলে নিক্ষেপ করিলে ডুবিরা বার, এইরপ হরীভনী প্রশাস্ত ও

অভিশয় ধ্রণকারক। আর যে হরীক্রীর ভার ভুটকর জাহা ভ্রেষ্ঠ। हर्सन कतिहा शाहेटन व्यक्तित्र (श्यन कदिया शाहेत्न सम् श्रिक्क वर. দিছ হনীভদী সংগ্ৰাহক (মলাদি সংগ্ৰহ कब्रिहा बार्य) जुहै (खाखा) इत्रीककी ত্রিদোশ নাশক। ভোজনের সহিত ह्रब्रोककी त्मवत्न वृक्ति, वल ७ हे सिन्न প্রথর হয়, পিন্তু, কফ ও বায় বিশ্ব ল হয় এবং মৃত্র পুরী দালি বিস্তিভ ভ হব। আহারাজে হরীদুকী ভোকন করিলে वार्षित. कक ५० जाइशानकवा (पांध निवाबिक क्या ज्बीककी सवत्व मिक्क ডোক্সন করিলে কফ, চিনির সহিত ভোজনে পিন্ত, সুকের সহিত সেখনে বায় ক্ষনা রোগ ও গুড়ের সহিত সেবন कदिएक भग्नाय द्वात महे वह ।

বর্ষ। ঝতুকে দৈশ্বব লবণের সভিত, শরৎকালে চিনির সহিত, তেমজে ভক্তীর সহিত, শীতকালে পিপুলের সহিত, বসস্ত কালে মধুর সহিত ও গ্রীমকালে গুড়ের সহিত হরীহকী সেবন কবিলে শরীর নিরোগ থাকে। ইহাকেই ঋতু হরীভকী করে।

পথভান্ত, তুর্মল রক্ষ প্রকৃষ্টির কুশ, উপবাদাদি হারা ক্ষীণ দেহ, পিত প্রবল ধাতু, গর্ভবন্ধী স্ত্রা, ও সাহার রক্ত নিঃসৃত হইরাছে ইহাদের হরীতকী ভক্ষণ নিধিছা। ইহার মারা। তানা ছইতে ১ তোলা।

হরীতকীর মঞা চকুর হীতকর, বারু ও পিত নাশক এবং গুরু। হরীতকীর ফল গ্রহণীর। মাত্রা॥• ভোপা হইডে ১ ভোপা। বিদ্ধা পর্বাতে বিজয়া, বিমালরে চেতকী ও প্রতনা, সিদ্ধারেশে বোহিণী, প্রতিশ্বান নামক প্রদেশে বিজয়া, চম্পা-প্রদেশে জায়তা ও জভয়া এবং সৌরাষ্ট্র দেশে জীবতী নামক হরীতকী উৎপদ্ধ হইবা থাকে। উল্লিখিত প্রদেশ সকল এই সাতপ্রকার হরীতকীর স্বাভাবিক উৎপত্তি স্থান কিছু উহাদের প্রায় সকল জাণীই ভারতবর্ষ ও তদ্মিকটবর্তী দেশেব সর্ব্বাহী উৎপদ্ধ হইরা থাকে।

#### প্র-পিত্রিকা।

कनामी (प्रमण्डी ह रहानी वर्गण्डिका । विक्रिका विकामाध्य क्रमान्त्रपदः ख्दा ॥ श्रीर्थान्त्र वस्त्रप्रमण्डी विकामस्त्रम् । स्रामना भाष्ट्राचक स्नामी स्नाद्रम् स्माद्रा ।

#### (मानाम्बी।

কলানী, হেমপত্রী, রেচনী ও স্বর্ণপ্রকা এইগুলি সোনাম্থীর সংস্কৃত নাম।
মলরে ব, অধিমান্দা, যক্তং, প্লীহা, বন্ধ গুদ, আজীব, বিষমজ্ঞর, কামলা ও পাণ্ডু রোগে ম'লা > মাধা সোনাম্থী, প্রয়েজ্য।

### च्याब्रग्वभः ।

আরগ্বধা র'জনৃত্য সন্সাক্ষত্রক লং।
আরবেতা ব্যাধ্যাত: কৃত্যালঃ সূথপকঃ র
কর্মিকারে। দীর্ঘকলঃ অপীতঃ অপিত্যকঃ ।
আরগুবধো গুলং আদুং লীভকঃ অপানো গুলঃ ।
আর ক্রোণ পিতাল বাংভাগাবর্জন্তমুহ ।
ভংকলং অপানং ভ্লাং ভূউপিভক্ষাপ্য ।
আর্ সূত্র সভতং প্রাং হেউপ্রভি করং পরস্ ।
আর্ ক্রানির্যাংশা প্রক্রিয় । বারা ও নাবক'ঃ ।

#### त्मांमान ।

জারগ্বপ, রাজস্ক্ষ, সম্পাক, চতুরক্ষুল, আরবেজ, বাাধিখাত, ক্তমাল,
ভ্বর্ণক, কনিকার দার্থফল, ভর্মাল, ভ্রেপক, কনিকার দার্থফল, ভর্মাল, ও সর্গ
ভূষণ এই ও'ল সে দেশলের নাম। আবগ্বদ
গুরু, শীতল ও উত্তম অংসন। (কে ঠন্তন
মলাদিকে নিথিল করে)। জ্বব,
ক্তন্যোগ, রক্তপিন্ত, উর্জগবাসু ও শূল
রোগে উপকারী। আরগ্বদের ফল
কোঠিছিত মলাদি লিখিল করে, ইহা
ফাচিকারক, ভূঠ, পিন্ত ও কফ নাশক।
আরগবধ জ্বের বিশেষ উপকারী, ইহা
ঘারা বিলক্ষণরূপে কোঠগুছি হব।
ইহার ফলের জাঠা প্রহণীর। মারাঞাণ
ভোলা। বিবিধ চম্মানোগে ইছার
প্রের ঘারা উর্থ্ডনাদি বাবস্থা করা হাষ।

## यवामधक्रा।

ষবাস শক্তা ভেয়া বুংছবী পিছ্ছারিবী।
অরক্ষীপনী দীন্তা রেচনী সাপুরাভনী।
মার্যান্চাপম সভ্যায়া বুর্জনস্য ভবা শিলোঃ।
রেচনার্যং প্রয়োজ্যেরং জীবস্য ছবিরস্য চঃ
অস্যা যাতা ১ কর্য:।

## भीवथना

নীরবন্ত অর্থাৎ ম্যানাকে নংকৃত ভাষার ষবাস পর্করা বলা যার। ইহা বৃংহণ, পিন্তনাপক, জরম, কুণাবন্ধক ও শীতবীর্মা। ইহা পুরাজন হইলে বিরেচনী শক্তিসম্পদ্ধ হয়। গর্জবন্তী নারী ভূর্মন, শিশু, শীশদেহ ও বৃদ্ধ ব্যক্তির পক্তে ইহা উপযুক্ত বিরেচক। মাত্রা ২ তোলা।

### हेस्रवाक्रेगी।

वैस्थीसवास्त्रभी हिसा चवाकी ह नवाक्ति । वास्त्रभी ह नद्वानुग्रका मा विन्याना वद्याकता ह (चक्तुक्ता स्वाको ह स्टेबसीस स्वाक्त्रभा । नवादियो द्वार किकर शाद्य स्ट्रेस महरमञ्जू ह वीटवाकर समना शिख कक्तीट्यान्द्रश्यक्त् । चामकामाश्यर सूके सन्त्र अदि त्वव अन् र ॥ अदयह दूह वर्षाम विश्वम् विद्यालव्य । क्ता) मूनर क्लक आहाय याता व दक्तिकाः ।

बाधानभा। हिन्नी हेखाकून, वड़ी हेखकना।

পর্যাব। এক্সী, ইন্দ্রবারুণী, চিত্রা, গবান্দী ও পরাদনী। অপর এক প্রকার বারুণী আছে তাহার নাম বিশালা, মহাফলা, বেতপুন্দা। মৃগান্দী, মৃনৈর্ক্তারু ও মুগাদনী। এই উভরজাতীর ইন্দ্রবারুণী তিক্ত পাকে কটু, সর (কোচন্থ শতাদি নিঃসারক,) লঘু ও উষ্ণ বীষা। ইহার ছারা কামলা, পিন্ত, কফ, প্রীহা, উদরব্রোগ, খাস, কাস, কুঠ, ওলা, গ্রন্থি এণ, প্রমেহ, মৃত্যুর্ভ, আম, গগুরোগ ও বিষ নত্ত হর। ইহার মূল ও ফলের দ্র্সা গ্রহণীর। মাত্রা ব র্জি।

## भागवीकम् ।

केकः नामभगेकः नामगेकः मृत्यक्वः । रत्रक्षः नामगोकः गार्ट्वार्थाग्त्रं विवानसम् ॥ व्यद्धं भूतोयमध्यः । मात्रद्धं निश्चां वर्षः । वेष्ट्रंगर्द्धं व्यादार्थं तृरेषद्ववः अनुवारकः ॥ मात्रा २ मायरको ।

## कानामाना !

भागनवीक, भंगमधीक १८ सूरवहरू এই ভিনটী भंग कानामानात्र नरकुक साम । ইছা বিরেচক। শোবা উল্বী, জর, মলবেরার, ষত্রপালারক শিল্পপীকা, উলাবর্ত ও আনাহ বোরে কালালানা উপকারক। ইহার মারে ২ নামা।

## कड़े त्वा हेवी ।

কট্টী জু কটুকা ডিজা ক্যভেগ কটুজন। ।
অংশাকা বংশাশকলা চকাগী পদলাগনী ॥
যংগ্য পিডা কাণকথা রোধিনী কটুলোছনী।
কট্টী ডু কটুকা পাকে ডিজা ক্যভা থিয়া লগুঃ।
ডেগ্রিমা দাপনা জ্বান কর্মপন্ত অন্তাপন।
প্রথেষ শাস কাসাল্ল দাব কুঠ ক্রিনি প্রপৃৎ ॥
অন্যা মুলং প্রান্তাং গাব্রা । দাবকো।

## कढेकी।

की, के हे का, किका, क्का एका, कह-छता, व्यानांका, बर्मानकना, ठकांकी, नक्नाक्नी, बर्माणिखा, कालक्र वा द्वादिनी, कहें द्वादिनी अहें किन कड़ें को व नाम। कहें की ठिक, भारक कहें, क्रक भीकन, नष्, एक एक, व्यक्षिणे भक के कहा। कहें की स्मर्चन कित्रांत, क्रक, शिख खत्र, श्राम्म, कीम, तक्र एमाय, माद, क्रें ए किमि नहें द्वा है द्वात मून श्रद्भीय। माखा। एकाना।

# को नर्गे। त्वाक।

ক্টুপৰী হৈষবঙী ছেবজীর হিষাবড়ী। ছেমাজা পীড়পুঙা চ ডায়ুল ভোকষুচাতে। ছেমাজা রেচমী ডিজা ভেবিষ্/হক্লেম্ম কারিণী। জিবিজ্ঞ বিষামাহ ক্কপিডাজ ক্ঠমুৎ। মাত্রা ১ মাহকঃ।

#### C5 4

बहुगर्गे, देशबरको, रशक्कीति, रिना-क्री, रश्याम्। ७ गीकवृद्धा रेखात कृत्यन নীন, মূলকে চোক বলে। ইছা রেচফ দিক ও ভেদক, দেবন করিলে গা বমি বমি কবে, ক্রিমি, কণ্ড, বিষক্ষনা রোগ, আনাহ (মুনে।), ক্ষফ, রক্ষপিত ও কুই রোগ হমন করে। ইহার মাত্রা ১ মাধা।

### गीजग्नी।

গছিন) পীতনুলী চ বলা। সা মূলবেচনী।
হত্তান্ত্ৰীৰ বড়ীসারং ৰাজ্যান্ত্ৰা মহোচকৰ্ ৪
বিট্সলং লাভ পিডা দৃত্ত্ৰৰ বিয়োছিনী।
অসা মূলং প্ৰাহাং নাকা ১০ রাজিকাঃ।
বেউচিনি।

বেইচিনির সংস্কৃত নাম গন্ধিনী ও পীতন্দী। তেইচিনি বলকর ও মৃত্ বিবেচক। অজীর্ণ, অভিসাব, অর্থনান্দা, অক্লাচ, মলবোধ ও শীভণিত্ত ব্যোবে ব্যবচ্ছের। অজীর্ণ ও অভিসার রোগে যদি বিরেচন আবশাক হস, জবে ইহার হারা কর্ত্বা। তৃত্ত ক্ষত্তে ইহার চুর্ণ লাগাইলে বিশ্লেষ উপকার স্বর্ণে। ইহার মুল বাবহার্যা, মাজা ১০ রভি।

## एक्रवकारको ।

चन्नर्सा १०३० मः न)। मान्यादा वज्रुद्धां २० । (चंडपुष्णाः जमापुष्णः जवानकः अछालनः । इटकांशदा १ क्यांमा जा। १६० प्रश्नीः अश्रीचितः । इकपुष्णाः सङ्ग्रकः स्वता एकाष्टिः अश्रीचितः । चर्चसुप्तः सङ्ग्रकः स्वता एकाष्टिः अश्रीचितः । चर्चसुप्तः जन्नः वाड क्ष्रं कष्ण् विषय स्वता । विषयि श्रीय सन्वार्णः । साम्यायस्य सङ्श्यीस्योस् । चर्ताहरू श्रद्धान्याणः काम्यान विश्वास्य ॥

> রক্তার্ক পুলাং মধুরং সাজ্জাং কুঠ জিনিয়াং ককনাপনক। অপ্রো বিবাং হাতি চ প্রজাপিয়াং সংগ্রামি প্রবেদ্ধ ব্যক্তবাধী বিজ্ঞাং বং ৪

की व्रवर्तमा कि एक कि विश्व मनवर्त सर्व ।

कृषे श्रात्मानव वव १ स्थि । स्वत्न वास्त १ स्वत्न कि स्वत्न कि

(चिक्र जाकम ७ मान जाकम।

খেতে আক্রের পর্যাব। অলক, গণধুপ, মন্ধার বসুক, খেতপুপ্প, সদাপৃপ্প, বালাক ও প্রতাপস।

রক্তাহর্ত্তর পর্যায়। অর্কপূর্ণ, বিকীরণ, রক্তপূর্ম্প, শুক্লফল ও ক্ষেটি।

তাপ। আমরিক প্রেরাগ। অর্করর সর, বায়ুনাশক, ইহা বাবহারে কুঠ, কণ্ডু, বিষ, রপ, প্লীছা, তাক্ম, আর্দঃ, প্লেয়, উদর রোগ ও পুরীষ ক্রিমি নষ্ট হয়।

त्येष व्याकत्यत भूक्य वन्नकातक, लघु, व्यक्ति मीशीकातक ७ शाहक, देश द्वाता व्यक्ति, क्षत्मक (प्रशांति रहेट क्रम्मचार), व्यर्थ, काम ७ थान निगतन रता। नाम व्याकत्यत भूक्य प्रश्नुत, क्रिक्त, क्रम्भांक भ मश्ची, देश कृष्ठे क्रिकि विष्त, त्रक लिख, श्रम्म ७ त्याची, देश कृष्ठे क्रिकि विष्त, त्रक लिख, श्रम्म ७ त्याची) क्रिक्त, देश, व्याक्रमा विनिष्ठे ७ त्याहे विद्यहक देश दाता कर्ष, श्रम्म ७ देश द्वाता नाम दत्र।

वाकरमञ्ज वृत कक्षनिःगातक, त्यह स्वत ७ ववनकात्रक। देश त्यवन क्षत्रिक थान, कान, क्षत्रीनगात, व्यक्तिगात, क्षत्रिका, तक्ष्मिक, नीक्ष्मिक, क्षत्री, প্রদর ও কফজ ব্যাধিশমত নিরাকৃত হয়। ইহার প্রলেশছারা বুশ্চিকাদির বিষ নষ্ট হয়।

আকলের আঠার মাত্রা ১০ বিশু। গুলের ভুকের থাত্রা বমনকরণার্থ ২ মাঘা, স্বেদজনন ও বমনের বেগকরণার্থ ২রতি।

# त्मह्यः। ब्रुही।

त्मस्ट निष्युष्य नाम्यक्षी वस्त्रस्याधिन ।

मूथानयवप्रवाध स्कृष्य स्वाधः नावस्य स्वाधः ।

मूभमधीनिकाधान कस्य स्वाधानिकान् ।

प्रेणाम स्मास्य क्षेणाः स्मासं स्मास्य भावस्य।

उन्ताम स्मास्य क्षेणाः स्मासं स्मास्य भावस्य।

उन्ताम स्मास्य क्षेणाः स्मासं स्मास्य भावस्य।

उन्ताम स्मास्य क्षेणाः स्मासं स्मास्य ।

उन्ताम स्मास्य क्षेणाः स्मासंय क्षेण कृष्यः अप्।

स्मास्य कृष्य स्मास्य स्मास्य स्मास्य ।

स्मास्य कृष्य स्मास्य स्मास्य ।

स्मास्य कृष्य स्मास्य स्मास्य ।

## मिজवृष्ण ।

ণ বঁটার। সেত্ত, সিংহ সূত, বজুী, বজুক্রম, সুধা, সমস্তহুল্ল, সুক্, সুহী ও ওড়া।

তা ও আমরিক প্ররোগ। রেচক তীক্ষ, অন্ধিদীপক, কটু ও ওরু। ইহা ব্যবহারে শূল, অন্তিলিকা, আগ্নান, কফ, ওল্ম, উদর রোগ, বায়ু, উন্মান, মুদ্রু।, কুঠ, অর্ণা, শোগ, মেদোরোগ, আগ্নরী, পাতুরোগ, রগ, শোগ, জ্বরু, প্রীহা, বিষ ও দুবী বিষ নষ্ট হর।

ইহার নির্ব্যাপ উষ্ণবীর্ব্য, শ্লিঙ, কটু ও লবু। ইহা ওঅ, কুঠ ও উদ্বরোগ প্রস্কাব্যক্তিদের পক্ষে হিডকর বিরেচক, ও অন্যান্য চির্নেরাবীর পক্ষেও উপ- कातक। देशात मृत्नत एक् ७ निर्दान श्रद्भीत । माद्धा २ वाषा ।

#### ( जीवना (मस् उत्वादः । )

(গাতলা অনেনৈব নামা প্রসিদ্ধা ।)
খাতলা সপ্তলা নামা বিনলা বিপুলা চ না .
ভবা নিগবিভা, ভূরিকেনা চর্মকবেভালি ঃ
খাতলা কটুকা পাকে বাতলা শীতলা লম্মা।
তিন্ধা খোল কডানাব পিতোখাবর্দ্ধ র কজিও ॥
নামা ১ শাবকা।

## हिम्ही बाजना (निज वित्वर ।)

পর্যাব। শাতলা, সপ্তলা, সারা, বিমলা, বিতুলা, ভূরিফেণা ও চর্ম্মকরা।

গুণ ও প্রয়োগ হল। পাকে কটু, বাব জনক, লীতল, লবুও তিজ্ঞ, ইহা লোধ, কফ, আনাহ, পিন্ত, উদাবর্জ ও রক্তদোব নিবারণ করে। ইহার মূল ও নির্যাস গ্রহণীয়। মাত্রা ১ মাবা।

## (थठा बिद्रा

খেডা বিবৃৎ বিভণ্ডীস্যাৎ ক্রক্রাবৃড়া বিপুটাপি চ। সর্বানুড়'ডঃ সরলা নিপোরা রেচনী তি চ ঃ খেডা বিবৃদ্ধেচিনী স্যাৎ খাদুরক্ষা সধীর্ত্তৎ। ক্রক্ষা পিত অরম্যেত্ত পিতপোবোধ্বাগধা। অস্যা যুলত্ত্ব প্রাহ্যা। বারা ২ মাধকৌ।

(ब्रक्टिक्ट्रेड)। हिन्नी (ब्रक्ट शनिनत्र।

প্র্যায়। খেত ত্রির্ং, ত্রিভাটী, ত্রির্ভা, ত্রিপুটা, সর্কান্ত্ছি, সরলা, নিশোত্রা ও রেচনী।

ত্ত্ব। খেত তেউড়ী রেচক, স্বাচ্ উষ্ণ, বারু নাশক ও রক্ষ। ইবার বারা শিতপ্রের জ্ব, শৈতিক শোধ ও উদ্ধ রোগ নিবারিত হয়। ইহার মূলের স্বক্ষ গ্রহণীর। মাত্রা ২ বাখা।

### मामाजित्र ।

বিবৃৎশ্যাবাৰ্ছজ্ঞা চ পালিক্টা চ সুবেধিকা।
মনুর বিহলা কোল কৈৰিকা কালমেধিকা ॥
শ্যাবা বিবৃৎজ্জোহালপ্ৰবা জীৱ বিব্রেচনী।
মূক্ষ্যা বাব মহজ্ঞাজি কঠে।
মূক্ষ্যা ব্যক্ষা

হিন্দী শ্যাম প্ৰনিলয়।
পৰ্য্যায়। অৰ্দ্ধচন্দ্ৰা, পালিন্দী, স্থুখেবিকা, মসুধবিদলা, কোলকৈ দ্বকা ও কাল
মেৰিকা।

তা। এই তেউড়া পূর্ব্বোক্ত ডেউড়ি অপোকা অর তা বিশিষ্ট কিন্তু বিবেচন শক্তি অভিতীত্র, ইহা ব্যবহার করিলে মূর্ক্ত্রা, দাহ, মন্ততা, ভ্রম ও কঠপোষ উপস্থিত হর। ইহার মূলের ড্বক গ্রহণীয়। মাত্রা > মাষা।

## नपुन छी।

লঘুৰতী বিশ্লা চ স্যাদু দুষরপর্বাণ ।
উথৈয়ত কলা লীড়া লোগঘলী ঘূণ থিয়া।
বায়াহাদী চ কথিতা নিক্তক্ত ষকুলকঃ।
কুলাদতী কলভ স্যান্ বরুরং রসপাক্ষাে।
লীজনং সৃষ্ট বিন্ যুঝং গরশাের ফলাপ্তম্ ।
লম্মুকা

পর্যার। লঘুদন্তী, বিশল্যা, উত্থব-পর্ণী, এরওফলা, শীজা, শ্যেনঘন্টা, ছুণ-প্রিয়া, বারাহালী, নিসুদ্ধ ও মন্থুলক।

#### मची।

थ्व । क्रूबक्छोत्र क्ल बाचारम् ७ शास्त्र सर्व, ,नीच्ल, त्रुब श्रीय स्तरुक, रिवस শোগন্ন ও ককন:শক। এই বৃক্ষের মূল ও ফল গ্রহণীয়। মাত্রাভ রভি।

## वृद्रमञ्जी।

( এর্ড পত্র বিটপা : )

ক্রবন্ধী সাবরী ভিত্রা প্রভাকপণ্যপণ্যপণ্য ভিরোপচিত্রান্যগ্রোবীপ্রেভ্য ক্ছেণ্যাথুকণ্যপি । জন্ম পালে হুনী বীজাৎ বিখ্যাভন্ত ভিন্নীক্তন্য । জন্মণালো প্রক্লং স্থিতো রেচি পির কক্ষাপ্যং । জন্মাবীজাৎ প্রাহাৎ যাতা । । রুক্তিকা ।

जरणाल। हिन्दी खामालकारो।

পর্যাষ। অবস্তা, ববী, চিত্রা, প্রভাক পর্ণী, অরূপনী, চিত্রা, উপচিত্রা, ন্যগ্রোধা, প্রেড,ত্রেনী ও আধুক্নী।

তাণ। বৃহৎ দ্বতীকণের বীজকেই জরপাল বলে। জরপাল তারু রিশ্ধ, জাজি রেচক ও পিত্তপ্লেম্ম নাশক। ইহার বীজ গ্রহণীর। মাত্রা।০ রক্তি।

ষভীষয়ৎ সরৎ পাকে রসে চ কটু দীপনন্। গুলাছুরামলূলাজ কও কুঠ বিদাহদুৎ । ডাক্ষোক্ত হ'ভ পিৰাজ ককপোৰে,দুর ক্রিমীন

কণ চুইপ্রকর দত্তীই বাতাদি নিংসারক, পাকে ও এসে কটু, অগ্রিদীপ্রিকারক, তীক্ত ওউফার

প্রবোগ। আর্শঃ, আংমশুল, রক্তদোষ অত্, কুষ্ঠ, দাহ, রক্তপিত, কফশোথ, উদধ্বোগ ও জিনিবোগে প্রযোজ্য।

## नोनी।

मोनी पू नीनिमी पूर्णी कानरबाना व नीनिका। प्रचली किसमी पूजा अवीका महुन्य क्रिका ক্লীবজা কালকেশী চ বীজপুন্দা চ লা ন্তা। নীলিনী বেচনা ডিকা কেশী। বোহ ক্রমাণহা ৪ উজা হস্কানরপ্লীহ বাভরক্ত ক্লানিলান্। আনবাভ বুদাবর্থ মহ\ চ বিষ্মুদ্পভন্। মাত্রা ২ হাবকো।

#### नीम ।

পর্যার। নীলী, নালিনী, তুলী, কাল দোলা, নীলিকা, রঞ্জনী, শ্রীফলী, তুল্কা, গ্রাহিণা, মধ্পর্ণিকা, ক্লীডকা, ভালকেণী ও নালপুশা।

তা। ইছা রেচক, ভিক্তা, কেশের সৌন্দর্যা সাধক ও উষ্ণ। ইহার দ্বারা মৃক্তা, জন, উদররোগ, প্লাহা, বাতগক্তা, বাতপ্রেয়া, আমবাত, উদাবর্ত্ত, মদরোগ ও বিব দোষ নষ্ট হয়। ইহার মূল, অভাবে স্কাংশ গ্রহণায়। মাত্রা ২ মাধা।

#### व्यवभूबाः ।

পরপুঞ্জ: প্লীহশক নীলীবৃক্ষার ডিক্ত সং।
পরপুঞ্জো যক্ৎ প্লীছ ওলা এব বিষাপকঃ।
ডিক্ত: ক্ষাপ্ত: কাদাক্স খাদ অর হয়ো সমুঃ।
যাত্রা ২ মাধকে।

मंत्रभूरवा विन्नी मंत्रशका।

পর্য্যার। শরপুঝ প্লীহশক্ত। এই বুক্সের আকৃতি নীল বুক্সের ম্যার।

তাব। ভিক্তা, কৰার ও লবু ইছার প্রেবালে বকুং প্লীহা, তালম, ত্রণ, বিষ, কাল, রক্তরোষ, খাল ও জন নট হয়। ইহার মাতা ২ মাধা।

যবালো ভ্ৰালভা চ। যাৰো মহানো হু:স্পৰ্লো ধহুযাস: কুনাৰ্মক:। বুয়ালভা দুয়ালভা দয়সাঝা চ গ্লোহিনী। भाकांत्री कम्ब्रू हानका क्यांत्रा यहनिश्याः । यानः याष्ट्रः नह किक क्यतः गोज्या नवृः । क्ष्म याद्या प्रस्ताति शिवान् वृक्षे कान जित् । ज्ञाविनर्त्त याक्षक यवि कह यहः कृष्टः । ययानमा क्षर्व क्षाः। तूरेयहका यूक्तानका । याजा > नायकः।

যবাস ও ছ্রালভা। ঘবাসা, ছ্রালা। ঘ্রাসের প্র্যায়। ঘাস, ঘ্রাস, ছুম্পর্শ, ধন্য্যাস ও ছুনাশক।

তুরালভার পর্যায় এই তুরালভা, সমুজাজা, রোদিনী, গাজারী, কচ্চুরা, অ-নজা, কহারা ও হরবিগ্রহা।

ষ্বাদের ওব। ইহা স্বাক্, সর, তিজ্ঞা, কাষার, শীক্তল ও লবু। ইহাব হারা কফা, মেদোরোগা, মদা, ভাষবোগা, রক্ত-পিক্ত, কুঠা, কালা, তৃষ্ণা, বিলপ্ন, বাতরক্ত, বমি ও জন নিবারিত হব। জ্বালভার তাণ ঘ্রাদেরই ন্যায়। মাত্রা > মাহা।

## क्यात्री।

কুমারী গৃহকন্যা চ কন্যা ঘৃতকুমারিকা।
কুমারী ভেলিনী শীড়া ভিকা নেত্রা রসাযনী।
মধুরা বৃৎছণী বল্যা বৃষ্যা বাতবিষঞ্জন্ত।
গুল্ম প্রীয় যকুৎ বৃদ্ধি ক্ষক্তর্যরী হরেৎ।
প্রস্থানিক্ত ভিলেক্টাট পিকরক ভ্রমন্যাক।
স্বায়া নির্যালয় প্রায়া নার্যা ২ বারা।

ছতকুরারী। বিশী বিউকুনারী। পর্যাব। কুনারী, গৃহকন্যা, কন্যা ও ছত কুনারিকা।

ওপ। কৃতকুমারী ভেলক, শীতল, ভিজ্ঞ, চল্জের উপকারক, রশাগ্রন, মধুর, পৃষ্টিকর, বলকারক, জক্রজনক, বিষয় ও বায়ুনাশক। প্ররোগ। গুল্ম, প্রীহা, যরুৎ, বৃদ্ধি (কোষরুদ্ধি), কফজন, গ্রন্থি, অরিম্বন্ধ, বিক্ষোট, রক্তশিক্ত ও ভুক্তের রোগে প্রবোগ করিলে উপকার হয়। ইহাম নির্ঘাস সেবলীয়। নাজা ২ নাখা।

#### जायमाना ।

বিগভন্তা বায়মাণা বায়ঙী গিরিদানুদা। বায়ঙী তুবয়ু ভিক্তা সরা পিত্তক্ষপদা । অর হুডোগ গুল্মার্লো জমপুল বিষ্থাণুৎ। মাত্রা ২ মাবকৌ।

## वलाष्ट्रम्य ।

পর্যায়। বলভদ্রা, ত্রারমাণা, ত্রারম্ভী ও গিরিদাকুজা।

ত্থা। ক্ষায়, জিক্তা, সর, পিরভ্নেম নাশক।

ইছাছার। জর, হৃ:দ্রোগ, গুল্ম, আর্শঃ, লেমরোগ, শূল ও বিষক্ত পীড়া নই হয়। ইচাব মাজা ও মাষা।

## क्मावली।

বার্কবিকা ভূমিবলা মার্কণী মূদ্রেচনী র মার্কডিকা কৃঙ্বরী উর্জাব্যকায় পোধিনী। বিষদুর্গন্ধ কাসন্ত্রী প্রস্মোহর বিমার্শিনী । বল্লা ভূমী প্রসর্থ দীলা। মাত্রা ও মার্কাঃ।

# शिमी जुहेश्यमा।

প্রার। মার্কভিকা, ভূমিবলী, মার্কভী ও মৃত্রেচনী। ইবা ভূমিতে শতাইরা থাকে।

ত্ব। বিরেচক, বমন কারক, বিষয় ও তুর্গন্ধ নালক। ইবার বারা ফুঠ, কাস, তুল্ম ৩০ উদর জোগ উপশ্মিত হয়। ইবার বাজে ৪ ঝাবা।

## कृषेणाल्यालः।

কুৎলিজঃ শাল্মলি: প্রোক্রো বোচনঃ কুট-শাল্মলিঃ। কুটপাল্যালক ভিজঃ কট্কং কফবাতনুৎ ॥ ভেদ্যভাঃ প্লাহ জঠর যকুদ্ গুলু বিষাপহঃ। ভূতানাছ বিষদ্ধান্ত মেদঃ খুল কফাপহঃ॥ অসাবীজং গ্রাহঃ। মাত্রা ১ মাষকঃ।

## किय्रम दुवा।

পর্যার। কুংসিত সাল্মলি, রোচন ৩৪ কুটশাল্মলি।

গুৰ্ণ। তিক্ত, কট্, বাতপ্লেয় নাশক, ভেদক, উষ্ণ ও ভুতাদি ভন্ন নাশক। ইহার মান্ত্রাপ্লাহা, কঠর, যকুৎ, গুল্ম, বিষ-দোষ, আনাহ, বিবন্ধ, রক্তদোষ, মেদো-রোগ ও শুলরোগ উপশ্যিত হয়। ইহার বীক্ত গ্রহণায়। মাত্রা ২ মাধা।

#### कत्रीतः ।

করীরঃ ক্রকরঃ পত্রী প্রছিলো মরুভুরুছঃ। করীরঃ ক্টুকিভিকঃ বেদ্যকো ডেগনঃমাডঃ॥ দুর্ঘাম ক্ষরাভাম গরগোল ত্রণ প্রগৃৎ। অস্যান্ধু গ্রাহ্যা। মাত্রা ২ মাহর্কৌ।

विनो उठ्काछात्र।

পর্যায়। করার, ক্রেকর, পত্রী, গুরিল ও মরুভুরুহ।

প্রাণ। কটু, জিকা, স্বেদজনক উষ্ণ ও ভেদক। ইহা জার্দঃ, কফা, বারু, আমা, বিষ্ণুশোপ ও এণ নম্ভ করে। ইহার ক্বক গ্রহণীর। মাত্র। মানা।

# व्यक्ति। १४ ।

সংগ্রাহি বর্গঃ। অহিফেন।

উক্ত^ খগৰলভীর মাক্ত মহিবেদকন্ । আকৃত্< লোধন৲ সাহি সেলমুৎ বার্জনতনন্ ঃ আক্ষেপশমন (নিজ্ঞান্তন) মদকারি চ। বেশন বেশনাজ্ঞ যুত্রাভীসারন্ত পর্য । কাসশাসাভিসারত্বা পোণিতজ্ঞ ভিবারণ্য । ভথা খস ফলোদ্ভূত বল্কল্ঞায় মিডাপি । মাত্রা ।০ পাদরভিকা।

#### छाहिदक्त ।

থদকলফীর, আপুক ও অহিকেনক এইগুলি ইহার পর্যায়। অহিকেন শো-ধক, গ্রাহী, ককনাশক, বায়ুগর্দ্ধক, পিত্ত জনক, আক্ষেপ নিবারক, নিদ্রাকারক, মাদক, স্বেদজনক ও বেদনা নাশক। ইহার দ্বারা মুত্রাতিদার, কাস, খাস, অতি-নার ও রক্তন্তাব নিবারণ হয়। অধিকন্ত ইহার বল্কলের সে যে গুণ আছে ইহা-রও সেই সেই গুণ আছে। ইহার মাত্রা।

#### याभम।

ভিদভেদং খগভিসং খাখনশ্চাপি সন্মৃতঃ।
স্যাৎ খাখন কলোদ্ভূতৎ বলকলং শীতলং লঘু ।
প্রাহি ভিক্রৎ করায়ত্ব বাতক্থ কককান হছে।
ধাতৃনাৎ শোধকৎ ক্লছং মদক্দ্ বাগ্ বিষর্জনম্ ।
মুছমৌছ করৎ ক্লচাৎ গেবনাং পুংজুনাশনম্।
মাগ্র ১০ রক্তিকাঃ।।

## (उँदी तृषा।

ভিলভেদ, থসভিল ও থাবস এই থালি তেঁড়ীরক্ষের সংফ্ত নাম। ইহার ফলের ত্বক্ দীতল, লবু, ধারক, ভিজ্জ, কবার, বারুজনক, কফর, কাস নিবারক, ধাতুশোবক, কক্ষ, মানক, বতনশক্তিবর্দ্ধক মোহোৎপাদক, কচ্য ও পুরুষত্ব নাশক। এই বল্পনের মাত্রা ১০ রভি। ইহা কফয় ও পোষক বলিরা বেদনা স্থানে ইহার ক্ষাথের স্বেদ্ধ অভ্যক্ত উপকারী।

#### थाथमवीक्य ।

উচ্চতে থসবীক্ষানি তে থাখসভিলা অপি। থসবীক্ষানি বল্যামি বৃষ্ঠাৰি সুগুত্ৰৰি চ । খনমুত্তি কক্ষ্তানি জনমুত্তি স্বীর্ণম্। মাত্রা ১ মাহকঃ।

#### পোস্তদানা।

থদবীক ও ধাৰদ জিল ইহার প্রাাষ। খদবীক বলকারক, শুক্রন, অভিশয় গুরু, কফল্প ও বাসুজনক। ইহার মাত্রা স্মাষা।

#### भावकी।

ধাতকী ধাতৃপুজ্পী চ ড'মপুজ্পী চ কৃপ্তরা সুক্তিকা বছপুজ্পী চ বহ্নিকালা চ সাক্ষ্ডা। ধাতকী কটুকা লীতা মদক্ত বরা কগুঃ। তৃত্যাতিসার পিতাক্র বিষ ক্রিমি বিসর্প লিং। মারা এ মারকঃ।

## शाहेम्ल।

ধাতকী, ধাতুপুষ্পী, ভামপুষ্পী, কুঞ্জবা, সুভিক্ষা, বহুপুষ্পা ও বজিজ্ঞালা এই গুলি ধাইকুলের নাম। বাইকুল কটু, শীকল, মাদক, কথাৰ ও লঘু। ইহা তৃষ্ণা, ভাতীসার, রক্তপিক, বিষ, ক্রিমি ও বিসর্পা রেগ নিবারণ করে। এই পুষ্পের মাত্রা > মাদা।

## ভিক্কফলম্।

िण्कम् कार श्रांच क्यांत्रः कम् मीछम् । योजनः चक्राजीमातः शिक्रयम् ममृत्मद्रम् ॥ कैशमर्तिक सम्बद्धः चाहत्रभाश्यवादिकाम् । शक्क उश्यमः योजवश्वः चंद्रः मृत्यव्यम् ॥ विक्राः (सम्बद्धः शिक्ष श्रासम्बद्धः विमानम् । व्यामोनद्याव्यकाः विक्ष उश्यादः विद्यदानं विश्वः ॥

#### गावसन्।

াবফল গ্রাহী, কষায়, ললু, শীতল, ও বায়ুজনক। ইহা অফিসাব, পিত্তমেহ, উপদর্গিক মেহ ও প্রবাহিকা নিবারণ করে। ইছাব প্রকৃত্তল বায়ুনাশক, এণ নিবারক, গুরু, তুম্পাচা, লিগ্ধ, কফজনক, পিত্তমেহ নিবারক, রক্তভাব নোনক ও আমাশবের উগ্রাহা প্রশাসক। গাবের অপ্রকৃত্তল গুকু করিয়া ব্যবহার্যা।

#### य किका।

মাচিকা প্রশ্বিকারত। তথা চারালিকারিকা।
ময়ুরবিদলা কেশী সমস্তা বালমূলিকা।
ম চিকাল্লা রলে পাকে কম রা শীন্তলা লম্বুঃ।
পকাতীসার পিতাস্ত্র ক্ষক্তীম্মাপ্রা।
মাত্রা ২ মাবকৌ।

মাচিকা, প্রাছিকা, অম্বর্তী, অম্বালিকা, অম্বিকা, মনুরবিদলা, কেলী, দহলা ও বালমূলিকা এই তাল মাচিকার নাম। মাচিকা অমরদ বিলিপ্ত, পাকে ক্ষায়, লীকল ও লঘু। মাচিকা বাবহারে পকাতিন্দার, রক্তপিত, শ্লেমা ও কঠরোগ মন্ত্রীয়। এট কুলা পশ্চিম প্রদেশে মইয়া। নামে প্রদিক। ইহার দক্ষাংশ গ্রহণীয়। মাত্রা ২ মানা।

## . मक्रमम्।

কটিবিলো সঞ্চল গৈতি বলাং অরপিছন। গোণিডঅ তিজ্জন্তি মুখনত গঙান গদান । খেডএনর মর্লাংলি ঘোনিকলং সুবারুণন। অভীসারং মহাঘোরং এইণীং স্প্রবাহি লান্ ।

#### याजुकन ।

মাজুকলের সংস্কৃত নাম কীটাবাস ও মাজকল। মাজুকল গ্রাহী, বলকারক, জারম্ম ও রক্তত্রাবরোধক। মুখ ও দক্ত-গত রোগ, খেতপ্রদর, অর্শা, গোনিকল, জাতিসার, গ্রহণী ও প্রবাহিক। রোগে প্ররোজ্য। মাত্রা ১ মাধা।

#### शमाणि विद्यामः ।

পৰাশকৰ নিৰ্বাচনা গ্ৰামী সক্ষপত্মৰ্ ধু বৃষ্। গ্ৰহণীঃ মুখজান্ স্যাধীন্ কাসান্ বেলঃভিনিৰ্গমণ্ । মাতা ২ মাহকঃ।

## शमामग्रम ।

পলাশগঁদ প্রাহী। ইহা গ্রহণী, মুখ-রোগ, কাল ও ঘর্ত্মাধিকা নিবারণার্থ প্রয়োজা। মাত্রা ২ মাধা।

#### मश्रुवर्ध ।

সপ্তপর্বে। বিশালস্কু শারদী বিষয়জন ।
মানিচ্চবো ওজপুলো বৃষত্ত্ব বহুপর্কঃ ।
সপ্তপর্ব কিংলাবয়ে। বীযোঁটোইনিপ্রনীপনঃ।
মান্তির নি মরন্তিকাজিদি বিনাশন: ।
মুঠৎ জীনজন শাসং ওলুক গ্রহনীং ভবা।
প্রবাহিকাৎ সরকাক বাত্তকং বিনাশয়েং ।

#### ভাতিম।

नश्चर्ग, विनासक्त, भारमी, विय-सक्तमं, स्विक्स, शुक्कर्ण, दृह्दक् श्व दह्मवि श्वित हाकित्मद्र मः स्वव नाम। हेश जित्सायम, दिक्षश्चिम, व्यक्षिमीयक, सम्भक्ष दिनिष्ठे, ज्व निवासक, किल श्व जिस्नामक। क्ष्रे, कीर्विक्ष, भाग, श्वम, बार्गी, व्यामानस, स्कामानस्व श्व वावसक द्वारम अत्याका।

## विन्द्रभाषी।

दिनु(भर्म) नघूर्वन)। धाष्ट्रिनी कक्षमा निमी। श्रदाधिकामडीमांद्रः श्रिष्माम् ध्रष्ट्योम् श्र

## विज् रभनी।

বিল্পেশী লঘু, বলকর, প্রাহক ও কফর। প্রবাহিকা, অভিসার ও গ্রহণী রোগে প্ররোজা। শুরু বিল্পেশী অর্থাৎ বেল্প্রুঠ সর্বাদা ব্যবস্তুত হইরা থাকে।

#### हेस्यव ।

উক্ত কুটন্ধবীন্ধন্ধ ধনমিন্দ্রয়বং তথা।
কলিক ঞালি কালিকং তথা ভাষবং স্মৃত্যু ।
কচিদিলসা নামৈব ভবেন্ধন্ধ ধায়কণ :
ইন্ধাৰণ বিদোষসা সংগ্রাহি কটু লীতলন্ ।
তিক্ত খাৰহরং হতি কক্ষেত্রি প্রবাহিকান্।
ভারতিসার রক্ষার্লি ক্ষিবীসর্ল কুঠনুও ।
দীপনং গুলকীলক্ষ বাভাক্ষ প্রের্লুল বিং।
সারো ১ নামকং।

## इस्माव ।

কৃটজবীজ, যব, ইক্সেযব, কলিম্ব,
কালিক ও ভদুষৰ এইগুলি ইক্সযবের পর্যার। কথন কথন ইক্সবাচক শক্ত ইহার পর্যার বলিরা
গৃহীত হর। ইক্সেয়ব ত্রিদোষ নাশক,
সংগ্রাহি কটু তিক্ত শীকল অগ্রিদীপক
ও দাহনাশক। ইক্সেয়ব সেবন করিলে
রক্তপিত, প্রবাহিকা, ক্রন্ধ, অহিলার, রক্তাদাই কৃমি, বীস্প্র, কুঠ ,অর্মোবলী, বারু,
রক্ত দোষ, শ্লেষা ও শ্ল রোগ নত্ত হর।
এই বীক্রের মাত্রা ২ মাষা।

### व्यास्वीकस् ।

चाजरोचः क्यान्तः ना च्यांकीयात् वान्यम् । व्यव्हान् व्यव्यान् व्यव्यान्तः । व्यव्यान्तः । व्यव्यान्तः । व्यव्यान्तः ।

#### वास्त्रीय।

আদ্রবীক করার ঐবং আর ও মধুর ইছার দ্বারা অতীশার প্রভৃতিরোগ উপ-শমিত ও জ্বরের দাহ নিবারিড হর। আদ্রবীক্ষের বারো ১ মাধা।

#### थिति :।

থদিয়ে রক্ত সার্ভ গার্তী দৃহধাবনং।
কণ্টকী বালপত্রত বছলল্যাক বজিয়ং ।
থদিরং লীওলো দৃহ্যা কত্ কাসাক্ষতি প্রপৃথ।
ডিক্তাং ক্যায়ো নেলাছা ক্রিল বেছ জন্ম ব্রণাম্ ।
বিত্র পৌধান পিভাস্ত পাতৃকৃত ক্যাময়ান্।
বছিনাক্য নতীসার্থ প্রদর্গ বিনাশয়েও।
থদির কাত্যা নাত্রাহাবেরা, বির্যাসন্যার্ভিকাঃ।

#### यमित ।

পর্যার। ধদির, রক্তদার, গারত্রী, দস্তধাবন, কণ্টকী, বালপত্র, বহুশল্য ও যজ্ঞিয় ব

তণ। শীতল, তিক্ত ও দক্তের উপকারক। ইহা সেবনে কণ্ডু, কাল, অক্লচি, মেদোরোগ, ক্রিণ্ম, মেদ, ভ্রুর, ব্রণ, খিত্র, পোখ, আল, রক্তপিত্ত, পাওু, ক্র্ঠ, ক্ষজনোগ লমস্ত, অলিমান্দ্য, অতীসার ও প্রদর প্রশমিত হয়। ইহার কাঠের মাত্রা ২ মাবা, ইহার সার অর্থাৎ ধরেরের মাত্রা ৬ রতি।

## त्याच थमित्रः।

थेनियः (थेछ मोद्धांश्याः क्षत्यः (मायग्रुकाः । क्षद्या विन्दशं वर्षः)। मूथद्यात्रं क्षाळिषि० ॥ यात्रा ७ व्रक्तिकाः।

পাপরী খবের। পর্যার। স্থেড শার, করম ও সোম-বল্কল। ৩৭। বিশ্বস্ক, বর্ণ জবক। हेरा मूर्वद्यान, क्या का तक त्यांच विवासन कटम। अर्थे अपित केंद्रकृष्टि क्षान्त्रका हेरात माजा क्याकि।

উল্লিখিত ত্রিবিধ ধরিবাই সংগ্রাছক ও রক্তরোধক এবং অভিনার, অর্থা, রক্তপিত, প্রদর ও কভাবি দান্তির নিবিত ব্যবহাত হর।

#### रेत्रियमः।

ইরিমেনে বিট্ খনিরং কালভতো হরিমেন্ক:।
ইরিমেনং ক্যারোভো বুরন্তপনাজ জিব ॥
হতিকও বিষয়েশ জি'দক্ত বিষয়বাম্।
লোধাভিমায়কালাংক বিলপ্ভালাস্থ্নমূম্
অস্য সক্ষাধিকংগ্রাহাৎ নাত্রা ১ মাৰক:।

## दुर्शक थित्र।

পর্যার। ইরিবেদ, বিট্থদির, জালকল ও অরিবেদক,। ৩৭। কবার ও
উফ। ইহা মুধরোগ, দভরোগ, কতু,
বিব, শ্লেমা ক্রিমি, কুন্ঠ, বিষত্রণ, পোধ,
অভিসার, কাস, বিদর্প ও প্রদর নিবারণ
করে। ইহার বক্ষণাদি গ্রহণীর। মাত্রা
১ মাষা।

## दनाश्वः ।

লোধুনিরটিকশৈত পাবরো মানবন্ধনা। বিভীয়ংপটিকালোব্যক্রমুক্ত দুলবন্দলঃ। ভার্থিনরী বৃহৎপত্তঃ পদ্ধীলাক্ষাপ্রসাধনঃ। লোধোরারী লবুলোভ শুকুষ্যাক্ষপিক্ষুৎ । ক্যারো রক্ষপিভাসূর্ জ্বাভীষার পোর্বছ্ব। জন্যস্তুর্গু প্রাহ্যা যাত্রা ১ মাবকঃ।

लाध (मारब लाध शांडिबा लाध)

লোধু, ভিরীটক, দাবর, মানব এই খলি একপ্রকার লোধেুর নাম, অগর এক প্রকার লোধু আছে, তাহার নাম পট্টিকা লোধু, ক্রেম্ক, স্থুল বচকল, জীর্ণ-পত্ত, ব্রহণত্ত, পট্টি ও লাক্ষাপ্রসাদম। লোধ গ্রাহী, লঘু, শীতল, চক্ষুষা, কফপিত নাশক ও ক্ষার। রক্তপিত, রক্তগত জ্বর, অতীসার ও শোথ রোগে ইহা ঘারা উপকার হয়। অধিকস্ক ইহার বিষয়তা গুণও আছে। ইহার তুক্ গ্রহণীয়। মাত্রা ১ মায়।

# थित्रक् गंकथित्रक्।

প্রিয়ল্ ং ফলিনা কাঙালতা চ দহিলাজয়া।
ওলা প্রক্রলাল শাসা বিষুক্দেনালনাথিয়া ॥
প্রিয়ল ং শীতলা তিকা তুবরানিলপিত হং ।
রক্ষাভিযোগ দৌর্গজা স্বের দাহ অরাপহা ॥
বাঙি আঙাতি দার্গ্রী বক্তু জাতা বিনালিনা।
প্রশা তৃট্ বিষ্ণাহল্লী তহুদ্ গন্ধপ্রিয়ল কা ॥
ভংকলং হধুরং রক্ষং ক্যায়ং শীতলং গ্রন্থ।
বিষদ্ধান্দিন বলক্ং সংগ্রাহী ক্ষপিত জিং ॥
অস্যান্তে মানা ১ মাবকঃ ফলসা ৬ রক্তিকাঃ।

## लिशक् ।

পর্যার। প্রিরস্কু, ফলিনী, ক'ন্ডা, লভা, গুল্রা, গুল্লফলা, প্যামা, বিষক্ষেনা অঙ্গনাপ্রিয়া এই গুলি এবং স্ত্রী বাচক শব্দ সমুদার ইহার পর্যার।

তা। প্রিরজ্প গক্ষপ্রেরজু উভরেই শীতল, ভিক্ত ক্যার, বাত পিত নাশক। প্রিরজুর কল মধুর রক্ষ, ক্যার,

আমরিক প্ররোগ। অভিশর রক্ত করণ, দৌর্গক, ক্ষেদ, দাহ, জর, বমি, ভ্রম, অভিসার, মুখের হুড়ভা, গুল্ম, ড্ফা বিষক্ত রোগ ও মেহ নতু করে। ইহার ফল ব্যবহারে বিবন্ধ ও আগ্নান উপস্থিত হর ইহা বলকারক সংগ্রোহক ও কফ পিত্ত নাশক। ইহার ভক্তের মাত্রা ১ মাধা, ফলের মাত্রা ৬ রভি। ফলই স্চরাচর ঔষধার্থ ব্যবহাত হইরা থাকে।

#### क्टेंबः।

কুটজঃ কুটজঃ কীটো বংসকোগিরিদ নিকা।
কালিদঃ শুক্রণাধী চ মল্লিকাপুল্প ইভাপি ।
ইল্লোহ্যকলঃ প্রোক্তো বৃক্ষকঃ পাতুরক্রমঃ।
কুটল্ল: কটুকো কক্ষো দীপন স্থবরো হিমঃ ॥
ভিক্রঃ সংগ্রাহকঃ প্রোক্ত বুগ্লোহ অরমাশনঃ।
অর্নোহ্তিনার পিতান্ত ক্ষতুভামকুঠনুং ।
অস্য তুগ্রীক্ষাদিকং গ্রাহ্যং ভুচো মানা >
মাহকঃ।

## कुफ्ठी। हिन्दी कादब्रा।

পর্যার। কৃটজ, কৃটজ, কোট্, বং-সক, গিরিমল্লিকা, কলিজ, শক্তশাখা, মল্লিকা পূলা, ইন্দ্যবফল, বৃক্ষক ও পাত্র-জন।

তা। ইহা কটু, রক্ষ, অগ্নিদীপক কষার ও শীতল ভিক্ত ও সংগ্রাহী।

প্ররোগ। অর্শ্য, অতিসার, রক্তপত্তি, কফজড্ফা, তুগ্দোষ জর, আম ও কুষ্ঠ রোগে প্ররোজ্য। ইহার তৃক্ ও বীজাদি গ্রহণীর। তৃকের মাতা ১ মাধা। ইহার ব্লক্ত অর্থাৎ ইন্দ্রঘবের মাতা ও গুণাদি ইন্দ্রয়ব শক্ষে জ্ঞন্তব্য।

## भाग ।

পাঠাহতাহতিকা চ প্রাচীনা পাপচেলিকা। এফডীলা রুদা প্রোকা পাঠিকা বরতিক্রিকা । পাঠোকা কটুকা ডীক্সা বাডজের হরী লয়ঃ। তিকা ক্রতিষ্মী চাম। ভশ্নদ্ধান কায়িবী। ছঙ্জি শূল অর দ্বাদি কৃষ্ঠাতীলার ছক্ষয়:। দাহকত্ বিষধাল ক্রিনি গুলু গর্ত্তশান্। অল্যা বুলাদিক১ গ্রাহা১ বাতা ১ নাবকঃ।

#### जाकनानि ।

প্র্যায়। পাঠা, অম্বর্ত্তণ, অম্বৃত্তিকা, প্রাচীনা, পাণচেলিকা, একটিলা, রদা, পাটিকা ও বর্ষতিকিকা।

তাৰ। পাঠ। উফা, কটু, তীক্ষা, বাত-শ্লেম নাশক, লঘু, ভিক্তা, আরুচি নিবারক আয়াকাদ ও ভগদকান কাবক।

প্রবোধ। শূল, জব, বমি, কুঠ, অভী-দার, জন্দোগ, দাহ কণ্ড, বিষক্ষণোগ, শাল, ক্রিমি, ওপ্র ও বিষত্তণ পোঠা পাঠা ব্যবস্থেষ। ইহার মলাদি গ্রহণীয়। মাত্রা ১ শাষা।

#### जाकाभवती।

আকাশবদ্ধীতু বুংধঃ কবিতা মরবদ্ধরী। ধবল্লী আহিবী ভিকা শিচ্ছিলা ক্ষাময়াপরা । তুবরাগ্নি করী হব্যা শিব স্লেকাম মাশিনী। অন্যা মাত্রা ৪ রক্তিকাঃ।

### शिकी अभवदवना।

প্র্যাষ। আফাশবল্লী, অম্বরবল্লী, খবল্লী ইত্যাদি।

ত্ত্ব। গ্রাহী, ভিস্তুচ, পিছিল, ক্যার, অশ্বিকারক ও হাদ্য। ইহা পিত্ত, প্রেয়া, আম ও চক্ষুরোগ নষ্টকরে। ইহার স্কাংশ গ্রহণীয়। মাত্রা ৪ রতি ।

## यरमाञ्ची।

ৰংসাকী বাজিকা মংসাগদ্ধী উচ।
বংসাকী প্ৰাহিনী নীতা কুওপিত কৰান্ত্ৰিছে।
সমৃত্তিকা কৰাবা চ বাহী কটু বিপাকিনী।
অসা নাতা ৬ ব্যক্তিকাঃ।

#### रिनी मरह हो,।

পর্যায়। মৎসাকৌ, বাহ্নিকা, মৎ-সাগন্ধা ও মৎস্যাদনী। ৩৭। গ্রাহী, শীতল, লঘু কিন্তুন, কষায়, স্বান্ধ্ ও পাকে কটু।

ইল। কৃষ্ঠ, পিত্ত, কফ ও রক্তদোষ নিবারণ করে। ইহার সমস্ত আংশই গ্রহণীয়। মাত্রা ৬ রতি।

#### कलिश्रिली।

স্কলপিপ্ৰসাজি হিডা পারদী পক্লাদনী।
মংস্যাদনী সংস্যাপতা পাছা লাজনীতাপি কার্তিতা।
সংসাদনী সংস্যা কছা সক্ষা ক্ষালা লয়ুঃ।
সংগ্রাহিনী হিমা কুজা রক্ষ দাহ এবা পহা।
কটুপাক রসা ক্ষালা ক্ষায় বছিবর্জিনী।
অস্যা মাত্রা ২ মাহকৌ।

## (श्रेष्ठ कै। हुइ। दिल्ली शनिम्ता।

পর্যার। জলপিরলী, শারণী, শক্লানদী, মংস্যাদনী, মংস্যাদনী, মংস্যাগন্ধা ও পান্ধনী।
তব। ক্রায়, চক্ল্যা, ভক্রঞ্নক, সম্বু,
সংগ্রাহী, শীক্তল, রক্ষ পাকে কটু, রোচক,
ক্ষায়, অগ্নিবর্দ্ধক এবং রক্তমাহ ও এব নাশক। ইহার স্ক্রাংশ গ্রহণীয়।
মাত্রাং মারা।

#### बीबजक ।

বেল্ডরের জপতি বীর্ডরুঃ প্রশিদ্ধং খেড়া সিভারুণ বিজোহিত নীলপুন্দা। ল্যাক্সাভি ভূল্য কুসুম পরিঃ সুক্তম পরঃ স্যাহ্মন্টকী বিজল দেশক এব হুম্মঃ বেল্ডরো রনে পাকে ভিক্ত ভূমা কমাপরঃ। মুরাঘাভাশাক্ষ গ্রাহী ঘোনিস্কানিলাভিজিৎ ঃ অস্য ভূগ্ গ্রাহা।। মারা ১ মানকঃ।

### ৰীরতক্ত।

ইহার অপর নাম বেলন্তর, এই বুক্ষ চার্নি জাতীর হয়, এক প্রকারের পূপ্প খেলস্থা, থিতীর প্রকার বুক্ষের পূপ্প কৃষ্ণবর্গ, একপ্রকার অরুণবর্গ, অন্য জাতীর বুক্ষের পূপ্প ঘোর লালবর্গ। এই সকল বুক্ষে কাঁটা হইবা থাকে, ইহার পত্র খামা পত্রের ন্যার অভিশর সৃন্ধ। এইবুক্ষ জনশুলা দেশে উৎপন্ন হইরা থাকে।

তা। আখাদে ও পাকে তিক, তৃষ্ণা নাশক, কক্ষ ও প্রাহা। মৃত্রাখাড আশারী, গোনিরোগ, মৃত্র পীড়াও বার জ রোগে ইহা ব্যবস্থা করা ধার। ইহার স্বক্ গ্রহণীর। মাত্রা সাবা।

# मत्त्र निशा।

यम् त्राचिनिथा (आका नवसाविक्षयूक्षणा नोवकवेषिया वव्यो लिस्टलपाडिनाइक्रिक्ष । वास्ता > वास्ता > वास्ता >

# मगुत्र निशा।

পর্যার। সহস্রাষ্টি, বধুজ্ঞা, মর্র-শিষা, নীসকঠশিষা, বহিনিধা ইভ্যাদি।

থা। লখু ও পিত, দ্রেম্বা ও অতি-লার নত্ত করে। ইহার লমত অংশ গুহণীর। মাতা ১ মাবা।

### शक्षक्ष ।

পত্ৰীক্ষক পত্নাক্ষৎ, গালোভ্যৎ পত্ৰককী। পত্ৰীক্ষৎ হৈদং বাবু ক্ষায়ৎ ভিক্তকৎ প্ৰক্ল ৪ বিউভি, বুৰ্যুৎ প্ৰক্ৰত পৰ্তসংখালকং পরবৃ। ক্ষবাভ করং বলাৎ প্ৰাহি পিভাজ বাবনৎ । নাত্ৰা ৮ নামকাঃ।

## भारीख हिन्दी कवनगड़े।।

পর্যার। পদ্মবীজ, পদ্মাক্ষ, গালোডা ও পদ্মক কটি।

গুণ। শীতল, খাতু, কৰার, তিব্ধু, গুরু, বিষ্টম্ভী, গুল্লেফানক, উত্তম গর্ভ সংস্থা-পক, ক্লান্ধ, বাজন্মেয় বৰ্জক, বলকারক, গ্রান্তী ও রক্ত পৈত্তিক দাহ নাশক। পদাবীকোর মান্তা ৮ মাধা।

### न्विः ।

वरहोत्र करणाः भृषीकृत्यावः वर्षत्या यु वः । कोश्रो देवस्वद्वा वादमा वर्षभारता वनम्मष्टिः ॥ वहः नोह्नि व्यव्याची कर्षाभव त्रवाशवः । वर्षा दिनम् वादमः क्वारमा त्यानिद्वाव क्ष ॥ वाषुकृषाभद्या मृष्टा व्यव्यमुग्दत्र सामसः ।

वहें।

পর্যার। বট, রক্তকল, শৃষী, নাগ্রোধ ক্ষজ, ধুব, ক্ষীরী, বৈতাবণ, বাল, বহুপাদ ও বনস্পতি এইওলি ইহার পর্যার।

श्वन । जीखन, श्वज्ञ, श्वादी, वर्धन डेर कर्न मन्नाइक कवात श्व सद्दत देवात बाला करू, शिख, उम, विमर्ग, बाद, रवानिरमाय, क्ष्मा, मृक्टा, स्वर श्व श्वयक निराहिक दम।



#### **料明: 1**

প্লক্ষে জটাপর্বরী চ পর্কটি চ জিয়াবলি।
প্লক্ষা ক্ষায়ং লিলিয়ো ত্রথযোদি ধলাগদঃ।
ক্ষাহলিত ক্ষায়য়ং লোগদা ক্ষ্মপিত হৃৎ।
বৃত্তংগ্যহয়ো বৃত্ত্বপ্রিগাপ জ্বনাশনঃ।
অস্যায়ণ প্রাচা। যাত্রা হ্লাহফো।

शाकुछ। हिम्मी शाक्ति।

প্র্যার। প্লক্ষ, জ্ঞানী, পর্করী, পর্কটী।
তথা ক্ষার, শীজল, ইহার হারা
ত্রণ, যোনিরোগ, দাহ, পিন্ত, কফ, আমদোষ, শোহ ও রক্কপিন্ত, রক্তদোষ,
মৃদ্র্যা, প্রলাপ ও ভ্রম নিবারিত হব।
ইহার ত্বক্ গ্রহণীয়া মাত্রা ২ মাধা।

#### वक्तु नः ।

বন্ধুলঃ কিভিয়াতঃ স্যাৎ কিভিয়াটঃ সপীতকঃ।
সূত্ৰব কবিত ভত্তি রাভা বটুপদ্মোদিনী ॥
বব্বুলঃ ককনুদ্ গ্রাহী কুঠ জিনি বিবাপফঃ।
অস্য ভুগাদিক১ গ্রাহ্য১ বারা ২ বাধকৌ।

वानमा । हिम्मी वव् न ।

পর্যার। বব্দুল, কিন্ধিরাত, কিন্ধিরার, পীতক ,আভা ও বট্পদমোদিনী।
তাণ। কদম, গ্রাহী, কুঠ, ক্রিমি ও বিব
নাশক ইয়ার ত্বক্ ও নির্ধাদ প্রভৃতি
গ্রহণীয়। মাতা ২ মাবা।

खमा विशामखनाः।

বজ্বসা তু নিৰ্ব্যাসো প্ৰাহী পিভানিলাপহः। ব্ৰক্তাভীসার পিভাক্সমেহ প্ৰদুর নালনঃ। ভগ্নসভারকঃ পীভঃ শৌণিউজুভিবারণঃ।

N H

বৰ্দনিধ্যাস অৰ্থাৎ গঁৰ সংগ্ৰাহী, শীভবীৰ্ঘ, পিত্তম, বামুলাশক, ভঞ্গদা- রক ও রক্তন্তার বিবারক। রক্তাতীলার, রক্তপিত, বেরু ও প্রত্নর হোলে প্রয়োজা।

## किनिनी।

জিলিনী বিলিনী বিলী সুনিৰ্যালা প্ৰলোধিনী। জিলিনী নধুৱা সোজা কৰায়া প্ৰণগৌধিনী । কটুকা এণ জড়োগ বাডাভীলায় জ্বং পটুঃ। নাতা ১ নাধ্যঃ।

## हिनी जिन्ननिया।

পর্যায়। জিলিনী, বিশ্বি, বিশী, হুমির্যালা ও প্রমোদিনী এই ওলি ইহার পর্যায়।

গুণ। কটু ও লবণরদ বিশিষ্ট। ইহা ব্রু, হুদোগ ও বাডাদীসার উপশমিত কবে। ইহার লমস্ত অংশ গ্রহণীয়। মাত্রা > মাধা।

## ज्नी।

তুনী তৃত্বক আপীন ভানিকঃ কছক ধ্রথা।
কুটেরকঃ কাষজকো নন্দিবৃক্ষক নন্দকঃ ।
তৃনিরকঃ কটুঃপাকে ক্যায়ো বরুরো লয়ুঃ।
তিক গ্রাহী হিমো বৃষ্ণো ত্রন কুঠাক পিছলিং ।
যাত্রা ব্যাহকে।

## कॅ मत्या

প্রাায়। ত্নী, তুরক, আপীন, তুণীক, কচ্চক, কুটেরক, কান্তলক, নন্দির্ক ও

তাৰ। ক্ৰায়, মধুর, স্থু, পাডেকটু, গ্ৰাহী, ডিজে, শীভল, বললারক, পিজ, নালক, কুঠম, ত্রণনাশক ও মজনদোৰ নিবারক। ইহার স্থক্ গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাবা। . T. T.

#### (बाह्यमः।

বিশ্বীসং খালুকেং পিছে। খাল্যনীবেউকো-হপি চ। দোচাস্তাবো ঘাচরকো যোচনির্যাস ইভাপি ॥ খোচাস্তাবো বিষো গ্রাহী বিষোর্যাঃ ক্যায়কঃ। প্রবাহিকাতিসারাম ক্ষপিভাক্ত দাবনুৎ ॥ অস্য নাতা ১ মার্থঃ।

#### যোচরস।

শাল্পনীর নির্য্যাসকে মোচরস কছে ইহার অন্যান্য নাম, পিচ্ছা, শাল্পনী-বেষ্টক, মোচাজাব ও মোচনির্ম্যাস।

ত্থা। দীতস, গ্রাহী, স্থিপ্প, বল-কারক ও ক্যায়। ইহা সেবন করিলে প্রবাহিকা, অভীসার, আম, শৈলিক রক্ত পিত ও দাহ নিবারিত হয়। ইহার মাত্রা ১ মাধা।

### लकानुः।

লক্ষালুং ল্যাৎ শমীপত্রা সমলা অলকারিকা।
রক্ষণাদী নমজারী নালা অপিরিকেডাপি ॥
লক্ষালুং লীডলা ডিজা কবারা কফপিডামিং।
রক্ষপিত মন্ডীলারং হোনিরোগান্ বিনাশরেং॥
লাত্রা ২ বাবকৌ।

## লক্ষাবতী।

পর্যার। লচ্ছালু, শ্মীপত্রা, সমন্ধা, জলকারিকা, রক্তপাদী, নমস্বারী ও ব্যদিরিকা।

প্তা। শীতল, তিক্তা, কৰায় ও ৰফ পিছ নাশক।

প্ররোগ। রক্তপিন্ত, অভিসার ও ঘোনিরোগে ইহা ব্যবচ্ছের। ইহার সমন্ত অংশ গ্রহণীর । মাতা ২ মাবা।

# नवत्यार्थाञ्चः ।

(यदानगर्भाः।

#### দারুহরিতা।

দানী দারুদরিরা চ পর্জ্জন্যা পর্জ্জনীতি চ।
কটংকটেরী শাতা চ তবেৎ সৈব পচক্ষার।
সৈব কালীরকঃ প্রোক্তন্তবা কালেরকোহপি চ।
পীতক্ষণ হরিক্ষণ পীতবার কণীতক্ষ্ ৪
এবোজা কটুকা ভিক্তা দেরকর্ণাস্য রোগমূৎ।
মেহক্ত্ বিসর্পন্নী স্তুর্গ্রেষ ব্রবনাশিনী ৪
বিষয়ী ব্রেদনী পিত্তক্ষণোধ্র বিনাশিনী।
মাত্রা ৬ রক্ষিকাং।

#### मांक रित्रिसा।

পর্যায়। দাব্বী, দাত্মহরিদ্রা, পজ্জন্যা, পজ্জনী, কটক্টটেরী, পীতা, পচম্পচা, কালী-য়ক, কালেয়ক, পীতক্র, হরিক্র, পীত-দাক্ষ ও কণীতক।

গুণ। উষ্ণবীর্য্য, কটু, ভিক্ত, বিষন্ন, ক্ষেত্রনক ও কফপিত্ত নালক।

প্রহোগ। নেত্রবোগ, কর্ণরোগ, মুখরোগ, মেহ, কণ্ডু, বিসর্প, ত্বগ্লোষ, ত্রপ ও শোথ নিবারক। ইহার কাষ্ঠ ব্যবহার্যা মাত্রা ৬ রতি।

## त्रगाश्चनम् ।

দান্ত্রী ভারসদ । জার । মুর প্রজা নরাখনদ । ভদা রসাঞ্জনাথা ওৎ নেত্ররোঃ পরম । হিছদ । রসাঞ্জন । ভার্তিলিগ রস্থার্ড ভার্জান্তর । রসাঞ্জন । কুটু ল্লেক্স বিষ্ক্রের বিকারন্থ । উক্ত রসায়ন ভিক্ত ছেদন এবংদার হৃৎ। জ্বন্য নাত্রা ২ মাবকো।

রসোত। হিন্দী রসবং।
দাকুহরিজার কার্থ ও তৎপদ্মিত ত্র্য একত্র পাক করিয়া ধনীভূত হইলে উহাকে রসাঞ্জন বলাযার, রসাঞ্জন চন্দ্রের অভিশয় উপকারক। রসাঞ্জনের অন্যান্য সংস্কৃত নাম এই ভাল্ফ শৈল, রসগর্ভ ও ভাল্ফ । রসাঞ্জন কটু, উফ্ল, ডিক্ত ও রসা-রন। ইহা খনীজুত প্রেরা প্রভৃতি দ্রীকৃত এবং বিষ নেত্ররোগ ও রগ নপ্ত করে। ইহার মাত্রা ২ মাবা।

> অৰ্কমূপত্বক্। বহুমোপথবৰ্গে জিখিছা।

ইহা বমলে।পথ কর্গের মধ্যে বর্ণনা কর। হুইয়াছে।

म कुक भरी ।

রদায়ন বর্গে লিখিতা। ইহা রদায়ন বর্গে লিখিত হইয়াছে।

मन्द्रयार्थाञ्चः ।

मिद्राविद्रवहनीत्र वर्गः।

हिस्नी।

হিত্তমী ক্ষবকৃষীক্ষা হিত্তিকা স্নাবস্থাবা। ছিত্তমী কটুকা ক্ষত্যা ডীক্ষোকা বহিপেন্তক্ত । বাত্ত্বক্ষব্য়ী কুওঁ ক্রিনিবাড ক্ষপাথা। পিরোবিরেচনী প্রোক্তা চোর্ড্ডকক্র বিকারমূৎ ।

ट्यू है।

পর্যার। ছিক্সী, ক্ষবকৃৎ, ভীক্ষা, ছিক্কিকা ও ডাণচুঃবদা।

ত্ব। কটু, ক্লিপ্রেদ, তীক্ল, উষ্ণ, অধিকর, পিতজনক, বাজক্রেম নাগক ও শিরোবিরেচক।

প্ররোগ। বাতরক্ত, কুঠ, ক্রিমি-রোগ ও উর্জনত্র পীড়ার প্ররোজ্য।

#### 事可@:

विद्यापेणीह्यः क्यस्यः क्यस्या वस्या विष्यः विष्यियम् इता। क्षम् मार्थिम दूवशावाः मामद्यक्ति वृष्यापद्यक्तिः ॥

#### ভামাক।

কলঞ্জ অর্থাৎ তামাক পিরোরোগ নাশক, ক্রুৎকারক ও বমন কারক। ইহা স্বরং বিষ হইরাও উপস্কু রূপে প্রযুক্ত হইলে সকল প্রেকার বিবের নাশক হইরা থাকে। কলঞ্জ সংবেষ্টন অর্থাৎ চুরাটের ধ্মপান ক্রিলে দ্বাভাষি ও বিবিধ মুধ্রোগের নাশ হর।

थक्षांकनम् । स्थाकनः व्यवस्यः निद्राव्धिनस्यः पद्यम् ।

ক্টবীল কুৎকারক ও শিরংপীড়া প্রশমক।

#### मराक्या ।

रेक्सी वराक्स्ता (क्क्सा क्रम्सी क्षाचात्रिनी । वीर्याकाक्सिनितः कर्न क्रम्सको सम्) स्वात्रकः ॥

## ভূতরাজ।

ভৈদী ও মহাক্ষরা এই ছুইটী, ভূত-রাজের সংস্কৃত নাম। ইহা ক্লুৎভারত, কফর ও উফ্নীর্যা। নদ্যরূপে প্রয়োগ করিলে ইহা চক্ষুং, মন্তক্ষ ও ফর্নের বিবিধ পীড়া নাশ করে।

জ্বালিনী ফলন্। শিরং পাণ্ড শ্বনং ক্ষেন্ জানিনী ফল্।

#### (वाशकन।

ইহা ক্ৰেন্ত এবং শিরংগীড়া ও পাত্রোগের শান্তিকর।

# **अकानत्मारशा**यः ।

म्खिरिदहमी द्रवर्गः।

च्लाशाम्।

পল্চারিণ্ডিচরাব্যথা পলা চ শার্থা। পলামুক্ষা কটুভিকা ক্যারা ক্কবাভলিৎ । যুত্রকুন্ডাপাশুলল্পী খাল কাল বিবাপ্যা অসা ভুক্পত্র হরসা গ্রাহ্যা: ভুক্ পত্রয়ে। যাত্রা ১ মাযক:। স্বর্গসা ভোলক্ষ্যম্।

পর্যায়। পদাচারিণী, অভিচরা, অবাথ', পদা ও সারদা ইহার পর্যায়।

গুণ। অনুষ্ণ, কটু, তিক্র, কথাব, বাতন্মেনাশক। ইহার দারা মৃত্রকৃচ্ছ, অন্মী, শূল, শ্বাদ, কাদ ও বিধ নত্ত হব। ইহার ত্বক্, পত্র ও স্বরদ গ্রহণীর। ত্বক্ ও পত্রের মাত্রা ৮ মাধা, স্বরদের মাত্রা ২ তোলা। মৃত্রকৃচ্ছ নিবারণার্থ পত্রের রদই দচরাচর ব্যবস্ত হইরা থাকে।

## शांवानरङम्बः।

পাৰাণভেদ্কোহখালো থিৱিভিদ্ ভিন্ন। জনী।
অক্সভেদ্যে হিচিভিক্তঃ ক্যায়ো বভি পোধনঃ ।
ভেদ্নো বভি হোবালো প্ৰস্ন কুচ্ছু । দা ছক্তজঃ।
ঘোলি রোগান্ প্রবেহা ৭ চাই খুল এণানি চ ।
অস্য মুলং প্রায়াং যাত্রা ২ বাবকঃ।

## शांषत्रपूत्रः।

পাষাণভেদক, অন্মৃ, গিরিভিং, ভিম্মাজনী ও অক্ষতেত্ব ইহার পূর্যায়। ত্থা। পাৰাণভেম্বন্ধ ভিক্তে, কৰায়, বন্ধি-শোধক ও ভেম্বক।

প্ররোগ । ইহা দোষক্ত আর্থঃ, গুল্ম, কঠিন আন্ধরী, হুজোগ, হোনিরোগ, প্রমেহ, শ্লীহা, শূল ও এপরোগ নিবারণ করে। ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ১ মাবা।

### ञ्बलिव्य ।

मुद्रिक्षः वृक्षकाः छन्ताञ्च लंगनः वर्षः । स्मरणाश्मादन मारक्षकः भुवद्धि कदः छना । अभमर्थिक स्वद्यक स्वक्षस्वः भूषाद्वनम् । स्वेष्ठ अवद मर्गाः मि कृष्णु क्षांभि दिमालस्यः । माजा २ गायस्को ।

#### कावाविति।

স্রপ্রিষ ও বৃত্তফল, এই চুইটী শব্দ কাকাবচিনির সংস্কৃত নাম। কাবাবচিনি বাসুনাশক, কফনিঃসারক, আগ্নের ও মৃত্রবর্দ্ধক। উপস্থিকমেহ, শুক্রমেহ, থেত প্রদর, অর্শঃ ও মৃত্রকৃচ্চুরোগে প্রয়েক্ষা। মাত্রা ২ মাবা।

कूणवश्रम्।

क्षः।

कूर्णावर्डकवा रहिः मृह्यका यक्कक्षनः।

পর্যায়। কুশ, দর্ভ, বৃহি, সূচ্যত্রো ও মক্তভূষণ।

## क्षांकाः।

ভভোংন্যো দীৰ্ঘপৰঃ স্যাৎ কুরপৰ ভবৈৰ চ। দুৰ্ভদুগ বিধোৰত্ব যুৱত টুবত্ব ছিন্তু । দুৰ্ভুজ্জু পিয়ী ডুভা বভিত্নক গ্ৰহাজ্জিৎ । জনয়ো যুঁজা গ্ৰহা । সাজা ২ দাবকৌ

#### विषी जाय।

ইহা কুপ বিশেষ।
পর্যার। দীর্ঘ পত্ত, ক্ষুরপত্ত।
তথ্য। দর্ভবর ( কুপ ও ডাম ) ত্তিদোষ্য
মধুর, কবার ও শীতল।

প্রবোগ। মৃত্রকৃচ্ছু, আব্দারী, তৃষ্ণা, বন্তিবোগ ও প্রদরে প্রবোজ্য। এই উভয় তৃণের মূল গ্রহণীয় নাজা ২ মাযা।

#### कामः।

কালং ক'পেজু ক্লিকটা স স্যাধিজ্বস ভগা।
ইজালিকেজুগড়া চ তথা পোটগলা নাতঃ ॥
কালা স্যায়ধুমতিকা বাদু পাকী হিনা সরঃ।
মুত্রকুচ্ছাান্দ বাহাপ্রজন্মপিত্রজ রোগজিৎ ॥
তৃপ্তিবা অকলো বল্যো ক্লিকুচ্ছা বলোবছং।
অস্য মুল্প প্রায়ৎ যাত্রা ৪ বাহকাঃ।

#### **(奉(考)**

পর্যাব। কাশ, কাশেকু, ইক্ষুরস, ইক্ষুলিকা, ইক্ষুগকা ও পোটগল।

গুণ। মধুর, তিক্ত, পাঙ্কে স্বাত্, দীতল, সর, তৃত্তিকর, শুক্তজনক, বল-কারক, ক্ষচিকর, প্রান্তিনাশক ও শোষ নিবারক।

প্রােগ। মৃত্তকৃচ্চ, অশারী, দাহ, রক্তক্ষা ও পিত্তক রােগ সকলে প্রান্ধা।
ইহার মূল গ্রাহ্য, মাত্রা ৪ মাষা।

#### **डसम्बः**।

ভাৰুত্বঃ পরোবাধ ভেলনশকু বেউনঃ।

भन्न। रिकी माम्भन।

পর্যায়। ভন্তমূঞ্চ, শার, যাণ, ভেজন ও চক্ষুবেটন।

#### AM: 1

वृत्कः। वृत्त्वं व्यवस्य वादः सूनवृत्तः सूर्ववं वादः वृत्तः व्यवस्य । वृत्तवे व्यवस्य वदः वृत्तः वृत्तवे व्यवस्य विश्ववे व्यवस्य विश्ववे व्यवस्य वृत्तः वृत्तः व्यवस्य विश्ववे व्यवस्य विश्ववे व्यवस्य विश्ववे वादः वृत्तः व्यवस्य विश्ववे व्यवस्थितः विश्ववे विश्ववे

#### मुख्य ।

পর্যায়। মুঞ্জ, মুঞ্জাতক, বাণ, স্মূল-দর্ভ ও স্থমেখন।

ত্ব। মুঞ্জন্তর অর্থাৎ শর ও মুক্ত মর্থ্র কবার, শ্লীতল, ত্রিদোষনাশক, বুরা ও মেধলার (কোটিবেস্টন) উপযোগী।

প্ররোগ। দাহ, জ্ঞা, বিদর্প, আব, মৃত্রকৃচ্ছ ও চক্ষুরোগে ব্যবক্ষের। ইহার মূল গ্রহণীর। মাতা ২ মাবা।

## वीवनम्।

স্যাদ্ বীরণং বীরঙক বীরঞ্চ বছদ্লকন্।
বীরণ স্পাচনং পীতঃ বাভিজ্ঞানু ডিজকন্ ।
বচনং অরমুদ্ বাভি নদ্ভিৎ কফলিভছং।
তৃভাক্র বিষধীসর্প কৃচ্ছি দাহ ব্রণাপহন্ ।
অস্য নাবা ২ সাধকো।

## वाावाञ्च ।

প্র্যার। বীরণ,, বীরভক্ন, বীর ও বছমূলক।

তা। পাচক, দীতল বমন নিবারক, লব্, তিজ, তত্তন ও কফপিত নাদক। আমরিক প্রয়োগ। আম, মান, ভ্রা, বীসর্প, প্রবল দাহ ও ব্রণরোগে প্রয়োজ। ইহার সমস্ত অংশ প্রহণীয়। মাত্রা

२ यावा ।

## द्वेभीत्रम्।

বীরণসাজু মৃলং স্যাপুশীরং নদমভ তথ ।
অমুণালক সেবাক সমগন্ধিক নিভাপি ।
উলীরক্ষাচনং লীতং ভতনং লঘু ভিক্তকন্।
মধুরং অরক্ষ্ বাভি মধুনুথ কমপিবক্ষং ।
ভূজাক্রবিষধীসর্প দাহ কৃত্যু ত্রণাপ্তম্।
অস্য মারা ২ মাবকো।

व्यागात्रम्म । हिन्ती थम् ।

বীরণ অর্থাৎ ব্যাণা তৃণের মূলকে উশীর বা থস কহে ইহার পর্যার উশীর, নলদ, অমৃণাল, দেব্য ও সমগ্যিক।

ত্তৰ। পাচক, শীতল, লঘ্, ভিক্ত, স্তম্ভন, মধ্র ও কফপিত নাশক।

আমরিক প্ররোগ। জর, মদ, তৃষ্ণ। বীদর্প, বিষদোষ দাহ ও ব্রণরোগে উপ-কার করে। ইহার মাত্রা ২ মাধা।

কৃষ্ণেশ্মুলম্।

কৃষ্ণেশ্ন্প শীভ\স্যান্ম্রল\ শিরমানন্।
বাভারুলোবন\ নেধাৎ দাহকুল্ নিকৃতনন্ ।

कृत्क्षक्ष्म ।

ইহা শীতবীর্ঘা, মৃত্রকর, পিজন্ন, বা-ভাত্মলোমন, স্মৃতিবর্জক, দাহ নিবারক ও মৃত্রকুচ্ছ প্রশাসক ।

त्त्राक्त्रवीकम् ।

रोखः (चीक्त्रकः जीकः वृज्ञकः व्यविशत्त्वम् । द्वामाञ्चकतः स्रकट्यदम् र कृष्ट्रमाणमम् ॥

**८माक्त** त्रवीखा

গোজ রবীজ, দীতল, মৃত্রপ্রবর্ত্তক, শোধ ক, ব্যা, আয়ুক্তর, শুক্তমেহ নিবারক ভিক্তম_{ক্ষমে} প্রশামক। বংশস্পন্। ভুচিসায়শিকা জ্বেয়া ব্যক্তভোৱবারিবী।

বাঁশের শিক্ষ। ইহা যুত্তকর ও শোধ নিবারক।

डेन् क्यू।

উল্ক ং ক্লকো দর্ভ: সূচ্যপ্রণ্ড ধরক্তবং। উলপল্যোলুপত্তৎ স্যাত্মতে পোর্বসংহয়বৃ॥

डेन्।

উদ্ক, স্লক, দর্ড, স্চাগ্র, ধরছেদ, উলপ ও উল্প এইগুলি উলুর সংস্ত নাম। ইহা মৃত্রকারক ও শোধ নিবারক।

## नामककम्।

( সামজ্ঞক মুদীরবং পীতদ্ধবি তুব বিশেষ: ) লামজ্ঞকং সুমালং স্যাদমূণালং লরং লয়ঃ। ইতকাপথকং সেবাং নদদ্ধাবদাতকন্ । লামজ্ঞকং হিমং ডিকং লয়ু দোব বরাজ্ঞজিং। ভুগাময় হেদ কৃচ্ছু দাহ পিভাজ রোগমূং । অসা মলং প্রাহাং। মারা ১ নামকঃ।

न।मक्कक।

( डेमीटब्रब्र मा।ब्र ज्न वित्नव ज्ञेषर गीखर्ग । )

পর্যার। লামজ্বক, সুনাল, অমুণাল, লর, লঘু, ইষ্টকাপথক, লেব্য, নলদ ও অবদাতক।

কণ। শীতল, ভিজ্ঞ, লঘু বারু, পিস্ক, কফ ও রক্তদে;য নাশকু।

আনরিক প্ররোগ। ত্বকের রোগ, ত্বেম, মৃত্রকৃচ্চ, দাহ ও রক্তণিত রোগে ব্যবস্থের। ইহার মূল প্রহণীর। মাত্রা ১ মুমা।

#### मण्ड ।

মলং পোটখনঃ খুমামধাত ধনমন্তবা। মলক বৰুৱতিক: কৰায়ং কক্ষকতিং। উক্তো ভ্ৰুবতি বোনাৰ্টিবাৰ পিত বিসপদ্ধ। অস্য মূলৎ প্ৰাৰ্থ। বাৰা ২ নাৰ্কো।

नम् ।

প্রাার। নল, পোটগল, শ্নামধ্য ও ধমন।

গুণ। মধ্র, ভিজ্ঞ, ক্ষবার, ক্ষনাশক, রক্তদোষ নিবারক ও উষ্ণ। ইহা ক্জোগ, বন্ধিণীড়া, যোনিরোগ, দাহ ও পিত্তবিসর্প রোগে ব্যবস্থের। ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাধা।

#### शक्ताः।

सम्बन्धः भेषेत्रदक्षः २००६ः भागितः भृष्यदेशः मृष्यदेशः सम्बन्धः सम्बन्धः चिचितः भिरतकस्थि ॥ सम्बन्धः सम्बन्धः सम्बन्धः स्थाः ॥ सम्बन्धः सम्बन्धः ॥ स्थाः सम्बन्धः ॥

विनी भटिता

পর্যার। ওক্তে, পটরক, আছে ও প্র-বেরাভ মূলক।

ত্ত্ব। ক্ষার, মধুর, শীতল, রক্ত পিত্ত নাশক, তথ্য, তক্তে, রক্ত পূত্র-ইহাদের বিভাছিকারক ও মৃত্রকুচ্নাশক ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ২ুমাবা।

## वंत्रका।

এরকা গুজুমুলা চ পিবিগুজা পরীতি চ। এরকা পিশিরা বুখ্যা চকুখ্যা বাডকোপেনী ৪ মুকুফ্যুপারী বাথ পিখ পোথিত নাখিনী। অন্যা মুল্ম রাথবীয়াম নাত্রা ২ বাথকো। ं . रहामणा । हिन्ही त्याबी।

পর্যার। এরকা, গুল্লমূলা, দিবি, গুল্রা ও দরী।

থা। শীভল, বলকারক, চজুবা, বার্ প্রকোপক।

প্ররোগ। মৃত্রকুচ্চু, আগরী, দাহ ও রক্তপিত রোগে প্রয়োজ্য। ইহার মৃশ গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাধা।

## नार्क् नकनः।

লার্ম্ ল কলিঃ লোধন্মে। জেয়ে (হরণ) পলাকু কঃ।
মুক্তবিরেচনঃ লেয় ছরণো হতু গা এব চঃ
মাক্রান্ত রেকাদ্ ভবতি বাধিকু ছলতে দনঃ।
অভিযাক্ত: প্রযুক্তো ছলেন্ট বিষয় ছারেয়ে ছরণ্ড।
ক্রে লাবে খালে চ কালে চ মুক্তবাং প্রাপ্ত।
ক্রে লাবে হতিলারে চ গ্রহণাং নাপি শস্যতে।
ক্রে লাবে হতিলারে চ গ্রহণাং নাপি শস্যতে।
ক্রে লাবে হতিলারে চ গ্রহণাং নাপি শস্যতে।

# वमर्णमास ।

## नानम्बनी।

বিজ্ঞো নাগদখনী বজানোটা বিশাপথা। নাগপুন্দী নাগপুনা বহা যোগেখনীডি চ ৪ বলানেটা কটুভিকা লঘুং পিত কলাপতা।
যুৱকুন্দ্ৰ প্ৰথম কারা যাত কলাপতা।
উদ্যাধান লমনী কোঠ লোখন কারিবী।
সম্প্রিয় প্রশাননী নিংশেষ বিষনালিনী।
অন্নাং সম্প্রি কুলুভে ধনদা সুদত্তি প্রদা।
অন্যাং প্রথ গ্রাহা ধরি কুলুভে ধ

नागमना ।

পর্যায়। নাগদমনী, বলামোটা, বিষা-পছা, নাগপূর্পা, নাগপত্রী ও মহাফোগে-শ্বরী।

গুণ। কটু, তিক্ত, পঘু, কফপিত্ত নাশক, ক্ষাঁর গুণবিশিষ্ট, কফবান্ত নাশক, উদরাগ্মান নিবারক, কোষ্ঠ বিশোধক, গ্রহ শান্তিকন, স্থাকরপে বিষ নাশক, সর্ব্বিত্র জন্মকারক, ধনদারক, স্মৃতি প্রদান রক ও অভিশার বিষয়।

প্রারোগ। মূরকুচ্ছু ও এণ রোগে ইহাছারা উপকার হয়। ইহার পত্র বাবহার্যা, মাত্রা ৬ রতি।

# প্রহত্তক ।

श्रम्बद्धक् श्रामबद्धी त्यानित्यम् श्रम्।सन्द । मृद्धाः मान्यमा भीका शिव निमाशद्दाः ॥

## कनगात छान ।

পরবছক অর্থাৎ কলসার ছাল প্রমেহয়, যোনি ও লিক্ষের হাই শান্তিকর,
মূত্রদোষ বিশোধক, শীত্রীর্যা, পিত্র
ও বায়ুনাশক।

## विश्वामणाहर ।

विराजनातः सम्मृत्य्याको व्यक्तृरस्तः। -त्यांव विद्वानाता त्यनाव क्रिक्टियसमानसः॥

#### গন্ধবিরকা।

গন্ধবিরজার সংখ্যত নাম শ্রীবাসসার ইহা কঞ্জ, মৃত্তকর, জ্ঞরনাশর্ক, ক্রিমিয় ও বেদনা নিবারক। ইহার প্রদেশ শোধ বসিয়া যায়।

#### बक्रनः

বরণো বরণে দেকু ভিজপাকং কুমারকং।
বরুবং পিভলোভেদী দোরা কামল মারুভানু ।
নিহতি ধুনা বাভাজ জিনীৎ শোজাহরি দীপনং।
কমায়ে। মধুরভিজং কটুকো রুক্তকো লঘুং।
অধ্যারীৎ মুক্তকু ক বিশ্বধিক বিনাশয়েৎ।

পর্যায়। বরণ, বরণ, সেতু, ভিজ্ঞ-শাক ও ক্যারক।

তাণ। পিতজনক, ভেক্ক, উঞ্চ, অগ্নিদীপক, ক্যার, মণুর, তিভে, কটু, রুক্ষত লঘু।

প্রয়োগ। শৈষিক কামলা, বায়, গুলা, বাতরক্তা, ক্রমিরোগ, আমরী, মৃত্র-কৃচ্ছ ও বিদ্রবি রোগে প্রয়োজ্য।

#### বটপত্রী।

বটপতাসরা প্রোক্তা ত্রণস্কায়িনী বিষা। মূত্র বিরেচনী জ্বের্মা শোণিত জুভি বারিণী। অস্যাঃ স্বরুষো গ্রাহ্যঃ ভদ্যমাতা ১ কর্ষা।

### পাতরকুচা।

পাতরক্চাকে সংস্কৃত ভাষার বটপত্রী ও অমরা বলে। ইবা ত্রণ সন্ধারক, শীতবীর্যা, মৃত্বিরেচক ও রক্ত আব রোবক। ইহার সমস প্রহণীয়, মাত্রা ২ ডোলা।

#### Primary

regal right or the control of the co

#### B LICEPT

ह । एकारम्ब मध्य क्रिक शिक्षणा ७ भिक्रम सम । देश व्यक्ति १ मिर्ट्स द्वार मिनाइम, विवेद अभिन, रेमद्रव, - भृष्टिक अवर श्रास्त्र क्रिक भीषात्र भाष्टिमावक । सात्र क्रिक

## नेबारभारशांतः।

बुखगरबाधनीय वर्तः।

#### केंद्र प्रदेश

कि पर्धा कार्यकरम् यक्तरम् स्वत्यकः । कृतरम् किया स्वत्य क्ष्यः निव क्ष्यास्त्रिकः । सम्बद्ध क्षरम् वर्द्धा वेशस्त्रीयम् स्वान्त्रः । कृत्य । नावास्त्र निवदम् स्वत्योत्त्रास्त्र नाव्यसः । कृत्या जीवरम् स्वत्या कृत्यम् अस्यानिनो । सम्बद्धा क्षाप्तिकः अस्यः स्वत्यः ।

## ASSESSED !

প্রাার। উড়্বর, অন্তক্লা, সঞ্জাস, দেবস্থাক।

खन। जीवन, क्रम, श्रम, मध्य, समात्र थ वर्षा। देवात मात्र। तम एवंटक भूम निःम्ब एम, जनक जनवात तम विन्ना गात्र, देवा तमरान लिख, क्रम, सक्तराय, क्षम, ताब, अक्तिक च ब्रांस-क्रीमात त्या क्षम हैंद्र। देवात क्षम क्यात जीवात त्या क्षम तम्बातक। देवात क्षम, तथा क्षम तक्षमीत। मात्रा > नाया।

#### मेरियाच स्टब्स्

## पूरत (रिपी क्यात ।

ार्गातः चारणात्र्वात्रम् कृत्यः संस्थाः अञ्चलसम्बद्धाः

থা। ভত্তকামক, খাসু, দীওল থ কৰাৰ, ইখাম খানা কক, শিভ, তুণ, থিতে, কুঠ, পাপু, অৰ্জঃ ও কামলা নোগ নান্ধ হন। অধিকত মক্তভুমুহেন্ত যে প্ৰকলি থাণ আছে, ইহাতেও তৎ সমত বৰ্তকাম আছে কিড ভয়তোকা অনেভ প্ৰাৰ গৱিষাণে আছে। যাত্ৰা ২ নাম।

#### STER 1

वरण वरणे वन्त्रिक्क किस्तारणेट्या वृक्कत्रः । वरः चीका सरम्यानीः भाग्नु शिक्ककालवा । वर्षः करत्रः कर्मा कर्मक वर्षः नगाक्। कम्म वर्षाः ३ वाक्काः

## ं पांश्रा दुव्ह ।

गर्गात । यन, यह, मिणक्स, जिल्ल त्योत ७ श्रवात अरे छिन रेवांत गर्गात । छन । मीछन, मध्त ७ क्यात, रेवांत कल किकिर निष्ठे । यन क्षात्रम्, व्यर्गा, गापू, निष्ठ ७ कम मेडे कृत्त रेतांत्र कल क्षेत्रर मध्त । अरे तृत्त्वत क्ष्म ७ निर्माण क्षरनीत । माजा > माया ।

्रकानाक्ष्ये क्रमम् । (कानाक्ष्ये क्रमम् श्रीकातामानाकः वद्य : राजानाक क्रमम् स्मृत्ये विकासन्ति है

#### विश्व।

বিশাফল শীতগুণ সম্পন্ন, আধান নাশক, ত্রিদোধয় ও বহুমূর নিবারক।

## जदमानद्रभाष्ट्रभाषः।

আর্ত্তবপ্রবর্ত্তক বর্গঃ। সহাসারঃ।

বীরাস্তাবং সহাসারং কুমারীরস সক্তা।
সহাসারোহর্থা জনসং পিত্রির্বরণো মন্তঃ ।
বেলুকুল্ রেচনং পুজাজননো গর্জপাতনং।
বিট্সংক্রিনি রোগে চ স্নানো হলসংতৌ

লুপ্তের জাস নারীণাৎ শীতিশিতে পিরোর জি।
জারে জেম্মান্তবে স্নীকি মন্দে ২ গ্রেই চ প্রযুদ্ধাতে ॥
জার্লান্ত নানেবেত নাত্রবঁত্রী ন পুশিস্থী।
সচাস্গ্দরিণী নাশি যকুদ্রুকাদি রোগবান্ ।
অস্যুদারা ২ রক্তিকে।

#### मुमनवत्र ।

বীরাজাব, সহাসার ও কুমারী রসসম্ভব এই শব্দগুলিমুসকবেরর সংস্কৃত নাম। মুস-করে অগ্নিজনক, পিতনিংসারক, বলকর, বিরেচক, রজ:প্রবর্ত্তক ও গর্জপাতক। মল-রোধ, ক্রিমিরোগ, সংস্থাস, অপস্থার স্ত্রীদি-নের রজোলোপ, শীন্তপিত, শিরোরোগ, ইল্লিক জ্বর, শ্লীহা ও অগ্নিমান্দা বোগে মুসকরে উপকারী। জর্লাং, মকুজের পীড়া ও যুক্তরোগে এবং গর্ভবর্তী, ঝতুবকী, ও রক্তপ্রদর রোগাক্রাজা স্ত্রীদিণের পজে নিবিদ্ধ। মাত্রা ২ রক্তি।

## द्रश्का।

रत्रवृक्षः राज्ञभूबीह सन्भिनी क्लिना दिखाः। कव्यविका भावभूबी माखा दिवाको वरत्रवसः॥ রেণুকা কটুকা পাকে ভিজানুকা ক্টুর্লু:। পিতলা দীপনী মেখ্যা পাতিনী গর্তপাজিনী । ফলাস বাভকুজৈর তৃট্ কর্বিবদাহ নুং। অস্যা নাত্রা ৬ মুক্তিকাঃ।

#### ं द्रिष्क ।

প্রধার। রেপুকা, রাজপুত্রী, নন্দিনী, কশিলা, বিজ্ঞা, ক্রুষ্ণকা, পাতুপুত্র', কোন্তী ও হরেপুক্রী। ইহার আকৃতি মরিচের ল্যার। এই

গুণ। রেণ কা প্রায়েশ কট্রস হর, ইহা ভিক্ত, অনুষ্ঠা, কট্, লছ্ প্রিভেনক, অধিকারক, সারণপত্তি বর্জক, পাচক, গর্ভপাতকারক, কফজনক ও বারু বৃদ্ধ ক।

আম্থ্রিক প্ররোগ । তৃষ্ণা, কণু, বিষ রোগ ও দাহ নত্ত করিয়া উপকার করে । এই বীজের মাত্রা ৬ রঞ্জি ।

#### माप्रली ।

কলিবারীতু হলিনী লামলী শত্রুপুপা)পি। বিশল্যারিশিধানতা বহিংবকু । চ গর্ভনুৎ চ কলিবারী সরা কুওলোভার্নো ত্রণ শূল জিব। সন্ধারা স্লেছা জিংভিকা কটুকা তুবরাপি চ চ ভীক্ষোভা জিমিছ্লতু । পিতলা গর্ভপাতিনী। অসা মূলৎ প্রাহাৎ মাত্রা ৬ রক্তিয়।

## जेननाम ना।

পর্যায়। কলিহারী, হলিনী, লাম্বলী, লক্ষপুলী, বিশল্যা, অগ্নিলিখা, অনন্তঃ, বহিবক্তা ও পর্তমুহ।

তা। শর, কারতা বিশিষ্ঠ, প্লেমনাশক, তিক্ত, কটু, কবার, তাক্ত, উষ্ণ,
ক্রিমিয়, লঘু, শিশুবর্দ্ধক ও গর্ভনাবকারক। ইহা ব্যবহারে কুঠ, শোপ,
অর্শ:, ত্রণ ও খুল রোগ নত্ত হর।
ইহার মূল গ্রহণীর। মাত্রা ও রতি।

#### हेक्पर ।

টকবো বন্ধিকুদ্বল্যো এবন্ধঃ কক্ষাধ্যক। জ্ঞাপুতা জননো হজো যুচ বন্ধানকৰ্ব: ।

८माराना ।

ইহা অধিকর, বৃদ্ধদ্ধ ক, কভ নিবানক, কফল, রজঃ প্রবর্তক, রক্ষ ও মৃত্যভাক্ষ ক। মানা ∰ রভি।

भी वहीं

भीवत्रो स्यामिक् स्थामिका । विवाधिका । विवाधिका स्थामिका । विवाधिका स्थापिका । विवाधिका स्थापिका । विवाधिका । विवाधिका । विवाधिका ।

अनिकश्चलित मध्यः नाम शैवती अ भिविता देश शिविताशन निवा-तक, त्रस्कारमाय नामक, व्यम्त नास्तिकत अ व्यर्त्नातिवासक । मृन श्रद्दशीत माजा > माया।

#### खाविका ।

সর্বলী পাউলা রৌক্রী স্থাবিকা বহুজালৈ সা।
রক্ষঃপ্রবর্তিনী রৌক্রী মুচপাউবিকর্বলী র
পক্ষপাতানভবোধা পোণিত স্কুতি বারিনী।
বাররেক্ষেণিবভাষাতি সক্ষমুকাধিক তথা র
পেডপ্রদর দেকাক বক্রাকেত ক্রিক্রণ ।
নাক্রাভিরেকাদ্ বিষয়ে ক্রিক্রান্যু বৃদ্ধু বৃদ্ধু

## रिकी भवकिया।

দর্যপী, পটশা, রৌদ্রী, আবিকা ও ধ্যক্ষা এট গুলি একার্থ বে'ধক লক। টহা রচঃ প্রবর্তক, মৃচগর্ভাকর্ষক, গর্ভ-পান্ত জানত রক্তলাব রোধক, রক্তব্যন নিবারক ও রক্ত মুব্রাদি প্রশাসক বেঁত-শ্রেলর, পক্ষাখাত ও ভক্তমেহ রোগে প্রয়োজ্য। অধিক মান্তার শেবন করিলে বিষ্ট্রিকা করে। মান্তা ৬ বভি।

#### Wage:

অন্নিউক্ত বাষ্ণ্যঃ মুক্ত বৰ্ণোহৰ্ণসাধনঃ।
নুক্তবাক্তঃ পীতকেনঃ কোনলো পর্তপাতনঃ।
অস্য কলং গ্রাছং বাত্রা ২ বাষ্কঃ।

#### बीछे।

পর্যাব। আরিষ্টক, মান্বল্য, কৃষ্ণবর্ণ, অর্থসাধন রক্তবীক্ষ, পীতফেন, ফেনিল ও গর্ভপাতন। ইহার ফল এহনীয়। মাত্রা স্বাবা।

# • ठकू र्मटमार्थामाः ।

वार्डवमः श्राहि वर्ग ।

#### जामाकः।

অপোকো হেমপুষ্পাত বঞ্জু জাত্রপঞ্জবং। কছেলিঃ পিও পুষ্পাত গদ্পপুষ্পোনট করা। অপোকঃ দীতলভিছেলা প্রাহা বর্কাঃ ক্যায়কঃ। দোবাপচি তৃবা দাহ ক্রিমি শোহ বিবাস জিব। অসা স্বৰ্গপ্ৰাহা, বাত্রা ১ দাহকঃ।

#### कारणांक।

পর্যায় ৷ আশোক, হেমপুষ্প, বঞ্জ, ভাদ্রপল্ল, কড়েপ্ল, পিতপুষ্প, গন্ধপুষ্প ও নট ৷

গুণ। শীতল, তিব্ধ, গ্রাহী, বর্ণের উৎকৃষ্টভা সাধক, কৰার ও দোৰত্ব। ইহা ন্যবহার করিলে অপচা, তৃষ্ণা, দাহ, দ্রিচি, শোষ, বিষক্ষ পাড়া ও রক্তদোষ নিবারিত হয়। ইহার তৃক্ ব্যবহার্য মাত্রা > মাধা।

#### লাকা ৷

লাকা পদক্ষালকো থাবো বৃক্ষাবরো অনু। দাকাবৰ্গা হিমা বল্যা ক্বিকা ৮ কুবরা লযুঃ ৪ অনতা ককশিকাকাবিকাকাস অর প্রণং । जर्राज्ञास्य वीमर्ग व्याप कृषे भग्नाम । सम्बद्धाः धरेन् स्वहृद्द्यां स्वाप मानाः । माजाः । भाषसः ।

#### नारा।

লাক্ষা, পলস্ক্ষা, অলক্ত, যাব, বৃক্ষামর
ও জতু এই সকল ইহার নাম। লাক্ষা
বর্ণোৎপাদক, শীতল, বলকারক, দ্বিদ্ধ,
ক্ষার, লঘু ও অনুষ্ঠ। ইহা কফ,
বক্ষণিত্ত হিকা, কাস, জর, তণ দিরঃক্ষতে, বীদর্গ, ক্রিমি ও কুঠরোগ নাশ
করে। অলক্তক লাক্ষার ম্যার তণ
বিশিষ্ট, অধিকন্ত ইহা বাক্ষ বেশ্ব নাশ
করে। লাক্ষার মাত্রা ২ মাসা।

#### जनस्यः।

অলককো রজোরোধী রক্তপিত ক্ষরপতঃ। প্রস্রঞাপ্তিনির সরক্ত ক্পয়েদ্ধু বন্। আল্তা।

ইহা রজোরোধক। দেবন করিলে রক্তপিত, ক্ষন্ত, রক্তপ্রদর ও রক্তাহীশার নিবারিত হয়।

#### क्षुष्ठ ।

স্যাৎ কুসুড ( বাহ্নিপ ) বজরঞ্জক মিডাণি। কুসুড ( মধুর ) রক্ষ ( বাহ্নি ) মড্ম। বিমান বোধ পমন ( কটুড) এক পিতলন্ । জিমিছদ্ বাতল ) কুলু রক্ষপিত কফাপ্যন্।

## कूष्ममृत्र ।

কুসুন্ত, বহিশিও ও বন্তরপ্তক এই তাল ইহার পর্যার। কুসুন্ত মধুর, রুক্ষ অমি ঘীপ্তিকারক, রেচক, মলমূত্রের লোব নাশক, কটু, উষ্ণু, গুরু, পিত্তজনক, ক্রি-মিন্ন, বার বর্জ ক, প্রবশ রক্তপিত্ত নাশক ও প্রেম্ন শান্তি কারক। মাত্রা > মাধা।

#### नम्भा ।

পুজকাকারা রজান্দা বিজ্বভাগিত্বভা সহা।
সক্ষানা পুজজনবাঁ, মন্তপভা কৃতিউবেৎ ।
বোৰত্রী নধুরা দীকা বুখা, বিলাগ রসায়নী।
কবিভা পুক্রবাধনাৎ কক্ষবা কুনিপুকবৈঃ ।
কান্যা বৃত্তৎ প্রাক্তি হাবাবে ।

## मक्षाम्म ।

পর্যার। লক্ষণ বিজ্ঞানী ও প্তকা।
ইহাব আকৃতি বিজ্ঞান ছাগলের নাার।
গাত্রে রক্তবিশুর আক্ষ্মির হন। ইহা
তিদোধ নাশক, মধ্ব, শীকল, বীর্ঘা
বর্জক, বলকারক ও রসারন। সেবন
করিশে অবশাই গর্ভোৎপত্তির বাাধাত
দূর হব। ইহার মূল গ্রহণীর মাত্র।
১ মাবা।

## त्ररकार्णमम्मम्।

मृत्र त्राक्षारभवना माजित्वात्त्राधाव्याभिक्षम् । मीखरीवार श्रासम्बद्ध राष्ट्रनिवश्यवानमम् । त्रात्कार्णनाम् मृत्र ।

রক্তে পিলের মৃল রজোরোধক, বক্তপিত শান্তিকর, শীতবীর্ষা, প্রমেহ নাশক, বার্প্রশমক ও পিতার। মাত্রা ন মাধা।

क पूली यक गृलम्

ভণ্ড জীয়ক মূলং স্যাপুক্তং স্লেছ বিনাশনদ্। রজোরোধকরং রক্তপিক প্রদর সংহর্ষ

काँहोनटहेवम्न ।

ইহা উষ্ণ, কফন্ন, রজোরোধক, রক্তপিক নিবারক ও প্রদর শান্তিকর। মাত্রা ২ মাত্রা।

## शिक हम्मनम्।

ভালীয়কত কানীয় পীড়াড বুজিক্ষৰ। ছায়িপ্ৰিয় কালনায় তথা কাৰীনাৰীকৰ । কানীয়ক বুজ এবং বিশেষাৰুবাদ নাৰ্মন। কাঠং প্ৰায় বামা ২ মানুষ্ট।

## পীত আৰু

কালীবক, কালীক বীভাভ, হরিচন্দন, হরিপ্রিব, কালনার ক কালামুসার্থাক এই ওলি ইহার প্রকার টিহা রক্ত-চন্দনের মুদ্ধা তিনি টি, অধিক ভ ইহা বাক বোগে বিশেষ উপকারক। ইহার কাঠ প্রহণীর, মাত্রা ১ মাবা।

#### व्यक्तिम्बम् ।

রক্ষচন্দন মাধ্যাত রক্ষাক্ষ ক্ষুদ্রচন্দনন্। ভিলপর্ব রক্ষনার ছংগ্রমালকল মতন্ত্র রক্ষা শীত বিক্ল বাদু ছব্লি ভূজাক্র পিত ছং। ভিক্তা নেক্রহিত বৃদ্ধ করে এপ বিধাপরম্ । মাত্রা ১ বাদক।

#### वक्र ठक्र ।

রক্তচন্দন, রকাশ, ক্ষুড্রচন্দন জিল-পর্ণ, রক্তনার ও প্রবালফল এই সমস্ত ইহার পর্যার। রক্তচন্দন দীতেল গুরু, থাছু, তিক্ত, চকুর হিতকারক ও বলকর। ইহা ব্যবহারে বমন, তৃষ্ণা, রক্তপিত্ত, অর, এণ ও বিষদোষ নপ্ত হয়। এই কাঠের মাত্রা > মাবা।

## ९,खन्नम् ।

প্রজ্ম র জনারক সূর্জ্ম রক্তম ওবা।
প্রস্তুত্ব নাব্যাত্ত প্রত্ত্ব সূচক্ষন ।
প্রস্তুত্ব নাব্যাত্ত পির্ভাল্প রবাজ্মন ।
হরিচক্ষন বহুবেহাত বিশেষ। দ্বাহ্ নাব্যান ।

চন্দ্ৰানি তু সন্ধানি সমূশানি সুসাধিতি। গভেৰতু বিশেষে।ছভি পূৰ্মাঃ ভোওডনো গ্ৰীনঃ । নাত্ৰা ১ নাৰকা।

#### सक्या

পত্তম, রক্তনার, ত্রম, রঞ্জ, পাটুরম্বক, পাতৃর ও কুচন্দন এই গুলি ইহার পর্যায়। ইহা মধুর ও শীক্তল। ইহার প্রশানী অগুম্বর ন্যায়। ইহা পিন্ত, শ্লেমা, রণ ও রক্তেদোষ নিবারণ করে, বিশে-ঘতঃ ইহার বিলক্ষণ দাহ নিবারণ শক্তি আহে। যে করেক প্রকার চন্দন উল্লিখিক হঠল। তাহাদের রদ প্রভ্-কির প্রাম একরপ। বক্ষমকাঠের মারো ১ মাধা।

### माद्याहेः।

লাখোট, পীডফলকো ভূডাবাসং খরকদে:। শাখোটো রকপিভালো বাডলোগাভিসারজিৎ । অসু পত্র ছৎমুরসক সূত্তে মাত্রা ২ মামকঃ।

## नांकिका।

প্রসায়। শাকোট, শীতফলক, ভূতাবাস ও বয়জনে।

তা। ইহা রক্তালিক, আর্শ্য, বাত শ্রেমা ও অতীদার রোগ নত্ত করে। ইচার পত্ত ও পত্তের করম গ্রহণীয়। মাত্রা ১ মাষা।

#### 至至寺草 (

কুকুলরঃ পাঁওপুলাং কুজুরক মৃত্তুজ্ব। 
কুজুলরঃ কটুন্তিকো জয় রক্ত কভাপতঃ 
রক্তপিত মতীবার৲ হাত্ত৲ ঘোর৲ নিহতি চ ।
জব্য মারা ২ নাবকৌ।

কুক্সিমা, কুকুরসোঁকা।
পর্যার। কুকুনর, পীতপুষ্প, কুকুরক্ত ও মৃত্তুদ এই গুলি ইহার পর্যার।
গুণ। কুকুন্দর কটু, তিজ্ঞা, জার
রক্তদোর ও কফনাশক। ইহা সেবন
করিলে রক্তপিত্ত, অতীনার ও দাহ
প্রামতি হয়। ইহার সমস্ত অংশ
গ্রহণীর। মাত্রা ২ মাধা।

জবা ত্রিসন্ধা চ।
উর্নুপথপা চাথ ত্রিসন্ধা সারুণা সিভা।
জবা সংগ্রাহণী কেশ্যা ত্রিসন্ধা ক্ষবাত্রিও।
ইক্ষবুপ্ত মন্তাসাং প্রমেহাম্ বিংশন্তিং হয়েং।
মাত্রাং মাধকৌ।

খেতজবা এবং লালজবা। হিন্দী বোডতল এবং সাম্চা।

পৰ্য্যায়। জবা ও উৰ্দ্ধপূপ্স, ইহা লাল বৰ্ণ হইলে ত্ৰিসন্ধ্যা কহে।

তণ। জবা সংগ্রাহী ও কেপের হিতকর। ত্রিসক্ষা বাডলেম নাপক। এই উডর বিধ জবা ইক্রস্ট, অভিসার ও প্রমেহ রোগে প্রয়োজ্য। জবা পুস্পের মাত্রা ২ মাবা।

#### खार्थ ।

বোধিজঃ পিপদেলাংখখনজগতো থকাননঃ। পিপদেলা দুৰ্জ্জায় দীতা পিতস্থেত্ম এবাজ্ঞানং । গুলু ক্ষয়কো কুজো বর্বো যোলি বিশোধনঃ। অথথায় কলং পকং যোনিছোবহাং বিষয়। ছব্দি খোষাক্লচিহরং বিষয়ং রক্ষপিতমুৎ। অস্য দুচো যাবাঃ বাধকা, পঞ্চলস্য

অধধ। হিন্দী পীপর। পর্যায়। বোধিক্র, পিপ্লপ, অধ্থ, চলপত্ত ও গজাধন।

8 वायकाः ।

থার নহতে জার্ণ হর না, দীতদ, থার ক্ষার, রুক্ত ও বর্ণের উৎকৃষ্টতা সম্পাদক। ইহার দারা পিত, প্রেমা, এর্ণ, রক্তদোষ ও যোনি রোগ উপশমিত হর। পক্ত আক্ষা ফল দীতল, যোনি-দোবনাশক, বমি নিবারক, শোবপ্রশ-মক, অফ্রচিনাশক, বিষয় ও রক্তপিত্ত শান্তিকর। আক্ষাপর স্বকের মাত্রা ১ মাষা ও ইহার পক্ষী ফ্লুলের মাত্রা ৪ মাষা।

नशीयकः। 🗽

নকীবৃক্ষা কথাকে জারী চ স্যাধনস্থিত। ধ আনীবৃক্ষা কর্মজন জীরী চ স্যাধনস্থিত। ধ নকীবৃক্ষা নতা খাদু ভিজক্তর উন্ধর্ম। কটুপাক রনোগ্রাহী বিষপিত ক্লান্তজিৎ । ক্ষা ভূগ্ প্রাত্মা, নারা > সাক্ষঃ।

व्यथं विदर्भय ।

পর্যার। নন্দীর্ক্ষ, প্ররোহী, গজ-পাদপ, স্থালীর্ক্ষ, ক্ষযভক্স, ক্ষীরি ও বনম্পতি।

গুণ। লঘু, স্বাহ্য, তিক্তা, ক্যার, উষ্ণা, পাকে কটু, গ্রাহী ও বিষয় ইহার দ্বারা পিক্ত কফ ও রক্তদোব উপশ্নিত হর। তৃক্-গ্রহণীর মাত্রা ১ মাবা!

#### विभनाकवरी।

रिणंका करेवी रक्षा उत्पनकाम कारियी। शहरकट्टाक्स्विवाक्सायः इक्षाक्रमात्रमुख्यस्य ॥

#### खायानान ।

ইহার সংস্কৃত নাম বিশ্লাকরণী। বিশ্লাকানী বলকারক, ত্রণসদ্ধাবক, রক্তভাব রোধক ও রক্তাভিদার প্রশমক। পত্র গ্রহণীয় মাত্রা ২ মাধা। नावनी भूनम्।

বানুনী পূজা শাক্ষ যুত্তৈগতৰ নামিন্ত । প্ৰবয়ং নালয়ভোৱে ফুঃনাব্যক ক্ষুদ্ধিয়াঃ । রনে পাকে চ যবুরং ক্ষারং নীউলং গ্রহণ । ক্ষু পিতান্ত জিল্ প্রাতি বাড্যক প্রকৃতিবদ্ ।

# गिम्लक्ष

হাত দৈক্ষবের সহিষ্ট এই পূব্দ পাক করিয়া ভক্ষণ করিলে ক্রিয়ার রোগ উপ-দমিত হয় । ইহা ক্রিটেন ও পাকে মধুর, কযান, ক্রীক্রেকা ক্রিয়ার প্রক্রেকিন বাহী ও বারু বছক।

## कक्षेत्र ।

পানীয় তত্ত্বস্থীয়ন্ত কণ্ঠতী সমুদাছতদ্।
কণ্ঠতী ডিজকা য়ক্ত পিলানিল হয়। লঘু ।
অধ্যত দ্বীয়া পালে কণ্ঠত দিভি প্রসিন্ধন্।
চবরাই ভেষ্ঃ।

কাঁচড়া। হিন্দী পানীচবরাই।
পানীব তণুলীবকে কঞ্চ কহে।
তণ। ইহা ডিক্ত, রক্তপিত শান্তিকর
বায়ুনাশক ও লঘু, মাত্রা ২ মাধা।

## शक्षपट्यार्थाय ।

षो पनपाहनतर्गः ।

#### छ। इक।

আন্তৰ্ক পৃত্যবের সাহ কটুড়া ওবান্তিকা। আন্তৰ্কা ভেদিনী প্ৰক্ৰী ভীচ্ছোক্ষা দীপনী মভা । কটুকা মধুৱা পাতে ক্লক, বাভক্ষাপদা। বে প্ৰশাং কৰিভাং স্বৰ্ত্তা কেহপি সন্ত্যান্ত্ৰ-কেহবিলাং ।

ভোজনারে সহাপধ্যৎ লবণার্জ ভক্ষণন্। অ'গ্রস্থীপন্ ক্লচাং জিল্পা কঠ বিশোধনন্। কুঠ পাঙ্গবয়ে কুক্টে রক্তপিকে এবে অরে। शस्य निकास चेत्रदर्गा हैर्मन शृक्षिक मार्ज्ञ कन् ॥ व्यम्भ मृक्ष- आसा-, मात्रा ।

## षामं क (बामा)।

আছ ক, শৃক্ষবের, কটুডজ, আজি কা এই গুলি, আরু কের পর্যার। আরু কি ডেনক, গুরু, তীক্ষ, উষ্ণ, অরিনীপক, কটু, পাকে মধুর, রক্ষ ও কফ বায়ু নাশক শুঠীর মে সমস্ত কণ লিখিত হইরাছে আরু কৈও সেই সমস্ত আছে। শুরু আন্তর্কক কেই ( শুঠী বলে)। আছার করিবার পূর্কে লবণের সহিত আ্লাক্র করিবার পূর্কে লবণের সহিত আরু ক শুকাণ বিশেষ উপকারী। তদ্ধারা অন্ধির দীপ্তি, ক্রচির্কি এবং জিহ্বা ও কণ্ঠবিশুরু হয়। কুঠ, পাত্রোগ, রক্তপিত, রগ, ভ্রুর ও দাহ রোগে এবং গ্রীয় ও শ্রহকালে আরু ক সেবন বিভকারক নহে। ইহার মূল গ্রহণীয়, মাত্র ২ মাবা

## नक्षित्रनी।

চবিকায়াং কলং এ:ইজঃ কবিতা প্রশাপপানী। কপিবলী কোলবলী কোয়নীবলিয়ক সা । প্রকৃতা কটুরাত স্নেছছেকি বর্তিনা। উতা: নিহত্তাভালাং খাসকথাব্য কিনীন্। বারাও রাজিকা।

## गक्तिश्व ।

চবিকার ফ**লকে গলপিপ্ললী কং**হ। পর্যায়। কলিবলী, কোলবলী, জে-য়দী, ধশির ও গলক্ষা।

গুণ। ইছা কটু, বাডপ্লেমনাশক, অধিবন্ধ ও উষণ।

প্ররোগ। অভিসার, খাস, কঠরোগ ও ক্রিমি নাশ করে। মাত্রা ৬ রভি।

#### ठिखकः।

চিত্রকোহনক্ষামা চ লীটো ব্যালন্ধগোৰবঃ !

চিত্রকঃ কটুকঃ লাকে বক্ষিকুৎ পাচনো কযুঃ ঃ
ক্রক্ষোনো এছনী কুঠলোরালঃ ক্রিনিকাসমূৎ ।
বার্ডকেল ছরে। এছা বাতার্ল লুেল লিভত্ত ॥
প্রবেশাক্তিরকন্ত্রক্ স্যান্দাহিনী এণ্কারিনী।
চিতা।

আধিবাদক নাম সম্দারে চিত্রক বুরাব মধা, অনল, অধি, বহিং ইত্যাদি চিতার নাম, তদ্ভির শীঠ, ব্যাল, ও উষণ এই গুলিও চিত্রকের পর্যাধ।

থাণ। চিতা পাকে কটু, অগ্নিকারক, পাচক, শব্, রুক্ষ উষ্ণ ও গ্রাহী।

প্রবোগ। গ্রহণী, কুন্ঠ, শোথ, আর্শঃ, ক্রিমি, কাস, বাতলেগ্রা, বাতার্শঃ ও পিন্তশ্রেমা নাল করে। ইহার তক্তের প্রবেশে দাহ ও ফোস্কা উৎপন্ন হয়। মূল গ্রহণীয় মাত্রা ৪ রতি।

#### ग्रम्भा ।

यवानिरकाञ्चनक्षां उक्तवर्षां इक्तरमाधिका । रेमरवाका मोनाका मोना उदा मान्यरमाखग्रा ॥ यवानी भावनी क्षष्ठा। खोट्याका कट्टैका मध्या। मोननी इ छवा जिक्का निसमा वाद्यिम्बद्ध ॥ योज्ञावर्षामद्वानाय अन्य सीय क्षित्र अव्यः।

यमानी, त्यांच न ।

যবানিকা, উপ্রাবন্ধা, প্রস্নাবর্ভা, অক্সমোবিকা, দ্বাপান্দা, দ্বাপায় যব ( যব পর্যায়)
এই গুলি ঘবানির নাম। যবানী পাচক,
ক্লচিকর, তাস্ম, উফ্ল, কটু, লবু, অগ্নিদাপক
কিক, পিন্ত কারক, বাম ও শূলনাশক।
ঘবানী বাতন্মেমা, উদরব্রোগ আনাহ
(মুদা),গুলা, সীহা ও ক্রিমি নত্ত করে।
মাত্রা ২ মাষা।

ेशः खडरगणः।।
चन्नद्वां वंत्राच्यं ह महत्त्वां शेणायस्वां।
चन्नां सम्बद्धां वंत्राच्यं ह महत्त्वां शेणायस्वां।
चन्नां सम्बद्धां वंद्राच्यां कार्यां ह मनस्वाः।
चन्नां सम्बद्धां कार्यां कार्याः।
चन्नां सम्बद्धाः सम्बद्धाः सम्बद्धाः।
विकासिकां सम्बद्धाः सम्बद्धाः।
विकासिकां सम्बद्धाः।
विकासिकां सम्बद्धाः।

वन्यमानी ।

অজনোধা, ক্রারা, মন্ত, দীপাক,
ক্রক্ণা, কারেলা ও সমন্তকা এই
সম্বার বনষমানীর সাম, বনষমানা কট্ট,
ভীক্ষু, অধিনীপক, বাজনের নাশক, উষ্ণ,
বিবাহী, জ্বা, বলকারক ও লঘু এবং
নেত্ররোগ, কফ, বমন, হিন্ধা ও বস্তি
রোগ নিবারণ করে। বীক্ষ গ্রহণীয় মাজা
২ মাধা।

श्राज्ञीक घमानी। श्राज्ञीक घरानी छू बरानी ममुगी,श्रेटेन:। विट्यंबाद शाहमी क्षका श्राहिनी पाषिनी सकः। श्राज्ञान दर्गाज्ञान्।

ব্রাসানী ধনানী ধনানীর ন্যার গুণ বিশিষ্ট, বিশেষতঃ ইহা জানিক পাচক, রোচক, গ্রাহক, মাদক ও গুরু। মারো ২ মাধা।

भक्रभुष्णा मिट्यमा ह ।

পত্তপূজা প্ৰাছা চ ষধুৱা কারবী বিসিঃ।
আত্তপ্থা সিত্তছত্ত্বা সংহিতা ছত্তিকালি চ ঃ
ছত্ত্বা অ'লেছ পালীমে বিজ্ঞো মধুৱা বিলিঃ।
অতপূজা লযুক্তীক্ষা পিতত্ত্ব দীপনী কট্টিঃ ঃ
উক্তা অৱানিল প্লেম্ব ত্ৰপশ্লাক্ষি রোক্ষর।
বিজ্ঞো অধ্বধা ত্লোক্ষা বিশেষাব্যোনি

অগ্নিয়াক্য হরী হ্রদ্যা বছবিট্ ক্রিনি সুলহ্রৎ। ক্রুডোজা পাচনী কাস ববি প্রোনিলান্ হরেৎ । অন্যোগাত্রা ২ মাবকৌ।

## खन्का ७ त्यांनी कर्

লভপুন্দা, পভাষা, ব্রুলা, বিদি, কারণী, অভিলয়ী, নিজনা, ও ছবিকা এই সমত ওপ্লার নাম ও ছবা, পালের, পালীন, বিজেরা, মার্কা ও মিনি এই সকল মৌরীর নাম। পছসুন্দা (তল্কা) লঘু, তীক্ পিত্রকারক, অভিলীপক, কটু, উষ্ণ, অরম, বারু দমন করি, প্রেম নাপক, এবং ব্রণ, শূল ও চক্লারার করি বিশিষ্ট, বিশেবীর শতপুশার নার করি বিশিষ্ট, বিশেবীর শতপুশার নার করি বিশিষ্ট, বিশেবীর ইয়া বেলি পুল, অভিমান্দা, মলবছ, ক্রিমি ভূপারোগ নাই করে। মৌরী- ক্লাক, উষ্ণ, পাচক, জন্য এবং কান, বমি, প্রেমা ও বারু নাশক। উভরের মাত্রা ২ মাবা।

(Q# 1

महस्यदंशि ककुक् का क्षिक् दिल् हामठेम् । हिल् कर भावमर क्रवार विक्षार वालयलामक र ह मृज स्टाजान्द्रामाध क्रिमिझ र शिवर केमम् । क्षीभूक्शक्रमभर वलार पूज्छ । भवाद क्रम्भतम् ॥ माजा ॥ त्रिक्तिगः।

# হিসু (হিং)

সহজবেদি, জতুক, বাহলীক, হিছু ও রামঠ এই গুলি চিক্ষের পর্যার। হিছু উচ্চ, পাচক, ক্ষচিকারক, তীক্ষ, পিত বছুক, বলকারক ও রক্ষ: প্রবর্তক। হিছু দেবন করিলে বাতপ্রেমা, খুল, গুল, উদরবোগ আনাহ (ম্নো) ও ক্রিমি, মৃত্যু ও অপস্থার রোগ নষ্ট হয়। মাত্রা ব বভি।

## रत्यापत्रम् ।

ভন্মবে) প্রবাদ করা বংস্য সমূলং বিজ্ঞান্ত। ব্রভীর দশাব কর সমূলং বংস্যাসন্তাং ভয়োর্না-বাবি প্রবাস্তাঃ बहुत स्पूर्ण विका शहान्यका मुखा। वर्ता विका सीवस्को विवशी का जनगानिती ह असूर्व जीनको किका सुबूका छुत्रशा क्षारा। शिरकावह नवीहार्त्या प्रक्षो क्षत्र मुंगक्कर ह सहारणाञ्चला स्थाका स्थरकरणा वरवाहर्ति। कत्रुवामा क्षरास्क छु क्षिका क्षत्र मुकारक।

पुरे क्षकांत स्त्र ।

क्रमारवा टार्चम श्रकात कल दब्रिटक मर्मात नात । विकाशि (वामशिष), विकोष श्रकांत्र कल कार्यथ करलब नामः, मर्टमात नात शक विभिष्ठे। छक्टमत माम ७ ७१ अरे अथम अकात करनत नाम हरूवा, वेश्वा ७ विद्या। विक्रीय क्षकाल तत्र नाम व्यथकना, मरनागका, भीद-इही, विषयी ७ शाउमनामिनी। इत्वा व्यक्षिणीशक, किएक, मृत्, केशक, कवात्र प्र अझा हेवा लिख, छेनत्र द्यान, वाहु, कार्यः, तार्गी, श्रम्म । मृनदर्शांग नष्टे कदत्र। दिकीत अकात कत्नवर अरे थकात छन । एतूरवत्र शतिवटर्ख छहे वाव-हार्था। मध्योध्य हुत्य विनिया त्य खना विक्वीक रह, कारा रचूरा नरह। देश का शविति वा मबिटाब देखा

তেন্ত্ৰী। তেন্ত্ৰ কল্ইতি চ। ডেমবিনী ডেমবড়ী ডেৰোন্ধা ডেমনীঙৰা। ডেমবিনী কম্বান কানাসামস বঙ্কা । পাচনুখ্যা কটুডিকা প্লচি বন্ধিবনী।

ভেজাবল।
ভেজাবলী, ভেজাবলী, ভেজাবলী ও
ভেজাবল এই সমস্ত ভেজাবলের নাম।
ভেজাবল পাচক, উফ্ল, কটু, ভিজ্ঞা, রোচক
ও অগ্নিমীপক। ভেজাবল ব্যবহারে কফা,
বাস, কাল, গ্রহোল ও বায়ু নাই হয়।
মান্তা ১ মাধা।

বালম্। বালং ছীতেরকহিঠোগীত।ফেশাগুনাম চ। যালকং লাভলং ককং সমুদীপন পাচনম্। হালাসাকৃতি বীসপ ক্ষোবাদাভিদার্ভিন।

প্র্যাস। বাল, হীবের, বর্গি ও উদীচ্য এই গুলি এবং কেশবাচক ও কলবাচক শক্ষ সম্বায় ইকার পর্যায়। গুল। শীন্তল, কক্ষ, লঘু, দীপন ও পাচক।

আম্থিক প্রয়োগ। জলাস, ক্রাঞ্চি, বীস্প, জ্যোগ ও ক্যানাছিলার রেণ্ডগ ব্যবস্থে। মাড়া ১ মাধা।

## श्त्रू नहीं।

ছিলুপ্রী তুক্বরী পূল্কা পূল্কা পূল্য। ছিলুপ্রা ভবেজভা ভীজোল, পাচনী কটুঃ ॥ ভছুতি কু ধ্বভাল, সেয়া ধলু নিদ প্রা।

तं कुनो।

পর্যায়। হিঙ্গুপত্রী, কর্মী, পৃথিক। পৃথুকা ও পৃণু।

তা। ক্ষান্ত তীক্ষা, উষ্ণা, পাচক ও কটু। ইহা জড়োগ বজিপীটা, বিবন্ধ, আর্দ্যা, তাল ও বাসুনাল কৰে মাত্রা ২ মাধা।

বংশপত্রী । বংশপত্রী বেশুপত্রী পেওা হিছুপিবাটিকা। হিছুপত্রী এবা বিজৈবংশপত্রী চ কার্টিডা।

পর্যাষ। বংশপত্রী, বেণুপত্রী, পিণ্ডা ও হিন্দুশিবাটিকা।

खन । देश बाङ्नी विटलंग हेर'त खन्छ बं । जुनीब नागि ।

চাংকরী চুক্তিকা ব্রুট্যবঠারকোনিকা। আমারক্ত প্রতী শিক্ষা চান্ত্রকঃ ম ভাকেরী ক্ষীৰহা ক্লচা ক্লকাভা ক্লবাভৰুৎ । শিক্ষবাসা এইটাৰ্গ: কুণ্ডালার বাশিনী । আন্ত্রী । হিন্দী অধিনী ।

প্ৰধাৰ দ কানেরা, চ্ক্রিকা, দত্তপঠা. অষ্ঠা, অমুলোক্ষ্যা, তন্মক্তন, শিস্পী ও অমুপত্তক এই কান্ধি ইহার প্রধাব।

ত্ব। চাৰের অধিবৰ্ধক, ক্লচ্য, কক্ষ, উষ্ণ, বাৰ্তিয়ন নাশক, পিওজনক ও অন্ন। ইয়া গ্রহণী, অর্থঃ, কৃষ্ঠ ও অতিশার স্বোধ নিয়ন্ত্র করে। মাত্রা ৪ মাধা।

द्रिक्ती विकासनी विकासकारितृक्ती। स्वाधनी विकासनी विकासकारितृक्ती।

## भूषिना ।

রোচনী অর্থাৎ পৃদিনা অধিকর, মুখের জড়তা নাশক, কফর, বাষ্প্রাশমক, বশকারক, বমন নিবারক ও অক্লচি নাশক। মাত্রা স্থাবা।

# যোড়পোইধ্যায়.।

गम्टलक्ष्मी य वर्गः।

## क्लीन्।

সভিন্কত কৰিতে। জলবো দীৰ্যপতক।
কুপীগুঃ কুলকঃ কালভিন্ক, কালপীপুকঃ ॥
কাকেন্ বিশ্বিশুন্চ তথা মঠিট ভিন্ক:।
কুপীগু দীতলং ভিন্কু বাতলং মক্লছু ॥
পরং ব,ধাছরং প্লান্তি কফপিত'ল ন'পনন্।
মুত্র প্রবর্তনং বলাং বিক্তুং কামদীপনন্ ॥
দুলসেকাদরোগক অকনেহমপন্তিন্।
প্রহণী মভিনারক প্রদর্শা মন্তায়ন্।
স্কালক্ষ্পাং হৌজালাং ন চিত্রেণ বিনাশয়েৎ ॥
স্কাল বীজাং প্রান্তাং বাত্রিক।

## क् हिमा।

পর্যার। তিল্ক, কর্ম রীর্থপত্তক, তুপীন্, ক্লক, ভালতিক্ষ্ম কালণীন্ক, কাকেলু, বিষ্ঠিশুক ও মুক্তিক্কে।

७१। मीकन, जिल्ल, वाड्सनक,
सावक, नप् छारी, व्यक्तित वाची नामक,
कक्ष्म, त्रक्रिश श्रम्भक स्वकाहक, व्यक्षितक्रिक ६ काटमानीलक। स्वतिक्र व्यक्तिस्य, व्यक्षितमृन, लक्ष्म, व्यक्तिस्य, व्यक्ष्मात्र,
व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य, व्यक्ष्मात्र,
व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य,
व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य,
व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य, व्यक्तिस्य,
वेद्यात्र विविध श्रद्धनीत्र, माखा २ त्रवि।

#### 1 180

खमा भवा यांकुलामी वाविमी विस्ता स्वा। चन्ना सम्बद्धी जिल्हा आदिनी भावना लच्नः इ छोत्स्वामा भिल्लां त्यास मन्यान्व स्व वर्ष्ट्यी। मन्द्रमामीभनो निश्वासम्बद्धी स्वत्यासमी इ समुख्या सम्बद्धार दिन्ही क्ष्यमंज्ञास्य । सन्द्रित सस्ता वस्ती। स्वत्यान्य स्वत्र ह

#### मिकि, छार ।

ভদা, পত্রা, মাতুলানী, মাদিনী, বিজয়া
ও জলা এট গুলি লিছির নাম।
কফনাশক. ভিক্ত, গ্রহা, পাচক, লঘু,
ভীক্ত, উফা. পিত্রতারক, মে,হকারক,
মাদক, অগ্নিবছ ক, ক মেন্দ্রীপক, নি দাজনক ও হর্ষদাসক। ইহার ভারা ধনুষ্টকার,
কল্রাদ, বিস্চিকা, মদাভার ও অধিক
রজ্ঞপ্রস্তি নিবারণ হয়। ইহার ঘারা
জ্বায়র শৈবিলা, নিবারণ হওরাতে প্রদব্বাধা দ্রীভূত হয়। মাত্রা ৪ রভি।

#### मविषामक्त्री।

#### ने छ।

मित्रामश्रदी, देशा, यापिनी क दिवि । এই छल गाँखात मः क्छ नाम। टेरा जात्मन्न, वनकातक, कात्माकी नक निमाकात्रक, गर्डशाएक, विकाणी, व्यक्ता निवादक, आटक्कशनाभक 😉 माप्रका क्कृत ७ भुगान। पित्र परभन जना स्र्म-छान, वांद्राश्चाम, फाखताश्चाम, विश्विका, यशाजात, भूम, अप्रांशिख, अधियामा व्यक्तित्व ब्रद्धात्रक निवातनार्थ देश প্ররোগ করা যার। গালা হইতে এক लकात मात्र शक्तक वर्षेत्रा शास्त्र, छारात का गाम्नात्र नाम ७ गामात्र भतिराज यावद्दि कता यात्र। हत्रमञ्जालाम এक প্রকার সার, गांधाর সারের পরিষর্গে ইহাও ব্যবহার করা ষ্টান্ডে পারে। ইহার সাবের মাতা॥ বভি।

## ब्रुश्च मः।

বুকুর বুর্ব মুক্রা উন্মান্ত কলকাজর। । দেবজা কিডবজ্রী মহামোহী শিষ্টারার ॥ মাতুলো মহনশাস্য কলে মাতুলপুত্রকঃ। মুদ্ধো মহবণারা বাকক্জর সুক্রু ॥ ক্ষায়ো ব্যুদ্ধ জিজো মুকালিকা বিনাশকঃ।
উল্লেখনে প্ৰায় কৰু কৈনি বিবাশকঃ ।
বেশ্বাহরণো নিজালননো ব্যবর্জনঃ।
ন্যত্তঃ প্রলেশেন নেজভারা প্রসারণঃ।
ব্যুদ্ধশানেন খাসত্ত্ প্রশাবাভি।
ক্যা মুকশবাদিকং প্রাহাৎ, বারা ২ র্জিকা।

#### भू इवा ।

পর্যায়। ধুকুর, ধৃত্ত, ধন্তুর, উন্মন্ত, দেবতা, কিন্তব, তৃরী, মহামোহী, পিব-প্রিয়, মাতৃল ও সদন এই তলে এবং ফর্ণবাচক শব্দ সমস্ত ইহার পর্যায়। ইহার ফলকে মাতৃলপুত্রক বলে।

গুণ। মাদক, বর্ণোৎপাদক, অধিকারক, বায়ুজনক, ক্ষাস্ত্র, মধুর, ভিক্তা, উষ্ণ, গুরু, বিষ্ণা, বেদমানিবারক, নিআকর মৃত্তবদ্ধ ক। চল্ফের চতুর্দিকে ইহাস্থ প্রদেশ দিলে ক্নীনিকা প্রদারিত হয়।

প্ররোগ। জার, কুন্ঠ, শ্লেমার্দ্ধি, কণ্ডু, সৃক লিক্ষাদি ক্রেমি ও ব্রগ নস্ত করে। ইহার ধূমপানে তৎক্ষণাৎ স্থান কন্ত নিবারণ হয়। ইহার মূল প্রাদি গ্রহণীয়, মাত্রা ১ রক্তি।

## द्यालभ् ।

र्दाल् भस्त्रमः श्रान्भिक स्वानंत्रमाः मनाः । रवान् त्रस्टेवत् नीस् स्वया वीभन भाव्यम् ॥ वत्रम् स्ट्रेक्टिक्कं अवस्यम् जिर्दाव जिन् । स्वतानसात्र कृष्टेक्ट्रभ भस्तिमः विस्वव्यक्ष्यः ॥ माजा > माचसः।

#### शक्रदाल।

বোল, গন্ধরুল, প্রাণ, পিও, গোপ ও রল (এবং গোপরস) গন্ধবোলের শংস্কৃত নাম। ইবা বক্তাদোধ নাখক भी करीया, स्मरा, व्यक्तिमत्त, शाहक, सर्व, कर्डे. क्रिक, व्यक्ति व्यभक ४ क्रतावृत द्वाप वामक ४ क्रतावृत द्वाप वामक, व्यक्ति विका, व्यव. व्यश्चात ४ क्रिक द्वार्थ व्यश्चात । माजा > माना ।

# ना मिन्नः।

निविद्राम मनस्पूर्ण के प्राप्त मान्यः । रत्नाः वाद्यमानस्य स्वत्रक्षेष्ठ वाद्यवः । सना मृत्रकृष् अस्ति, स्वतः ।

## काकारकामामी है

কাকাতোদালীকে সংক্রী জাবার্য শাবিমূল, মলরজু ও অন্ধির্ক বলে। ইহা বলকারক, বাজপ্রেম নাশক, জরমু ও শীত নিবারক। ইহার মূলের স্বক্ গ্রহণীর, মাত্রা > মাধা।

## ध्नद्राणः।

धूमहास शोवहरमा कम् हा शक्ति सिहान्। युक्रणा दूमहासः गाम् जीवकः कस्मानकः । युक्रपाद्या स्टब्सा स्मानुम्हत नीवमः। याजा २ मायरको।

# क्रमियख्को।

ক্রমিক্তকীর শংকৃত নাম ধ্নরাজ, পীতরস, ভজুরা ও গন্দিনী। ইহা মূত্র কারক, সংগ্রাহী, কফদ্ব ও বলকারক। দক্তরোগ, মেহ ও প্রদর রোগে উপকারী।

## स्त्रिक्ष्णम् ।

क्रोरव (क्रञ्च्यक् स्थाक्यक्क) ह खित्रो भरा। बाह्यो कफ्नूच् रका। निजाकका दिवाहिनी ह साञ्चा रक्षा (क्षाका चानकाम खडानहान्। बर्फारक्ष्यक खान्छ। महोनाडक नानस्त्र ह बाह्य सान्हें। (महा)।

#### कारि ।

ভাষিকে সংখ্ ত ভাষ্ট রৈজ্বল ও অতল্রী বলে। ইহা অক্তঃ খণভারত, নিজা নিবারল, তলা নাশক ভারবীর বল-কর ও জড়তা নাশক ভাষ, কাল, অর, অর্জাবভেদক ও অভিশ্বর রোগে ব্যব-হের। ইহার ফাট কেন্দ্রীর, চুর্ণ ও ব্যবহার ভরা ঘাইতে প্রাকৃ

क्रिनेद्राज्यम् बीका वीवनकावरण वर्षाः क्रिनेद्राधिवन्ति नवानेद्रो व वादिनी ॥ दश्योर्नः विमृद्दीक वनः क्रिकः मुश्लेनन् । क्रानः त्यापः क्षेत्रान् वद्याप्तक्ष पद्मावन् ॥ स्वाः ज्ञानः क्षेत्रः क्षेत्रः मिलीक्ष्म् । स्टकेस्वित वनः क्षेत्रः सुरक्षात्राक्ष्म वीवटकः ॥ व्याः क्षाः वाषः वाषः नवा । अक्षिका।

## शकायति ।

লন্ধমিচিকে লংক ভ ভাষার কটুবীরা,
উজ্জলা, ভালা, ভারপজি ও আলড়া বলে
অত্যন্ত কটু বলিরা ইহাকে কটুবীরা
বলে। ইহা,অবিকারক, কফ্মুও মাহক
আলী, বিস্চিকা, পরা ক্ষান্ত, ভল্লা,
মোহ, প্রলাপ, স্বরভন্ন, ও অরোচক
রোগে প্রয়োজ্য। নাড়ীবিহীন, ক্ষাণশজি
ও ইাল্রয় শক্তি বিহীন, সম্মিণাত রোগীর
পক্ষেও ইহা বিশেষ উপভারক।
ইহার ফল প্রহণীর মাত্রা > রতি।

मखन्दनार्थाः ।

कष्ट ही।

मुजनाणि मृत्रममः कश्चिष मरस्राणिः । कर्मुक्तं ४ कस्त्रो द्ययुष्णा ६ ना स्मृणं ॥ কাম দ্রগেছিল কুলা ইনপালী দীলখন বৃদ্।
কামীর কলিল জারা করুরী ত্রিবিবা জ্বা দু
কামন্রশোদ্ভবা ঝেবা ইনপালী দথানা ভবেব।
কামীর বেশ সভুজা করুরী অববা নতা দ কর্মীর বেশ সভুজা করুরী অববা নতা দ কর্মীর বেশ সভুজা করুরী অববা নতা দ কর্মীর ক্রিকা কালোলা ভক্তবা প্রদা।
ক্রেবা ক্রিকা ক্রিকা কালোলা ভক্তবা প্রদা
ক্রেবা ক্রিকা ক্রিকা ক্রেবা ক্রিকা ক্রেবা নতা।
বিভারো মুক্রলো বলাঃ কিঞ্জিখনকরঃ আ্তা দু
নাত্রা ২ রক্তিকে।

## मृगनां छ ।

यूनमाणि, यूनमण, नवलाजिर, कछ,-तिका, कलु ही, दश्म्या धरेशन कलु-बोब गाय। कछ मी छिनलकात अक लकात कछ ती कामजारण देश्य एत, अक लकाब दन्नारम ७ व्यनब अकलकाब काश्रीत दमरण । कःमज्ञल दमनीत कष्ट्रजी कृषावर्ग, त्नशाम प्रामीत कथा ही नीम वर्ग 😘 श्रीत दिनीत कछ है। किनियर्। कामक्रदशत कछ बीहे त्लक, (मणाम दम्भीत कछ दी सदाम ७ काम्बीत दमदमन कछ ही निकृष्टे। कुछ विका करे, जिला, कार्याक, खळाळानक, श्रेक्र, मीक निया-द्रक छ . पूर्वक्यांचक । देश यातू, कर, विष्ट्राय, विभ ७ ८ नाम , निवात्र कटत । खिक्छ हेरा खाटक्म नमानक, द्वमकनक, कारमामी शक, दिका निवातक, मूख्यवर्षक यनकत्र ७ किकिए मामक। देशात्र माजा २ इकि।

# क्ष्रम् ।

পু (সি ক্লীৰে চ কপু রৈ সিভাজে। বিশ্ববাসুকা। অনসায় ক্ষাসংখ্যা হিষমাসপি সা নাড়া। কপু রিঃ নীজনো ব্যা ক্ষমুখ্যো সেখনো সমুঃ। সূত্রভিজ্যুর ভিতর কণ্যশিত বিশ্ববাশ । ছাই ভূজাস) বৈরস্য মেলো ছে বিদ্যালন ।
আক্রেপন্সনো নিজাজননো হার্মবর্জন ।
বেছনাছায়ক কামপাতি কুচ্ছ ক্রমেইছে ।
কপুরো দ্বিধঃ প্রোক্ত পকাপক প্রপদতঃ ।
পকাব কপুরতঃ প্রান্থ রপক\ প্রথবতরন্ ।
নাতা ৪ রক্তিকাঃ।

### कर्वा

পর্যায়। কপুরি, শিতাত্র, হিমবালুক, ঘনদার এই গুলি এবং চন্দ্রবাচক ও হিমবাচক শক্ষ সমস্ত ইহার প্রয়ায়।

কপূর শীতস, বলকাবক, চলের হিচকর লেখন, লল্, ত্লাদ্ধি, মধ্র হুগদ্ধ নাশক, তিন্তে, আচ্ছেপ নাশক নি দাজনক, ঘর্মাবদ্ধক, বেদনানাশক ও কামবেগ পেশমক। ইহা সেবন করিলে পিক, প্রেমা, বিষদোদ, দাহ, হুন্ধা, মুখ বৈরসা, মেদোরোগ ও শুক্রমেহ নিবা-রণ হয়। কপুর তুই প্রকার পক ও অপক। ইহার মধ্যে অপক কপুরই বিশেষ গুণকর। মাত্রা ৪ রভি।

# ठोनकश्रम्।

চীন'ক সংজ্ঞাকপুরাক্তক্স করা স্তঃ। কুঠকও ব্যিহর তথা তিকে রস্পাসায়।

## र्तिनगाकपृति।

াশনিষা কপু ও বিজ ও কছনাশক। ইহা কুঠা, কণু ও ধাম নিৰ্বিণ কৰে।

## क्क मम्।

কুল্মণ যুস্তাণ রজাণ কান্ধারণ পাতকণ বরম্। লণজোচণ পিলনভারণ বান্ধাকণ লোগিতাভিধম ঃ ফান্দার বেলজে ক্ষেত্রে কুমুমণ যন্তবেজিতং ! मुख्यादकर्वक बांहरू श्रेष्ट्राक श्रिष्ट छत्त्रवर्ष ।
वाक्तीक दार्ण मेखाल कुम्रम शालुतकरुष ।
देखको गड्युक कुम्रम मृख्यादकर्य ॥
कुम्रमणात्रमे देखे बांदर्भ कुल्यात्रम ।
क्रियर शालुत वर्ष ख्रम्रम मृख्यादकर्य ।
क्रियर शालुत वर्ष ख्रम्रम मृख्यादकर्य अव क्रस्टियर ।
क्रियर कृम्रम कृम्रम विक्रम विक्रम विक्रम विक्रम ।
क्रियर विक्रम वर्षा विक्रम विक्रम ।

# क्रम। विकी काफतान।

কাখার, বাজনীক ও পারস্দেশে কুরুম উৎপন্ন হব। অস্মধ্যে কাখার দেশে যে কুরুম জন্ম তাহা জুল সুন্দ কেশর বিশিষ্ট, ঈষৎ বক্তবর্গ ও পদ্মের ন্যার গন্ধ বিশিষ্ট এই কুন্ধুমট সর্কা-পেকা উত্তম। বাজলীক দেশীয় কুন্ধুম পাত্রবর্গ ও কেতকার ন্যায় গন্ধবিশিষ্ট ও সন্দ্র কেশর মৃক্ত ইহা মধ্যম। পারদ্য দেশীব কুন্ধের গন্ধ মধ্র ন্যায়, বর্গ ঈষৎ পাত্ ইহার কেশর সকল ছাল এই কুন্ধ নিক্ট। এই প্লেম মাত্রা স্বিভি।

কুন্ধ, প্রাার এট কুন্ধ, ঘুন্ব, কাশ্মীর, বাহলীক ও রক্ত পর্যাব।

গুণ। কট্, ল্লেগ্ধ, তিক্ত, বমন 'নবারক গুবর্ণ সম্পাদক।

স্মামরিক প্রবেগে। শিরোচর'ণ এণ, ব), বাঞ্চদায় ও জাস রোগে বিশেষ উথকার করে।

## ठक्नम्।

কীখন চন্দম নক্ষী ডড দী ইডলপ'ৰ্কঃ। গভসংরোমনগজ ভবা চক্রনু'ভিন্চ সং॥ বাংলু ভিকা করে প'তা কেচ্ছে রকা ততো নিত্ন। প্রত্বি কার্যার কার্যার চলন প্রতি পুরুষ্টে ।
চলন লীওলং ক্লম ডিক বাজারিব লয়।
আন লোব বিষয়ের ভূকা লিক্স্কুর বাহনুহ।
অস্য কাঠা প্রায়ণ, বারা ও রাজ্জাঃ।

# (शटकुम्म)।

শ্রীবণ, চন্দন, ক্লাম্মী, তৈলং নিক গদার, মলরজ ও ক্লামানুতি এই ও ল বেত চন্দনের ন মা হাছার আফাদ কিজ, কষাস, পাতর্থ, ছেদন কবিলে মরাভাগ র ক্রাই ছাই হয় উপরিভাগ ক্ষেত্র নি, ক্লাইনেত গ্রাহ্ম (সাট) ও কোঠর পাকে, দেই চন্দনই শ্রেড। শ্রন শ্রিক, রক্ষ, তিক্র, আহলাদ ক্ষনক ও লক্ষ্য ইয়া গ্রহাণ র ক্রাইন মাত্রা ও ক্লাই নিয়বণ করে। চন্দন কার্টের মাত্রা ও ক্লাইন ন

#### जा छक्।

অওক প্রবরণ সৌৰণ রালাই যেশকা তলা।
বংশিকণ ক্রিমিকা বংশি ক্রিমিকা মনাই।কম্।
অন্তক্ষা কটু ইচাণ তিকা ভিত্তাত কফপ্রা।
ক্রিমিকা রোগছা লীতবাত কফপ্রা।
ক্রিমিকাতে।
অন্তর্গ প্রবাধিক তত লোহবদ্বারি মক্ততে।
অন্তর্গ প্রবাধিক বিজ্ঞান ক্রিমিকা
আন্তর্গ প্রবাধিক নামা ক্রিমিকা।।

#### एक गएक ।

তাতক প্রাক, লোগ, মালার্গ মে গাজ, বাংশিক, বির্থিক, ক্রিমার ও সান্ধ ক এই ওপি রফা ওপের ংর্ম ব। স্পার্ক উফা, কটু, হকেন উপার্ধক, হিজা, হাজ্ম পিরজনক ও লালু। ইলা কারিবার, হল্লু রোগ, বমু কল ও শীত নিবারণ করে হয়ত শালুকই জানিক গুণাকারক, ইহা জলে ফোললে ডুবিবা যার অগুরু ছইডে নিষ্কা'নত স্নেহ অগুকর নাার গুণ বিশিষ্ট অগুরুকাটের মাত্রা ৩ রতি।

#### खावामः।

ক্রীবাসং সরজা ফাবং ক্রীনেকৌ হৃচ্ছপুপকঃ।
ক্রীবানো মধুর ঝিকা মিডোছ দ্ববাং সরঃ ॥
পিওলো বাত মুর্জাকি মর রোগ কফাপছঃ।
রক্ষোছ যেদ দে গজ) ক্রিমি কঞ্ রব প্রবৃৎ ॥
রেদনক কফোৎসারী শোণিতফ্র ডি বারলঃ।
আক্রেপছরবো মুক্তমনো জ্বনাশমঃ॥
বেদনা শমনো বলা আমবাত প্রশান্তিরং।
মাতা ১ মাখকঃ।

# हाधिन् देशमा

জীবাস, সরলজাব, লাবেষ্ট ও বৃশ্ববৃপক এই তাল ইহার প্যায়। ইহা
মধ্র, হিল্ক, লিখোফ, ক্যার, সর,
পিওজনক, ত্র্মানারক, ক্য নিঃসারক
ম্বকারক, বেদনা নিধারক ও বলকর।
ইহার স্থারা বায়, মন্তক রোগ, নেত্র
রোগ, স্বরণেশ, ক্ল, তেদ, ভূর্মি, ক্রিমি,
কণ্ড, বন, রক্তলাব, আক্ষেপ, কর ও
আমবাত প্রাথমিত হয়। মাত্রা ১ মাবা।

# छ रेलना।

কল'দ্লাচ বছলা পৃথীকা বিশুটাপি চ ক্ষেত্ৰা বৃহদেশা চ চক্ষবালা চ নিজ্ টিঃ । দুলৈলা কটুকা পাকে রলে চানলকুল্মুঃ। ক্লোলা সেল শিতাক্ত কণু খাস তৃথাপদা । কলাস বিষ বন্ধান্য শিবোকণু বৰি কাসমুৎ। জন্মা বীক্ষণ প্র শাবা ১ মাধকং।

वक् अनारेहा दिन्दी धनाहेही भूवती।

স্বএশা, বহুলা, পৃথীকা, তিপুটা, ভষৈশা, বহুদেলা, চদ্ৰবালা ও নিষ্টি এই গুলি বছ এলাইচের নাম। এই এলাইচ কটু পাকেও কটু, অগ্নিকারক, লঘু, রুক্ষা ও টকা। ইহার হারা, প্রেগা রক্তাপিত, কতু, খাদ, তৃষ্ণা লল্লাদ (গা বমি বমি করা) বিষ্দোষ, কাশ বমি, বস্তিরোগ মুবরোগ ও শিরোহরাগ নাতা স্বাধা।

## कृदेश्रन।।

সুক্ষোপকুষিকাতৃজ্ঞাকোর দাঁ দাবিড়া ক্রটি।
এলাস্ক্ষাক্ষণাক লাগাপো যুক্তভূ হং ॥
রবেডুকটুকাদী ডালঘুট বাডলরামতা।
অস্যাবীকাং এইবট্যং মাকাঃ মাককঃ।

कड़बादी अलाहेह, ह्हादे बलाहेह ।

স্থৈপ্লা, উপকুষিকা, ভুজ্ঞা, কোরদা, জাবিড়া ও বুটি এই ওলি ইহার নাম।
ইহা কটু শাতিল, লঘু ও বাষু নাশক।
ইহা দারা কফ, কাস, শাস, অর্ণান্থ মূরকৃচ্ছে বোল উপশ্মিত হয়। ইহার বাজ
গ্রহণীয়, মাত্রা ১ মাধা।

## ত্ব পত্র ।

জুক্পত্রথ বরাশ সাদ্ ভূক্প চোরবরেথিংকটন্। জুচা জযুত্রা কটুকা আপু ডিব্রুথ রক্ষকন্। পিরজা কথবাডন্ত্রা কগুনারুচি নালনন্। জন্ধি রোম বারালঃ ক্রিমি পনিস স্থাক্রং।

# रिको जन।

তুক্পত্র, বরাঙ্গ, ভৃঙ্গ, চোদ ও উৎকট এই সমত্ত তত্ত্বের নাম। ভঙ্গ শঘু উষ্ফ, কটু, স্থান্ত, ভিক্ত, ফুক্ষ ওপিত্ত-জ্বাদ। ইহা ভাষা কম্প, যারু, কণ্ডু আম, অঞ্চি, হুট্ডাগ, বাতার্শঃ, ক্রিমে, পীনস নিবারণ ও উক্তু কর হয় ।

### कुक ।

ত্বক্ৰাদীই গ্ৰড্বুক্সীয়েগা দালনিও। মতা। উলাহালনিতা বাদী ভিকা চানিল পিব হং । সুমুখ্যি অঞ্চা বৰ্ণা পুনুবোৰ ত্বাপহা।

## बाक्क हिन ।

স্থাত্তক, পাছত্তক্ ও দাক্সি চা এই ওলি দাক্স চিনির সাম । দাক্সিনি স্থাত্ত, তিতাত, স্থান্ধি, গুঞ্জেলক ও শরীনের উৎকৃষ্ট বর্ণ সাধক। ইহার হার। বায়, পিত, দ্বশোষ ও তৃষ্ণা দ্র হর।

## आकीकत्रम्।

ক্লাডীফলং জাভিকোষং দান্তীফল দিডাপি।
কাডীফলং রনে ডিক্রং ডীক্লেক্লাফং রোচনং ল্যু।
কটুকং দীপনং প্রাহি ক্র্যাং ক্লেডানিলাপ্র্যা।
নিব্ধি মুখবৈরসাং মল দৌগভা ক্লেডাঃ।
ক্রিবি কাম বনি খাস পৌষ পীনশ ক্লেডাঃ।

#### खाइकन ।

জাতিফল, জাতীকোষ ও মালতীফল এই থাল জাবফলের নাম। জাবফল তিক্ত, তীক্ষোফ, রোচক, লবু, কটু, দীপন, গ্রাহী ও প্ররণরিষ্কারক। জাবফল বাবহার করিলে বাবু শ্লেমা, মলের তুর্গন্ধ ও ক্লফবর্ণ, ক্রিমি, কাদ, বমি, স্থাদ, শেষ, পীন্দ ও জন্দোগ নিবারণ হয়।

## लवक्ष्य

लयमः (व्यक्तपूरः क्षेत्रः कः क्षेत्रम्नकः । लयमः कर्मेकः विकः वृष्ट्रस्य दिवः विवय् ॥ योशनः शोहनः त्रकः क्षणिवास्त्रीनंत्रः। ज्ञाः प्रकिः एवाशांनः शृत्रवस्त्रीवेतातः । कामः यामक विकाक क्षरः ज्ञानेति मुच्यः। याता । यामुक्कः

410 A

পর্যার। লবদ, বৈশ্রুম্ম, জীশংক্ত ও প্রপ্রাক ।

তা। ইহা কটু, তিক্তি, লঘু, চলার হিতকারক, শীতল, দীপন, শৈচেক ও রোচক।
প্রবোগ। ক্তুত্ব, শিক্তি, রক্তদোষ, তৃষ্ণা,
ব্যন, আগ্নান, শূল, কাস, বাস, হিকা ও
কার হোকে আভ উপকার করে। মাত্রা
১ মাধা।

## क्रहोमःशी।

ম্বটাখাৎসী জুকজটা মটিলা চ তপৰিনী।
মাৎসী বিক্ষা ক্ষায়া চ মেখ্যা যাবি বলপ্ৰদা।
মাছী হিমা ক্ৰিছোখান্ত দাহাপন্যার সুঠনুও।
লেপনাক্রফতাৎ হবি অর্থ চর্ম্মান্তবং গদ্ধ।
অস্যা বুল্থ গ্রহনীয়া মান্তা ২ বিক্রাং।

## कहामाःमी।

পর্যায় ৷ জ্ঞানাংশী, ভূচজাটা, জাটলা, তপস্থিনী ও মাংশী ৷

ত্যা। তিক্ত, ক্যায়, শ্বরণাকি বর্জক, বলকারক, কান্তিপ্রদ, স্বাত্ত, শাতল ত্রিদোষ ও কক্ষতা নাশক।

আমেরিক প্রবোগ। রক্তবোগ, দাংগ, অপস্থার, কুন্তী, জ্বর ভ বিবিধ দর্শ্ম রোগে বাবস্থের। মাত্রা ভারতি।

## यवायाः भी।

যুর'গছকটা বৈষ্যা সূহতিঃ লালপর্নিকা। মুরাতিক্যা বিষা বাছী লঘুটা পিতা নিলাপ্রা ঃ व्यत्रं मृष् कृषद्राष्ट्राञ्चो सूकं काम विमानिनी। माजा ७ व्रक्तिकार।

भूवामाश्मी, এकानी।

পর্যার। মুরা, গন্ধক**ী, দৈ**ছ্যা, সুরাভ ও শালপর্বিকা।

জা। তিজ, শীৰল, স্বাস্থু, **লঘু**, ও বাষ্থিত নাশক।

আমরিক এথেরাগ। জর, রক্তদোষ, কৃষ্ঠ ও কাল রোগে ব্যবচ্ছের। মারো ভরতি।

## कर्फ तः।

কর্জ রো বেধমুখাক প্রাবিতঃ কপোকং শাসী।
কর্জুরা দ্বীপনো ক্লচ্য কটুক বিজ্ঞ এব চ ॥
সুগদ্ধীঃ কটুপাকস্যাৎ কুঠালো এগ কাসমূহ।
উজোলমুঃ হরেজ্ঞাসং গুলুরাত ক্ষ ক্রিমীনু ॥
বলগতং গড়যালা মগচাং মুখলাত্য ছব।
অস্যা মুলং গ্রাহ্যং মাত্রা ও র্জিকাঃ।

পর্যায় ৷ কর্চর, বেধমুখা, জাবিছ, কল্লক ৩৪ সঠা ৷

গুণ। অগ্নিদীণক, রোচক, কটু, তিক্ত, হুগদ্ধি, উফও পদ্।

অনিষিক প্রসোগ। কুঠ, আর্শং, এপ, কান, খান, গুলা, বারু, কফ, ক্রিনি, গল-গও, গওমালা, অপচী ও মুবের জড়ভা নষ্ট করে। ইহার মূল গ্রহণীদ, মাত্রা ভরতি।

## लनामीमठी।

্ গন্দপলাদী সুগদ্ধর। ক্রয়াৎ কান্দারে প্রসিদ্ধ। ) শসিপলাদী বড়্গদা সুবঙা সভম্পিকা। গদারিকা গদ্ধবয়ু র্যন্তঃ পূর্ণলাদিকা। ভবেদ্যজপলাণী জু কথায়া গ্রাহিণী লয়া। ভিজাতিকা চ কটুকা মুজাস্থলনাশিনী। শৌর কাস রব খাস শুলহিঞ্চা গ্রহাপহা।। অস্যা মুল্প প্রহণীয়া, মাত্রা ও রক্তিকাং।

## विकी शक्तशनानी।

প্রাাষ। প্লাশীশঠা, বড্গ্রন্থা, সুব্রচা, গন্ধমূলিকা গন্ধারিকা, গন্ধবধু, বধু ও পৃথ্পলাশিকা।

জুণ। ক্যার, প্রাহী, লঘু, তিক্তন, তীক্ষ, কটু, অহুফু, মুখের মলপ্রিকার কারক ও গ্রহদোষ নাশক।

জামধিক প্রযোগ। শোপ, কাস, ত্রণ, খাস, শূল ও হিকা রোগে ব্যবস্থে। ইহার মূল গ্রহণীয়, মাত্রা ৬ রতি

# जाभेगता।

জাতীক্ষদা ত্বক্ প্রোক্তা জাতীপত্রী
ভিষণ্যইরঃ
জাতিপত্রী লয়ু, খাদুং কটুআ রুচিবর্গ কুছ।
কক্ষরাস বনিখান তৃষ্ণা ক্রিমি বিবাশনা ।
বক্তু বৈশাস্থাননী তিক্তা দৌর্ঘার্ডা।
মাত্রা ৪ রক্তিকা।

## क्षिती।

জারফলের ত্বক্কে জারিপত্রী বা ক্তবিত্রী বলে। জনিবো লবু, স্বাস্ক্, কটু, উঞ্চ, কচিকারক, বর্ণের উৎকর্ম সাধক, মুখবৈশন্য জনক, ভিক্ত ও দৌর্মদা নাশক।

প্রবোগ। ইহা কফ, শ্ব'দ, কাস, ব্যা, ক্ষা, ক্রিমি ও বিষ্দোষ নষ্ট করে। মাতা ও ব্ভিঃ

## करकामग् ।

কৰোপং বোগক প্ৰাক্ত্য তথা কোৰত্ব্য স্বৃত্যু । কৰোপং সমু ভীয়েল্ড ভিজ্ঞ হ্ৰণ্ড হট প্ৰদৃষ্ আসাংখাৰ্থতা হুল্লোই কৰোভাষয়ান্তা হুং। বাহা ৬ মৃতি।

কাঁছলা বিশ্বনীতলচিনি।
প্রাার। করেছেই কোলক ও কোষকল।
তণ। ইহা লখু জীয়া উষ্ণ, তিজ,
সদ্য, রোচক, মুবের মুগুরা নাশক ও
কফ নাশক।

আনয়িক প্রয়োগ। হুডোগ, বাত-ব্যাধি ও চক্ষুদ্রোপে বাবদ্বের। এই বাংজর মাত্রা ২ রতি।

গৰুকোকিলা গৰ্মালতী চ। বিভোগ কফছৎ ডিকা সুগৰা গৰুকোকিলা। গৰুকোকিলয়াডুলা বিজেয়া গৰুমালতী। মাত্ৰা ৪ ব্ৰক্তিকাঃ।

বোঁড়বচ ও গন্ধনাত্রা। এই সুই দেব্য, স্পিঞ্জ, কফনাশক, তিক্ত ও সুবন্ধ। মাত্রা ৪ রতি।

#### পত্ৰকম্।

পত্রত্তথালপত্রক তথা সাং পত্রন'সকন্
পত্রক্থেই কিকিওাক্টেন্ডি পিক্তিল্ লঘু 
নিহাতি কক্ষণাভাগো হলাসাক্তিপানসান্।
যাত্রা ১ বাষকা। '

### (डक्वांब।

পর্যার। পত্র, তমালপত্র ও পত্র পর্যাদ। তথা এই দ্রবা কিঞিং মধ্র, তিক্ষোফ, পিচ্ছিল ও লঘু। প্ররোগ। ইহা কল নার, অর্শা, হারাদ (গা বমি বমি বুলা), অরুচি ও পীন্দ রোগ দূর করে ই ইহার মাত্র। ১ মাবা।

# न ठाक खाँडिका ।

সভাকস্কৃত্তিক। তিকা স্বাক্তি বুলিটো হিখা সমূহ। চক্ষ্যা ক্তেদিনী স্নেয় তৃক্ত স্বস্কান্য রোগত্তৎ । অস্যা বীলং গ্রাহুং মাক্তি স্বক্তিকাং।

न ठाव के बी रिन्दी मन्त्र नाना।

তিও । বিশ্বতাকজ্বী ভিজ্ঞা, সাতু, বলকারক, শীতেল, লবু, চকুষা ও ছেদক।

প্রবোগ। ইহা শ্লেমা, ড্ফা, বস্তি-রোগ ও মুধরোগ নিবারণ করে। এই বীজের মাত্রা ওু রক্তি।

## वर्षानी।

গভদাক্তারবীর্যান্ত বীর্যাকৃৎ ককবাস্তমৎ। কণ্ডুকুঠ হয়৲ নেত্র৲ সুগজ্ব স্থেদগভনুৎ। নাত্রা ১ রক্তিকাঃ।

## वाडानी।

বাটাশী বীর্ণা কারক ও স্থান।
ইহা বার কফ কণ্ডু কুন্ঠ নেত্র গোগ, স্বেদ
ও তুর্গন্ধ নিবারণ করে। ইহা মুগনান্তির
ন্যার অংশুব পদার্থ। ইহার অভ্যক্তরশৃহ
রেণু মুগনাভির পরিবৃত্তে বাবহার করাসাইতে পারে। মার্টা ৪ বটি।

## भव्रकी निर्शामः ।

कृत्रुक्ष् बृक्ष्मः मार्थः पृत्रश्चः कृष्टेखानः । श्वी स्कर्धदुव्र विक् वीकृष्ट्याः कृष्ट्याः । सहरक्ष्यमालको यूथेकान स्मानिनाम्। नायसम्ब निकाली स्मिनारेन्स्कामः स्कः॥ याजन्ति हक्तिसाः।

## कुम्बद्धानि।

পর্যার। কুল্পুর মৃক্তর স্থান্ধ ও কুলা।

থাণ। ইহা মধ্র, ডিব্রু, ডীক্লা, কটু
ও ব্রুকর সাম্থারকক।

প্রবোগ। এই দ্রব্য দ্রর, কেল, গ্রহ, অলন্দ্রী, ম্বরোগ, কফ, বায়ু, দাহ, প্রদর ও পৈতিক গীড়া নিবারণ করে। ইহাব কোপন বৈক্যোৎপাদক। মান্ত্রা ৪ রচি

#### दम्यभाक् ।

দেবধার কাতে দারু ভরদার্মিক্সদার চ।
মন্ত্রদার ক্রান্টেলিক কিলিক সুর্ভুরুছঃ ॥
দেবধারু লগুরিকে তিকোক ক্রীপাকি চ।
বিবভাগরাম লোলাক ভলা বিকা ক্রান্ত ক্রিং ॥
প্রামের পান্স লেখ কাল কণ্যু সমীর নুং ।
মারা ১ রবিকা.

#### त्मवनाक ।

দেবদাব্য, দাক্স, ওন্দোস, উন্মাদাক্ষ, মন্ত্ৰদাক্ষ, ফাকিলিম, কিলিম ও ক্ষ্মভূক্ষহ এই গুলি দেবদাক্ষম প্ৰয়ায়।

ত্তণ। ইহা শ্যু, শ্লিম ভিক্ত ও উষ্ণ। ইহা পাকে কটুরদ বিশিষ্ট হয়।

প্ররোগ। ইহা বিষক্ষ, আগ্নাম, শোগ, আস, করা, তিরুণ, জর, রক্তদোধ, প্রমেচ, পান্য, প্রেমা, কাস, কণ্ডু ও বায় নাশ করে। দেবদাক্ত কার্টের মান্তা ৬ রক্তি।

#### जुषूक कलम्।

তুদুক্লং সৌরভঃ সৌরো বনজঃ সানুজোহছক:।
তুদুক্লং প্রথিত ছিক্ত কটুণাকেংপি তং কটু।
ক্রেভাত দীপন ভীক্ত ক্রচা লয় বিদাহি চ।
বাতলেভাক্তি কণীও শিরোক্ত গুকুতা ক্রিমীন্।
কুওঁশুলাক্রচি খাস সীহক্ত্রাবি নাশরেং।
অস্য বীক্তা প্রায় নাজা ১ নাবকঃ।

#### তৃপুরু।

পর্যার। তুছুরু, সৌরড, বনজ ও সামুজ, অন্ধক ও সৌর।

গুৰা। ইহা ভিক্ত, পাকে কটু, রক্ষ, উক্ত, অন্নিদীপক, তীক্ষ, ক্ষচিকারক, লবু ও বিদাহী।

প্ররোগ। ইহা বাতদ্রেখা, নেত্র-রোগ, কর্ণরোগ, ওঠরোগ, শিরংগাড়া, দেহের ভার, ক্রিমি, কুঠ, শূল, অরুনি, খাস, প্রীহা ও মৃত্রকুক্ত নিবরে। করে। ইহার বাজ গ্রহণায়, মাতা > মাধা।

#### नथम् ।

सर्थः राज्यस्यः राज्यस्य क्रम्भात्रस्यः ।
नथः सम्भः नथे त्यांच्याका चनुक्तित्वामिनी ॥
सर्वद्वसः श्रद्धात्र राज्यस्य चत्रक्षे स्वः ।
सण्कः ख्रामा र्वात्रक्षे चत्रक्षे स्वः ।
सण्कः ख्रामा र्वात्रक्षे चत्रक्षे स्वः ।
सण्कः ख्रामा र्वः (वीर्षक)स्थाक श्रम् श्रामा स्वः ।
स्वात्रः श्रिकः ।

नर्थो ।

পর্যার। নথ, বাজনথ, বাজির্থ চক্রকারক। নথ জুল হইলে তাহাকে নথী বলে, ইহার পর্যার হত্ন ও হট-বিলাসিনী।

উভবের ৩৭। শবু, উষ্ণ, শুক্রজনক, বর্ণ্য, স্বাহ্, স্বাহে ও পাকে কটু, গ্রহ ও অসম্প্রীনাশক। আমারিক প্ররোগ। তাণ ও বিষ্ণু পীড়া, মুখনে ক্রিয়া প্রভৃতি নিবারণ করিয়া উপকাস করে ইমাতা ২ রভি। ইহার আভ্যন্তরিক প্রয়োগ অভি অর।

## मुक्रकर ने ब्रिम्खकका।

যুষকং ন ক্রিয়াং যুক্ত করু বারিল নামকন্।
কুরবিদশ্চন খাঁটেজিলিরং ক্রেডকনেরকং।
ভারুষক গুলা চ অবি নাগরমুষকং।
বুষং কট ছিনং প্রাছিলিক দীল্যনাচনন্।
ক্রায়ং ক্লেণিভাজ জ্যাভিদার ক্রিছ হং।
আনুশবেশে যক্ষাভং যুষকং ভংগ্রনাচত।
ভারুণি যুদ্ধিভং প্রাক্রং বরং নাগরমুষকন্।
মাতা ১ নামা।

#### মুকা ও নাগর মুকা।

পর্যায়। মৃস্তক, মৃস্ত, কুঞ্বিক্স, কোর, কলেকক ও মেঘবাচক শব্দ , সমুদার ইহার পর্যায়।

ভদ্রমুপ্তার পর্যার। ভদ্রমুপ্তা, গুলা ও নাগরমুপ্তক।

গুণ। কটু, শীকল, গ্রাহী, হিক্ত, দীপক, কষায় ও পাচক।

আমরিক প্ররোগ। কমবুদ্ধি, রক্ত-পিন্ন, ত্বা, জ্বর, অভিনার ও ক্রিমি প্রভৃতি নম্ভ করে। এই ত্পের মূল গ্রহ-শার, মারো > মাযা।

মেধিকা বৰ্নেকিকা চ।

মেধিকা মেধিনি ঘেৰি ছীপনী সজপত্ৰিকা।
বোধিনী বজবীয়া চ আভি ৰ্যজ্ঞভাজবা ঃ
বজায়ী চ কাম্ম্যা মিগ্ৰপুষ্পা চ কৈয়বী।
কুমিকা বস্থপনী চ পিকজিৎ বায়ুনুৎ ছিখা ঃ
মেধিকা বাত্ৰমনী স্বেয়ন্ত্ৰী অৱনাশিনী।

क्रिक्ष्यं रोभमी इ इक्रिंग्ड श्रद्धां हो। एकः चण्ण सर्ग राज्या राज्यमाः क्रिक्ट शृष्टिकाः व्यवस्त्रातीकः श्रोवः स्वा र क्रिक्टोः

त्मथी ७ वनद्भारी।

মেথিকা, মেথিনি ক্রি, দীপনী, বছ-পত্রিকা, বোধিনী, বছনীক্র, ছাজী, গছফলা, বল্লরী, কামমন্থা, মিলুপুলা, কৈরবী, ক্ফিকা ও বছপনী ক্রি, সমুদুার মেথীর নাম।

মেণী বাস্নাশক কের্মান্দিক, জরম, কচি-প্রদ, অগ্নিনিক ও রক্তলিত প্রকোপক। বনমেণী উহা অপেকা স্বরুণ বিশিষ্ঠ ও বালীগদের পক্ষে হিত্তারক। ইহা-দের বীক গ্রহণীয়, মাত্রা ২ মাষা।

एक्रकीत, क्रक्षेत्र, कामाकाकी।

कोत्रत्यं कर्त्याकाको स्वयंत्रामिधिकोत्रसः ।
कृषकोत्रः मृगकण्य स्टेश्ट्यामृगीत त्यांगमः व
कामाकाको स्रू मृग्वते कानिका टांशमानः व
कामाकाको स्रू मृग्वते कानिका टांशमानिका ।
श्रृश्चोका क'त्रती शृश्ची शृश्चमुद्धांशम्भृक्षिका ॥
स्वत्रक्षे च कृष्यो च शृष्कोत्रस्य स्र्यांगम् विश्वक्षिक् ।
स्वत्रक्षे स्वत्रक्षे स्वत्रक्षे ।
स्वत्रक्षे श्राह्म स्वत्रक्षे ।
स्वत्रक्षे । स्वत्रक्षे ।

एक की ता, इक्षकोता करलोकी।

জীরক, জরণ, অজাজী, কণা ও দীর্ঘ জীরক এই সমুদার শুক্তকীরার পর্যায়। কফাজীব, সুগন্ধ, উন্পার শোগক এই সমস্ত কফাজীরাব পর্যায়। কলাজাজী, সুষ্বী, কালিকা, উপকালিকা, পূণীকা, কারবী, পৃথুক্ষা, উপকৃঞ্চিকা, উপকৃষ্ণী, কুঞ্চী ও রহজ্জীর এই সমুদার কলোজীর পর্যায়। তাণ। জিন প্রকার জীরাই ক্লব্য, কটু, উষ্ণ, অধিদীপক, লঘু, সংগ্রাহক, পিত্ত কারক, অরণশক্তি বর্জক, জরান্তুশোধক, জরত্র, পাচক, শুক্রবর্জক, বলকারক, ফুচিকারক, কফনাশক, চক্লুর হিত্তকর।

প্রয়োগ। বায়ুছারা উদরাগ্রান, ওব্স, বমন ও অভিসার নত্ত করে। ইহাদের বীজ গ্রহণীর, মাত্রা ২ মাধা।

मिस्लकः।

সিক্ষকৰ ভুক্তকা স্যাদ্যতো ব্যন্দেশন।
কপিতৈলক সংখ্যাতা নতা চ কপিনাগকা ।
সিক্ষকা কটুকা বাদুঃ লিখোকা ব্যক্তবিভ্
ুব্যঃ কণ্ঠাঃ ব্যক্ত অৱদাহ প্রহাপন।
দুক্যাত খারী মুক্তব্যু কণ্ট্রিনাশনা ।
মানা ও ব্তিকা।

चिनाश्रम।

। সিহ্নক, ভুরুষ্ক, মবনদেশজ, কণি-টৈল এই থালি এবং বানরবাচক শব্দ । সমস্ত ইহার গ্রায়ে।

কা। ইহা কটু, স্বাহ্ন, স্বিন্ধোফ, শুক্রল, কাজিকারক, বলকর ও কণ্ঠ শোধক।

প্রবেগন। শিলামন স্থেদ, কুঠ, কর্ম। দাহ, তাক দোষ, মৃত্যালাক, ক্ষামী, মৃত্রকজ্ ও কণু নিবাবণ করে। এই নির্গাদের মাজা ৪ রজি।

टेमटनमम् ।

ইললেয়ক লিকাপুল্পাৎ বৃক্ষৎ কালানুসাৰ্থাকৃ। ইললেয়ৎ লীজনৎ ছব্যৎ কফলিববরং করু । কঙু কুঠাক্ষরীবাহ বিষক্ষ গ্রহরক গ্রহ।

देनलक । हिन्नी खुदक्ददीन ।

প্রধার। শৈলের, শিলাপুষ্প, বৃদ্ধ ও কালামুমার্থ্যক। তাণ। শীক্তল, চন্দ্য, লবু ও কফণিত । নাশক।

আনাময়িক প্রয়োগ। কণ্ডু, কৃষ্ঠ, কামারী, দাহ, বিধ্বদোষ ও কার্ন পাঞ্চি বেংগ উপকারক।

#### ग्रम ।

महामः भीक्ष्रभः गावशा मृत्रविषाद्रमः । मत्रका मभूतस्ति का कृष्ट्रभाकरामामम् ॥ सिरकाकः कर्नकोष्टितान त्रक्षाकरः स्र छः। स्कामिनद्रस्य साहकाम गुष्टी जनाभदः॥

मन्नकाष्ठे विन्ता ननामहल।

প্যাায। সর্ম, পাতবৃক্ষ, ১৭ ফ্রডি-দারুক।

ওপ। ইহামব্ব, শিক্ত, লগু গাকে কটুও নিধ্যোঞ্চ।

পেশোগ। ইহা দ্বারা কর্গ রেণস, নেরবোগ, কফ, বাসু, কেম, দাহু, কাস, মূচ্ছেণি ও রগরেণস এবং বাক্ষস ৬ ম নিধারণ হয়।

#### नाभदक्षत ।

নাগপুষ্প ক্তোনাগং কেবলে নাগকেবলং।
চাম্পেলো নাগকি একে কবিতঃ কবিতঃ কাঞ্নাপ্তরঃ ।
নাগপুষ্প ক্বায়েক ক্তিভঃ কাঞ্নাপ চন্দ্।
কারক ভূবাবেদ ক্ষি ল্লাস নালন্ ।
দেশক কুঠ বাসপ কক্পিত বিবাশক্ষ।

#### नाशरकन्त्र ।

পর্যায়। নাগপুত্প, নাগ, কেশর, নাগকেশর, চাম্পের, নাগ, কিঞ্জত শু স্বর্ণ পর্যায়।

থা। কথার, উঞ্, কুফ, লঘুও আমণাচক। আমারি প্রবোগ। জর, কণু, তৃঞ্চা, সেন, বমন জুলান (গা বমি বমি করা) দৌর্গন্ধা, কুই নিসর্প, কফ, ণিত ও বিব-দেশে প্রভৃতিতে প্রবোগ করিলে উপকার

वार्षिशर्भ ।

প্রতিপর্বাৎ প্রশিক্ষ ক্ষাকপুত্রক প্রচন্ত্রকন্। নীলপুত্রাৎ সুগত্তপ্র ক্ষতিত তৈলপর্বকন্। প্রত্নীপর্বাৎ ডিজভীক্ষা ক্ষতিত বিশ্বপাস কর্। কক্ষতাত বিশ্বপাস কর্নের্মিকা মন্দিন্ধ।

(शटहेला किसी गाँठियन।

প্য,াব । প্রস্থিপর্ণ প্রস্থিক, কাকপুদ্ গুদ্ধেক, ন'লপুপা, স্থাৰ্ধ ও কৈলপর্ণক।

গুণ। ভিক্ত, গীক্ষ, কটু, উষ্ণ, অগ্নিদা পক ও লগু।

আমবিক প্রয়োগ । কফর্দ্ধি, বাখু র্দ্ধি, বিষ্ক্তরোগ, স্থাস ও কণ্থ প্রভৃতিতে বাবস্থেষ, ইহার তুর্গদ্ধ নাশকত। শঞি আতে।

## (श्राटनवक्य

( এতিপর্ণ সৈয়বন্ধের উষং সুগলং সে'নেযা বুনের উতিলে'কে প্রানিকন। ) স্থোবেয়কা বাহিবলৈ অঞ্জবন্ধ ক্রুবন্ কীর্নোন অকথাপি অকপুলাণ অকল্যন্ধ। স্থোবেয়কা কটু স্বান্ধু তিকা ভিত্ত বিবেশিনুধ। মেধা অঞ্জব্য ক্লচা রক্ষোত্ম অরক্ষক্ষিধ। হতি কথাকা ভূজ্বার বৌর্মন্ড তিসকালকান্।

शिकी थुरनद्र।

এই জব্য গ্রন্থিপর্ণের প্রকার ভেদ মাজ খুনের বলিয়া প্রশিদ্ধ। ইহার পর্যাহ। ছোপের বৃহি বহ, ভক্তর, কুকুর, দীর্গরোম, কুরু, ভক্তপুপা ও ভক্তর।

ত্তণ । কটু, সাতু, তিত্ত্বালিয়, ত্রিলোধ নাশক, মেধাবদ্ধ কি, অঞ্জলক, ফুচিকারক রাজ্য নাশক ও ক্রিফিনাশক।

আনহিক প্রবোগ क्षेत्रज्ञ, কৃষ্ঠ, রক্ত-দোষ, ভৃষ্ণা, দাহ, দৌগীয়া ও ভিলকালক রোবে ব্যবস্থেষ।

# Tarat I

( अक्रिम्ब देख्यत्यमः क्रावेखेत काउ

নেপাল লেপে ভগত।)

নিশাচরে ধনধ্য কিডবো প্রথমক। । রোচকে মধুর ভিকং কটু পাকেকটুর্লঘৃঃ । ভীক্ষো চন্মো ভিষে ভাষ্ঠকস্ককানিসান্। রুক্ষো জীবেদদেশে তথ্য অরুগদ্ধ বিদ রবান্ ।

## °कट्टेडेब ।

এক প্রকার গ্রন্থিপর্ণ নেপাল দেশে ক্ষতের।

প্যবাষ। নিশাস্ত্র, ধনহব, কিছব ও বনহাসক।

জা। বোচক, মধুব, তিষ্ক্র, কটু, পাকেও কটু, পথু, নিজু, স্বদ্য রাজদ ভাষ মাধক ও শেভা সম্পাদক।

আম্বিক প্রবোগ। কুষ্ঠ, কণ্ড, কদ, বাগ, তেদ, মেদোরোগ, রক্তদোগ, জর, ভুর্গদ্ধ, বিষ ও ত্রণ নম্ভ করে।

## পর টী

( भव्म गि इंडि अभिक्षः भक्षांतकी इंडि इ: खेतह एएलं मूर्वाक क्षराम् । ) भव्म गि हक्षा। कृषा करूना क्षरवी क्षमी । कडून्काशि मारम्यां कवृत्मकर्वार्तिनी ॥ नक्त भी क्षाता किका निनित्रा वर्षकृत्य । विवतनव्ही कप् कक्तिवास कृष्टेवृद ।

# शिको भगावको।

পর্যাধ। পর্ম টী, রম্ভনা, ক্ষা, জতুকা, জননী, জনী, জতুক্কা, অগ্নিসংস্পর্মী, জতুকুৎ ও চক্তবার্ত্তনা।

থা। ক্যার, ভিজেন, শীসল, বর্ণকারক ও লায়।

ত্যামরিক প্রবোগ। বিষদোষ, বান, কণ্ড, কফ, নির, রঙ-দোষ ও কুন্ত নিবারণ কবে।

#### न लिका।

নলিকা উত্তর পলে 'প্রনিকা। সুগদ্ধা প্রবাধাকৃতি হ্বরারী ইতি চ কৃতিং প্রাণকা।
নতিকা বিজ্ঞানগতা কপোড্চরণা নদী।
ধ্যন্ত্রনকেলা চ নির্যান্ত সুহিরানলী দ্ব
নালিকা শীতলা জন্মী চলুহা। কফ্পিন্ত কং ।
কৃত্যাপা বাত তুক জা কুঠ কণ্ড জ্বরাপ্রা দ্ব

#### मिका।

## - প্রবাশাকৃতি তুগন্ম অব্য।

প্রাাষ। নলিকা, বিজ্ঞানতা, ক-পোঙ্গান্তরণা, নটী, ধমনী, জন্ধনকেশী, নির্মাধ্যা, সুষিরা ও নলী।

৩রণ। শীতল, লঘু, চলের হিতকর, কফ শান্তিকর ও পির নাশক।

আম্যিক প্রয়োগ। কঠিন জন্মরী
' রোগ, বাস্ক রোগ, ড্রন্সা, রক্তবোধ, কুঠ,
কুণ্ড জনবরোগে ব্যবস্থেয়।

### व्यत्नी अभीकम् ।

## ( श्राट) विशेषम् मृतकञ्चतः। भूरवदो देखिः कारक श्रीमकम् । )

প্রশোঙ্ধীকা পৌওর্যাৎ চকুষ্যাৎ পৌওরীয়ক্ষ্। পৌওর্থাৎ যধুরং ডিক্রাৎ ক্ষায়াং ক্ষক্রলং ছিন্স । চঞুষ্যাৎ মধুরং পাকে বর্ণাৎ পিত্ত কক্ষপ্রশৃহ।

## शिकी भू जित्रा।

পর্যায। প্রণোগুরীক, প্রোগুর্ঘা, চ-কুষা ও পৌগুরীয়ক।

পর্গ। মধুর, ডিক্র, ক্ষাম, শুক্র-ক্রনক, শীক্তল, চক্রুর পক্ষে উপকাবক, পাকে মধুব, বর্ণজনক, পিত্র নাশক প্র ক্থশান্তিকর।

## कार्थ की।

( न्या को मुप्ति खरा। भोक विराध महाहरू भूतो छ स्थारक है।

ক্ষাপূক্ প্রাচ্চ বিধা বিশ্ব মারু আলো সভা লঘুং।
সমু লাখাবদুং কোটি বশক্ষা হিকেড। পি ॥
ক্ষা আছি হিমা কুমা ডিক্সা নিশ্বিল লোমনুৎ।
কৃষ্ঠ কড় বিষ ব্যক্ষ দাহাক্ষা কর্মক্ষাং ।

# গন্ধপিড়িং ৷

পর্যায়। সপ্রা, অস্ক্, প্রাহ্মণী, দেবী, মরুদ্বালা, লভা, লঘ্, সমুদ্রাভা, বধু, কেটি ও বর্ষালকায়িকা।

গ্রা। স্বাচ্, শীতল, বলকারক, ভিক্ত ও সর্বাদেষে নাশক।

আমরিক প্ররোগ। কুঠ, কণু, বিষ, স্বেদ, দাহ, রক্তগত জ্বর ও রক্তদোহে প্ররোজা।

# क्रीनटनार्थायः ।

केष्मत्रवर्गः।

नियः ।

নিখংস্যাৎ পিচুম্পা ক্রিকিচ্মপান্ট ভিক্তকঃ।
অন্তেই পারিভজন ক্রিকিচ্মপান্ট ভিতাপি ।
নিখঃ ক্রেকোকটুর্বেটি কটুপাকোহিছি বাতমুব।
অক্তয়ঃ প্রাকৃতি কার্লিজারাকটি ক্রিকিপ্রপূব।
নিখপত্র ক্রেকিচ্ছি কুঠ কার্লিস নেছনুব।
নিখপত্র ক্রিকিচ্ছি ক্রিকিক্সিভি বিষধানুব।
বিত্তম কটুপাক্ত ক্রিকিচ্ছি কুঠনুব।
নিখকস রংগ ভিক্ত পাকে ক্রুট্ডেদনম্ ।
বিশ্বন ভাষ্থ ক্রিকিচ্ছি কুট্ডেদনম্ ।
বিশ্বন ভাষ্থ ক্রিকিচ্ছি ক্রিকিচ্ছিল নিশ্বন্ধ।
বিশ্বন ভাষ্থ ক্রিকিচ্ছিল বিশ্বিকিচ্ছিল।
বিশ্বন ভাষ্থ বিশ্বনি নিশ্বন্ধ।

#### निय ।

পর্যায়। নিম্ন, পিচুমর্ম্ম, পিচুমক্ষ, তিব্রুক, অরিষ্ট, পারিভদ্র ও হিন্ধু-নির্যাদ।

ত্তা। রক্ষ, কটু, ভেদী, পাকেও কটু, অগ্নিবাত নাশক ও শ্রম শান্তি-কারক।

প্রবোগ স্থল। তৃষ্ণা, কাস, জর, সক্রচি, ক্রিমি, ত্রণ, পিজ, কফ, বমন, কুঠ, হুল্লাস ও মেহরোগ নইকরে।

নিম্বপত্ত চক্ষ্র উপকারক, ক্রিমি নাশক, পিগুনাশক, বিষয়, বায়জনক, পাকেকট্ট, আফ্রনিশক, ইহা কুঠরোগে উপকার করে।

নিষ্ফল আত্মদে ভিক্ত, পাকে কটুরদ হর। ইহা ভেদক, দিউ, উফ, লবু
এবং কুঠ, ওবা, অর্থা, ক্রিমি ও মেহ
রোগ নষ্ট করে। ইহার ত্গাদি প্রহণীর।
মাত্রা > মাবা।

### কিবাভ কিন্তঃ

A.

বিশ্বাত ডিজা কৈৱাত: কটু বিশ্ব বিশ্বাতকা। কাওডিকো নার্ব,চিকেজা তুনিছোঁ স্থাবনেনকঃ র কিরাতকোহন্যে। নৈপালা কোইউডিকো

কিরাত: সারকো ক্রফা প**্রিক্ত ডিজাকোলযুঃ ঃ** সমিপাতজর খাস কফপি**জ্বান্ত বাম্পুং।** কাম পোল তুব। কৃ**ঠ জারবৃদ্ধ ক্রিপিপ্রপুং।** বামা ১ যাবকঃ।

Fa 51

পর্যায়। কিয়াকভিক্ত, কৈরাত, কটুভিক্ত, কিরাতক, কাশতিক্ত, নার্যাতিক্ত, ভূনিয় ও রামদেশক। নেপাল দেশে একপ্রকার চিরাতা ক্ষয়ে তাহার নাম অর্কতিক্ত ও নৈপালনিয়।

তার। সারক, ক্লক, শীতস, ভিক্ত ও লঘু।
প্রয়োগ। ইহাঁ সন্ধিপাত এর, খাস,
কফ, রজপিত, দাহ, কাস, শোগ, ড্রাং,
কুই, জর, ত্রগ ও ক্রিমি মই করে।
মাত্রা > মাহা।

# क्षेत्र हो।

खण्डी यवुणेनीमायम्कीश्यूकेश्यूकेश्यक्ती ।

हिवा हिवल्ला किवीमया यख्येमेनिक ह क्षिणे ।

हिका किवला त्यामा त्यामयक्षी ह क्ष्मणे ।

हिका क्ष्मणेन वीता विम्नणा ह स्वमंत्रकी ।

खण्डी क्ष्मणेन क्ष्मणेन स्वमंत्रकी ।

खण्डी क्ष्मणेन क्ष्मणेन स्वमंत्रकी ।

त्याच्याम पुक्षणं त्याक्षणेन स्वमंत्रकी ।

त्याच्याम पुक्षणं त्याक्षणेन स्वमंत्रक लाव्यम् ।

क्षमणालुके वाजाक्षण क्षम क्ष्मणेन यमीम् यदत्र ।

श्रात्व पान कार्याम क्षम् क्षामा वालम् ॥

वादा २ वाव्यको ।

#### 如門鄉 |

गर्यातः। ७५ हो, यस्गरी, जान्छा, जान्नवन्नती, विन्ना, विन्नज्ञरा, विद्या, स्थ्वा, वर्गामनी, कोवको, कल्लिका, त्याम, त्याम-वन्नी, क्लम्बानीका, बीता, विभन्ना, ब्रमात्रनी, हत्स्वामा, वत्रका, म्लामिक त्यवनिर्मिका।

তাপ। তাড়্চী মধ্র, ভিজ্ঞা, পাকে স্বাছ্রস বিশিষ্ট, রসারন, গ্রাহক, ক্ষবার, উফা, লাঘ্, বলকারক, অধিনীপুক ও ব্রিদোধ আশক।

আময়িক প্ররোগ। আম, তৃঞ্চা, দাহ, মেহ, কাস, পাতৃতা, কামলা, কুঠ, বাত-রক্ত, জব, ক্রিমি, বমি, প্রমেহ, খাস, কাস, অর্শঃ, প্রবল হুড্রোগ ও বাধু রোগে বাবছের। মাত্রা ২ মাধা।

## অভিবিশা ৮

বিষাক্তিবিষা বিখা শৃঞ্চী প্রতিবিষায়ন।।
আফুকন্দা চোপনিবা ভতুরা খুনবল্লভা ।
বিষা সোভা কটুভিকা পাচনী ধীপনী হরেছ।
জীব্যরাভিনারার শিক্ষাস কক্ষান্দান্ ॥
অন্যা রুষ্যা প্রাশ্বং যারা ১ সাধকঃ।

# व्याक्ट्रेंट ।

পথার। বিষা, অভিবিষা, বৃদ্ধা, পৃদী, প্রতিবিষা, অস্ত্রণা, ভক্তম্পা, উপঞ্জিয়া, ভদুরা ও ঘ্নবন্নভা।

তা। আন্তইন উঞ্চ, কটু, ভিজ্ঞা, পাচক ও অৱিদীধিস্বাহক। প্রসোপ । জীবিজর, অভীযার, আম, পিতা, কাদ, কফ ও ক্রিমি নিব'রণ করে। ইহার মূল গ্রহনীর, মাত্রা ১ মায়া।

#### রে:থিভকঃ।

রোছীতকে। রোছি ককে। রোছি দাজ্যেশুক্সকং। রোছীতকঃপ্রীছ্যাতী ক্রেটা রক্ত প্রদাধনঃ। ক্ষারং শীতকং নিজো যকুদ্ রেগুড্রো সত। নেজ্রোগ প্রশাননঃ কিনিয়ো রাগনাশনঃ॥ অবা মুক্তু গুড়ব্বিয়া, নাল্য সংঘক্ষা।

প্রধার। ব্রোহাতক, লোভিত্তক, ব্রোহী ও নাড়িমপুম্পাক।

গুণ। ইহা ক্তিকারক রাক্ত বিশোধক, কথান, শাহল ও লিয়া।

প্রবোগ। প্রীহা, ষ্ক্র ত্রা, নেজ্রেগ, জিমি ও রণরোগে প্রগোভা। ইহার মূলের ত্বক্রাবহার্ঘা, মাড্রা ১ মাধা।

খেতপুষ্পা নীলপুষ্প।'অগবাজিত। চ।

व्यादकांडा चिदिन्नी माहिन्द्रकाकालहाकिडा। व्यमग्रीक्षित्व कहिर्यदेश (नील करके)। मृहृक्ति ॥ कुके गृम विदश्याय (नील उने दियालद्य। क्षयाद्य कहिरक नीटक (व्यक्त ह म्यू कि तृष्ट्यि॥ व्यस्त्या यू भर अद्योगर, स्रोता । इस्किकाः।

প্রেক্ত অপরাজিত, ও নাল অপরাতিতা।

পর্যায়। আফোনা, পিরিকনীর্ন বিহ্যুক্তা**ও অ**পরাজিকা।

তাৰ। কটু, মানগশক্তি বৰ্ষক, শীতল কঠপানিকাৰকক, দৃষ্ট প্ৰদানতা কানক, ত্ৰিদোৰ নাশক, কৰাৰ, ভিজ্ঞ, পাকে কটু, বুদ্ধিপ্ৰদ ও বিষয়। প্রবেশি কুট, শূল, আম, শোর ও ব্যবোধে প্রয়োচ্য। ইহাদের মূল গ্রহণীয় মাতা ৪ রতি (

मिक्र दाव।

মিন্ধুবারং খেডপুপাং মিন্ধুক মিন্ধুবারক।
নীলপুপা ই নিজ্ঞ কৈলালা সুবছা চ বা ।
বিন্ধুকং আ ডিছজিলা কলালং কটুকো লঘুং।
কোলো নেত্র হিছে শুল পোলামনাকভান্।
কিমি কুলকেচি জেলা জ্ঞানীলাপে ডিছণ।
বিন্ধুবার দলং জ্ঞানীতিকাল হয় হয়।
বিন্ধুবার দলং জ্ঞানীতিকাল হয় হয়।
বিন্ধুবার দলং গ্রহাতিকাল হয় হয়।
বিন্ধুবার দলং গ্রহাতিকাল হয় হয়।

#### निभिना।

নিসিকা রক্ষ হুই জাতীয়, এক প্রকার রক্ষের পূপে কোত্রণি, আপর জাতীয রক্ষের পূপে নীলবর্ণ।

প্রথম প্রকৃষি বুক্লের পর্যাধি এই সিন্ধুবার, প্রেডপুম্প, সিন্ধুক, সিন্ধুবারক।

বিভীগ প্রকাব বুমের পহারে নাল-পুত্নী, নির্মাতী, বেফালা ও সুধহা।

ওা। অরণ শক্তিপ্রদ, তিক্তা, ক্ষাব, কটু, লঘু, কেশের হিত্কর, নেত্রের উপ-কারক।

প্রাংগি। শৃন্ধ, শোগ, আম্বাত, ক্রিমি, কুট, জন্পতি ও প্রেয় ক্রেউভয় বিধ সিক্ষুবারই বাধুতেয়ে।

নিসিকা পত্র, ক্রিমি প্রভৃতি কর ও বাতপ্রেম নাশক। ইহার মূলাদি গ্রহণীয়, মাত্রা: মাধা।

#### ষ্ব'ভক্ত:।

ষবঙিকা মহাতিক। সাধিতৃত্বীপ্ৰতিনী। তিকা অরাতিসাহমী বালানা অভনা সদ। । অস্যান স্বরুগো প্রাম্থান ক্ষম্ম।

## কালমেৰ।

সবজিক্তা ও মহাতিক্তা এই তুগটী দংক্ষ লাক কালনে ব্রিল্ল বাচক। ইং কিন্তা, বলকর, তালি ক্ল'ক ও জরাতিশাব লাশক। বালকার্দর্গের জব ও উন্তরা-ময়াদি পাড়ার ইহার হাখা বিশেষ উপকার পাওরা যার। ইহার প্রবন গ্রহণীয় নালা > ভোলা।

#### D 201 4: 1

চন্দাকঃ শ্বৰ্ণাপালৈ চানেশ্যে। হেমণাপাক। দিলিপ্তপা। ভূলনোহা সুলাভ স্থালানিগাল ল বনদাপালে শীতপুল্পা। হ্যালোলা শীতলভাল। সুভনাঃ শিরেগালাক সুকুমালোভিলভালন ও চন্দাকঃ শীতলা স্থাপু কচু শ্বিক। কহায়াকঃ। বলো। বিষ্ফামিলবঃ কফাপিত প্রনাশান্য দ্বালোভালেক ও অভাগেত নিগালান্য দ্বালোহ। আসা কুল্বলোপিক বাজা মান্তল্যান্য বি

## कर्रहेशा.

চল্পক, প্রতিপুল্প, চাল্পের, হেমপুল্পক, দীপপুল্প, ভূপমেটা স্থবন্ডি, ভ্রমরেছিরি, বনদীপ, পাঁছপুল্প, •শীতলক্ষদ, স্থভাগ, ছিরগন্ধ, স্কুমার ও ক্তিগন্ধক এইওলি এবং স্কর্নিচক ঘারতীর শব্দ চাঁপার দংস্কৃত নাম। ইহা শীতল, প্রাভূ, কটু, ভিক্ত, ক্ষার, বলকারক, বিষয়, ক্রিনিনাশক ও ক্যপত্ত প্রশাসক। দাহ,

বাতরক্ত, কণ্ডু ১৪ করেরোগে প্রয়োজ্য। ইহার তৃক্ ১৪ স্বর্মাদি গ্রহণীর, তৃকের মাতা ১ মাষা, স্বর্মের ১ ডোশা।

### মহাতিকা।

ভঞ্জিক। মহাতিকারদে ডিকাপ্রিক্নী। অর্থ্য পিদ্ভদ্বল্য জেখান্মপি নাশ্লেএ ॥ অস্থান্মানা ৬ প্রতিকা:।

## নিণ্মিছিভা।

ভত্তিকা ও মহাতিকা এই তুইটী শক্ষ মিশ্মিতিকার সংস্কৃত নাম। মিশ্-মিতিকা তিক্ত, অগ্নিস্বিক, জরস, পিত্ত-নাশক, বলকর ও কফ্স। ইহার মাত্রা ল রতি।

# **देनिविः (**मार्थायः ।

কাসগ্নধর্ন:।

## विक्षेत्रकः।

বি ছাত্তক ক্রিজিল লগানাক্ষা ক্ষমতান্ত্র সং।
কাল ক্রান্ত্রাক্ষণ ক

#### वटक्षा ।

বিভাণক, বিভাতকী, অক্ষ, কৰ্মফল, কলিক্ৰম, ভুডাবাস ও কলিবুগালের এই গুলি বংগড়াব নাম। বিভাতক ক্ষাস, পাকে স্বাস্থ্য, ক্ষণিত নাশক, উষ্ণবাধ্য उराष्ट्रान्य.

ল্পাৰ্কে নীকুল, ভেষক, জাস নাপক, কল, ক্ষেত্ৰ ও চজেন হিতকানক, জিনি নাপক ও স্বৰ্গেষ নিবাৰক।

वरद्यात वन्या एका वसन, कर ७ वादू नान करत, लयु, क्यात छ मायक। आमलकीत मच्चात ७ उटे ७१ आमिर्द। देशात कल ७ करणत. मच्चा श्रद्धीत। क्षेत्रस्त्र माता २ माया,।

### शिक्षणी।

## शिश्म ।

লিপ্লনী, মাগধা, কৃষ্ণা, বৈবেকী, চপলা, কৰা, উপকৃল্যা, উম্বা, শোগী, কোলা ও ভীক্ষুত্ত লা এই সমুদার লিপ্লনীয় প্র্যাধ ।

निश्रमी खिवीशिकात्रक, वनकात्रक, शास्त्र विश्वेत्रम त्रमात्रन, डेक्स मटर, कर्टे, विश्व, वाष्ट्रसम्मानक, सब् ६ ८३५ व वाम, ভাল, উর্ক্লেরাদ, অর, কুঠ, প্রমেণ, ওব্দ, আর্বা, মীহা, আল ও আমবাত এই সর্বার মোগ নইকরে পিপুল আর্ত্র অবস্থার পিপুল আর্ত্র অবস্থার পিত্র নালক, কর্ম আবস্থার পিত্র প্রকারক, করি, লীতল, মধুর, ওক্ত ও পিত্র নালক, করি, আবস্থার পিত্র প্রকারক করিলে মেরোরণ কর এক বল, মেরা ও অরি বৃদ্ধি হর। অঞ্জুপিপ্ললী দেবন করিলে জীব্দ্দির, অরিমান্দ্য, কাল, অজীব্দিরোর উপলমিত হর। একভাব নিপ্লালী চুর্ণ ও তৃইভাগ পুরাতন ওড় দিয়া ওড়িশিরলা প্রভাত করিতে হর। পিপ্ললী ফলের মাত্রা

#### वर्षद्वाह्ना ।

স্যাছ\প্রোচনা বাংশী তুপাঞ্চীরী তুপা শুডা তুক্জীরী বংশজা শুজা বংশজীরী চ বৈন্দী ঃ বংশজা বুংছণী বুখ্যা বল্যা বাছী চ শীন্তলা। তুজ্জ কথার পিঞ্ছী পুউলে।নিত শোধিনী এ তুজা কাস অরখাস ক্ষয় পিঠাক্ত কামসাঃ। ছবেৎ কুঠা এবং পাত্র বাহনুদ্ বাতকুচ্ছ বিং ॥ অস্যা বাত্রা ড ব্রজিকা।

# वश्मरमाठन ।

পর্যার। বংশরোচনা, বাংশী, ডুণা-জীরি, ডুগা, শুভা ডুক্জীরি, বংসজা, শুভা, বংশজীরি ও বৈশবী।

ত্ত্ব । ইহা পৃষ্টি কারফ, শুক্রবদ্ধ ক,বল কারক স্বাচু, শীভল, রুক্ত, ক্যার, পিতর ও রক্তব্যোধ নিবারক। প্রবোগ। ইহা ব্যবহারে ইঞা, কাশ, জর, খাস, কব, রক্তপিত, কাশলা, কুই, ব্রণ, পাতৃ, দাহ ও বার্কী মুক্তক্ত দুর করে।

# कर्करेग्रा

পুলী কর্ম উপুলী চ স্যাৎ কুন্ধীয়বিধানিকা।
আন্তপ্ত চ বকা চ কর্মীখার চ কার্মিটার
খুলী ক্যায়া ভিকেন্ডা ক্র্যাঞ্জর আরাব।
খালোহর্ম বাত তুইকার্ম বিশ্বায়তি ম্যান্থরেৎ।
অসা: ফলং শ্রীশ্বং, মারা ২ স্থিকা।

# कीक कालकी।

পর্যায়। শৃত্বী, কর্কটশৃত্বী, কুলীরবিবাণিকা, অক্সপৃত্বী ও বক্তা ইবার পর্যায়, কাঁকড়ার যে যে নাম আছে ইহারও সেই সেই নাম জানিবে।

তাৰ। ইহাঁ কৰার, জিব্দ, উক্ত। প্ররোধ। ইহা কক, বারু, ক্ষররোগ, জ্বর, খাল, উর্দ্ধবারু, তৃষ্ণা, কাল, হিকা, অক্লচি ও বমি নিবারণ করে। ইহার ফল গ্রহ-ণীর। মাতা ১ মাখা।

# कठे कुनः ।

কট্কলং গোৰবক্ষত কৈটব্য কৃতিকাহণি চ।
জীপৰিল কৃষুণিকা ভলা ভলাবভীতি চ।
কটকলং ভবর ডিজং কটুঝাত কক্ষরামু।
ছতি খাস প্রথেমণিং কাসক্ত্বাম্যাকটী ।
ভাষা স্বৰ্গাহ্যা, যাত্রা ৬ ইজিকা

कहे क्या वा कात्रहाम ।

পর্যার । কট্ ফল, সোমবৰ, কৈটর্যা, কৃত্তিকা, জীপণীকা, কুমুধিকা, ভল্লা ও জ্লাবতী এই ওবি ইংগর নাম। थन। क्यांत्र किक ७ करें।

व्यत्त्रान । देश पात्रा गाउटेप्रशिक स्रत, भाग, व्यत्यर, कर्णः, कान, कश्रेटतान ७ कार्याठ मडे द्वत्र श्रेक् श्रद्ध-वीय, माजा ७ त्रष्टि ।

## काती ।

ভাগী ভ্ৰতৰা পলা কন্ত্ৰী ব্ৰ ক্ষমৰ্থিক। ব্ৰাক্ষৰ) দাৰবলী চ বাংলাকা চ ব্ৰিকা। চ ভাগী ক্ৰকা কটু বিকা ক্ৰচেন্ত। পাচনী লয়ুং। দ্বীপনী ভূৱেন্ত্ৰী ব্ৰক্ষাৰ পালবেদ্ গুন্তৰ বিশোধ কান ক্ষম্বাল পালস ক্ষমনাক্ষতান্। মাৰা ১ মাৰক।

## वायुनदानि ।

পর্যার ভোগী, ভৃতভ্যা, পন্মা, ফ্রান্ট্রান্ধবয়টিকা, ত্রাহ্মণী, অঞ্চারবল্লী, বরশাক্ত ভ হতিকা।

ত্তা। ইহা রক্ষ, কটু, বিজ্ঞা, রোচক, উক্ষ, পাচক, লঘু, অমিদীপীকর ভ ক্ষার।

প্ররোগ। ইহা সেবনে এক্ত গুলা, শোধ, কান, কুফ, খান, শীনন, জর ও বায় উপশ্মিত হয়। ইহার সমস্ত জংশ্ব প্রহণীব, মাতা ১ মাখা।

#### वागकः।

বাসকো বাসিকা বাসা বিষধ্যাত। চ কৈংকিনা ।
কিংবাস্যে বাজিদ্বস্যা ঘাটক্ষোইউক্তৰতঃ ছ
অটক্ৰয়ে বৃষধান্তঃ কিংবপৰিক সন্মৃতঃ ।
বাসকো বাউকুং থাটা কক্ষপিভাল নাল্লঃ ও
বিজ্ঞুবরকো ভ্ৰো কছু পভিভূক্জিন ।
বাসকাল অৱজ্জি নেহকুঠ জন্মাপ্ত ও
আসু মুলজুৰ্ গ্ৰাহ্ম, নাত্ৰা ১ মাহকঃ।

## দ্ৰব্যস্থানম

#### वामक।

পর্যায়। বাদক, বাদিকা, বাদা, ভিষত্যাতা, দিংহিকা, দিংহাদা, বাজি-দক্ত, আটক্লয়, অটক্লয়ক, অটক্লয়, বুয়, তাম ও দিংহপুর্ব।

ওপ। বারুকারক, স্বর শোধক, তিত্ত, ক্ষার, হৃদ্যে, লঘু ও শীতল।

প্ররোগ। কফর্দ্ধি, রক্তণিত্ব, ভৃষ্ণা রোগ, খাস, কাস. জর, বমি, মেহ, কুষ্ঠ ও ক্ষররোগে বিশেষ উপকার করে। ইহার মুলের ছাল গ্রহণীয়, মাত্রা ২ মাসঃ।

## त्मधन्त्री।

মেষণালী বিষাণীল্যাভ্যেষবল্লাছণালিক।
শেষণালী রুষে ভিন্না বাতলা খাল লাগহন ।
ক্ষমা পাকে কটু জিজ এগকো কিন্পুলন্ধ।
শেষণালী কলং ভিজেৎ কুঠনেই কক প্রনুধ।
দীপন্ধ প্রথমন কলে জিমিএব বিষ্পুদ্ধ।
অস্যাহ কলং এছিং, নারা ১ নারকঃ।

त्याङ् (गन्ना ।

পর্যার। মেষশ্ঙি, বিধানী, নেষণ্ড্রী ও অভ্নশ্ থিকা।

গুণ। তিকে, বায়ুক্তনক, রুক্ষ ও পাতক কট ।

প্রয়োগ। ইহা দ্বারা খাস, কাস, তান, শ্রেমা ও নেত্রখুল নিবারিক হয়। ইহার ফল ভিক্ত, দীপন ও অংসন, ইহা দ্বারা কুষ্ঠ, মেহ, কফ, কাস, ক্রিমি, ত্রণ ও বিষ নম্ভ হয়। মাত্রা ১ মাধা।

## ज्याभनकी।

कृष्यावनकिका श्रीका निवाडावनकोडि हः। वद्यभेदा वद्यका वद्यवेदाकोष्टि हः। ভূধানী বাৰ্ত্ত ভিকা কৰার। মর্রা হিলা। পিশাসা কৃষি প্রভাজ ক্ষতত্ত্বভাপরা দু মানা ১ বাৰ্কঃ

के हे जाभना।

পর্যার। ভূমীয়ালকিকা, শিবা, ভাম-লকী, বহুপুত্রা, বহুফলা ও বহুবীর্যক্তা।

তা। বায়ুর্মানক, তিক্ত, কথায়, মধুর ও দীতল।

প্রবোগ। ইহাছার। পিপাসা, কাস রক্তপিত্ত, কক, কণ্ঠ ক্স উপাশমিত হয়। ইহার সমস্ত অংশ প্রহণায় মাত্রা ১ মাধা।

#### भागी।

শনী শক্ত ফলা তুলা : কৰছঙ্কলা বিবা।
নগলা চ তৰা, লক্ষ্মী শনীরা সাম্পিকা আতা।
শনীতিকা কটুলোত। কৰায়া বেচনী ললুং।
কফ্কাল ভ্ৰম্মান কৃষ্ঠানিং জিমিজিং অ্তা।
অন্যান্সভুগ্ঞাহ্যা, ম'এ। ১ মাৰ্কঃ।

## माहेवावना ।

প্র্যাষ। শ্মী, শক্তকুলা, তুকা, কেশহস্ত্রসা, শিবা, মম্বলা ও লগ্নী কুদ্র শ্মীকে শ্মীরা কচে।

ত্যণ। তিক্তন, কটু, লীতল, ক্ষাণ, কেচক ও লঘু। ইহার মৃলের ত্বক্ গ্রহণীর মাত্রা ১ মাধা।

#### 351 1

বচোপ্রথকা যক্ষর পোলোদী পরপ্রিকা।
কুপ্রপত্তী চ নলগা জটিলোগা চ লোদশা।
বচোগ্রমতা কটুকা ডিজে:আ বাঙি বন্দির্থ।
বিবল্পায়ান শ্লম্থী শক্ন মূত্রবিশোধিনী।
অপস্থার ককোন্মায় ভ্তমণ্ড নিলান্ বরেং।

रह।

পর্যায়। বচা, উত্রাক্ত্রী, বড়্গ্রমা, গোলোমী, শতপর্কিকা, ক্ষুম্বলত্ত্রী, মঙ্গলা, জটিলা, উগ্রা ও লোমশুরী

থ্যপ। ইহা উন্ত্ৰীপদ্ধ বিশিষ্ট, কটু, ভিক্তা, উষ্ণা, বমনকাৰক ও অগ্নিবন্ধক।

ভামবিক পেটেয়ান। বিবন্ধ (মলা দির বন্ধ ), আগনে পেটকাপা, কফজনা উন্মাদ, অপস্থাব ৩ **শূলরো**গ নষ্টকরে। বচ সেবনে মলম্ম বিশুদ্ধ ও ভূতাদি হর দুরীকুত।

भावमीक दर्भ।

পারদীকবচা স্বক্লা প্রোক্ষা হেমবডীভি দা। হেমবড়াহিভা তত্ত্বভাত৲ ছভি বিশেষতঃ ॥

भूदीमानी वह ।

ব্বাদানী বচ শুকুবর্ণ, ইহার অপর নাম হৈমবনী। বেগরাদানী বচ দামান। বচের ন্যার তাপ বি'শক্ত বিশেষ ইছা বায়ুনাশক।

### 型川帯パー1

বস্পোকে ক্লিএন ইতি নাগাছরন্।
সুমনা পুল্লমনা চ তিলেন'ং ককক'ডনুং চ
সুমর ভুক্তী রুচ্যা ছংকও মুখলোগিনী চ
সুন্য হিং মন্যালোকে মহাত্রী ইতিনান।
মুন্য হিং সুগল্পানাং ডডেট্টোন রুণাক্তা চ
স্কান্য মাত্রা ১ নামকঃ।

## गरानवदी वह ।

লচর চর এই মহাব্ররী বচট প্রচলিত ইছার অপর নাম কুলিঞ্কন। মহাব্যরী বচ স্থান, উপ্রথান, কফনাশক কাসরোগে উপকারক, রোচক। ইহা কর্প্রেক রতা কারক এবং হৃদ্ধ, কণ্ঠ ও মুখ নির্ম্মল করে। সর্ক্যপ্রকার বচের মাত্রা ১ মাধক:।

## क्षेय_।

কৃঠয়েগাজয়দাপ্য পারিতব_{ুষ্ট}থেথিপলম্। কৃঠমুক্ত কটুয়াদু অক্লসং ডিজকং লয় ॥ ছতিবাতাক্র বাদর্প কাস কৃঠ মরুৎককান্।

#### कुष् ।

কুঠবোগের নাম কুড় বুঝাষ, ইহার জান্যনা নাম ব'পা, পরিভব্য ও উৎপশ।

দাণ। ইহা উষণ, কটু, স্বান্ধ্য, পত্ৰ-জনক, ভিক্ত ও লঘু।

প্ররোগ। ইহা বাতরক্ত বীসর্প,কাস, কুষ্ঠ, বায়ু ও কফ নষ্টকরে।

# क्षे : १ न श्वद्रम्मम् ।

উক্ত পৃষ্ণর মুগন্ধ পৌজর পৃষ্ণর ক ভং ।
পদাপত ক কামানৈ কুলকের নিমা করা ।
পে কর শেকুকি বিক মুক্ত বাত ককজানান্।
ভবি পোলাক চি মান বিপোলাং পার্ম স্বালন্থ ।
অন্যেমুলি গাছ / মাত্রা ৮ বক্তিক।

পুষর মূল ( এক প্রকার কৃত্ )

পৃদ্রমূল, পৌছর, পৃদ্ধ, পদ্মণত ও কাশ্মীর এই গুলি ইহার পর্যার ।

राग । हेदा क हूं भावित्वता

পর্যার। ইলা বান্ত দ্রৈমিক জ্ঞার, লোপ, অক্লচি, খাসরোগ নষ্ট করে, বিশে-যতঃ পার্যপুল রোগে অভিশার উপকার করে। মাত্রা পর্যাত। भागित्री।
स्मानि विविधिक्तापर्गितन्ते सिवापूरक।
स्मानित्रिक्तापर्गितन्ते सिवापूरक।
स्मानित्रिक्तापर्गितन्ते सिवापूरक।
स्मानित्रिक्ताप्रमित्रिक्ताप्रमित्रे ।
स्मानित्रिक्ताप्रमित्रिक्ताप्रमित्रे ।
स्मानित्रिक्ताप्रमित्रिक्ताप्रमित्रे ।
सिक्ति।

511

শ্লেমারি, বুর রিভিদ্, শাামণণী ও অফল্রী এই ২. ব 'চা'র সংস্কৃত নাম।
ইহার পত্র কফর, স্বেদজনক, বলবর্দ্ধক,
প্রভিশ্যাব নিবাবক, জরর, কামোদ্দাপক,
কাসনিবারক, অমিনীপক, ও শরীবের
জড়ভানাশক। ইতার ফাটে চিনির
সহিত দেবনীর।

# कानी भग्।

ভালীশ মুক্তৎ পরাচ্যৎ বার্ত্তীর ও তথ্য তথ্। ভালীশং সমু তীজোভং খাস কাস কলানিলান্ । নিহত্যক্রি প্রস্নাম বজিনান্স জন্মসন্নান্। নারা ১ বাখকঃ।

পর্যাব। তাসীপ, পরোচ্য ও গাত্রী-পরা ।

৩০৭: পঘু, ভীক্ষ, উষ্ণ, কফ নাশক ৩৪ বায়ু নাশক।

জামরিক প্রয়োগ। অক্নচি, গুলা, আম, আরিমান্য ও ক্ষরবোণে ব্যবস্থে। জালীশ পরের মাতা ১ মাবা।

# विश्मिजिजस्माकः।

क्षृत्रवर्गः।

ठळमर्दः ।

्वंबर्णकः अनुपारका एकरञ्जा स्वरकाकरः। भूजाके जारिक्षक ष्टरका चूनके वेकाल ॥ भूजाकर्षा जम् वाष्ट्र क्रका विकासिकालवः। श्रदेशी विवाद कर्काण क्षेत्रक क्रियोज् तरवद । स्वाद्र क्षेत्रक क्ष्मित कृषे कर्क क्ष्मित्रवास्त्रात् । सन्द्रकाम क्षित्रकाम मानमा क्ष्मित व्यवस्था

हाक्या।

পর্বার। উত্তমর্ক, প্রপ্রাট, দক্ষর, মেষলোচন, পর্যাট, ঐড়গজ, চক্রে ও পুরাট।

গুণ। ইছাঁ লঘু, স্বাস্ত্ৰ, ক্লান্ত, বাভ-পিতনাশক, জন্মা, শীকল।

প্ররোগ। ইংশা কফ, খান, কুঠ, দক্র ও ক্রিমিরোগ নাশকরে। চক্রেমর্কের ফল উক্ত ও কটু এই কল কুঠ, কণ্ডু, দক্র, বিষ্টোর, বারু, ওল্ম, কান, ক্রিমি ও বান রোগে উপকারক।

### मश्मिषः।

( বকাদম ইতি কোকে।)
মহানিষঃ অ্ভোনেডা রুমানো বিবর্তিকঃ।
কেণামৃতি নিবকক কাম্বুকৈ জাব ইভালি।
মহানিখে। বিযোকত ক্রিকো রাহী ক্যায়কঃ।
ক্তণিত ত্রমান্তিকৈ ক্রানা রক্তনিখ।
প্রবেধ লাগ গুলু মানো বৃদ্ধিকা বিষমালনঃ।

## (सामानिम ।

পর্যার : মহানির, নেড), র্মাক, বিষ্টিক, কেশাষ্টি, নিয়ক, কার্মাক ও জীব।

ত্ব। দীজন, রহন, তিন্ত, আ প্রক্রার।

श्राम चन । कमिन , ज्वाम , व्याम , व्य

#### 4 961

मांधर्क विकास कियो समा स्विद्धां वर्ष ।
यव कर्मनी कवीडी कवी रवास्तरेका न ।
प्रमासनाक्ष्म कामा सकाको स्वामनिका ।
क्षणिक्ष्म व स्वीती मध्या विकास कर्मा स्वामनिका ।
विकास व स्वीती मध्या विकास कर्मा स्वामनिक्य ।
व्यामक्ष्म विवद्धान र्माद्धानाम् स्वामनिक्य ।
स्वामक्ष्म विवद्धान रमाद्धानम् ।
स्वामका विवद्धान रमाद्धानम् ।
स्वामका ।

### मिक्षा ।

পর্যার। মঞ্জিটা, বিক্ষা, জিজী, সমস্থা, কালমেদিকা, মতুকপর্ণী, ভণ্টারী, ভণ্ডী, ষোঘনবন্নী, রুমারনী, অরুণা, কালা, রক্তান্ধী, রক্তবৃষ্টিকা, ভণ্ডীতকী, গণ্ডীরী, মঞ্জান্ধ ও বস্তবৃষ্টিকা।

গুণ। মঞ্জিটা মিষ্ট, জিক্ত, ক্যায়, গুরু, ও উষ্ণ।°

প্ররোগ। ইহা ব্যবহারকরিলে খর ও বর্ণ উত্তম হর এবং বিষ্টোষ, ক্লোগ, শোগ, সোনিরোগ, চক্ষ্রোগ, কর্ণরোগ, রক্তাভিশার, কুট, রক্তদোঘ, বাস্প, রগ ও প্রমেহ রোগ উপশমিত হব। মাত্রা ১ মাধা।

#### म्दम।

হয়িতা কাঞ্চনী পীতা নিশাখ্যা ব্যৱপিনী। ক্রিপিয়ে। হল্পী বোহিৎ ক্রিয়া হউনিকালিনী। হরিয়া কটুকা ডিকা রক্ষোক্রা ক্রুপিরলুও। বর্বেনা জুগুলোহ মেহাস্ক্র পৌরপাঙ্ রবাশহা । নাজা ২ নাহকৌ।

## रविला।

द्रतिका, काकमी, शीका, रतवर्तिनी, क्रिमित्री, रनागी, त्यापिश्र्रिका, द्रवेतिमा- দিনী এই গুলি এবং রাজিবাচক পত্ত লমগু ইহার পর্যার জানিবে। হরিন্দা, ফুটু, ডিন্তু, রুক্ম, উন্ধু ও বর্ণজনক। হারদ্রা ব্যবহারে কম, শিন্ত, তক্ষের দোব, মেহ, রক্তবোধ, শোল, পাণ্ডু ও বা নষ্ট হর। মাজা ২ মাবা।

বনহরিত্রা আমুগজিহরিতা চ।

অরণ্ডলবী কক্ষা কুঠ বাডাক্স নাগনঃ।
আমগজি হরিত্রা যা সা শীডা বাঙালা দ্বভা।
পিতত্যাধুরা ডিকা সংক্ষত (বিদাশিনা।
অন্যোমাত্রা নাবকৌ।

## वनविद्या ७ जाम जाए।।

বন্ধরিজার কক্ষ কুঠ ও বাতরজ্ঞা রোনে ব্যবস্থের,। আনুগন্ধি হরিলো অর্গাং আন্দাদা দীতক, বাষ্ক্রনক, পিত নাশক, মধুর, ভিক্ত ও কণু নাশক। উত্ত-বের মারা ১ মাধা।

#### 9.照带到 |

लंका कर भेकां किया। स्वता भेका व्यव क्ष क्ष । भक्तक कर वे क्षर में क्ष र वास्त्र श्रेष्ठ । वामभ वा कि निरक्ता है कुष्ठे (संशास्त्र भिष्ठ पृथ्व । प्रक्रित को भूम स्वरूप विश्व क्ष व्या अव्य ॥ माजा १ म वा।

## श्चकार्छ।

প্রক, প্রাগন্ধি ও প্রবাচক শক্ষ দমত ইতার প্রাগ্র। প্রকাঠ ক্যার, ভিক্ত, শীতস, বার্জনক ও লঘু। ইহা বিদর্প, দাহ বিজ্ঞোট, কুঠ, ক্লেখ্য, রক্তাপিত, বমি, এব ও তৃষ্ঠী নাশকরে। ইহা বর্ত্ত- সংস্থাপক ৩৪ কুচ্য। ইহার কাঠ গ্রহণীয় মাত্রা > মাধা।

#### त्वाद्याहना ।

গোরোচনা পু যদস্যা বন্দ্যা গৌরী চ রোচনা। গোরোচনা হিমা ভিজা বন্যা মদসকাভিদা। বিষাসক্ষীপহোম্মাদ গর্জপ্রাব স্কভাত্তবং।

#### र्गाद्याह्या ।

পর্য্যার। গোরোচনা, মঙ্গল্যা, বন্ধ্যা, গৌরী ও রোচনা।

থাণ। শীতল, তিক্ত, বশ্য, মঙ্গল-জনক, কাণ্ডিকর, বিষয় ও অলঙ্গী নিবারক।

আমনিক প্রযোগ। ক্ষতাদি হইতে
অথবা গর্জনা নিবন্ধন রক্তপাত নিবারণ
করিরা উপকার করে, উন্মাদ রোগেও
ইহা ব্যবস্থেষ।

# अनव लुकम्।

অসবালুক বৈলেয়ে সুগতি ছরিবালুক্য।
অলবালুক মেলালু কপিথ পএমী রিডম্ ।
অহালু কটুকং পাকে কবায়ং শীওসং লয়।
ছত্তিকও এপজনি তৃট্ কাসায়তি জ্বান্ত।
বলাস বিছ পিছালু কুঠমুত্রগদ ক্রিমীন্।
মাত্রা ১ মাবকং।

# এসবালুক।

পর্যার। এলবালুক, ঐলের, সুগন্ধি, হরিবালুক, এলালু ও কপিথপত্ত।

গুণ। ইহা ক্যায়, শীতল, লঘু, পাকে কটু। আষ্ট্রিক প্রয়োগ। কণ্, বণ, বনি, তৃষ্ণা, কাল, ক্ষুক্তি, প্রন্তোপ, কল, বিদ, রক্তপিত, কুই, মৃত্রকৃচ্ছ ও ক্রিমি লোগে ব্যবচ্ছের। মান্ত্রা ১ মাবা।

## कुछेब्रहेम्।

( প্রজন্তনী ইভি চ ইয়ন্ত বিভূষক নালে। বৃক্ষনা স্বাক্ মুক্তাকুভিং।)

কুটগট । দাসপুর । বালেয় । পরিপোলবদ্ । প্রব গোপুর গোনর্কা কৈবর্যুক্ত নি চ । মুখাবং পোলব পুট । পুরুল্ড । স্যাভিত্রকন্ । বিত্রক । হিন । ডিক । ক্যার । কটুকাভিন্দ্ । ক্তপোলা বাসপ কুঠক ছু বিষয়াণুং । মাত্রা > মাধ্বঃ ।

क्ष्यत्रथा हिन्दी कामहीत्याथा।

( এই জব্য বিভুন্নক নামক ব্ৰক্ষের স্বক্ ইহার আকার মুস্তার ন্যায়।)

পর্যার। কুটয়ট, দাসপুর, বালের, পরিপেশব, প্লব, গোপুর, গোনদ্ধ ও কৈবর্ত্ত মুস্তক।

বিজুল্পক মুস্তার ন্যার পেলব পুট বিশিষ্ট ও ঈষৎ শুক্লবর্ণ।

গুণ। বিজ্মক শীতল, তিক্ত, কৰার, কট্, কান্তিপ্রদ, বিষয় ও কফ নাগক। আম্বিক প্রয়োগ। বীসপ্, রক্ত-পিত্ত, কুষ্ঠ ও কণ্ডু নাশকরে। মাত্রা ১ মাষা।

# क्षेदेवशी ।

কুঠবৈরী শৈলরোতী মহাগর মহীকুতঃ। বৈব্যস্তক্ষ্য: সল্যাদ্বলকুচ্চ রলারনঃ। পামা বিচ'রিকা কণ্ড নিয়োক্ষ বিপাদিকাঃ। पंकामपाकः दोषाकः क्वानि व दिल्लेकः । जन्म क्लमा पीकः चरेवनक अप्योजकः दोषानः वाजा ७ व्यक्ताः, टेक्क्ट्राः विक्ताः ।

# **डानश्भव**।

কুঠবৈরী, শৈলরোহী, মহাবদ, মহীক্লছ ও বৈবস্বতক্রম এই গুলি চালমূর্যার
লংক্ত নাম। ইহা বলকর ও রসাবন।
পামা, বিচর্চিকা, কণ্ডু, দিখ্য, উদর্জ, বিপাদিকা, আমবাত, বাতরক্ত ও কুঠবোরে
প্রয়োজ্য। কুঠবোরে কিছু কাল ব্যাপিনা
ব্যবহার করিলে ইহার হার। যথেই উপকার দর্শে।

ইহার ফলের বীক্ষ ও উহার তৈল ব্যবহার্য। বীজের মাত্রা ৬ রতি, জৈলের ৪ বিন্দু।

## ेखाश्रमः ।

व्यवदानां मञ्ज्यमानीं माथ की है।शिम्हां त्र मुक्ता । मञ्ज्यमानी सदब्रम् मञ्ज्ञभाषां कव् विष्टर्वकाः ॥

## मामम्बन ।

मानमर्फनरक मश्कृष्ट छाषान मनम, मुक्तमर्की, कीठांति ७ व्यक्ष्युम्मत वटन। देशांत क्षारनराम मुक्त, शामा, कणू ७ विह-र्तिका त्राच महेरत्र।

## খেত্ৰক গ্ৰা।

त्यस्थायको (श्राका क्ष्मण विभि मान्स। । इसमा कारुविक मार कीवन वे व इस्कि। । कार्याची कारुवीत् मान्स्य कार्यस्ति । स्था च्यस्य स्वर्णाः मार्थ यात्रिक व्यव्यान्यम् ॥ वृथत्वाय श्रमणाः पृष्ठा महिनान्यम् । स्मा च्या स्वर्णाः वृथाः यस्यान्यम् । स्मि स्वर्णाः स्वर्णाः स्वर्णाः ।

## त्यक्र ७ नानक्र।

খেছওঞ্জার পর্যার। বটা ও ক্ষণা। পোহিত ওঞ্জার পর্যার। কাকচিঞ্চী, কাকমতী, রক্তিকা, কাকাদনী, কাকপীপু ও কাকবল্লরী।

তা। ছই জাজীয় গুঞ্জাই কেশের হিতকারক, বশকারক ও গুক্ত জনক।

প্ররোগ। বাতপিত্ত কর, মুধপোষ, জমরোগ, খাল তৃষ্ণা, মদরোগ, চক্ষ্রোগ, কঞু, ত্রণ, ক্রিমি ও ইক্রলুগু (ট্রাক) রোগে গুঞ্জাছর বাবছের।

### খেতবক করবীর।

করবীরং খেতপুল্পাং খেতক্ভোহখনারস্ক। দ্বিতীয়ো রক্তপুল্পান্ধ চবাতোলগুল্পথা । করবীর দ্বাং ডিকাং ক্যায়ং কটুকণ্ডতং। ত্রণলাঘর ক্ষেত্র কোপ কুঠত্রণাপ্তম্। বীর্থোভাং ক্রিম কর্ত্বং ভাক্তিং বিষয়াতম্।

त्थककर्ती । नानकत्रवी।

খেতকরবীর পর্যায়। খেতপুলা, শতকুন্ত, অখমার।

রক্তকর্বীর পর্য্যার। রক্তপুস্প, চণ্ডাভ ও লওড়।

তা। করবীর হয় ভিজ্ঞা, ক্ষায়, কটু ও উফ্লবীর্যা।

প্রয়োগছল। ব্রণ, চক্ষু পীড়া, কৃষ্ঠ-ক্ষত, ক্রিমি ও কপু প্রছতি রোগে ব্যব-হার্যা। ইহার মূপ গ্রহণীয়।

व्याणायतिक शासाटन देश विषयः कार्याकरतः। কাঞ্চনার কোথনাবে বিবাব কাঞ্চনারং কাঞ্চনকো গড়ারিং শে নপুস্পক । কোবিদারশ্চ মরিকঃ কুদ্দাকো মুগ্রপত্তক ॥ কুড়সা ভায়পুস্পাচাশাস্তক স্বস্পকেশরী। কাশনারো বিশোগ্রাহী ভুলর শ্লোপিরপুং॥ কিনিকুঠ গুদ্ধ শা গঙ্ঘালা ত্রগাপহ। কোবিদারোহ পিতন্ত্ব স্যান্তব্যে পুস্প ব্লাক্ত মুখ্

ल पकाशन ७ (न . ११ ०)

লাশক,ঞ্নের গ্রিষ। কাঞ্নার কাঞ্নক, গ্রায়ি ও শেনপুশক।

খেতকাঞ্চনো গ্রাস। ফোবিদার, মরিক, কুদাল, সুগ্মপ্রক, কুণ্ডলা, তান পুলা, অন্যস্তক ও কনকেশবা।

গুণ। কাঞ্চনার শাক্স, গাণী ক-যাস, পিত্তপ্লেল্ল নাশক, ইহা ক্রিম কুষ্ঠ গুদুভ্রংশ, গণ্ডমাপা ও ত্রশ শাক্ষিকগো।

কোরিদারত কাঞ্নাব সদৃশ গুংবি-শিষ্ট। উভ্যের ত্বক্ গ্রহাণি মান। ১ মাণা।

এই তুই বুক্ষের পূম্প লঘ্ কল ও সংগাহী, ইহা রক্তবিত্ত, পাদর, সংগ ও কাম রোগ নৃষ্টাকরে।

## बिन्न यः।

শিরীবো ভবিলে। ভঙী ভঙীরশ্য কলে বন শুকপুশ্য শুকভর মৃদুপুশ্য: শুকপ্রিয় । শিরীবো মধুরোঃনৃষ্ট শুক্ষণ ভ্ররে। লঘু । দোর শোধ বিদপন্নঃ কাদ রব বিবাপনঃ ।

পর্যাদ। শিরীষ, ভণ্ডিল, ভণ্ডা, ভ ধার, কলীজন, ভক্তপুন্দা, ভক্তক, মৃত্-পুন্দা ও ভক্তিরি এই গুলি ইছার প্ন তা। মধ্র আমুফ, ভিজ, ক্ষার লম্। ইহাছার। দোষজ শোথ, বিদর্প, কাদ, ত্রণ ও বিষ নষ্ট হর। ইহার বীজ ও মূল তুক্ প্রহণীব, মাত্রা ২ মাষা।

विद्रीधिक।।

শিরী যকা টিন্টিনিকা দুর্বকাগুশিরী বিকা। তিনোম বিবন্ধ শোহরী বারিশিরী বিকা।

कलान्यान ।

পর্যায়। শিরাদিকা, টিণ্টিরিকা, ছু-র্বলা ও অধুশিরীধিকা।

তা। দৌদত্রষ, বিষ, কুষ্ঠ ও আর্শঃ নটকরে। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীয মাত্রা সাধা।

अम् ।

শ সভ সভকেশাখকবিকা শাসসভবং। অশকব ক্ষায়ং স দ্বৰদ্বেদ কফকিমীন্। নধুবিজবি বাংধিয়া যোলিকৰ্গদান্দরেছ।

A 100 1

প্যায়। শাল, সজ্জক, অখকণিক। ও শ্ন্যায়ত্ব।

গুৰ্ব। ক্ষাষরস, ইহা এণ, স্বেদ, ক্ফ, ক্রিমি, এর, হুদ্রোগ, ব্ধরহা, যোনি-রোগ ও কর্ণবোগ নিবারণ করে। ইহার কুকু গ্রহণ য মাত্রা ২ মাধা।

उदानः।

उपानः नानवरष्टम्। पंष्ट्वरफा'छ स्थ्यूनः। कथान दृष्णः।

ইহার তাণ শালের ন্যাণ অবিকন্ত ইহা দাহ ও বিফোটক উপশ্মিত করে।

# मक्क कः। ( माल (छम )।

नर्क्यकार्यक्यं(मा)कारण पतिह भटकः। व्यक्यन्यः कर्षेश्वरुः क्यारपार्व्या नार्राश्वरिक्षः। क्यमाव् व्यक्तिकार्यस्यात्र्यस्यात्र्यस्य

### ঝাজি শাল।

পর্যায়। সজ্জকি, আজককর্ণ, শাল, ও মরিচপত্রক।

পত্রণ। ইহা কটু, ভিক্তন, কধান ও উষণ। ইহা কফ, পাণু, কর্ণরোল মেহ, কুঠ, বিষ ও এন নষ্টকরে। ইহার ত্বক্ গ্রহণীয় মাকা ২ মানা।

#### 지시카 1

শলকী গজভক্ষা চ সুবহা সুক্তা রদা। মহেরণা কৃত্রকৌ বলকী চ বহুপ্রবা। শলকী তুবরা শীতা শিলপ্রশুগাতিসার্গ্রহ। রজপত্ত এবছরী পৃত্তিক্ত সমুদ্ধিরতা।

## हिन्ही मनाहै।

পর্যাষ। শল্পকী, গ**রুভ**ক্ষ্যা, স্থবহা, স্থবভি, রুশা, মহেকুণা, কুন্দুক্কী, বল্লকা ও বহুস্রবা।

গুণ। ক্যায়, শীতশ ও পুষ্টিকারক। ইহা পিত্ত শ্লৈগ্ৰিক জ্বতীদার, রক্তপিত ও এণ নষ্টকরে। মূল স্থক গ্রহণীয় মানা ২ মাধা।

শিংশপা, (কণিল্থ-। শাসব)।
বিংশপা পিচ্ছিল। শাসা কুমা র চ নার দক্ষণলা দৈব মুনি ভিডামাতে ভ কার্টিভা ।
বিংশপা কটুকা ভিজা ক্ষারা বেষ্যারিন),
উন্ধানি বিংশন হ কিবিল ব্যক্তিনী।

#### चिला

পর্যায়। শিংশপা, পিচ্ছিলা, শ্যামা, রফ্তদার, অতক্র, কপিলা ও ভশ্মগর্ভা।

গুৰা। কটু, জিন্তা, কষাৰ, শোষ-নাশক, উদ্ধাৰ্থ্য, কফল্ল ও গ'ৰ্ভপ্ৰাৰক।

প্রবেশন। ইহা মেদোরোগ, কুই, পিতা বমি, জিন্ম, বস্তিবোগ, বন, দাহ ও রক্তদোষ নিমারণ করে। ইহার ধক্ ও প্র গ্রাই মানা ন্যাধা।

#### Blog 1

নীক্ষকঃ প ত্যাবিশ্চ পতিশালক ইণ্ডাপ।

ক্ষুকপুজা প্রিয়ক সক্ষেত্র শ্চাসন্থ কাল।

বীক্ষকঃ কও ব'সপ শ্বিত মেছ এদ্রাম্থীন্।

হ'ও শ্বোকাল্য পিতাক স্কুচ্ঃ কেপ্টো রসায়ন ঃ

## शियान। हिक्ती आमन।

পর্যায়। গ্রন্ধক, প্রাত-শালক, বন্ধুকপুম্প, প্রিয়ক, সক্ষকি ও ভাষন।

গুল। কেশ ও ওকের স্বাস্থাকর প রশাসন। ইহাক্ঠ, বাসপ্, খিন, মেহ, গুহাকিমি, শ্লোও রক্পির রোগ নট-করে। ইহার মূল ইক্ গ্রহণীয় মাত্র। মাধা।

# हेन्द्रमा ।

हैय द्वां २ व ' व ' द क्र क हा लगका मः । डेय प्रदार कुंड जुड़ा व अहत शति व किसी मृत्र इस्का: चित्र मृत्यु सिक का करेंगा करा न्।

# हेन्द्रमी दिली हैटकोडे।

পর্যায়। ইপুদ, অন্নারবৃক্ষ, তিক্তক ও তাপস দ্রুয়।

গুণ। উষণ, তিক ও পাকে কটু। ইহা কুঠ, বন, বিষ, ক্রিম, খিত্র, শুল, গ্রহ ও ভৃতাদি নষ্টকরে। ইহার মূল ত্বক্ গ্রহণীয় মাত্র। ২ মাদা।

# একবিংশতিতমোহধ্যায়.।

किभिन्ननर्भः।

विक्षाः।

## विक्ष

বিড়ম্ম, ক্রিমিয়, অন্তনাশন, তণুল, বেল্ল, অনোখা ও চিন্তুগুলা এই গুলি বিড়ম্মের নাম। বিড়ম্ম কটু, তীক্ষ্ণ, উষ্ণ, কম্ম, অগ্নি কারক, লঘু, ঈষং তিক্ত, বিষয়, ভাজি নিবারক।

আম্বিক প্রােগ। ইহা শুল আয়ান (পেটফালা), উদর বােগ, শ্রেয়া, ক্রিমি, বায়ু ও মলবদ্ধ নিবারণ করে। ইহার ফল গ্রহনীর, মাতা ২ মাধা।

## পারিভদ্রম্।

পরিক্তরো নিশ্তরক্মনার: পারিক্তান্তক:। পারিক্তরোংনিলায়র পোর্যদেশ ক্রিবিপ্রবং ৪ তংপত্রং পিন্তরোগস্থা কর্মবাধি বিনাধনম্। অসা তুর্গাধিকং গ্রান্তং, নাত্রা তুরু ৬ রক্তিকা । পত্রা বি ব্রসস্য ৪ বাহকাঃ।

शालिमामामात्र। हिन्मी कत्रहम्।

পর্যায়। পারি**ডন্ত, নিম্বতক্ষ, মন্দার** ও পাবিজাতক।

গুণ। ইহা বাবু, শ্লেমা, শোপ, মেদোবোগ ও জিমি নাশকরে, ইহার পত্র শিরোরোগ ও কর্ণ পীড়া নিবারণ করে। ইহার ত্বক্ ও স্বরস গ্রহণীর, ত্বক্ চূর্ণের মাত্রা ৬ রতি, পত্রাদির স্বরসের মাত্রা ৪ মাধা।

#### त्माभवाको ।

অবল্ওজো বাকুটা স্যাৎ সোমরালী সুপর্ণিকা।
ল ললেথা কুলফ্রা সোমাপুতিফ্রণীতি চ ।
গোমবল্লা কাগমেবা কুঠলা চ প্রকারিতা।
বাকুটা মধুরা ভিকা কটুপাকা রুমায়নী ।
বিউদ্ভত্তহিমা কুট্যা সরা লোলাল্লপিন্তন্ত্র ।
কুক্ষা হৃদ্যা শাস কুঠ মেহজর ক্রিমিপ্রন্ত্র ।
তহক্রণ পিওলং কুঠ ক্ফানিল হরং কটু।
কেশ্যা বুচ্যা বিষয়ান কাশ লোধাম পাত্রুৎ ।
অস্যা বীজং গ্রহং মাতা ১ মাষকঃ।

### গোমরাজ।

পর্যাষ। অবল্গুজী, বাকুচী, দোম-রাজী, স্থপর্নিকা, শশিলেধা, কৃষ্ণফলা, দোমা, পৃতিফলা, দোমবল্লী, কালমেয়ী ও কুষ্ঠনী।

ত্তা। ইহা মধ্র, তিক্ত, পাকে কট্, রসাযন, বিষ্টন্ত নাশক, শীতল,রে'চক, সর, শ্রেমনাশক রক্তপিত্ত নাশক, রক্ষ ও হাদ্য।

পর্যাষ। ইহা শ্বাস, কুন্ঠ, মেহ, দ্রর ও ক্রিমি নাশকরে। সোমরাজীর ফল, পিরজনক, কেশের হিতকর, ত্বকের উপকারক ও কটু। এই ফল কুঠ, কফ, বাবু, বমি, খাস, কাস. শোথ, আম ও পাভুরোগ নই কবে। ইহার বীক গ্রহণীয়, মাত্রা ১ মাযা।

#### काण्डिला

কাম্পিল কর্কশ্চত্তো রকাপে। রোচনে। হ'প চ। কাম্পিলঃ কফ্পিরাস্ত্র ক্রিন গুরে দর এব'ন ॥ ছিল রেচী কটুজ্জ্ম মেদান। ছ বিশ শানুহ। অসা মাত্রা ১ রক্তিকাঃ।

## कमलाखं दि।

কাম্পিল্ল, কর্কশ, চন্দ্র, রক্তাঙ্গ ও রোচন এই গুলি কাম্পিনের ন'ম। কাম্পিল্ল রেচক, কটু, উষ্ণ, কফনাশক ও বিষয়। ইহা রক্তণিত্ত, ত্রিমি, গুলা, উদররোগ, এর্ণ, মেহ ও অধ্যরাবোগ নষ্ট করে। ইহার মাত্রা ৬ রতি

## मर्भ की।

সপাক্ষী স,'বু গঙাপা তথা নাডাকপাপক। সপাক্ষী কটুকা তিকা সোজা ক্রিমি নিকুওন। ॥ বৃশ্চিকে: দুর সপানাৎ বিষয়ী এবরোপিনী। মাত্র। ২ রক্তিকে।

## हिका मद्रही। गाउनी।

প্র্যায়। স্পান্ধী, গঙালী ও নাড় ক-পালক।

ত্তণ। কটু, তিক্তা, উন্ন, ক্রিমির এবং বৃশ্চিকা, ইন্দুর ও সর্পের বিষ না-শক।এণে প্রযোগ করিলে এণ বনিষা যার। ইহার সর্কাংশ গ্রহণীয়, মাত্রা২ রতি।

## व्यक्तभूक्यो ।

অকণুপনী জনুবকর্মা পায়স্যা কলকাযুক। । অক্পুপনী জিমিল্লেয় যেছপিক বিকার জিৎ । মাত্রা ১ মাধকঃ।

## वड़ को कहे।

প্যাধ। অর্কপুষ্পী, ক্রেরকর্মা, প্র শস্যা ও জলক মুকা।

তা। ইহা জিমি, শ্লেমা, মেহ ও বিক্রোগ নপ্ত করে। ইহার সমস্ত অংশ গ্রহণীয়, মানা ১ মাযা।

## 明年 十

च सक ो खु 'सकन भ निता फुमती घरा व्याओं को तकूँ कि का कश्य मी देश असू॥ तिभारक नहीं का बूढ करका मय कि मि अन्। माजा - यास कः।

## हेन तका निशाना।

পর্যাস । কাথুকর্ন, গাথুকর্ন, গণিক। ও ভুনরাভবা ১ট তাশে ইহার প্যায়ে।

থ্যণ। কটু, তিক্তন, কষায়, শতিল, লঘু, ও পাকে কটু।

প্যাব। ইহার'রা মূর্রেরার ট্রের জিক পীড়া ও জিন্মি নপ্ত হয়। ইহার স্মত জাশ গুহণায়, মারো ১ মাবা।

#### 2 54141

পলাশঃ কিং নাক পাণী য'জকো রফপুষ্পকঃ।
ফারশেটো ব'তহরো হক্ষতৃষ্ণঃ সমিদ্ধঃ।
পল'শো দীপনোস্বাঃ সরোজ ত্রণার্ডাপ্তিং।
কথায়ঃ কটুকভিকঃ হিজো গুণজরোগজিং।
ভগ্নসভান ক্দোৰ গ্রহণার্গ জৈনিন হরেং।
ভগ্নসভান ক্দোৰ গ্রহণার্গ জিকং ক্যায়কম্য

বাতন ক্ষা পি গ্ৰাহ্ম ক্ষে ভিদ এ হিশ ওসম ভূড় দাক লাখন বাতন ৮০ কুছ হবং পংগ্ৰা ফলং লাখ্য মেকল 'এম বাত ককাপ্ৰম্। বিধাকে ক্ষা কেছা কুছ অন্যোগর প্রেছ । অসা এগবাড়া দিক আছি। ম'লা না'যক.।

#### 1141

পর্যায়। পলাশ, কিংশুক, এণী, সন্ফিক, রক্ষপুস্পক, ক্ষারভ্রেষ্ট, বাত্হর, রক্ষর্ফা ও সমিদ্বর।

ওপ। ক্যগিদীপিক'রচ বশকর, সব. উঞ্চ, কথা, কটু, তিজ ও গ্রিগ্ধ

গ্যায়। ইহা বৰ, জাম, গুইা দেশের বোগ, এইবা, শর্ম ও কিমি নই করে। ইহা হাবা চরস্থান সংযোজক হব।

প্ৰাশো পুজা স্বাস্থ্য, তিকা, কথাৰ, পাকে কটু বায় কিক, গাহা ও শাহিল।

ইহা থোমাক রাজপে ও, মন চচছ প্ৰয়া, দাহ, মান রাজ ও কুঠ নাশ করে। ইহার বা বা বার কি, থাকে কটু ও দক্ষ, ইহার দ্বারা বুঠ, থার ও উদববোল নিবারিত হয়।

ইহার জক্ ও বাজ শেচতি গ্রন্থ, মানা ১ মাধা। কিমিবোলে বাজই | সমদা বাৰকক হয়।

# দ্বাবিংশতিতমোহধ্যায়।

मकानी नी ।

## नन् र्भ ।

ধ্যক্ষ ধন্ধ কো গো বনুক্ষ সুভেন্ন। ধনুক্ষ ক্ষাপিতাজ কাসভানু বরো লঘু । বু হণো বলত্জক্ষ সভি চ্ছ ব্লবেশিনা। ক্ষা জুগুগ্রহণীনা, মাত্রা ১ মার্ক। श्राक्षमा द्वामा । दिन्ही श्रामिन ।

পুর্মায়। শ্রহা, ধ্তুর্হা, গোত্রহান ৪ সংহেজন।

৩3৭। কথাস, লঘু, পুষ্টিকারক, রুক্ষ, বলকারক ১৪ সংযোজক।

পর্যার। ইহার দারা শৈলিক রক্তপিত ও কাম উপশ্যিক হয়। ইহার 'ফুক্ গ্রহনীয় মালা ২ মামা।

## चार्क्क् न।

ক্ৰছে। জেনি নামা চনদী সক্ষণি কী হিছে ইং জন বীৰ পুক্ৰত ব ৰুখ ধ্বলং সাতু ॥
কি চ শীভাৰ হাদ। ক্ৰত ক্লা বি আজিং
কোনে কোন্ত হৈ তুৱে ক্ফেপিত কং ॥
কোপনে বাযুদ্ধাৰ্ম । উল্লেখ মানে। মতঃ।
অল্ নুগ্থৰনীয় মান্য ৷ মানকে।।

जङ्गुन किना त्नेश।

পর্যায়। ককুভ, আর্চ্ড্ন, নদীসর্জ্ঞ, ইন্তেক্ ন, বারবৃক্ষ, বীর ও ববল।

প্রা। শীবল, জ্বা, ক্যার, ক্র পিত্রশাক, বাগ্রোগ প্রকোপক ও ভগ্ন সন্ধায়ক।

প্রবোগ। ইহা সত, ক্ষম, বিষ, রজ-দেশ মেদ, মেহ ও এন নাই করে। ইহাব ত্বক্ এহনীয়, মাত্রা ২ মাধা।

## দাস্থিদংহাবক।

প্রবিধান ভিগা হাবী সন্ধ্রাকী সাধি শৃক্তা।
অন্দিশ্যাকঃ প্রোকো ব'গণো হরে হ'বিযুক্ ॥
উল্লঃ সরঃ ক্রিমিয়াক দুর্নাময়ো হলিবে গালিব।
ক্রুক্ বাদুলয় বৃষ্যিঃ পাচনঃ পিরলং আ্তঃ ॥
কাও৭ ভুগ্বিরহিত মন্দ্রি শৃক্তাযা
মাধার্ক্ হিল্লফক চুক্ তহর্দ্।

পশ্চিক ওবনুতত ভিচ্চা তৈলে সম্পক্ষ বটক মন্তীন বাতহারি ধ্র মাত্রা ১ মাহকঃ।

राष्ठाञ्चा। शिक्ती रुक्तगरवाति।

পর্যার। গ্রন্থিন, অভিদংহারী বজাদ্বা ও অভিশুখ্লা।

জ্ব। ইহা বাড্রেল্ল নাশক, অন্তি-সংযোগক, উষ্ণ, সর, ক্রিমিল্ল, অর্মেনা-শক, চঞ্চ বেলে উপকারক, রক্ল, স্বাচ্চ, লালু, বশকারক, ১, তক ও পিল্লেলনক। ইহার স্বক্তকেশিয়া কাণ্ডের চূর্য মধ্যা ডাইলেব আনবর্গ লাগে ব প্রয়া অন্ধ্র মাধ্যা একরে প্রেম্ব ব্যর্থা ভিল্লেকে পাক করিয়া বল্লিক প্রস্তুক্ত করিবে, এই বটক অহিশ্য বাহ্নাশক। এই শভার স্ক্রিংশ গ্রহণ বিষ্কাল্ড মান্ত্রণ মাধ্য।

#### द्राल।

রালন্ত শালনিমান নতা সংক্রেসং আতঃ।
দেবপূপো ফলপুপ কথা সংরেসক সং ॥
রালে, হিমো গুরু স্তিকে: ক্ষায়ো এাহকো ছরেং
দোনাস্ স্থেদ বাসপ জর রগ বিপাদিকার॥
গ্রহন্তগ্রাহা দুকাশ্রো শুকাতীসার নাশনঃ।
মানা ৬ ব্রিকারে।

## धूना ।

शर्यः प्रश्च वाल, भानिनिधाम, मञ्जूतिम, स्वयुत्र, मक्तमुत्र ७ मर्स्यद्रम ।

তা। ইহা শাতিশ, তার, তিক্ত, কণায় ভা গাহক।

প্রয়েগ। ইহা বাতাদি দেশ, রক্ত-দেশ, কেদ, বীদর্প, ছব, ত্রা, বিপাদিকা, ত্রহ, ভগ্নরোগ, অগ্নিদয়, শূল ও অতিসার রোলে উপকার করে। মাত্রা ও রতি।

# ত্ররোবিংশতিত্যোহ্ধ্যায়:।

ক্ষতন্ত্র বর্গঃ।

## শেতৈরতঃ।

স। তে ক্রং কাননৈরঙং শেতৈরঙোব্যক্তনং।
খেতিরও কটু ভিজে বির্যোধ্যং কফরোগনু ।
খূলবায়ুকফলংশি শুক্তপ মূল্যসাতু।
নিযাস ক্ষতভংগ্রোকো ক্রংম্য বিনাশনং॥
আনবাতক বিট্সক্ষীরাজ্ঞাপ সুদায়নন্।
নিহতি কফজংবাধি ফ্লং বানন ভেল্নন্।

#### दानटखटत्रका।

শুরা, কালনৈর ও, শুেটের ও ও বাড়থন এই প্রশি বাগতেবেশার সংখ্যক নাম।
ইহা স্টু, তিকে, উপ্রতীঘা, কলজবোগনাশক, শুল প্রশমক, বায়ু নিবারক জ কজর। ইহার মূল শুক্ত জনক এবং নির্যান (জাঠা) হলত শান্তি কারক ও প্রতীন নিবারক। আমবাত, মলবোর, ও ০ ভ কফত বোগ সমত্তে ইহা পেরো-জা। বাগতে ইকার ফল বমন কারক ও বিরেচক।

এট অধ্যাণে লিখিতব্য বিষয় পরি-শিষ্টে লিখিত হটকে।

# চতুর্বিংশতিতমোহধ্যায়: ।

भुग्गार्गः।

## প্রাম্।

বা পুণার পদান মজিনমর্বিশাং মছে। ংশকন্।
স্বস্ত্রপত্র ক্ষল শতপত্র কুশোন্মন্।
প্রেক্তর্যান্ত্রশ সার্বণ স্বস্থাক্তন্।
বিস্প্রস্কৃত্যান্ত্রীর পুক্রাছে।কুলাম চাত্র ক্রমণ শতিকা বিশ্বিদ্ধান্ত্রশ বিশ্বা তৃত্য দাছান্ত বিক্ষোট বিষ বীসর্প নাশনম্ । বিশেষতঃ সিত্র পদাং পুডরীক নিতিয়া তম্ রক্তা কোকনদাং ত্যাম নালনিনীব্যা বাত্রমু । ধবলা কনলা শাহা নসুরা রক্তিশাদ্য । ত্যাদিশান্তা ক্ষিদশাদ্য কোইপান দিক্ষ্ ।

#### श्रद्धा ।

প্র্যায়। পদ্ম, নলিন, জার্বিন্দ, মহোৎপঙ্গা, সহস্রপ্তা, কমল, শতাবতা কুশেশ্যা, প্রেক্ত্র, ভাষরস্থ, মার্মা, স্ব-দীক্ত্র, বিদপ্রস্থান, রাজীব, প্রবাধি জাত্যো কুহু এই গুলি প্রোবানাম।

ত্ব। শতিল, বণজনক, মরুব, ক্র পিত্তর ও বিষ নাশক। ত্থা, দাহ, রক্তন দোষ, বিজ্যেও ও বিশ্বপুরেগের প্রেরে কবিলে উপ্রশাস হয়। জ্বর্থা প্রেরে প্রবীক, লোহিত প্রেকে কোকন্দ ও নীল্পারকে ইক্রির কুক্তে। বের্ন্থা শাজল মসুব, কর্ন শীরিক্র ও পিত-নাশক। বক্তোৎপল ইহা সংগ্রেণা তর ত্রা বিশিষ্ট।

## लिंभी ।

মুগনাল দলোৎস্ত্রং ফলেঃ সমুদিতা পুনঃ পালিনী প্রোচ্যতে প্রতিজ বিসিন্সাদি চাসা সম্তা। পালিনী লীভগাগ্রস্থীমধুবা লগণা চাসা। পিকাস্ক্ কফন্ জক্ষা বাভবিষ্টক কারিনী। আদি শকাষ্ণিনী কম্পিনীত্যাদি।

মূল, নাল ও দল প্রভৃতি সমুদ্ধে তথে সহিছে সমগ্র প্রত্যক প্রনী, বিদিনী, নলিনী, কমলিনী ইক্যাদি কথে। প্রেনী, শীতল, ওক্ত, মধুর লবনবদ বিশিষ্ট কৃষ্ণ ও বাভবিষ্টিত কারক। ইংার দ্বারা রক্তাপিত ও কফ উপৃশমিত হয়।

## পদাস্য নবপত্রাদি।

থাগতিকা নবদলং বীল্পকোশন্ত কৰিকা।
কৈল্পক কেলার প্রোক্তো মকরন্দোরসং সাতঃ॥
গুলালা মুনালা স্যান্তনা কিস মিতি সাত্তম।
গুলকুছে ওদব্যাধি রাজুলিত বিনালানা।
গুলকুছে ওদব্যাধি রাজুলিত বিনালানা।
গুলকুছে ওদব্যাধি রাজুলিত বিনালানা।
গুল কৈলা ক্লাগা ভূজাত্র ক্লায়া মধুরা হিমা॥
গুল কৈলা ক্লাগা ভূজাত্র ক্লায়া মধুরা হিমা॥
গুল কৈলা ক্লাগা ভূজাত্র ক্লায়ো আহকোইলি সংল ক্লালা লাভলা ক্লাগা ক্লায়ো আহকোইলি সংল ক্লালা লাভলা ক্লাগা বিষ্ণাগালিত ভ্লালা দুলালা লাভলা ক্লাগানিক ক্লপ্রাম্ম।
দুল্লির স্বাদু পাকক ভ্লানালা ক্লপে ভন্তন্য॥
সংগাছি মধুর ক্লেম্পা ভ্লমপি ভন্তন্য।

#### পদ্মের নবপত্রামি।

পারের দুকন পাত্রকে সম্বর্ত্তিক।, বাজকোষকে কণিকা, কেশরকে কিঞ্জল, রসকে (মধ্কে) মকরক ও নালকে মুণাল ও বিস কহে।

দম্ভিকা ( ন্তন পত্ত ) শীত্তা, তিক্ত ও ক্ষায়, ইহার দ্বারা দাহ, তৃঞ্চা, মূনকুচ্ছু, গুহাপীড়া ও রক্তপিক উপশ-মিত হয়।

কর্ণিকা ( বীক্সকোষ ) জিব্রু, ক্ষায়, মধুর, শীতল ও লঘু, ইহা ভক্ষণ করিলে মুথ পরিষ্কৃত হয় এবং ত্রুণ, রক্তদোষ ও কফ নষ্ট হয়।

পানোর কিঞ্জক শাঁকল, রুধ্য কথার সংগ্রাহী কফাশিত এবং বিধ নাশক। ইহা দাবা ভূষণা, দাহ, রঁক্তার্শনিও শোপ উপ-শমিত হয়।

পদোর মৃণাল শীতল, রুষ্য, ওরু, দহজে জার্ব হয় না, জীর্ন হইলে স্বাচ্রদ হয়। স্তনে চুগ্নোৎপদাক, বায়ু বন্ধ ক শ্লেম জনক, সংগ্রাহী, মধুর কৃষ্ণ, পিত জনা দাহ ও রক্তদোধ নষ্ট করে। শালুকের অর্থাৎ পাভারি ম্লের গুণও ইহার ন্যায়।

#### क्म्न्य।

(थंड) कृरवग्र (क्षांक) कृगृष् रेकद्रश उद्या। कृगृष् लिख्डिल द्विका मधुत्र आदिनीडिलम् ।

त्त्ररकादशन, भँ मिश्रूष्त्र।

প্রা†র। খেতিকুবলর, কুমুদ ও কৈরব।

তা। পিছিল, স্নিন্ধ, মনুর, আফলাদ জনক ও শীতল।

## क्यु मनी।

কুমুছটা কৈর্বিকাঁ তথা ক্যুদিনীতি চা সাতুম্পাদি সাধালে ক্লঞা সমুদিতা বুধিয়া পদ্মিন্যা যে গুলাপোন্ধা কুমুদিন্যাত তথা ভাষ

মূলাদি সক্রিদ্ধ সহিত কুমুনকে রুর্ দিনীকহে ইহার প্রাায় কুম্বছা, কৈর-বিকা ৩ কুমুদিনী। ইহার গুণ প্রানার ন্যায়।

## ८मः छ।

भंडभंदी उक्रवाका कर्वका ठावरक्षता । यहांक्रमात्री भक्तामा आकाशुण्या (उन्दक्ष्णा ॥ मंडभंदी हिमा क्षणा आंक्रवी स्टब्सामधुर । एए येक्साक्षण्य वर्गा उक्ता कही ५ था ठनी ॥

## সেঁউছা :

পর্যায়। শতপত্তী, কর্মনী, কর্নিকা চাক্লকেশরা, মহাকুমারী, গন্ধান্তা, লাক্ষা-পূপা ও অভিমঞ্জা। গুণ। শীতল, হৃদ্য, গ্রাহী, শুক্র-জনক, লঘু, ত্রিদোষ নাশক, রক্ত বিশোধক, বর্ণ্য, তিক্ত, কটু ও পাচক।

## বাসপ্তা

स्मिन्यो कर्षिका रुष्ट्रेच्छः मञ्जमा नदशानिका । वामधी मीजना मण्डे जिक्ना स्मिक्तग्रास्त्रांचर ॥

न श्विका।

পর্যায়। বন্ধালা, সপ্তলা, নর্মালিকা ও বাসন্তাঃ।

প্রণ । শীসল, লঘু, জিক্ত, ত্রিদোষর ও রক্তদোষ নাশক।

# জাতা প্রভিটো।

জাতিছিলে। চ সুখনা খাসতী রাজপুরিক।। চেতিকা হন্যগঞা চ সা পীতা স্বনজাতিকা। জাতীপুগৎ ডিক্রমুকং তুসরং অগ্নদোর্য জন। শিবেনিক মুখদত তি বিষকুঠানিলাক্রজিৎ দু

लाजी बतर वर्गकाको । हिन्ही हात्मलो ।

্ন্ন্য। জাতি, জাতা, স্মনা, মালভী, রাজপুজকা, চেতিকা ও সদ্যাগন্ধা। জাতী ীত বৰ্ণ ২ইলে ইহাকে স্ব-জাতী কহে।

ক্রণ। জাদীধ্য জিজ, উক্ষ, কথার লাগ্ ও বেংগর ইতার দ্বারা মন্তক, চন্তু, মূব ও দ্বান্তর পাঁড়া, বিগজ রেংগ, কুষ্ঠ, বারু ও রক্তেশ্য নিবারিত হর।

যুদ্ধিকা স্বৰ্থাথিকা। যুদ্ধিকা গৰিকাংঠা সা পীড়া ছেমপুজ্পিকা। যুগীযুগৎ হিমৎ ডিজ্ঞাৎ কটুপাকরসং কয়। মণুর ও তুষর ছদা পিত্র কেকাভলন। এণাজ মুখনভাজি শিরোরোগ বিবাপবন্।

जुरे এবং স্বর্ণজুই।

পর্যায়। মৃথিকা, গণিকা, ও অস্বষ্ঠা। ইতা পীতবর্ণ হইলে হেমপুম্পিকা বা স্বর্ণ-মৃথিকা কহে।

তা। মৃথিকাদ্বয় শীতস, জিলা পাকে কট্রস, লগু, মধুর, কথাস, জনা, পিরুল্ল, বাতরেল্ল বদ্ধ ও বিগল। ইতার দারা বেশ, রক্তনোম, মুথ, দন্ত চল্বোল ও শিরণাড়া নিবারিত হস।

#### 5四雨。

চাংমণ্য শ্চমণকঃ প্রোক্তা ছেমণুপ্রণ চ ম জ্ভং। এডম। ফলিকা গলকেলাভি কলিডা বু'ধ । চমণকঃ কটুকভিক্তঃ ক্যাযো মনুরো ভিন্ত। বিষ ক্রিমিছর কুচ্ছ ক্ষবাভান্ত পিওজিৎ।

## हाना भूका।

পর্যায়। চাম্পের, চম্পক ও হেম-পূষ্প এই গুলি ইহার পর্যায়, ইহার কলি-কাকে গন্ধকলী কহে।

গুণ। কটু, তিন্তা, ক্ষায়, মধুব, শীতল, বিষয়, ও জ্লিমি নাশক, ইহাব ছারা বাত শৈল্পিক রক্তাপিক উপশ'মত হয়।

# বকুলঃ।

বঙ্গলো মধুগখন চিনিছকেশরক স্তথা : বকুস শুবরোংনুজ্ঞ কটুপাক রুলো গুরুঃ ॥ কফ'পত বিদ্যাল ক্রিমণ্ড গদীপ্রঃ!

#### বকুল।

পর্য্যায়। বকুল, মধুগন্ধ, সিংহ-কেশরক।

গুন। কষার অনুষ্ণ, পাকে কটু ও গুরু ইহা ব্যবহারে কফ, পিতে, বিষ, শ্বিত্র, দত্তরোগ ও ক্রিমি নষ্ট হয়।

#### निवयती।

শিবমলী প'শুপত একাঠীলোবুকো বসুং। বুকো:নৃক্তঃ কটুভিক্তঃ কফপিন্ত বিষাপত্তঃ । যোনিশূল ভূষাদাহ কুঠ শোগান্ত নাশনঃ।

#### প্রাবক।

পর্যায়। শিবমন্ত্রী, পাশুপক, একা-ষ্টাল, কুক ও বস্তু। ইহার অপব এক নাম বুফদুকুল।

প্রা। অনুষ্ণ, কটু, ভিক্ত, পিত্ত-নাশক বিষয়।

প্রযোগ। গোনিশ্ল, জয়গ, দাহ, কুঠ, শোধ ও রক্তদোধে ইহাপ্রলেজ্য।

#### कम्यः।

কদম: প্রিয়কোনীপীরুরপুপ্সো ছলিপ্রিয়:। কণ্যো মধুর: শীভো কষায়ো লবণোগ্রক: ১ দরো বিউদ্ভ কুক্তক্ষ: কফন্তন্যনিজপ্রদ:।

#### * 77 1

পর্য্যায়। কদৃষ্, প্রিয়ক, নীপ, রুক্ত-পুষ্প ও হলিপ্রিয়।

থা। মধুর, শীতল, কথার, লংগরদ বিশিষ্ট, থারু, সর, বিষ্টস্তী, রুক্ষা, কফবদ্ধ ক স্তনে দুগ্লোৎপাদক ও বায়ুজনক।

#### वार्षिको ।

শ্ৰূপদা বট্পদানন্দা বাধিকী মুক্তবছনা। বাৰ্ষিকী শীতলা লঘুট ভিক্তা দোৰত্বয়াপছা। কৰ্ণাক্ষ মুখৱোগন্ধী ভবৈজ্ঞ তদ্প্তৰ্থ কৃত্যু।

(दल ।

প্র্যায়। শ্রীপদী, ষট্পদানন্দা, বা-র্ষিকী ও মুক্তবন্ধনা।

ত্প। শীকল, লঘু, কিন্তু ও জিদে। ষ নাশক। ইহা ব্যবহারে কর্ণ চক্ষুঃ ও মুখের এবাগ দূর হয়, ইহার তৈলেরও এইরূপ ওপ জানিবে।

#### মালকা।

ম'ল্লকা মদম্ভী চ শীতভীক্লণ্ড ডুপদী। ম'লেকোন্ধা লঘুর্বা) ভিক্লা চ কটুকা হরেং । বাতশিভাস্য দগায়ায়ি কুঁঙাক্লচি বিষয়গানু।

#### মল্লিকা।

পর্য্যায়। মল্লিকা, মদয়ন্তী, শীত-ভীকু ও ভূপদী।

ত্থা। উষ্ণ, লঘু, বলকারক, কিন্তু ও কটু। ইহার দ্বারা বারু, পিত্র, মুখ-রোগ, নেত্ররোগ, কুঠ, অরুচি, বিস্ত বাং নই হয়।

#### माध्वी।

মাধবী স্যান্ত্র বাদঙী পুজুকো মনকোছপি চ। অভিমুক্তো বিমুক্তণত কামুকো অনরোৎসবঃ । মাধবী মনুৱা দীতা সদ্ধী দোধাত্রয়াপরা।

#### माववी।

পর্যার। মাধবী, বাসস্তী, পুণুক, মণ্ডক, অতিমুক্ত, বিমুক্ত, কামুক ও ভাষরেংশব। গুণ। মাধ্বী মধুর, শীতল, লঘু ও তিদোধ নাশক।

কেতক সুবৰ্ণকেছকী।

কেতকঃ সুচিকাপুজ্পী অধুকঃ ক্রক্তক্ত্বঃ।
সুবর্গকেতকী ত্বনা লয়পুজ্পা সুগলিনী ॥
কেতক: কটুক স্বাপুজয় ভিক্তঃ ক্ষাপ্তঃ।
উক্তা তিক্তবনা জ্বো চকুষ্যা হৈমকেতকী ॥

(करुकी, (कश्चाकुल।

পর্যায়। কেন্তক, স্চিকাপুন্দ, ভুযুক ও জকচন্দ্র। অপর এক জানীয় কেন্তকা আছে, ভাহাকে স্থানকৈতকা, ল্যুপুন্দ ও সুগন্ধিনা বলে।

ত্রণ। কেতকা কটু, স্বাস্থ্, তিক্ত ও কফ নাশক। স্বংকেতকী উষ্ণ, তিক্ত ও চথেয়ে হিতকর।

#### কিলিলাভঃ।

কিন্ধিরতো ছেমধোর: পীতকঃ পীতভ্রেকঃ। কিন্ধেরতো ছিমস্তিকঃ ক্যায়শ্চ হরেদসো॥ কড়পিত্ত পিপাসাত্র দাহ শোষ বমি ক্রিমীনু।

রক্তবাটা বিশেষ।

পর্যাায়। কিন্ধিরাত, হেম্বোর, প্রতিক ও প্রতিভক্ত ।

গুণ। শাঙল, তিজ, ক্ষায়, ইহার দারা, কফ, পিলু, পিপাদা, রক্তনোধ, দাহ, শোষ, বমি ও ক্রি'ম নই হয়।

## কর্ণিকরেঃ।

কৰিকারঃ পরিব্যাধঃ পাদপোৎক ইন্ডাপ। কৰিকারঃ কটু ডিড-ছবরঃ শোধনোক্যঃ । রঙনঃ সুখদঃ লোবমেয়াক্ষরণকৃষ্ঠজিৎ।

## ह्याउँ भीषान ।

পর্যায়। কর্ণিকার, পরিব্যাধ ও খাদপোৎপঙ্গ ।

গুণ। কটু, ভিজ্ঞ, কষাষ, শোধন (বিরেচক ও বমন কারক) লঘু, রঞ্জন ও সুধপ্রাদ। ইহার স্থারা, শোথ, শ্লেমা রক্তদোষ, ত্রা ও কুষ্ঠ নিবারিত হয়।

#### श्रहादेनः।

জন্নাত্যাহলাটনং প্রোক নগানাতক ইভাপি। কুরুনীকো বর্গপুষ্পং পএবোকা মহাসহং॥ জন্মটনং কথারোজং স্থিতং খালুক ভিককং।

আনলা।

वेश जोतानि जिल्म वानभूष्य नाम्य अमिक।

পর্যায়। অসাত, অসাটন, অয়াতক, কুরণ্টক, বর্ণপূষ্প ও মহাদহ।

গুণ। ক্ষায়, উদ্ধ, স্থিদ, স্থাতু ও ডিক্তা।

#### कुमः।

কৃষ্ণ কথিত। যাস্পাৎ সদাপুষ্পান্দ তথ্যাত্য । কৃষ্ণ গতিও সমু স্লেয়লিরোরগ্রিধপিতকং ॥

# कॅ म ।

পর্যায়। কুন্দ, মালা ও সদাপুন্প।
তব। শীকল ও লঘু ইহা বাবহারে
শিরোরোগ বিষ ভ শিত্ত নষ্ট হয়।

#### मुर्क्षः।

यू ठूकुंष्मः कथ्युक किञ्चकः अध्वित्कृतः। युकुकुष्मः विद्रवीको विश्वास विद्यत्रोनेनः ॥

### मुह्कम् ।

, পর্যার। মুচ্কুন্দ, ক্ষতারক্ষ, চিত্রক ও প্রতিবিষ্কৃক। ইহা শিরংপীড়া রক্ত-পিত্ত ও বিয় নম্ভ করে।

#### তিপক:।

তিলক: ক্রক: জীমান্ সূপ্রভ্তপুশ্পক:। তিলক: কটুক: পাকে রলে চোজো রসায়ন: ॥ কফক্ঠ ফ্রিমান্ বস্তি মুখদ্ভ গদান হরেৎ।

#### लिनक।

পর্যাধ। তিলক, ক্লুরক, আমান্, মুপুঙ্গ ও ছত্রপুষ্পক।

গুণ। ইহা আস্বাদে ও পাকে কটু, উফ্ল ও রদায়ন।

প্ররোগ। কফ রৃদ্ধি, কুষ্ঠ, ক্রিমি, বস্তি পীড়া, মুখরোগ ও দন্তরোগে ইহা প্রযোজা।

# वक्कः।

বছুকো বঙ্জীবশ্চ রজে। মাধ্যাব্দিকোহপি চ। বঙ্কঃ কফক্ৎগ্রাহী বাতপিত্তরা লযুঃ ॥

शिकी शिकुनिया।

পৰ্য্যায়। ৰন্ধুক, বন্ধুকীৰ, বক্ত ও মাধ্যাহিক।

গুণ। কফ নাশক, গ্রাহী, বায়্পিভ নাশক ও লহু। ়ুঁ

### অগব্দি।

অধায়ত্তী বধ্বসেণী যুনিপূক্ষী ফুনিক্তমং। অগ'ন্ত পিত কক্ষজিৎ চাতুপ'ক হবী হিনং । কুছে। বাতকয় ডিক্তা প্রতিশায় নিবারণ। वक

প্রাার। অগন্তা, বঙ্গদেন, মুনিপুষ্প ও মুনিক্ষা।

গুণ। শীতল, রুক্ষ, বারু জনক ও তিক্ত, ইহা দ্বারা পিত শ্লেদ্মা, চাতুর্থক জর ও প্রতিশায়ে উপশমিত হয়।

मिन्नु ही।

,সিন্দুরী রকবীজা চ রকপুষ্পা সুকোষণা। সিন্দুরী বিষ পিকাজ ভূজা বাহিছরী হিমা s

हिन्ही भिन्नुविया।

পর্যায়। সিন্দ্রী, রক্তবীকা, রক-পুন্পা ও সুকোমলা এই ও'ল ইহার নাম।

তা। ইহা শীতল ও বিষয় ইতা ব্যবহার করিলে শ্রক্তপিত, ভৃষ্ণা ও বমি নিবারণ হয়।

↑**要**不: ।

কুলকো ভদ্ৰতর্ণী রুছিং পুস্পাছতিকেশরং।
মছাস্থা কণ্টকাড়া নীলালিকসস্থুলা ॥
কুলকঃ সুরভিঃ স্বাপুং কথারানুরসং সরং।
বিদোধ শমনো সুধ্যঃ শীতহতী চ স বাতে॥

विकी कुछ।।

পর্যায়। কুক্সক, ভদ্তরণী, রুহৎ-পুশা, অভিকেশব, মহাসহা, কটক্টাা, নীলা ও অলিকুলসম্লা।

তাৰ। সুঞ্জি, স্বাচ, ঈষং ক্ষায় রস, সর, ত্রিদোষ শান্তিকর, বল করেক ও শীক নাশক। रेमद्दम् छ्यम्।

দটেদরেয়কঃ খেতপুপাং দৈরের কটদারিকা।
সছাচর সহচরঃ সচ ভিন্দাপি কল্যতে ॥
কুরণ্টকোহত্র পাতেস্যাদ্রতে কুরবকঃ মাভঃ।
নালে বাবে। বুবৈক্রকে। দাস্যার্ত্তগল্ভ সং॥
দৈরেয়ঃ কুঠবাতাজ কফকত্ বিহাপছং।
ভিক্রোজ্যা মধুরো দ্বা সুবিকঃ কেলার্থানা॥

তিন প্রকার ঝিন্টী, নাটী।

পর্যাার। সৈরেরার্ক, থেকপুষ্প, দৈ-রের, কটসারিকা, সহাচর, সহচর ও ভিন্দী। •

ঝিণ্টী জিন প্রকার। পীজবর্ণ ঝিণ্টী-কে ক্রণ্টক, রফ্তবর্গ ঝিণ্টীকে ক্রবক এবং নীলবর্ণ ঝিণ্টাকে দাস ও আর্ত্তগল কতে।

থা। তিক্ত, উষ্ণা, মধুর, দক্তের উপাকারক, হুলিয়া ও কেশ রঞ্জক।

প্রবোগ। ইহার ছারা কৃষ্ঠ, বাদ, রক্তনোধ, কফ, কঞ্ ও বিষ ন্ট হর। সমস্ত অংশ গ্রহণীয় মাত্রা ২ মাধা।

# পঞ্চবিশংতিতমোহধ্যায়:।

शन्त्रवर्गः ।

क्षामः ।

আন্তঃ প্রোক্তো রসালশ্চ সহকারোহতি সৌরস্কঃ।
কামাসো মধুদুতশ্চ মাকৃশ্য শিকসমুদ্ধ।
আনুশুপুন্তবির শীত প্রচিকুদ্ গ্রাহিবাভলম্।
আনুন দুবিহর পাত প্রচিকুদ্ গ্রাহিবাভলম্।
আনুন বানং ক্যায়ামুং ক্লচাং মাক্লড পিতমুধ।
ডক্লবন্ত ভদ্বান্তং ক্লেখে পোবন্ধান্তক্ষ্।
আনুন মানং জ্বাহানি নাতপেহতি বিশোবিভন্।

অন্নং স্বাসু ক্ষায়ং সাজেদনং ক্তবাত সিং। क्लक्ष मधुत्र धुन)° कियर तलगुर्व धनन्। खनवांड वद्र कमार वर्गर भीड मिलकम् । कवाराम् इया व कि क्षित्रश्चक विवर्कनम्। उत्पन नृष्क मा भक्षा खन्नवां उद्दर भन्न । मधुशक्ष द्रमः किथिष् छत्यः शिख श्रादिशासम् । व्याअर कृष्यिम शंकक उन्हारतर शिवनार्गनम् ॥ রস্মালিয়া হীন হাৎ মাধুন্যাজ বিশেষতঃ। উমিত্র তৎপর রুচাৎ বলাং বীয়াকরং লখু॥ मोउन् मोध शांकिमा। राष्ट्रिशक्तर मत्रः। उत्परमा गानिएडा रहमा। शक्रका उद्दरः मद्रश् ॥ व्यक्तमा अर्थाना छ। य तुः इनः करन्य र्कनः। खगा, भंडर खंत्र भंतर १ त्राध्नर वित्रभातिक छ ॥ मर्पुत्र तूर्वन्य यकार मीडल्य नाउनाननम्। সাত পিত্ত হরে কেচ্যে সুংহল বেলবর্ত্ধনম্ ॥ नुषार वर्गकत्र सामू मूकाझर क्षत्रमोडजम् ।

মন্দান সম্বাহ বিষম্পর্প রকাম্ম বর্জনাম্ম বর্জনাম্ম বর্জনাম্ম বা আনাম্ম বা করোভি ভ্যাদিতি তানি নাদ্যাৎ ॥ এতদ্মায় বিষয় মাধুরস্য পর ১ নতু।
মধুরস্য পর ১ নৈব হিত্তমুদ্যা গুরামতঃ ॥
শুঙ্যান্ধ যোল্পান স্যাদামানা মতিভক্ষনে।
জাঞ্জন বা প্রথাক্রবা মহনোব্রচ্নেন চ ॥

#### 1 12:10

প্রায়ে। আম. বর্ণাল, কামাক্স, মগ্রু দুণ, মাকক ও পিক্ষয়ন্ত। আম অভিনয় নোগভ গিশিষ্ট হইলে ভাগেকে স্থকার কহে।

আম পূপে (বোৰ) অতীদাব, কফ, পিন, প্রমেহ ও রক্তনোষ নাশ করে, ইহা শাকল, ক্ষতি কারক, গ্রাহী ও বাহু জনক। কচি আমফল কষায়, জয়, রোচক ও বাত শ্লেম নাশক। তরুণ আম (রহৎ কিন্তু জপক) অতিশয় অমবদ বিশিষ্ট, রুক্ষ, ধোষ প্রকোপক ও রক্ত দূষক। কাঁচা

আল ছাড়াইয়া বৌদ্রে সম্যক রূপে শুদ कतिरम डेरात एक्तिका मक्ति करा, তাহার অস সাতু, কধার ও বাত শ্লেম নাশক। পরু আন্র মধুব, শুক্তে জনক, निक्ष, वन्धन, जृधि कनक, छक्र, वार् नानक, क्रमा, वर्धात डेब्क्ड्रेका मण्णामक. भोजल, जेयर कसात्र दम, खिन्न कांत्रक, প্রেম্ম জনক ও ভক্র বর্দ্ধক; উহা পিত্ত জনক নহে। বুকা পক আম গুরু, অতি-শ্য বায়ু নাশক, জন্ন মধুর ও কিঞিৎ পিত প্রকোপক। কুত্রিম পক আয়ু পিও নাশক, কারণ উহার অল্লুরস অল্লু হট্যা मनुत तम धारम शादक। উधिक जाभ (বাসি অর্থাং বুকা হইতে পাড়িয়া তুই এক দিন গুহে স্থিত আম ) ব্লোচক, বলকারক, বীর্যাকর, লঘু, শীতল, বাত পিত্ত নাশক ও সর, ইহা শার জার্বি হয়। আন্নের নিম্বাসিক রম বলকারক, তারু, বায়, নাশক, সর, অজ্লা, স্প্রিকর, অভিশয় পুষ্টিকারক ও কফ বন্ধ ক। আমের খণ্ড গুরু অভিশয় রোচক বিলয়ে জীর্ণ হয়, মধুব, পৃষ্টিকারক, বলবদ্ধকি, শীতল ও বাযু নাশক। তুগ্ধের সহিত আমু ভোজন করিলে বাত পিত্ত নাশ, রুচি রন্ধি, দে-হের পৃষ্টি, বল বৃদ্ধি, শুক্র সঞ্চষ, ও বর্ণের উৎকৃষ্টক। হইষা থাকে। তুপ্তাম অভিসয় সালু, গুরু ও শীতল।

অধিক আদ্র ভোজনে অগ্নিমান্য, বি-ষম জর, রক্তদোধ, অতিশব কোষ্ঠরোধ অথবা চক্তরাগ উপদ্ভিত হইতে পারে। অতএব অধিক আদ্র ভক্ষণ অবিহিত।

আমের যে সকল দোষ লিখিত হইল ভাহা অমুরদ বিশিষ্ট আমের জানিবে, মধুর আম ডক্ষণে ঐ সকল দোষ উৎপন্ন হয় না। অধিক আমু ভোজন করিলে পশ্চাতে শুঠীর জল পান অথবা জীরক ও দৌষর্চ্চল লবণ ভক্ষণ করা উচিত।

# खायार्व ।

প্রকা সহকারস্য পটে বিশুরিভোরসং। ঘর্মযুকো মুহুদির আমাবর্ত ইভিন্ম বং । আনাবর্ত ভূষাজ্ঞি বঙাপিত হর: সরং। রুচ্যুম্যাল্ড ডিঃ পাকাল্লঘু ক সহি কার্টিডঃ ।

#### আম্সত্ত।

পক আমের রস বস্তে বিস্তারিত করিয়া ক্রমশঃ রৌডে শুক্ করিলে আমাবর্ত প্রস্তুত হয়। সূর্য্য কিরণে পাক হওবাতে ইহা লবু হয়, ভক্ষণ করিলে ক্ষা, বমি, বায় ও পিত্ত উপশমিত হয় এবং কোষ্ঠানত বায়ু প্রভৃতি সরল হইয়া নিংসারিত হয়।

नवश्चवः ।

আফ্রন্য পল্লবং ক্লচ্যং কঞ্চপিত বিনাশনম্। আন্মের নবপল্লব ।

স্মান্ত্রে নৰপল্লৰ ক্ষতি কারক, কফন্ন ও পিত্তনাশক।

### त्रांकायः ।

রাজাত্রউচ্চ আত্রাত কাষাজ্যে রাজপুত্রকঃ । রাজাত্রভবর৲ বাধু নিশব্দ শীভগ৲ ওরু । প্রাহিত্রকং বিবভাগ্ন বাতকুৎ ক্ষণিবলুৎ ।

#### म्बायाम्।

পর্যার। রাজামু, টক, আয়াত, কা-মান্ত ও রাজপ্তক। গুণ। ক্ষার, স্বান্তু, বিশাদ, শীতাল, গুরু, গ্রাহী ও রুক্ষ। ইহা বিবন্ধ, আ-গ্রান ও বার, রুদ্ধি করে। ইহা জক্ষণে শিক্তরেখা নাই হয়।

#### श्वाची ।

পণনাং কটেলিফরং পণনোহতিবৃদ্ধকলঃ।
পণনাং পাঁতলং পদ্ধ রিদ্ধাং পিয়া মলাপদ্ম ॥
তর্পনাং বৃংদনাং স্বাদু মাংসলাং গ্লেমলাং ভূপান্।
বল্যাং সক্রেশাং দতি রক্তপিত ক্ষত ব্রণান্ম ॥
আমাং তদেব বিক্তি বাতলাং তুবরং প্রশ্ন।
দাদক্ধ মধুরং বল্যাং কদমদো বিদর্শনন্ম ॥
পণশাদ্ধত বীজানি স্বাদি মধুরাবি চঃ
গ্রন্থানি বন্ধানি ক্যাংলি সংবদেধ ॥
অম্যাচে। মক্তাপনালো বৃদ্ধানি বাতলিত্ত
ক্ষাপন্ধ।

বিশেষাৎ পাণগো বর্জাঃ প্রাল্মান্ডর্মন্দ্রাক্ষিঃ র কাঁঠাল।

প্রায়। প্রশ, প্রশ, কণ্টকি ফল ও অভিবৃহৎদ্য।

পি। পদ কল, শীতল, দিয়, বার্
পিত্র নাশক, তৃপ্তি জনক, পৃষ্টিকারক, সালু
অভিশীয় মাংল বর্দ্ধক ও প্লেম জনক, বল
কারক, শুক্রপ্রদ। কাঁঠাল ভক্ষণে রক্তেপিত্ত ক্ষত্ত ও ত্রণ নত্ত হয়। কাঁচা কাঁঠাল (ইচোর) বিষ্টুন্তী, বারু জনক, কমার,
তক্ষে, দাহকর, মধ্র, বলকারক, কম জনক
ও মেদোবদ্ধ ক। কাঁঠালের বীল শুক্র
জনক, মধ্র, তক্ষ, কোঠ রোধক ও মূত্র
নিঃসারক। কাঠালের মজনা শুক্র জনক
ও ত্রিদোব নাশক, মন্দালি ও ত্র্মারোগীদের পক্ষে কাঁঠাল অত্যক্ত অনিষ্টকর।

#### लक् हः ।

সক্ষ কৃষ্ণ পণশো সক্চোহত বিভাগ।
আমিৎ সক্ষ মৃত্যুগ প্রকাশ কিন্তু কৃত্যা।
মধুরুগ তথামুক দোশ তিত্র রক্ত্ ।
শুক্রাথি নাশনং বাপি নেজ্যো হছিত। আত্ম ॥
সুপ্রত্রু মধুরুল্য়ঞানিল পিক্ষিং।
ক্ষেত্তি ক্র্থ স্চাং ব্যাং বিফ্ডন জ তং।

#### यामात्र।

প্র্যায়। লক্ড, আনুদ্রপণ্স, লক্চ ও ডহু।

গুণ। ত্মপকু সবস্থাদ, উক্ত, প্রক্র, বিষ্টন্তী, মধ্র, অয়, ত্রিদোষ জনক, রক্ত দ্যক, শুক্র নাশক, অগ্নিমান্দ্যকর ও চক্ষের অনিষ্টকর। সৃপক্ষরস্থাধ মধ্ব, অয়, বায়্পিত নাশক, কফ জনক, অধি-বর্দ্ধক, স্লুচি কারক, বল কারক ও বিষ্টন্তী।

# কোশাম কোশন্ত ইতি চ।

কোৰাত্ৰ উক্ত: কুজাত্ৰঃ ক্ৰেমিদুক্ষং সুকোলক:। কোলাত্ৰ: কুঙ লীভাজ পিতত্ৰণ কফাপৰ:। ডৎফলং গ্ৰাহি বাড্যু মনুে:ছং গুকু পিত্সমৃ। পঞ্জ দ্বাপনং কুচাং সমৃত্তং কফ্যাডনুং॥

# কেওড়াফল।

পর্যায়। কোশামু, ক্ষুদ্রামু, তিমি বৃক্ষ ও স্কোশক।

ত্তণ। ইহা কৃষ্ঠ, শোগ, রক্তদোষ শৈষ্টিক ত্রণ ও কফ নষ্ট করে, ইহার ফল গ্রাহী, বাবু নাশক, অন্ত্র, উষ্ণ, গুরু ও পিত্ত জনক, পকৃ ফল অগ্নি দীপক, ফুচি কারক গুঘু, উষ্ণ ও বাতপ্রেয় নাশক।

### काशिक्य।

কালিক্ষ্যুক্তবীস্ক্ষ্যাৎ কালিক্ষ সুবৰ্তুলন্। কালিক্ষ্য আহিদৃক্পিত শুক্তছাউস্থ গুৰু । প্ৰস্তু সেখ্য সকার্য পিতস্থ ক্ষবাভাৱিৎ।

#### ভরমুক ।

ণ্যার। কালিক, কৃষ্ণবীজ, কালিস্ব ও সুবর্জুল।

গুণ। গ্রাহী, শীতল ও ওক্র ইহার দারা দৃষ্টিশক্তি, পিত্ত ও ওক্ত ফর হয়। প্রবিদ্যায় ইহা উফা, ক্লার ওণ বিশিষ্টি, পিত্তনক ও বাত্যাম নাশক হয়।

# थर्मा ज्ञम्।

দশাক লক্ষ থাকি কাং কথাতে তদ্ধানা কথা।
ধাকা কাং মৃত্তাং বলাং কোডামতি করং গ্রুঃ
কিন্ধং খাদ্ভরে শীতং বৃদ্যংশিকাশিকাশিকম্।
তেমু যাস্তামুম্পুরং সক্ষার্থ বৃদাদ্ভবেং ॥
ব কশিককরং তলু মৃত্তু করং শর্ম্।

### थतम्या ।

পর্যায়। দশাসুল ও ধর্মনুজ।
তথা মৃত্ত কারক, বলকব, কোষ্ঠ
ভিক্তিকর, তারু, স্লিগ্ধ, অভিশয় স্থাচ, শীতল,
ব্যা ও বাত পিত্ত নাশক। ইহার রস
হউত্তে জ্ঞার তাণবিশিষ্ট, তায় মধুণ এক
প্রকার পদার্থ উৎপন্ন হয়, ভাহা রক্ত পেত্ত
জনক ও অভিশর মৃত্তব্তক্ত কারক।

# ত্রপুসম্।

ত্রপুদ কটকিক্স সুধাবাদঃ সুণীওলন্।
ত্রপুদ কর্মনিল্ল নবংভূট্কুদ্দাহলিং।
নালু পিডাপহ শীতং রুক্ত পিডারং পরন্।
তৎপত্র মন্ত্র্যুক্ত সাথে পিডালং ক্কবাতনুৎ।
তদ্বীক্ত মুবুকা শীতং কুক্ত পিডায়কুক্ত ক্লিং।

#### मना ।

প্রায়ে। অপ্র, কণ্টকীফল, ত্বা-বাস ও ক্ণীভল।

তাণ। তরুণ অবস্থাধ নীলবর্গ, লঘু.
সাত্, পিত্ত নাশক ও শীতল; ইহা ভক্ষণ
করিলে তৃষ্ণা, ক্লান্তি, দাহ ও রক্তপিত উপাশমিত হয়। প্র হইলে, অমু, উষ্ণ, পিত্তজনক ও বাতক্লেম্ম নাশক হয়। ইহার বীজা মৃত্র কারক, শীতলা, ক্লান্ক, বাত পিত্ত শান্তিকর ও মৃত্রক্ষত্ব নাশক হয়।

# क्षिण्डिय्।

চিভিট \ মধুর \ এক তথা গোরজকর্মনী। চিভিট \ মধুর \ এক এক শিত্ত কাপ্তন চ অনুষ্ঠ গ্রাহী বিউদ্ধি পক্ তুষ্ণক পিতগ্ৰ। কাকুড়।

পর্যায়। ভিডিট, ধেরত্ব ও গোরজ-কর্মটী।

ত্রণ। মধুর, রুফ, তাফ, কফপিও নাশক, অনুঞ্চ, গ্রাহী ও বিষ্টুর্ত্তী, এই ফল পঞ্চ হইলে (ফুটী) উষ্ণ ও পির জনক হয়।

#### खनानः।

# স্থারি।

পর্যার। ছোরণ্ট, পুনী, পূনা, গুরাক ও ক্রেমুক এইগুলি ইহার পর্যার। ইহার ফলকে পুনীফল ও উদ্বেগ করে। তা। তার, শতিল, রুক্ষ, ক্ষার,
কফপিত নাশক, মোহকারক, ক্রচিকর,
মুবের বৈরস্য নাশক। কাঁচামুপারি তারু,
অভিযান্দা, অভিমান্দাকর ও দৃষ্টিশন্তির
থকাতাকারক; যে মুপারি সিদ্ধ করা হইরাচ্ছে ও যাহার মধ্যভাগ দৃঢ় ভাহাই
উত্তম।

#### তালঃ।

তালন্ত লেখপত্রগাৎ তুলরাজোমছোছজঃ পক্তাল কুল পিশুরক জোলাবিবর্ধন্য । দুজ্জুর বহুমুক তস্ত্রাভিব ক্ষাক্ষ্য । তালমকা তু তত্ত্ব কিজিলাক্ষ্যে লিল্লা খেলাবাতলিকাল্য সম্প্রেছী মধুরঃ সরঃ।

#### 18 | 34 |

পর্যার। তাল, লেখ্যপত্ত, তৃণরাঞ্চ ও মহে:রত।

ত্ব। প্রকালফল সহজে জীব হর
নাভেলণ কবিলে রক্তিপিত ও প্রেয়াবিছিতি
হয়, অবিক মৃত্হয়। ইহা অভিযানী ও
ক্রেজনক, ভালভলবে তন্তা উপভিত হয়
নান তালমকা কিকিৎ মাদক, লঘু শ্রেয়
কনক, ব্তিপিতার, বিশ্ব, মধুব ও লর।

# ङानवरष्टाह्म्।

ভালছাৎ ভঞ্গৎ ভোৱে মডীৰ মন্ত্ৰাভয়। অন্তঃভূতৎ ভদাতুল্যাৎ শিককৃৎবাভয়ে।যথৎ ॥

कारमञ्जूष दम दा ठाड़ी।

ত'লের ন্তন (উটি্কা) শাংগতিশর মদেক উহা অধ্বদ হইলে পিওজনক ৩বংগুনাশক হয়।

#### किनिश्यम् ।

किल्बिक परिश्वामार उसी मुक्तिक क्र्या । किलिकिता विश्वक दसी प्रस्तिरिश्चित है । किलिक बाबर मर्श्यादि क्यांबर क्यून्ववेनम् । नक्षर अक्रपृषा विका नेनमर संद्वितिबर ॥ माम्प्मर पुरवर क्रिलीश्चर औदि मुक्तिवृत्।

#### करम्बद्दवन ।

পর্য্যায়। কণিথ, দ্বিথ, পুশাদল, কণিপ্রিয়, দ্বিফল ও দন্তগঠ।

তাণ। অপক অবস্থান, সংগাহী, ক্যার পঘু ও লেখন। পক হুইলেগুরু, বারু পিত নাশক, অল ক্যার, কঠ শোধক, গ্রাহী ও ভূক্ষর হয়, ইহা ভক্ষণ করিলে ভূষণ ও হিকার উপশ্য হয়।

# खन् ।

জুজন্ম স্লপতা নাদেয়ী জলসমূকা। সমুঃ স\মাহিণী ককা কফলিতাস দাহজিং ।

#### জাম ।

পর্যার। কুদ্দক্ষ, সুল্পতা, না-দেমী ও জলজন্কা।

গুণ। সংগ্রাহা, রুক্ষ, নৈমিক রক্ত শিক্ত নাশক ও দঃহ শান্তিকর।

# बाजकम् ।

কলেজা কৰিতা নক্ষী রাজস্থ ম্থাকল।। তথা সুয়তি পদ্ৰা চ মহাজহু বপিন্দৃতা। রাজসংক্ষম খাদু বিকতি ওক্রোচমন্।

### भागाभकाम ।

পর্বার। ফলেন্দ্রা, আনন্দা, রাজ-তত্ত্ব, মহাফলা, সুরভিত্তত্ব, ও মহাজয়ু। গুণ। রাজক্ষ ফল স্বাহ, বিষ্ট্টী গুরু ও রোচক।

#### वस्तः।

পু৲সিক্রিয়াঞ্চ,কর্মপু বদরী কোল মিডাপি। ফেনিল৲ কৃষল৲ ঘোটা দৌবীর৲ বদর৲ মহৎ। অক্সপ্রেয়া কুহা কোলী বিখমোভয়ক্টকা।

#### कुल ।

পর্যার। কর্কন্ধু, বদরী, কোল, ফেনিল, ক্বল, ঘোটা ও সৌবীর এই গুলি কুলের নাম। কুল বৃহৎ হইলে সৌবার কহে। কুলের অন্যান্য নাম এই গুলি যথা অজ-প্রিয়া, কুহা, কোলী, বিষম ও ভরকণ্টক।

# তত্ত্বদর বিশেষাণাং লক্ষণ।নি জ্ঞান্চ।

প্রচ.ম.ন\ সুমন্তরং সৌবীরং বদরং মহৎ।
সোপীরং বদরং শতিং ছেদনং গুরুং শ্রফলম্ ।
সুংহণং পিতাদাহাক্র ক্ষয়ন্ত্র নিবারণম্।
সে বীরং লঘু সম্পাকং মধুরং কোলমুচান্তে ।
কোলন্ত বদরং প্রাহি ক্লচামুক্তক বাতলম্।
ককপেও করভাপি গুরু সারক নীরিভম্ ।
করুং ক্ষয়বদরং ক্রিডং প্রম সুরিভিঃ।
ক্ষয়ে স্যাং ক্ষয়বদরং ক্রিডং প্রমি সুরিভিঃ।
ক্ষয়ে স্যাং ক্ষয়বদরং ক্রিডং প্রমি সুরিভিঃ।
ক্ষয়ে স্যাং ক্ষয়বদরং ক্রায়ং নধুরং মনাক্র

# বিশেষ বিশেষ কুলের লক্ষণ ভাষা

যে কুল বৃহৎ ও পাকিলে কুমিষ্ট হর, ভাহাকে দৌবীর অর্থাৎ নারিকিলে কুল কহে। দৌবীর দীতল, ভেছক, তক্ত, ভক্তজনক ও পৃষ্টিকর, ইহা পিও জন্য দাহ, রক্তদোৰ, ক্ষয় ও তৃষ্ণা নিবারণ করে। যে কুল ক্ষ্ম ও পরিপক্ হইলে ক্ষমিষ্ট হয়, ভাহাকে কোল কহে, কোল গ্রাহী, রোচক, উষ্ণ, বায়ু জনক, কফ পিডকর ওয়া ও লারক। ক্ষ্মা ক্ষম কুলকে কর্মান্দু বলে, ইহা আয়া, ক্ষায়, আরমিষ্ট, স্লিম্ক, গুরু, তিক্ত ও বায়ু পিত্ত নাশক। কুল মাত্রেই শুক্ক হইলে ভেদক, আমি কারক, লঘু, তৃষ্ণা নিবারক, শ্রম শা-ভিকর ও রক্তদোষ নাশক হয়।

#### लवली।

मुभक युगा गरको शांकुः रकायमरकमा । मनवीकम यथार्थाः कक्षित स्त्रः सङ्गः । विस्पृषः रवाहमः कृष्णः स्विष्ठस्वरः वरमः।

#### (क्षांत्राष्ट्र)

প্রায়। স্থান্ধ্যা, লবলী, পাওু ও কোমলব্দলা।

তাণ। লবলী কল বোচক, বিশদ, কুক্ম, তাক, উত্তম স্বাত্ত ও অমরদ। ইহা অশারী, অর্শঃ ও ককপিত্ত উপশমিত করে।

### कत्रमर्भः।

করবর্দ্ধঃ সূবেধঃ সাথে কুক্তপাক কলভা।।
ভন্মারাত্ম করবাদিকা র
করবর্দ্দ হয়ং ভ্রান মন্ত্রং এক,তৃষাহরণ।
উক্তং ক্রচিকরং প্রোক্তং রক্তপিত কক্ষপ্রন্থ ।
ভংগকং বর্ত্তরং ক্রচাং গল্প পিত্তসমীর্ভিত।

#### क्यम्हा

পর্যার। করমর্ক, সুবের ও কৃষ্ণপাক ফল। এই জাতীর আর এক প্রকার वृक्ष आह्य जारात कम क्ष छेशाटन कत्रमञ्ज्ञि करह ।

তা। উভর জাতীর করমর্থের ফল জলকাবস্থার আরু, ওফে, তৃষ্ণোনাশক, উঞ্চ, রোচক, রক্তপিত জনক ও কমসুদ্ধিতর। ইয়া পকাবস্থার মধুর, রোচক, লঘু ও বারু পিত লাশক।

### शिक्षालय ।

পিয়ালত খরজজ শারো বহুলবক্ষল: । রাজানন ভাপনেকঃ সম্ভক্তর্জনুস্পট্টঃ ॥ চারঃ পিত্তক্তাস্ত্রন্ত শুক্ত কল্ নধুর্থ প্রক্ল । সিগ্রুণ সর্থ মন্ত্রপতি দাছ আর ভূষাপদ্ম ॥ পিয়াল মঞ্চা মধুরো সুখ্যা পিতানিলাপত: । হুলোহতি দুক্তরা সিধ্যো বিক্টতী চামবর্জনঃ ॥

পিরাল, উহার মক্তা চিরোজী। পর্যায়। পিরাল, ধরক্ক, চার, বহুল বল্কল, রাজাদন, ভাপনেষ্ট, সম্বক্ত ও ধমুস্ট।

থা। পিত্ত, কফ ও রক্তদোষ নিবা-রণ করে, ইহার ফল মধুর, থারু, দিশ্ধ ও দর, এই ফল ভক্ষণে বায়ু, পিত্ত, দাহ, জ্বর ও তৃষ্ণা নিবারণ হয়। পিরালের মজ্জা, মধুর, শুক্র বন্ধ ক, বাত পিত্ত নাশক, জ্বা, অভিশর তৃজ্জ র, স্বিশ্ব, বিষ্টকী ও আম বন্ধ ক।

### द्राक्षादनः ।

রাজাদনঃ ফলাব্যজো রাজন্যা ক্ষীরকাপি চ। ক্ষীরকায়াঃ ফল্মবৃদ্ধা বিজ্ঞান ক্ষিক্ষ হিন্দ র ডুক্তাবৃদ্ধা বন্ধনাধি ক্ষরদাবত্রয়াক্সাক্ষ। A. .

# দ্ৰাস্থানম 1

### कौत्रदश्जूद ।

পর্যার। রাজাদন, ফলাধ্যক, রা-জন্যা ও ক্ষারিকা।

ত্ত্বার ফল শুক্রেজনক, বল-कांदक, श्रिक्ष, भी उल ७ श्रुक, देश कुरु।, मुक्ता, सम, ज्या, क्या, तकदमाय ७ जिटमाय नामं कदत्र।

### (4年等等)

विकश्च अत्रात्रका अक्त सामूनेकेतः। म्बरम्क्रक्क कर्गेत्वा राज्याम् ल ॥ विकश्च क्या भक्ष प्रमुत्र मखटवानिकः।

#### 15171

भर्गात्र । विकक्षण, यः शतूषा, धिश्रिल, भाष्ट्र कर्षेक, मक्ष्रक्रम, कर्षकी छ मास्त्रार। ৩৭। ইহার পক্ষস মধুর ও সর্ব-(नाय नामक।

### भश्राः ।

मत्ता शक्षणाः मान् मधुनुष्णी मधुख्यः। रामधारका मधुकीत्मा क्रमाकात मधुनकः । यमुक्रपुष्णार यसुद्धर भोजनर सङ्ग दुर्दनम्। रजमाक्षकद्वर (आक्षिर त्रांड'ल्य 'तमःमन्म् । कथर माजिर एक बार् सक्कर वाड्नवर्षे । व्यवसार व. १०० माज माब मात्र करानि ॥

# (योल, मह्या; जनस्मान ।

न्धाः । सर्क, जङ्भूष्म, सर्भूष्यू, মধ্যাব, বানপ্রস্থ ও মধ্ষ্ঠিল এই গুলি মোলের নাম। এই আছাতীর আর এক প্রকার বৃক্ষ আছে ছাহা জলে উৎপর इहेत्रा शाटक, खेराद नाम मधुलक ।

छन। हेहात भूष्य सर्वे, जी छन, থাক, পৃত্তিশারক বলকর, শুক্তকনক ও বাতপিত নাশক। ইহার ফল শীতল, গুৰু, স্বাহু, শুক্ৰজনক, বাসু পিত্ৰ নাশক u व्यक्ता। देश क्या, बक्टामाय, मार, খাদ, ক্ষত ও ক্ষয় রোগ নিবারণ করে।

#### গ্রথকম্ ।

প্ৰদক্ষ প্ৰদ্ম মুগ্লাভি চ প্রারুম্। প্রমকা, কলাগাল মাম। পিরকরা, লগু ॥ छ । भक्षः प्रश्नुद्रः भारक मी छ । तिके छ तु १ दवस् । क्रमास भित्र मार्थिय स्वत्रक्ष्य मनो १क्टर ॥

#### का भागा।

পর্যাব। পর্ষক, প্রব, অল্লান্থি ও 93 731

থা। তাপকু আংস্থার ক্ষার, অসু, পিরকর ও লঘু। প্রাবভার মধ্র, শীকল, প् हिकातक, दिहेशे 'छ क्रमा'। वेदा शिक कना मार, बल्डरमाय, खब, क्षत्रद्वार्ग । বায় নাশ করে।

### केंद्र ।

ङ् इः कूलक भूगक क्रमुदको उक्तवःक्रb । **कुडः शक्र अक्रयाधू विषः शिक्षः निर्माणवर् ।** ওদেবামা গুরু সর মস্লোক্ষা রক্তপিতকুৎ।

शर्वाह्य। एक, मृल, शृत्र, क्यूक **७** उन्नम् कि ।

গুণ। পরু ভূত গুরু, স্ব. দীতল, বারু পিত্তনাশক, অপকু অবস্থার ওারু, পর, অম, উষ্ণ ও রক্তপিত্ত শান্তিকর।

#### माडिमः।

वाद्यिकः कत्रत्वा वक्षेत्रेटका क्षाविष्ठगुष्णकः। खरकार जिनिवर थापू शावली किरामानम् ॥ छस् सामू जिट्यां रहा ए ए पार्कत नार्थम्। श्चरके वृष्टवात्रम् उर्लग सक्रम नय् ॥ कवाशास् द्रम् अ वि 'सफ्रार्मा वजावहम्। यामाञ्चर पोर्शनर स्रकार कि कर लिखकार ने स् प्रमुख भित्रम्क म्यू राउक्क भवन।

ए जिया।

প্র্যায়। দাভিম, কমক, দন্তবাত, ও লোহি নপুষ্পার ।

• গুণ। দাভিম ফশ কিন रथा मधुन काल मन्द प्र जास, इनारना थिष्ठे प्राष्ट्रिम दिन्ताम न माक, ७'१ त्नक खक्दिक्रिक क्य क्रियर क्या रम, छ।भ হ্মিয়া, স্মানগশ ক্তবদ্ধ ক भ वनक वक हेडा इक्षा, माड, कार्य, कार्य प्रशास भ्रेथद्यांग निवंदन कटनः जस मन्त्र माड़िम लाधि मोलिकर, (इ ५क किंधर পিত্র জনক। কেশে অম্বস্বি'শৃষ্ট দাভিম পিত ভনক ও ' যু • খ নাশক।

#### न्त्र दे ।

वस्त्रावस् भीक भारतम् (२) रहर हरू। শেলুঃ ল্লেম'ডকণ_াপি প′ত্ৰ'ল ১ড কাকঃ 🖁 वक्षात्रां विश्वत्यक्त हे बनने मन क्षन् । यर्त्र खर्द खिक (कर्ण)न्त कर्म 'श्रे कर । ফলমামন্ত্র বিজ্ঞ'ন্ড কৃষ্ণ পাত কক ভ্রতি । उर भक्र मनुद्र सिक्षर (अगन्त मी उनर स्ट्र । किसी वहरीय।

পर्गाप्त। यखवात्र, भी ६ टेपाल, दछ-বারক, শেলু, শ্বেমান্তক, পিডিলে ও ভূত

वृक्षक ।

थन। सन्त्र, कषात्र, किक्न, क्टान्त्र मोन्मर्ग कनक ७ क्क्लिस मानक, हेश বিষ, স্ফোটক, ত্রৰ, বীদর্প ও কুষ্ঠ ব্যোগ

नामकरत । इन्हर्ग कां। एन क्या, विश्वेषी, णिक नानक, कथमां खिकत्र अ तक स्माम निवादक, अक्छल अधूद, श्रिकी, वक् क, भा उल भ खक ।

#### 香香香 1

। প্रथमा व कडक् कडक । उरक्ष ७१। कडकम। कन (न 4) १ अन नियम् । वाडरभवा वदा नांकर मधुत्र कृततः स्ट्रहा

#### [ अर्थमा

करक. शय. श्रमां मि माधीर क्ला.क নিমাশ কবে, ইহার ফুশের নামও কডক ध क्ष (मटला अ। इ)कत्र, कदलत्र म्याप সারচ, ব ডল্লেয় নাশক, শাত্রণ, মধুর, किनाभ प्र उन्दे ।

क्ष्मप्रा, ती, िष्ठयका, ती १६० शहा।

 प्रथाक्ति का अधि मुगाब क गुमक्किस।। वर्ष समाध्या के न के की श्री माधका ह लिए मेर्जित्वता द्वना मार्परने लिक्तिय जात्र । अर्ज्जुरो (श कना सादा भरकोभ विद्यास ह। । स्राध्ट अभिकृत्म त्वरणे अंटल्ड कि देशेंड को के एड । शेष्ट्र किड्या मोड यमुका तम लाकत्यतः । चिक् क्रिया क्षेत्र का किल्ला हरू। ३० नः इक्शनमा १ वि १० विक स्थापम ॥ (क'के गोक्रड केवल,९ ८, य त्रां कक्कालकम् অর তিগার ৬ কুল। কামখাস নিশ্বকৃষ্ মন্তুসছ । মধং পাশ মধে দি ত পাদাওকুং। महर्छ। ।। १ सर्वेद त्रामा स्राप्त संख्यू द्रका साहि ॥ संस्कृत उमाराह समार्थित केर्र कर्पर । दःदृत्त्रवा कद्रः १०), त लेखा प्रश्ना क र्व । कुष गड्य त (१५५ का त, त्माणाता।

ভূমি थक्क विका, जाधी, दूबादबाहा, गृह-क्रमा, यश्वक्मा, काक कर्कती, श्व पाइमछका

এই গুলি কুদ্র বজ্ঞ র অর্থাৎ দেশী বজ্জ -রের মাম, পিতবর্জ র পাশ্চমদেশে জয়ে, ছোহার। নামক এক প্রকার বজ্জ র আছে, তাহার আকৃতি পোস্তনে রন্যার উহা পাশ্চাত্য দ্বীপ অর্থাৎ আরব প্রভৃতি দেশ হইতে আনাত হর।

গুণ। এই তিন প্রকার ধরুর দীতল, মধুর, স্লিক্ষ, ফ্রচিকারক, জানা, গুরু, তৃপ্তিকারক, বিষ্টুণ্ডী, গুরুজনক, বলকারক, বমন নিবারক ও বাত্প্রেম নাশক। ইহা ক্ষত, ক্ষর, রক্ত-পিত্ত, কোঞ্ঠাপ্রিত বায়ু, জ্বরাতিসার, কাস, খাদ, মদ, মৃত্ত্যা, মদাপান জ্বনিত রোগ এবং ক্ষ্ধা ও তৃষ্ণা নিবারণ করে বৃহৎ ধক্ষ্র হয় অপেক্ষা, ক্ষুত্র ধক্ষ্ঠিন করে প্রক্তি আয়।

ধৰ্জ্বী ভোর (থেজুর রস) মাদক, পিতুকর, বাভুগ্নেয় নাশক, রোচক, অগ্নিবন্ধকি, বলকারক ও শুক্তজনক।

স্থেনমানী (পিওথর্জুরী ভেদঃ)। সুন্দেমানী তু মৃদৃলা দলহীনকলা চ সা। সুনেমানী অবভাৱি দাহমৃদ্ধান্ত পিভত্তং।

স্লেমানী (পিতথ জ র বিশেষ)।
পর্বাায়। স্লেমানী, মৃত্লা ও দলহীন
ফলা।

গুণ। স্থলেমানী ট্রাম, ভাস্তি দাহ, মুর্ছা ও হক্তপিত্র রোগ নিবারণ করে।

सामा।

ত্ৰাকা বাৰ কৰা প্ৰোক্তা ভৱা মনুৱসালি চ। মৃত্তিকা হারহুয়া চংগাঞ্চী চালি কীৰ্ত্তিভা চ প্রাক্তা পরা পরা দ্বিটা চকুষ্যা বুংছবী গৃক্য:।
বাদুপাক রবা ঘর্ণ্যা কুবরা সৃষ্ট্যুরবিই ও
কোঠ বাক্ত ভূদ্বীয়া কমপুকি ক্লডিপ্রহা এ
ছত্তি ভূলা অরখান বাত বাতাক কামদাঃ ও
ভূদ্ব প্রান্যাই বাহ পোর মনাভ্যার ।
আমা বংশা প্রবা প্রাক্তা বার্তা কম্বিশনুক ।
ব্যান্যাই বেশারমী প্রাক্তা বার্তা সদৃদ্দী প্রবিধ র
ভ্রাক্তা পর্যাক্তা বার্তা বার্তা বর্ষাক্তা বিবং র
ভ্রাক্তা পর্যাক্তা বাদুক্ ভাদুশী করমন্দিকা।

গোন্তনী বুন্তা ইভি লোকে। অবীজা ঈষ্মীজা কিলিমিল ইভি লোকে। প্রক্তজা ব্যারী ইভি লেকে। কর্ম্বিকা করৌমী ইভি গোকে।

# किम्भिम्, मनका।

পর্যার। সাতৃকলা, ভাষ্ণা, মধুরদা, মৃখীকা, হারত্রা ও গোন্তনী।

था। পक जाका, भीकल, मत्र, চক্ষের হিতকর, পৃষ্টিকারক, গুরু, পাকে স্বাচ্, স্বর বিশুদ্ধ কারক, ক্রবায়, বুবা, জে-দক, মৃত্র কারক, কফ বছ কি, পুষ্টিকর, রোচক, কোঠে বায় ৎপাদক, ইহা তৃষ্ণা ছর, খাস, বায়ু প্রধান বাতরক্ত, কামলা, কঠিন রক্তপিত্ত, মেহ, দাহ, শোষ ও মদাতার রোগ নষ্ট করে। অপক জাক্ষা ভার শক্তি বিশিষ্ট, ইহা গুরু, আন্ন, রক্ত-পিত্ত রোগেৎপাদক। গোন্তনী দ্রাক্ষা व्यर्थार गरनका, खळकनक खक्र ७ कक-পিত্ত নাশক ৷ কুদুদ্ৰ বীঞ্চ বিশিষ্ট জাক্ষা (किन्मिन्) मत्नकात नात कार्या कदत। পর্বাতকা ভাকার (বহাবীর) গুণ কর-यक्तिका (करबोपीय) नाव । देशकिन्यिन इहेरक शेन थन विभिन्ने।

#### অনুভক্ষন্ !

ষং বদক্ৰাম কাবিল প্ৰভৃতিত্ব বেশের নাস-পাড়ীতি প্ৰাসক্ষঃ। অনুভক্ষক সমু বৃষ্য সুয়াপুত্ৰীন্ ব্ৰেংগোৰান্ বেশেযু মৃদ্ধীনাশ ১ বছল ওল্লভাতে লোকৈঃ।

#### নাদপাতি।

অমৃত ফুল লঘু, রুষা, সৃস্থাত, ত্রিদোষ নাশক খোরাসান দেশে বহু পরিমাণে পাওয়া যায়।

#### ८भदम् ।

মৃক্টিপ্রমাণ্য সদর্থ সেবং নিবিভিক: ফল্ম। সেবং সমীর পিকস্থা সূহণ্য কফরুদ্ গুরু । রুমে পাকে চ মধুরং শিশির্থ রুচি শুজকুং।

भिष्ठे विली (मा)।

পর্যাাগ। মৃষ্টিপ্রমাণ, বদর, দেব গুলিবিভিক। ফল।

গুণ। বাসু পিত্ত নাশক, পুষ্টিকারক, কন্ধ জনক, গুরু, আস্বাদ ও পাকে মধুর, শীতল, রুচি কারক ও শুক্তে জনক।

### প্রাচীনামলকম্।

প্রচৌনামলক পোকে পানীয়ামলক স্মৃত্যু। প্রচীনামলক কোষত্রজিদ্ অর্থাতি চ।

### পানিআযুগা।

প্র্যায়। প্রাচীনানলক ও পানীয়াম-লক।

গুৰ। ইহা ত্ৰিদোৰ নাশক ও অৱস্থা,

#### वाकामः।

বাতাংশ বাতবৈরী স্যাছেরোপ্যফলভ্রা । বাতংশ উষ্ণঃ সুস্থিতো বাতম্বং প্রক্রার । বাতংশ ক্ষা সধুরো সুষ্যা পিরানিলাপছং। মিডে:খ্যা ক্ফকুমেটো রক্তুপিস্তবিক।রিনাম্ ॥

#### भिष्ठे गामाम।

পর্যার। বাকাদ, বাতবৈরী ও নেত্রো-পম ফল।

• গুণ। বাদাম উষ্ণ, কুল্লিগ্ধ, বাত্ম, গুলুজনক ও গুরু। ইহার মুজ্ঞী মুধুব রুষা, বায়ণিত নাশক, গ্রিগ্ধোফ্র ও কফ বন্ধ ক; রক্তপিত্তরেগৌরপক্ষেইহানিধিন্ধ।

### श्रीक्षुः।

পল্য সক্ষা অংশী তথা শীতকলোছপি চ। পীলু গোৱা স্থীরশ্বং শিরসং ভেদি এখানুং ॥ স্বাধু তিকক তংপীলু ভয়াকু, অংশি এখানুং।

### शिस् ।

কোকন দেশজাত আকরট জাতীয় এক প্রকার বৃক্ষ।

পর্যায়। পীলু, গুলফল, জ্রংদী ও শীতফল।

গণ। বাতলেম নাশক, পিত জনক, ভেদক ও গুলা নাশক। যে পীলুর আসাদ স্বান্থ ও তিক্ত তাহা ত্রিদোধ নাশক এবং অনিক উষ্ণ নহে।

#### व्यक्ताहिः ।

পীলুঃ শৈলভবোহুজোটঃ কর্ণরালন্দ কীর্ন্তিতঃ। অকোট কোহশি বাভাব সদৃশঃ কম্পশস্তুৎ ।

### ष्याचदबाठे ।

পর্যায়। শৈলভব পীলু, অক্ষোট, ও কর্পরাল। ইহার গুণ বাদানের ন্যায়, ইহা কফপিত বদ্ধ ক।

### नियु ।

নিষ্কা নিষুক্ কাবে নিষ্ক্ৰণ কাৰ্তিওন। নিষ্ক্ৰলং বাভল্প দীপন্প পাচন্প লয়। অন্যাচন বিৰুক্ত জিলি সংমূহ নালন্প

ভীক্ষম মুদ্যমহাগহন ৷
বাতপিত কফ শুলিনে হিত\
কট মট কৈচি বোচন\ পরম্ ॥
কিলোব বহ্দিক্ষ্য বাতরোগ
নিপীড়িভানা\ বিধবিজ্ঞানাম্
মশানলে বন্ধগ্রেদ প্রদ্যে\
বিস্তিকায়া\ যুন্যে৷ বহুতি ॥

### পাতিলের ।

পর্য্যায় । নিম্,নিম্ক ও নিস্ক । গুণ । অস্ন, বাতম, অগ্রিদীপক, পাচক ও লঘু।

অপিচ। নিষ্ক ক্রিমি নাশক, ভীক্ষ অন্ন, উদর বেদনা নিবারক, নিভান্ত অক্লচি থাকিলেও ইহার হার। উপকার সভাবনা, ইহা শূলাদি রোগে উপকারক। অভিশর মন্দাঝি, অস্বরোগ, বাতব্যাদি, বিধবিকার, কোষ্টবোধ ও বিস্চিকা বোগে ইহা ব্যবস্থের।

# भिष्ठेनिया।

মিউ নিযু কলং যাদু প্ররুষাক্তর শিক্তনুৎ। প্ররোধ বিবধ্বংগি ককোৎক্রেশি চ রক্ত হুৎ। প্রোয়াক্তি ভূষাক্রমি বরুং বলাক বুংববয়।

#### कमलारलत्।

ইহা স্বাস্থ্য, গুরু, বাতপিন্ত নাশক, বিষ-রোগ নাশক, বিষয়, কফনিঃসারক, রজ-দোস নাশক, বল কারক ও পুষ্টিকর। ইহার দ্বার। শোষ, অক্রচি, তৃষ্ণা ও বমি নিবারণ হয়।

#### वीखश्रह।

বী অপুরে মাতৃলজো ক্রচকং ফলপুরকং। বী অপুর ফল৲ খালু রলেহল্ল দীপন্ম লঘু॥ রফাপিত হর১ কও ভিজা জদয় গোধনন্। মান কালাকতি হর১ জন্য তৃঞাহর১ মাতৃষ্॥

# हे। वादल तु ।

প্র্যার। বীজপুর, মাতুলুদ, রুচক ও ফলপুরক।

তাগ। এই ফল স্বাচ্, স্মান, অধি দীপ্তি কারক, লঘ্, জানা ও ড্ফা নাশক। ইহার দ্বারা শ্বাস, কাস, অরুচি ও রক্ত-পিত্ত রোগ উপশমিত এবং কঠ, জিহবা ও জানা বিশুদ্ধ হয়।

# यक्क किंछिक।।

( दीरक्षेशांखन मधुकाकि )

বীল্পপুরোহশর: প্রোক্রো যধুরে। মধুকত চী। মধুককটিকা ভাছী রোচনী পতিলা গ্রক্ত ॥ রক্তপিত ক্ষমখাস কাস ভিত্ত গ্রহাপত।

द! **वादिरल**दू।

মধুকর্কটী ইহাও এক প্রকার বীজ-পূরক।

পর্যার। মধুর ও মধুক্র্চী।
ত্ত্ব। স্থাচ্, রোচক্ষ শীতল ও তারু,
ইয়া রক্তপিত ক্ষররোগ, খাদ, কাদ, হিক্কা
ও ভান রোগ উপশ্ব করে।

# क्षत्रेत दश्या

স্যাজ্জনীরো দ্রুপঠো জডজডীর জডগাং। জনীর মুক্তা প্রস্কাস বাতরোত্ম বিবন্ধনূহ। শূলকাস কফোৎক্লেশ চ্ছেন্সি তৃত্যামদোর জিং। আন্যবৈরস্য জংপীঞ্চা বাত্যমান্য ক্লিমীন্

\$ \$ \$ 3 B

युक्त अपीतिकां उपः जुव्याऋणिनियात्रेगी ।

त्भाषात्नत् ७ कागकीत्नत्।

পর্যায়। জম্বীর, দন্তশর্ঠ, জন্ত, জন্তার ও জন্তুল।

তাপ। উষ্ণা, গুরু, আমা, বাত শ্লেমা নাশক ও বিবন্ধ নিবারক। ইবা শূল, কাস, কফ, উপস্থিত বমন, বমি, কৃষণা আমনোস, মুববৈরসা, কৃৎণীড়া, আমি-মান্দা ও ক্রিমি নষ্ট করে। এইরপ স্থান্ত জন্মীরিকা অর্থাৎ কাগজিলেব ড্ষণা ও বমন নিবারণ করে।

### वृक्षात्रम् ।

বৃক্ষাস্ত্র 'তিভিড়ীকক চুক্রং স্যাধ্যস্থাকন্। বৃক্ষাস্ত্র মাধ্যমেক্তাক্ষং বাত্তমুং ককপিবলন্। পঞ্জ এক সংখ্যাহি কটুকজ্ববরং লয়। অস্ত্রোজং ব্যোচনং কৃক্ষং দীপনং কক্ষাত কুৎ। ভুজার্লো প্রহণী শুস্থাপুদ্ধ হুদ্রোগ ক্ষাবিধা।

# हिनी महाना।

পর্যায়। বৃষ্ণায়,° তিস্তিড়ীক, চ্ক্র ও অনুবৃষ্ণক।

ত্তা। অপকাবদার ইহা অনু, উঞ্চ, বাতম ও কফণিত বৰ্জক; পকাবদার তক্ষ, সংগ্রাহী, কটু, কবার, সমৃ, অর, উঞ্চ, রোচক, রুক্ষ, অধিকারক ও বাত- শ্লেম জনক। ইহা ভক্ষণ করিলে তৃষ্ণা, অর্শঃ, গ্রহণী, গুলা, শূলা, হুজোগ ও কীটাদি বিনষ্ট করে।

#### णमृदेवसमः ।

मा। मस्तरण मण्या भारति मध्यस्य । ।

श्राहरण मण्डा (जन्म श्राहणेना । ।

स्तर्या मण्डा प्राहण भिष्म (साम्बर्यक । ।

स्राम मण्डा प्राहण भीरणामार्यक नामान् ।

स्माना स्राहण भीम कामान्य विषय अनुद ।

स्माना स्राहण स्तर्या ।

सम्बर्ध स्तर्या ।

सम्बर्ध स्तर्या ।

सम्बर्ध स्तर्या ।

ञञ्जदरकम, हिन्मा टेबकन ।

পৰ্যায়। অমবেতস, চূক্তে, **খত**ৰেধি গু সহস্ৰভূৎ।

তা। অভিশর আয়, তেদক, লঘু, আরবদ্ধি, বিজ্ঞানক, বোমাঞ্চ কারক ও কৃষা। ইহা দেবনে ক্রেরাগ, শূল, তার্ম, মৃত্রেরাগ, মলদোষ, স্লীহা, উদাবর্ত্তর, মৃত্রেরাগ, মলদোষ, স্লীহা, উদাবর্ত্তর, অনাহ, অফুচি, খাস, কাস, আজীর্ব, বিমি, কফজনোগ ও বাতব্যাধি নিবারিত হর। ইহার দ্বারা ভাগ মাংস অবীভূত হর এবং যে রূপ চলকাম দ্বারা লোহ সূচী দ্রব হর, ইহার দ্বারাও সেই রূপ হইরাখাকে।

চত্রর পঞ্চাররে।লক্ষণম্। অনুনেতন গ্রহার বৃহক্ষধীর নিধুকৈ:। ১তুরবুংহি পঞ্চানুং বীজপুর মুক্তৈর্ভবেং ॥ চতুরবু ও পঞ্চামু ।

অরবেডগ,, রুক্ষার, রুহৎ ক্ষর্ণীর ও নিখুক এই চারিচীকে একত্তে চতুরার

### দ্ৰব্যস্থানম।

বলে, উহার পৃথিত বীজপুরক মিলিত হইলে পঞ্চাল কহাবার।

#### ভিন্তিটা।

অমূকা চুক্তিকামীত চুক্তা দ্বৰাঠাপি চ। অমূ চ বিচিকা চিঞা তিবিভীকা চ তিবিভী ॥ অমূকামা ওক্তবিত্বরী পিশুক্তাপ্রকৃৎ। প্রকাস দ্বাপনী ক্লফা সংরোজা ক্ষবতিনুৎ ঃ

#### তেঁকুল।

প্র্যায় । অমিকা, চুক্তিকা, অমী, চুক্তা, দত্তশ্মী, আমা, বিচিকা, চিথা, তিজিড়ীকা ও ভিজিড়ী।

ত্ত্ব। তায়, তারু, বাত নাশক, পিত্ত জনক, কফ বছর্কি ও রক্তদোষ শিবারক। ইং। পকাবভাষ তাগ্লি দাপ্তি কারক, কুল্ফ, শুর, উষ্ঠ ও বাত্তশ্লেষ নাশক।

# কর্ম্বশ্বশ্ব

কর্মরক্ত হিমত গ্রাহি আহুত্ত কক্তাতকৃত।
কামরাজা।

ইহা শীতল, গ্রাহী, স্বাতু, অন্ন ও বাক শ্লেম কারক।

# ষ ড় বিং শতিভমোধ্যায়:।

भाकर्गः।

#### न्।कम्।

পত্রং পূলাং ফলং মালং কলং স্ংবেদ্ছং তথা।
লাকং ষণ্ডিবংগুদিউং গুরু বিদ্যাদ্যথোত্তর্য ।
প্রায় লাকানি সকানি বিজ্ঞানি গুরুনি চ।
স্কলাবি বধ্বজাংনি সৃষ্টবিন্ শাক্তানি চ।
লাক্ষ্য জিলভি বপুরন্ধি নিছভি নেকৃষ্

বৰ্ণ বিনাশয়তি ব্ৰহ্মধাপি কাক্ৰন্ ।
প্ৰজ্ঞাক্ষমক কুকতে গণিতক নুনন ।
হবি কাতি গ'ভমিতি প্ৰবন্ধি ভক্জা: ।
শাকেমু সক্ষেমু বসবি রোগাভেছেভবো দেহ বিনাশনায় ।
ভক্ষান বুধং শ'কবৈবৰ্জনক
কুৰ্যাভভাযেনু স এব দোষং ।
এতানি শাকনিক্ষানি বচনানি সামান্যামি ।
অধ শ'কেমু বিশিক্টানি বচনানি ॥

#### শাক।

পত্র, পুশ্প, ফল, নাল, কন্দ ও সংস্কেদজ এই ছ্য প্রকার শাক, ইহাদের মধ্যে পূর্বর পূর্বরী অক্তের। প্র পরটী অক্তের। প্র য় সমস্ত শাকই বিস্টান্তী, গুরু, রক্ষ, বছ-মল জনক এবং পূরীয় ও বায়ু নিঃদারক। শাক ভোজনে দেহ, আন্ধি, নেত্র, বর্ণ, রক্তর, প্রজ্ঞা, প্রজ্ঞা, স্থাত ও গতি এই সম্দারই নত্ত হা এবং কেশাদি পুক্ হয়। শাক সম্পায় রোগের আবাদ স্থান, শাক দেহ ধবংধের হেডুভ্ত আতএব শাক ভোজন প্রিব্যাণ করিবে, অয় ভোজনেও এইরূপ দেয়ে জানিবে।

শামান্তঃ শ'কের এই সমুদার দোষ বিজি হইল, কিন্তু বিশেষ বিশেষ শাকের বিশেষ বিশেষ গুণ আছে জানিবে। নিয়ে তদু বিষয় লিখিত হইতেছে।

शड़ना*।**नि**।

व कुक इस्म्।

বাসুক্ বাস্তক্ষ্সাথ ক্ষারপত্রক্ষ লাকর।ই।
তদ্বেত্ বুহু পত্র রক্ত সাথ গৌডবাস্ক্রম ।
প্রায়শো যবনধ্য সান্যবলাক ষত্ত স্মৃত্য ।
বাস্ত্রক দ্বিতয় বাদু ক্ষার পাকে কট্ দৃত্র ।
দ্বীপন পাচন স্কাস আয়ু প্রক্র বলপ্রচ্য ।
সর্ব প্রায়শ্লাক ক্রিয়াল পিত্রক্র ক্রিয়া প্রায়শ্লাক বলপ্রচ্য ।

### বেতুয়া ও খেত বেতুয়া শাক।

বাজুক, বাজ্বক, ক্ষারপত্র ও শাকরাট এই গুলি ইহার পর্যার। যে বাজুক রক্তবর্ণ ও বৃহৎ পত্র বিশিষ্ট তাহাকে গৌড় বাজুক কহে। বাজুক শাক প্রায় মবের মধ্যে হইয়া থাকে এই নিমিত্ত ইহাকে যব-শাকও বলে।

গুণ। বাস্তৃক দান স্বাচ, ক্ষার, পাকে কট্, অগ্নিদীপ্তি কারক, পাচক, রোচক, লঘ্, শুক্তা জনক, বলকর, সর ও ত্রিদোষ নাশক, ইহা ভক্ষণ করিলে সীহা, পৈতিক অর্শঃ ও ক্রিমি নষ্ট হয়।

#### পোত্রী।

পোতক্)পোৰিক। সাতৃ মালবামৃতবল্লরী। পোতকা শীভল। স্মিঞা শ্লেম্বলা বাতপেতনুং । অকঠা। পিচ্ছিলা নিম্রা শুক্তদা রক্ষপিক্তিব। বলদা ক্ষচিকৃৎ পথা) বৃংহণী তৃপ্তিকারিণী। পুইশাক।

পোত শী, উৎপাদিক। মালবা ও অনুভবল্লবী এই গুলি ইহার প্রয়ায়।

গুণ। ইহা শীতল, প্রিগ্ধ, শ্লেষ জনক, বার্ণিত্ত নাশক, কঠের পক্ষে অপকারক, পিছিল, নিদ্মাকারক, শুক্ত জনক, রজ-পিত্ত শান্তিকর, বলকারক, রোচক, পথ্য, পুষ্টকর ও ভৃথিকারী।

### मादियः

ষারিষো বান্সাকো মার্থ্য মেডো রক্তন্য সন্ত্র।
মারিষো মধুরং দীজো বিক্তি পিতানুৎ প্রক্ষঃ
বাওলের করে। রক্তপিতানুৎ বিষমাগ্রিকিং।
রক্তমার্থো প্রক্রাতি সকারো স্বর্গ্য সরং।
স্বেদ্ধায় কটুকং পাকে স্থাপেরে উন্নিরিজঃ।

(चेक कें। हो नटि 'S माम कें। हो नटि ।

মারিষ, বাষ্পক ও মার্য এই গুলি ইছার পর্য্যায়। খেত ও লোহিত এই হুই বর্ণের মারিষ দৃষ্ট হয়।

গুণ। খেত কাঁটানটে মধুর, দীতল, বিষ্ট টী, পিত নাশক, গুরু, বাত দ্বোরাকারী, রক্তপিত নিবাবক ও আগ্র বৈষম্য নাশক। লাল কাঁটানটে অধিক গুরু নতে, ইত্ কার গুণ বিশিষ্ট, মধুর, সর, কফ জন্ক, পাকে কটু ও হল্ল দোব বিশিষ্ট।

### ए पुन्ति ।

ত জাগো নেঘনাদ্য কাণ্ডের ছত্ত সেরকঃ। ভণ্ডীর ভণ্ডলী সীজো বিষয় শ্চাম্পে মারিষা। ভণ্ডলীয়ো লঘ্য শীভো ক্লফা শিককফাফাজিং। সৃষ্টমুক্ত মধ্যো ক্লেচা। দীপনো বিষয়েরকঃ।

#### नदियाक ।

ততুলীয়, মেঘনাদ, কাণ্ডের, তঙ্গে-রক, ডড়ার, কড়ুশী বীজ, বিষয় ও অক্স মারিব এই গুলি ইহার পর্যায়।

গুণ। ইহা লবু দীতল রক্ষ, পিত শ্লেম নাশক, রক্তদোষ নিবারক, মল মৃত্র নি-সারক, রোচক, অগ্নি কারক ও বিষয়।

#### शनका।

পলক্যা বান্ধকাকারা চ্ছ রিকা চীরিওজ্ঞ্না। পলক্যা বাতলা লীডা প্লেল্মলা ভেবিনী প্রকৃত । বিউচ্চিনী মনুশাস পিওরজ্ব ক্লাপছাঃ।

### शानवमाक ।

ইহা দেখিতে ৰাজুক খাকের ন্যার, ইহার অপর নাম ছুরিফা ও চীরিতক্লো। গুৰ। ৰাষ্ট্ৰনক শান্তল, কলবৰ্জক, ভেদক. গুৰু ও বিষ্টপ্তী। ইহা মদবোগ, শাস, রক্তপিত ও কলনাশ করে।

# माफिक्य ।

নাষ্ট্ৰিক কালগাকক আত্মণাকক কালক। কালগাক সরং ক্লচাং বাতকুৎ কক্ষণার্থ ছং ॥ বলাং কুচিকুর মেধাং রক্তাপন হরং হিনম্।

নালিত। শাক। ভিক্ত পাটশাক।

নাড়িক, কালখাক, প্রাদ্ধশাক ও কালক এই গুলি ইহার পর্য্যার।

তা। ইহা সর, কচা, বায়জ্ঞনক, কফজ শোপ নাশক, বলকর, কুচিকারক, শারণশক্তিবর্দ্ধক, রক্তপিত নাশক ও দীজল।

### शक्तेनाकः ।

পট্টশাকন্ত নাড়ীকো নাড়ীশাকন্চ সন্মৃতঃ। নাড়িকো রঙ্গপিতছো বিউভী বাতকোপনঃ।

### मिष्ठे भारेमाक।

পট্টশাক, নাড়ীক ও নাড়ীশাক এই গুলি ইহার পর্যার।

তা। ইহা রক্তপিত নালক বিষ্টণ্ডী ও বায়ু প্রকোপক।

#### कमश्री

समधी मस्त्रभा । स्वाह्य समूत्रभा वर । समधी सम्प्रण (आका मधुन्न। व्यवस्थातिको ॥

#### क्ल्या नाक।

ইহার অপের নাম শতপক্ষী।

তথা । স্তনে তৃড়োৎপাসক বধুর ও
ভক্তকক

#### त्मानि दृश्द्यानी।

লোনা লোনী চ ক'বাঙা বৃহজ্যোনী তু যোটিকা। লোনী কফা আনুতা একটি বাতলোগছাই পটুঃ ঃ অন্ত্ৰী দীপনী চামা কলা'গ্ৰ বিষনা'লানা। ঘোটিকামা সৱা চে'ফা বাতক্থ কফাপিৱ হুং । বাগ্ৰোৰ এন গ্ৰন্থী খাস কাস এমেইনুথ। লোগে গোচন রোগে ৮ বিভা তফ্তো ক্ৰ'ছতাঃ

हिनी बावडी, वड़ बावडा।

লোনীর অপর নাম লোনা, বৃহৎ লোণি ও ঘোটকা কহে।

গুণ। কৃষ্ণ, গুরু, বাতপ্রেশ্ন নাশক, লবণাখাদ, অর্শোদ্ধ, অপ্লিকারক অনু, অপ্লিমান্দ্র নিবারক ও বিষয়। বোটকা (বৃহৎলোণি) অস্লরদ, দর, উষ্ণু, বায়ু-জনক ও কফ পিন্তনাশক। ইহা বাক্য দোব, ত্রণ, গুলুম, খাদ, কাদ, প্রমেহ শোধ ও চক্ষুরোগ নিবারণ করে।

### তুকিকা।

চুক্রিকার্যাং তু পত্রাপ্রা রোচিনী শশুবোধিনী।
চুক্রা ত্বল্ল তরা বাদ্দী বাতল্পী কন্দপিতকৃৎ ।
ক্রচ্যা লঘুবরা পাকে কট্টীচ নাভি রোচনী।

### **ह्काशामम**।

চুক্তিকা, পত্ৰায়, রোচিনী ও প্ত বোধিনী এই ওলি ইয়ার সংস্কৃত নাম। তা। ইহা অভিশয় অন্ন, সাত্, বারু নাশক, কফপিত্তকারক, ক্লচা, অভিশর লঘু ও পাকে কটু ইহা অধিক রোচক নহে।

किया। नाकी वर।

চিঞা চঞ্চক কী চ দ্বেপতা সহিক্তন। চুকুং দীড়া সর: কুচ্যা দ্বাদ্বী দেবিত্রগ্লেছা। ধাতু পুটিকরী বল্যা বেধ্যা পিচ্ছিলকা চ সা।

शिकी (5र ना।

চিঞা, চঞ্চু, চঞ্চী, দীর্ঘণতা ও সভিক্তকা এই গুলি ইহার পর্যায়।

গুণ। ইছা দীতল, সর, রুচা, স্বাদ্, ত্রিদোষ নাশক ধাতু পুষ্টকারক, বল কর, মেধা বর্দ্ধি ও পিচ্ছিল।

हिन्द्याहिक।।

ব্রাক্ষী শব্ধধরা চারী ব্রাক্ষী চ ছিলংঘাচিকা। শোরণ কুইণ কফণ পিত্তণ ছঙ্গতে ছিলংঘাচিকা।

क्षिणाक ।

ব্ৰান্ধী, শৃষ্ণধুৱা, চাৰী, ব্ৰান্ধী ও হিল-মোচিকা এইগুলি ইহার প্রয়ীয়।

তা। ইহা শোধ, কুঠ, কফ ও পিত্ত নাশকরে।

শিভিবাবঃ।

विश्विताः विश्वितः वृश्विकः मृतिवः कः ।
श्वितात्रकः मृत्वितः भर्षकः कृत्व हैः (वर्ष) ।
शास्त्रते मृत्र भर्षकः कृत्व हैः (वर्ष) ।
शास्त्रते मृत्र भर्षकः कृत्वित्वः ।
शास्त्रते स्वाद्यां स्वादः ।
श्वित्वादः ।

### खखि बाक।

শিভিবার, শিভিবর, শভিক, শুনি-বরক, শ্রীবারক, স্চিপত্ত, পর্বক, কুকুট-শিবী, চতুর্কল ও চতুঃপত্তী এই ওালি শুন্তিক জন্মিরা থাকে। ইহার পত্ত আমরুল শাকের পত্তের ন্যার।

তাণ। ইহা শীতল, গ্রাহী, মোহনাশক, ত্রিদোষয়, অবিদাহী, লঘু, স্বাছু,
কষার, কৃষ্ণ, অমিবর্দ্ধক, রুষ্য ও রোচক।
ইহা জর, স্থাস, মেহ, কৃষ্ঠ ও ভ্রমরোগ
নিবারণ করে।

मृलक शत्म ।

পাচন প্ৰ ক্ৰচে) আৰু প্ৰং মুলকক্ষণ মবন্। থেছ লিক্ষণ বিজ্যোগয় মলিক্ষণ ক্ষপিৰ কুৰু ই মূলার লাকে।

নৃত্যন মূলক শাক পাচক, লঘু, ক্লচ্য ও উষ্ণ, ইহা স্বেহ অর্থাৎ তৈলাদির সহিত নিশ্ধ হইলে ত্রিদোষ নালক হয়, অসিক অবস্থায় কম্বনিত কারক।

্ দ্ৰোৰপুষ্পী পত্ৰমৃ।

দ্রোবপুজ্পীদলং যাদু ক্লজং গ্রন্ত চ পিছবুৎ। ভেগনং কাষলা লোগ্য দেহত্তর হরং কটু ৪

चलचित्रा भाकः

ইহা স্বাভূ, কুক্ষ, গুৰু, পিত্তকারক কটু ও ভেদক, কামলা, শোব, মেহ ও জনবোলে ইহা বাবস্থের।

गवानी शतम्।

ষবাৰী পাক মাপ্ৰেয়ৎ ক্লয়াৎ বাভককপ্ৰাৰ্থ। উক্তৎ কটু চ ডিক্তৎ চ পিৰজং গৰ শূলহুৎ ৪

### रगात्रारनत्र शख ।

যবানীশাক আপ্লের, ক্রচা, বাতশ্রের-নাশক, উঞ্চ, কটু, তিক্তন, পিত্তকারক, লঘু ও শূলবোগ নিবারক।

#### ठळ्यकः।

দক্তল্পত (ধাৰল ম্যবাতক্তাপ্ছম্। কণুকাৰ ক্ৰিমি খাৰ দক্ত কুট প্ৰবুল্ল ।

#### চাকুন্দার পত্র।

চকুন্দার পত্র দোষত্ম, অন্ন, লঘু ও বাতভোগ্ন নাশক ইহা কণ্ড্, কাস, জিমি, খাস, দক্র ও কুঠবোগ নাশকরে।

#### (मर्डा।

সেক্তস্য স্থাপ ভীক্ষণ দীপনা রোচনা হরেছ। আগ্নানাভী কিকা গুল্ম শুল শোলোদ্রাবি চ॥

### ম্নসালিজের পত্র।

সেত্ত্বপত্ত জীক্ষ, অগ্নিবর্দ্ধক ও রোচক। ইহা আগ্নান, অন্ধীলিকা, গুল্ম, শুল, শোথ ও উদর রোগ শান্তিকরে।

# পপ্ন টিঃ।

পপেটো হতি পিত্তাস্ত্ৰ জয় তৃত্তা কক্ষমান্। সংগ্ৰাহী দীউল ভিজো দাহনুম্ভলে লয়ুঃ ঃ

# ক্ষেত্রপাপড়া শাক।

ইহা সংগ্রাহী শীতল, তিব্রু, দাহ নাশক, বাযুক্তনক ও শঘু; রক্তপিত্র, জ্বর, ভূফা, কফ ও ভ্রমবোরে ইহা প্রয়েজ্য।

# গোজিহ্বা।

त्यांविष्यां कृषे त्यशंक्ष कृष्यं वह वहीजवः।

### शिमी शिक्षित्रा भाक ।

গেজিহবা শাক লঘু ইহা কুঠ, মেহ, রক্তদোহ ও কঠিন জর নিবারণ করে।

### পটোলপত্রম্।

পটোলগত্র। পিডরুৎ দীপন্থ পাচন্দ্র। বিধ্বং সুদ্বাং ডলোভঞ্জুর কার্স ক্রিমিপ্রপূৎ ।

পটোল পত্র, পল্তা।

পটোলের পত্ত পিত্তর, অগ্নিকারক, পাচক, লনু, স্থিয়া, শুক্তজনক, উষ্ণ, ভ্রবর, কাসনিবারক ও ক্রিমি নাশক।

# গুড়্চীপত্তম্।

ও চূচী পথ মার্যেয়াৎ সর্কাজর হরৎ কছ। কথায়। কটু তিজ্ঞ স্বাদুপাকৎ রসায়নন্ । বল্যমুক্তকণংগ্রাহি ছন্যাংগোষত্রমংভূবান্। দাত প্রথম বাভাসূক্ কামলা কুঠ পাডুভান্।

### গুল্ফর পাতা।

গুড় চীপত্র আথের দর্কজ্ঞর নাশক, লঘ্, কষার, কটু, তিজ্ঞ, রদারণ, পাকে সাত্, বলকারক, উষ্ণ, দংগ্রাহী, ভ্ষা নিবারক ও ত্রিদোষয়। ইহা দাহ, প্রমেহ, বাজরক্ত, কামলা কুষ্ঠ ও পাতৃ-রোগ শান্তি করে।

# काममकः।

कामगर्त्साव्हिमर्सन्त कामाहिः कर्तन स्वा । कामगर्सस्कः क्रवाः वृष्णः काम विषासन् ॥ मधुतः क्ष्मबाज्यः लाहसः कर्षानायसम्। विष्णवद्यः कामकतः लिक्षम् अध्यः मधु ॥

#### कान काञ्चरमञ्ज लाका।

কাসমর্দ, অরিমর্দ্ধ, কাসারি ও কর্কশ এই থালি কাল কাস্থলের সংফ্ ত নাম। ইহার পত্র রোচক, বলকারক, বিষয়, রক্তদোষ নিবারক, মধ্র, বাতশ্রেম, নালক, পাচক, কুষ্ঠ বিশোধক, পিওছ, গ্রাহক, লযু ও উৎকৃষ্ট কাসম।

#### চনকপত্রম্।

ক্ষচ)ঋণক শাক্ৎস)াদ্ দুৰ্ক্তরং কক্ষৰাভকুৎ। জন্ন\ বিক্টজনক\ পিত্যুদ্ দৰ্শোগ্ডং ঃ

#### (छ लात माक।

ইহা ক্লচা, সহজে জীর্ণ হয়না, বাজ-শ্লেক্স বন্ধ কি, জ্ঞান, বিষ্ঠ ষ্টী, পিত নাশক ৩৪ দ্সুশোগ নিবারক।

#### " কলার পত্রম ।

কলায় শাক্ষ ভেমি স্যাল্লয়ু ভিক্তৎ বিদেশ্য জিং। মটর শাক্ষ।

মটর শাক ভেদক, শব্, তিক ও তিদোধ নাশক।

### মধ্পণত্রম্।

কটুকং সার্গপৎ শ'কং বজমূত্র মলংগ্রন্থ। অস্লপাকং বিহাতি সাকুষ্ণং ক্রমেং ক্রিনে।বলিৎ ঃ সঞ্জারং লবনং ভীক্ষং স্বাদু শাকেয়ু নিশিত্ত।

# मदिवामाक ।

দর্শপাক কটু, বহু পরিমাণে মল মৃত্র নিঃদারক, গুড়া, পাকে অম. বিদাহী, উষ্ণ, কুক্ষ, ত্রিদোষ নাশক, ক্ষার গুণযুক্ত, লবণাযায়, ভীক্ষ ও সাহ। শাকের মধ্যে ইহা নিকৃষ্ট।

### छाथ भूक्मनान।नि ।

व्यवस्थित्रकाम् ।

অগভি কৃষুদ্রং লীভং চাতুর্যকলিবারণম্। নজাক্যনাশনং ভিন্তং ক্ষয়েং কটুলাকি চ । পীনস ভোগ্র লিভয়ং বাতস্থং মুনিভির্যতন্।

### दकसूत्र ।

বকজুল শীকল, চাতুর্থক জর নিবা-রক, রাত্রাহ্মা নিবারক, ভিজ্ঞ, কবার ও পাকে কটু। ইহা পীনস, শ্লেমা, পিজ ও বায়ু মাশকরে।

### कमभी भूष्मम्।

ক্ষুত্র কৃষ্ম থিকে মধুর পুসর ওল। বার্ডপির হর শীত রক্ত শিক্ষক্ষ প্রশৃৎ । বছর্মাপদ ক্ষ্য অক্সূত্বলবর্জনম্। মোটা।

ইহা স্থিয়া, মধুর, ক্যার, গুরু, শীজল, কুক্রেজনক, বলকারক ও জনা। ইহার হারা বায়ু, পিভ, রক্তশিত, ক্ষার রোগ ও বত্যুত্র উপশ্যিত হয়।

### (भाजाक्षम भूष्णम् ।

লিখে: পুতাৰ কটুক ভীকোত যায়ু-

ক্রিমিছং ক্ষুণাত্ম ছিদ্রখি সাইগ্রন্থিৎ । মধুশিরো স্থাক্তিতেৎ রক্ষণিত প্রাচন্দ্র ।

# मिकामून ।

শোভাঞ্বন পূস্প কটু, ভীক্ষ, উষ্ণ, ক্রিমিয় ও বাভয়েয় নালক। ইহা সায়ু-শোল, বিভাগি, প্লীগা ও গুলা বোগা দমন করে। মধুশিতাপুস্প চক্ষের স্বাস্থ্য কর ও রক্তপিত নিবারক।

# ख्य कन्नाकानि।

कृषा ७ म् ।

কুলাও৲ সাংগুলা ফলং পতিগুলাং বৃহৎফলম্ : কুলাওং বৃংহণং বৃষাং প্রক্ল পিতান্ত্র সাতনুৎ । বালং লিতাপতং লীতং মধ্যমং কফক'রকম্ । বৃদ্ধং নাতি হিমং খাদু সক্ষারং দীপনং লগু ॥ বঙ্জিন্তবিকরং চেডোরোমছং সঞ্চনেম্ভিছ।

### কুখাত, দাচি কুমুড়া।

পর্যার। কুমাত, পুস্ফল, থীত-পুস্প ও রুহৎ ফল।

ওপ। কুমাও পৃষ্টিকারক, রুষা, গুরু পৈত্তিক বাজরক নাশক। কচিকুমড় শীতল ও পিত্ত নাশক, মধ্যমাবছার কফ বর্দ্ধক, পরুকুমাও অধিক শীতল নহে. স্থান্ন, ক্ষারগুণ বিশিষ্ট, অগ্নিবর্দ্ধক, লঘু ও বস্তি শুদ্ধি কারক, মান্সিক রোগ নাশক ও সর্বাদেষ্ম।

### क्या है।

কুমাণ্ডা ডু ভূগৎ সম্বী কর্কাঞর পি কার্ডিডা। কর্কার প্রাহিণী দীভার কশিষ হরা ওক্তঃ । পরা ডিকাগ্রি স্কন্মী সন্ধারা ক্ষণাতনুহ।

लान गार्डक्यइ।।

কুরাতীয় অপর নাম কর্কারু।

তাণ। ইহা অভিশয় লঘু, তাহী, শীতল, রজপিত শান্তিকর ও তার পকাবস্থায় তিজ, অগ্নিকারক, কারতণ বিশিষ্ট ও বাতশ্লেগ্ন নাশক।

পীতকু মাওম্।

অপর৲ পাতকুলাওং গুলু পিতৃকর্ম পর্য : অগ্রিয়াল্য করা যাতৃ লেক্সল্প বাত্তবোশনন্ ঃ

# বিলাতিক মড়।।

অপর প্রকার ক্মাণ্ড অর্থাৎ বিলাতি ক্মাণ্ড গুরু, সাতু, পিত ও অগ্নিমান্দ্য-কারক, শ্লের নাশক ও বায়ু প্রকোপক:

### ज्ञनातुः।

অল'বুং কলিতা তুখী ছিলা দীয়া চ বর্ত্তলা। দিউদুদী ফল\ জন্ম পেকস্লেলাপহিৎ গুরু । বুন্যা ক্লচিকর্ম হোজে ধাতুপুঞ্জি বৈবর্ত্তনন্।

#### लाडे।

ইহার সংস্কৃত নাম অলাব্ ও তুরী। ইচা তুই প্রকার দীদ ও বর্জুল মিষ্ট অলাব্ হৃদ্য, পিত্তশ্লেম নাশক, গুরু, রুষা, রুচিকারক, বাত্তপাষক ও পুষ্টকর।

# हे भागा महा

ইক্লুক: কটুতুমী স্যাৎ সাজ্মী চ যহাক্ষা। কটুতুমী হিমা হ্ৰা পিত্তকাস বিষ পহা । তিকা কটুতিপাকে চ ব'তপিয় ক্ষর'র কৃৎ।

### जिल्लाडे।

ইহার সংস্কৃত নাম ইক্ষাকু ও কটু-ভূমী, ইহার কল গতি রহং ।

ভিতৰাই শীত্ৰ, জ্বা, বিষয়, ভিক্ত ও পাকে কটু। ইহা গৈভিক কান ও বাত গৈভিক জব দমন করে।

#### अर्राक्रः ।

कर्ताकः कर्तने त्थाका करात्व छन्द्रना कर । कर्तने नीडना क्रका आधिनी स्पूरा स्कः १ क्रां शिक्या माना भका ठुकांच्रि निस्कृर ।

# कंक्ष

কাকুড়ের সংস্ত নাম এর্কারুও কর্কটী।

গুণ। অপক কাঁকুড় শীতল, রক্ষ, গ্রাহী, মধুর, গুরু, রুচা ও পিওয়, পকাবছার তৃষ্ণা, অগ্নি ও পিওবদ্ধনি করে।

#### f5/5 3: 1

চিচিতঃ খেতরাজিঃ স্যাৎ সৃদীর্ঘো গৃহসুলকঃ।
চিচিতো বাত'পরয়ো বল্যঃ পল্যো রুচিপ্রদঃ র
লোখিলোইতি হিতঃ কিজিদ্ গুলৈ মুটানঃ
পটোলভঃ।

#### रिक्तिया।

প্র্যায়। চিচিও ক্ষেত্রাজি, কুদীর্ঘ ৩ গ্রুক্তক ।

তা। চিচিও বাসু শিত ন:শক, বলকারক, পথা ও ক্ষচি প্রদ, ইবা শোথ রোগীর পক্ষে অভিশয় উপকারক, পটোল অপেকা উভার তার কিঞিৎ কল্প।

#### कारदानद्वाः कारदारही ५ ।

কারবেলাং কটি বং স্যাহ কারবেল্লী ডাডো স্যুহ। কারবেলাং ছিনাং ভেদি লঘুডিজ নবাডলন্ । অরবিন কফাল্রপ্রাঞ্চলের ক্রিমীন্ ছরেছ। ডদ্রনাকারবেল্লা স্যাছিশেষা দ্বীপনী লঘুং ।

কাববেল কবোলা ও কারবেলা উচ্চা

কাণবেৱের অপর নাম কঠিল্ল ইহা অপেকা কারবেলী ক্ষুদ্র।

গুণ। কারবেল শীতল, ভেদক, লঘু, তিন্ত, বাহু বন্ধ ক নহে, ইহা হ্বৰ, পিত্ৰ, কন্দ, রক্তদোধ, পাঞ্চ, নেহ ও ক্রিমি নাল করে। কারবেলী অর্থাৎ উচ্ছার গুণও ঐ রূপ, অধিকন্ত উহা অধিবন্ধ ক ও লঘু।

#### मश्रकाय करी।

মন্তিক বাজকী প্রোক্তা ইতিযোগা মহাকলা। হানাগলো, ঘাৰকক ইতিপর্বক ক ক্তঃ। মহলেবাডকী বিজা ক্রক্সিকানিলাপ্র।

# धू भून ।

পর্যাধ। মহাকোষাতকী, হতিবোষা, মহাফলা, ধামার্গন, ঘোষক ও হস্তিপুর্ণ। ত্থা। মহাকোষাতকী ক্লিন্ধ, এক পিত লাস্তিকর ও বাব নাশক।

#### ताकदकामाकको।

धारायका भोडमुळी कालिमी कुछत्वधन। . इ.जटकायाङकी ८०० उटवास्मा इंग्लिमध्यभा ॥ आक्टकायाङकी चीडा अधुता क्यवाखना। भिड्यो मीमनी चाम क्यवकाम क्रिम सानूर ॥

### विका।

প্রাায়। ধামার্বব, পাতপুশ্প, জালিনী, ক্তবেধনা, রাজকোষাতকী ও রাজিমংকলা।

গুণ। রাজকোষাতকী শীক্ষপ, মধুর, বাতপ্রের বর্দ্ধক, পিত্তম ও অধিদীথি কারক, ইহা খাস, হ্রের, কাস ও জিনিদ নিধানণ করে।

#### भारतिकाः ।

পটোরা বুলকভিক্তা পাতৃকা কর্ত্বাচ্ছদা। রাজীফলা পাতৃক্ষো রাজের ভাষ্তাক্ষা । বীজগভঃ প্রতীক্ত কুঠ্ছা কাসকল্পনা। পটোলং পাচনং ছ্ডাং বৃষ্যং লখ্যিদীপনন্ । স্থিক্ষাক্ষং ছব্দ কাসাম্র ক্ষার বেশান্ । পটোলসা ভবেদাুলং বিরেচন করং স্থাৎ ॥ ন'লং স্নেদ্র ছরং পত্রং পিস্তছারি ফলং পুনঃ। দে'বত্রমু ছরং প্রোক্তং ভছ্তিকা পটোলিকা।

#### भरहाम ।

পর্যায়। পটোস, কুলক, তিক্ত, পাতৃক, কর্কণছদে, রাজীফল, পাতৃফল, রাজেয়, অমৃতাফল, বীজগর্হ, প্রতীক, কুঠহা ও কাসভঞ্জন।

র্থণ। পটোল পাচক, এব্য, র্বা,
লঘু, অমিদীপ্তিকারক, স্লিগ্ধ ও উষ্ণ।
ইহা কাস, রক্তদোব, জ্রর, ক্রিমি ও বিদোব নস্ত করে। পটোবের মূল উংকৃষ্ট বিরেচক, নাল (ডাটা) কফর, প্র পিতনাশক, ভিক্ত পটোলিকাও এই

### विश्री।

বিখী রক্ত কৰা তুওী তুৰিকেরী চ বিধিকা।, ওঠোপনাকলা প্রোক্তা পালুপনী চ কথাতে । বিধীকলা ঝাবু দাতা গুরু পিকাজ বাত ছং। বুজনা কেবনা প্রচাম বিবন্ধাধানকারকন্।

### কুশ কুকা।

পর্যার। বিশ্বী, রক্তফলা, তৃতী, তৃতিকেরী, বিশ্বিকা, ওচোঁপম ফলা ও পীলুপনী ।

গুণ। বিদ্বীফল স্বান্ত্র, শীকল, গুরু, রক্তপিত্ত শান্তিকর, বার্নাশক, তাস্তন, লেখন, রুচা এবং বিবন্ধ ও আধান কারক।

#### भिक्षीक्षम् ।

লিহিঃ শিশ্বী পুশ্ধলিবীতথা পুস্তকলিহিকা। লিহী মুয়ক মধুরৎ ব্লাসে পাকে হিমৎ গুদ্ধ ৪ বল্যৎ হাছদরৎ প্রোক্তৎ দ্বেম্মনৎ হাতপিওজিৎ ৪

খেতশিম ও মোগলাই শিম। শিধী ছুই প্রকার প্তাশিধী ও পৃত্তক শিধিকা।

তাণ। শিশারর আখাদেও পাকে মধুর, শীভল, তারু, বলকারক, দাহকর, কফজনকও বাব্পিত্ত নাশক।

#### (कालिशिवः।

কোল শিবিঃ কৃষ্ণকলা ওধা পর্যাহ্পটিকা। কোলশিহ্য সমীর্ম্মী এবুঁ)ফা কফপিন্দকৃৎ । শুক্রাগ্রি সাধ্কৃৎ বুষ্যা ক্লচিকুৎ বদ্ধবিভ্ঞক্ষঃ।

क्र्स्विम । हिन्ही च्रुवतः (मधी।

পর্যার। কোলশিন্ধি, কৃষ্ণফলা ও পর্যারপট্টিকা।

গুণ। কোলশিম্ব বারুনাশক, গুরু, উষ্ণ, কফপিত্ত কারক, শুক্তক্, স্কারী, অগ্নিমান্দ্য কারক, হ্যা, রুচি কারক, মল-রোধক ও গুরু।

# त्नि। श्रम्भनम्।

লোভাঞন কলং খাদু কথায়ং ককণিভনুৎ। শূক সুঠক্ষয় খাদ গুলু ক্দীপনং পরুষ্ ৪৯

# শক্তিনার ডাটা।

ইহা স্বাহ্, ক্ষার, পিন্তপ্রেম্ম নাশক ও অতিশর অমিদীপ্তি কারক, শূল, কুঠ, ক্ষরেমান, স্বাস ও গুরুরোনে ইহা প্রায়েজ্য।

### वार्खाकुः ।

বুধাক জী জু বার্ত্ত ক্রীকী ভান্তিকাপি।
বৃহাক বাপু তীজোজ কটুপাক বপিভলবু।
করবাত বলাপত্র হিপন হাজল লয়।
ভয়াক ক্রিপাবস্থা বৃদ্ধ পিকল্প লয়।
ভয়াক ক্রিপাবস্থা বৃদ্ধ পিকল্প লয়।
ক্রেপেনেনেনিনামর মত্যতা লয়ক্পনন্ ।
ভনেবহি গ্রন্থাক স্ত্রাত লবনাবিভন্।
অপর খেত বৃহাক ক্র টাত সমত্তবেং।
ভর্পান ক্রিপাব্র ।

### বার্ত্তাকু, বেগুৰ।

বৃস্তাক, বার্ডাকু, ডণ্টাকী ও ভণ্টিকা এই গুলি ইহার শংস্ক ত নাম।

ত্তান স্থাত, তীক্ষ্ণ, উষ্ণা, পাকে কট্, জরন্ন, বান্ধু নাশক, কফন্ন, অন্ধিদীপ্তিকারক, ভক্তজনক ও পব্, ইহা পিত জনক নহে। কচি বেগুন কফপিত্তনাশক, পকাবস্থান্ত পিত্তকারক ও পথ্, দগ্ধ করিলে কিঞ্ছিৎ পিত্তকর, কফন্ত, মেদ্বোহাস কারক, বাস্তু ও আমানাশক, অতিশার পথ্ ও মন্ধি বর্ধক হর। দগ্ধবার্ত্তাকু পরণ কৈলের সহিত্ত সংস্কৃক করিলে ওক্তক ও লিগ্ধ হর। অপর একপ্রকার বেগুন সাছে ভাষা খেত বর্ণ ও কৃক্টের অভের নাান, ঐ বেগুন আর্শো রোগে বিশেষ উপকারক, কিন্তু অন্যান্য বিষয়ে পূর্ব্বোক্ত বার্ত্তাক্ত্র হুইতে হীন গুণ।

### ডিভিলঃ।

ভিতিখো রোমশ ফলো মুনিনির্ফিত ইতাপে। ভিতিখো ক্লচিক্ছেখা পিরস্লেখাপথঃ ক্লৃতঃ। সুশীতো বাজনো ক্লেয়ে মুরস্কাশ্রমী ধরঃ।

### टिंद्याण विद्णात ।

পর্যায় : /ডবিজা, রোমালফল ও মুনিনিশ্বিভ ।

ত্ব। ইহা ফ্রিকারক, ভেলক, কফ্-পিত নাশক, সুশীন্তন, বায়ু জনক, রক্ষ, মৃত্রুপ ও আখারী নাশক।

### পিতারম্।

(यम नाक विदल्यः।)

পিতারং শীক্রম। বলাং পিশ্বস্তুণ ফুচিকার্ক্রম্। পাকে মতু বিশেষের বিষক্তি করং স্মৃত্যু ।

#### পিতার।

ইহা শান্তল, বলকারক, পিত্তনালক, ফুচি কারক, শ্রুপাক ও অভিশয় পিত্তর।

### करका हिका।

करकांगिका शिक्ष्युष्णा सद्याकांभी कि chibico। करकांगि समझ क्षेत्रज्ञामामाक्रांकां । चाम काम खड़ास् इन्धि कहुँशाका ह पोशसी।

### काकदबाला

পর্যায়। কর্কোটকা, পীতপুশা ও মহাজালী।

গুণ। ইহা মলনাশক, পাকে কটু ও অল্লিদীপ্তি কারক। ইহা কুঠা, জ্লাস, অক্তি, ধাস, কাম ও জর নিবারণ করে।

### ट्यांडिका।

ভোডিকা বিষয়্টিক ভোডীতাপি সুমুখিকা। ভোডিকা পুডিবা ব্ৰুয়া ক্লচা বহিংমবালয়ঃ । হঙি পিয় কডাৰ্লাপনি ফিনি গ্ৰুম বিষাময়ন। हिन्मी विषदमाष्ट्रि, कदबक्रमा।

পর্যার। ডোডিকা, বিষমুষ্টি, ডোডী ও সুমৃষ্টিকা।

গুণ। ডোডিকা পৃষ্টিকারক, বল-প্রদ, রোচক, আগ্নিগ্রিক ও লঘু। ইহা গৈতিক ও গ্লৈগ্রিক অর্শঃ, ক্রিমি, গুলা ও বিষক্ত পাঁড়া বিবারণ করে।

क कि का भी कलम्।

करोजाही यमः डिक्कः कृतिः वीशूनः वयः। सरकाकः यामकामञ्चः खहानिम कवारीवम् ॥

কণ্টকারীব ফল।

কণ্টকারী ফল জিব্রু, কটু, আগ্নি-কারক, লখু, রূক্ষ ও উষ্ণ। ইহা খাস, কাস,,জ্বর, বারু ও কফ দমন করে।

অथ नान माकानि।

मर्भगनालम् ।

कीरकाकार मार्चभर मान्य वास्त्रका उनाभवम्। कृष्टीम वद्या एक क्षेत्रा स्टिकाहरून्॥

मविवात छाँछ। ।

দর্যপ নাল ভীক্ষেত্রে, বমন নিবারক ও ক্রচি কারক। ইহা বারু, লেমা, এগ, কণু, দক্ষ ও কৃষ্ঠ রোগ নাশ করে।

क्षणाका न।

क्ट्रबनः ।

मृत्रनः कम धनक कम्मालाश्र्रणीय वेखानि । मृत्रावी मीनाता क्रका कवायः क्ष्कु क्र कट्टेः । विकेकी विनादा क्रका कवार्यः कृष्टवा समृतः। বিশেষা দর্শদে পশ্বাঃ প্লীছ প্রান্ন বিনাশনঃ । স্কোষাৎ কন্দাকানাৎ স্রবঃ স্প্রেট উচ্চতে। দক্ষনাৎ রক্তপিস্তানাৎ কৃষ্টিনাৎ ন ছিতো হৈ সং । সন্ধান যোগৎ সম্প্রাপ্তঃ স্রবো প্রবংষরঃ।

18 P

পর্যায়। শ্বণ, কল, ওল, কলল ও অর্শেয়।

গুণ। স্থান অধিদীপ্তি, কারক, রক্ষ, কষায়, কণ্ডকারক, কট্, বিষ্টমী, বিশদ, রোচক, কফার্শোনাশক, লঘু, অর্শো-রোগীর অভি স্থপথা এবং প্লাহা ও গুলানাশক। সমুদায় কল্দশাকের মধ্যে স্থান শ্রেষ্ঠ, দক্ষিত স্থান অধিক গুণ কর। দক্ষ, রক্তপিত ও কৃষ্ঠ রোগ সত্তে স্থান ভক্ষণ নিষ্ক।

### का ज्याम्य।

(আরুকমপালুকং ওং কথিওম্ ।
ক'ঠাপুক শঞালুক হস্তাালুকানি কথাতে।
শিশালুক সপ্তালুক রক্তালুকানি চোক্রানি ॥
আলক শীতলং স্থাং বৈউদ্দি মধুরং এক।
সৃত্যুর মলং রক্তং পুরুরেং রক্তাপ্তনুর ॥
কক্ষানিক কয়ং বক্তাং বুৰাং স্থাণাগ্রবর্ত্তনন্ত্র

# আলু !

আলুব সংস্কৃত নাম আরুক ও আলুক। আলু ছর প্রকার যথা কাঠালুক, শমালুক, হস্ত্যালুক, থিঞানুক, সন্থালুক ও রক্তা-লুক।

কাঠালুক (কাঠ আলু হিন্দী কঠালু) কঠিন শঙ্খালুক ( দাঁব আলু হিন্দী শঙ্খাকু) স্বেড়বৰ্ণ, হস্ত্যালুক দীৰ্ঘ ও স্থল, পিঙালুক গোলাকার, সপ্তালুক, মিষ্ট ও রোম বিশিষ্ট এবং রক্তালু ( লাল-আলু ) লালব ।

ওণ। সমুদাব আলু দীকল, বিষ্টণ্ডী মধ্ব, গুরু, মলমূর নিঃসারক, রুক্ষ, তুর্জুর, রক্তপিত শাভিকর, বাতপ্রের বর্ধক বলকারক, শুক্রে জনক ও কিঞ্ছিৎ অ্মি বর্দ্ধক।

# खाःमूर्भे।

রক্ত'লুক ভেবে প'টিং। তম্বী চ প্রনিভারকী। আল্ক' বলকং মিধ্যা গুদ্ধী হৃৎকফ্মাশিনী ঃ বিফক্তকারিনী তৈলে লালিডাতি ক্রচিপ্রদা।

লাল আবু বিদেয়। হিকামকুই। ইহার অন্য নাম পাটিয়া ও ভরী।

তা। ইহা বলকারক, দ্বিদ্ধ, গুরু ও বক্ষংশ্বলের কফনাশক ও বিষ্টুৰ্তী, ইহা তৈলের সহিত পাক করিলে অতি-শায় ক্রচিকারক হয়।

#### न्यनः।

লগানন্ত রলোনং স্যাপুর্যান্তী মহৌষধম্।
আরিটো স্লেক্ত কন্দশত যবনেটো রলোনকং ।
পাঞ্জিল রলৈর্ড জা রলেনাস্লেন বন্ধিট ডঃ।
তথ্যান্তলোন ইত্যুক্তো ন্তলানাং গুলবেশ্বিতঃ।
কটুকল্টাপি মূলেমু ডিক্তং পরেমু সংক্রিতঃ।
নালে কথায় উদ্দেশ্টো নালাগে লবনাস্কঃ ।
বাজেতু মধুরং প্রোকো রলন্ধিন বেশিতঃ।
বলোনা বৃংছনো বৃষ্টা প্রেজাত্তা মধুরকো মতঃ।
রলে পাকে চ কটুক জীজ্যে মধুরকো মতঃ।
ভগ্যভান কৃৎকটো গ্রহং শিকাক্ত বৃদ্ধিনঃ।
বল্পকরে! বেখা বিভো নেক্টো রলায়নং।

खरक्षात्र कोर्नचार कृष्टिमृत विषय क्षमृत्रिकि काम स्माकान् । वृत्तीय कुकैसिस्त्रीय सन्धः

सभी विवास सन्धाः कि ।

यदाः योगाः के छल्लां स्व कि विवास स्व ।

यदाः योगांवाकणः द्वाय यित्रीहः भरता खण्णः ।

उटमान मर्चन् शुक्त सार्व्यक्तिविष्ठसङ्गः ।

#### ब्रञ्ज ।

ललन, तरमान, हेशनक, मरशेषश, णादिष्ठे, दसष्टकम, घवटन्छे । द्रारमानक এই গুলি উতার পর্যায়। ইহাতে ছয় त्रामत याथा औं इम व्यविष्ठ व्यादह। কেবল একমাত্র অল্লরণ নাই এইজন্য हेराटक ब्रटमान (এक्सन ब्रटमन डेनः) करह। টগার মূলে কটুরদ, পত্রে জিক্ত রদ, নালে क्यात्र, नालांद्धा लदन ७ वीटण सभूत्र तम বিদামান আছে। রত্বন পুষ্টিকারক, ক্ষক্র জনক, শ্লিখ্যোঞ্চ, পাচক, সর (কোষ্ঠশ্ব वाय ७ भनामित निध्नातक), कीक कर्षे तम विभिष्ठे, शांटक श्रृत्र, कश्च शांदनत मःरयाञ्चक, कर्श्र शतिकात्र कातक, तर्पत्र छेद-উংকৰ্মাধক, স্মরণ শক্তি বন্ধ কি ও চলুর হিভকর ৷ রত্ন ভল্প कदिला खारमान, जीर्न स्वत, कृष्मिमृन, विवक्त ( मनानि वक्त इदेश शाका ), खना, সাকৃতি, কাশ, শোগ, অৰ্শঃ, কৃষ্ঠ, দাখি-म'न्या, क्रिमि श्रष्ट्रिक करा, वात्रु, श्राम भा करू नहे एव । याष्ट्रा ब्रष्ट्रन स्मान करब, काशारम्य शर्क ममामाश्म भ जन्न शथा। वात्राम, दबोमटगवा, दक्कांश, कानिक कल-পান, তথ্য শুড় এই গুলি রসোন ভোজী-मिर्त्रत्र अकवःदत्र वन्त्र नीम ।

# थवातः।

भनावः वित्यस्य कृष्ट्रीत्वा यूथवृष्ट्यः । भनावः च खटेवट्या द्वाराय ममुख्या खटेवः ॥ স্বানুংপাকে রবেঃনুদ্ধঃ কন্ধকুদ্বাতি পিশুসঃ। ছরতে কেবল৲ বাভ৲ বগৰীব্য করো গুরুঃ।

(नेंग्राज ।

পলাত যবনেষ্ট, তুগ জ ও মুখদ্বক এই ওলি পলাতুর পর্যার ৷ পলাতু রহুনের ন্যার গুণ বিশিষ্ট, পাকে মিষ্ট, কফবর্দ্ধ ক, অধিক পিত্তজনক নহে, গুরু, বলকারক, বীর্ঘ্যাৎপাদক ও বারু নাশক ৷

#### भ्लकम्।

যুগকং বিগিশ। প্রোক্তং তঠৈকং পরু মৃগকন্।
লালমন্টকং বিজাং পালেয়ং দরুগভবন্ ॥
চালফাযুগকং তাজ্বং তুলা যুগক পোতিকা।
নেপাল মৃগকং চানাং তুল্ভনেং গ্রামণ্ডবং ॥
প্রম্পাং কট্জাং সাাজ্যাংগ লঘু চ পাচনন্।
লোলকায় হরং স্বর্যাংগ কর স্বাস বিদ্যাপানন্ ॥
নাসিকা কঠবোগস্থাং নয়নাময় নালনন্।
মহত্তদেব ক্লেক্ষাং গ্রাহ্ম বোষকায় প্রধ্ন ॥
স্বেহ্ বিজাং তথ্যে সাাল্ স্বোষকায় বিনাশনম্।

#### मुला ।

গ্লক চুই প্রকার তন্মধ্যে প্রথম প্রকারের পর্য্যার এই গুলি ষথা লঘুমূলক, লালমকটক, বিজ্ঞা, লালের, মরুসম্ভব, চাণকামূলক, তীক্ষ ও মূলকপোতিকা অপর জাতীর মূলককে নেগাল মূলক কহে তাহার আকৃতি হতিদন্তের ন্যার।

গুণ। লঘু মূলক কট্, উষ্ণ, রোচক, লঘু, পাচক, ত্রিদোষ নাশক ও সর বিলোধক, ইহা জর, খাস, নাসিকা রোগ, কঠ পীড়া ও চক্রোগ নাশ করে। রহৎমূলক রক্ষ, উষ্ণ, গুরু ও ত্রিদোষ জনক। তৈলাহিতে সিদ্ধ করিলে ইহা ব্রিদোষ নষ্ট করে।

#### গাক্রম্।

গাজরং গৃগ্ধনং প্রোক্তং তগানারজ বর্ণকন্। গাজরং মধুরং ডীক্তং ভিজোকং দীপনং লঘু। সংগ্রাহি রক্তপিকার্ণো গ্রহণী ক্কযাভজিৎ।

#### গাজর।

পর্য্যার ! গাজর, গৃঞ্জন ও নারক্ষ-

গুণ। গাজর মধ্র, তীক্ষ, ভিক্ত, উফা, অগ্নিবদ্ধ ক, লঘু ও সংগ্রাহী। ইহা রক্তপিত্ত, অর্দঃ, গ্রহণী ও বাতপ্রেমা নাশ করে।

#### कमलें कन्दर।

শতিকঃ কদলী কন্দো বল্যাং কেল্যোহয়ণিত্তনিং । বহুক্সঃছ হায়ী চ মধুয়ো ক্লচিকারকঃ।

कनावस्म ( এटि )।

কদলীকন্দ শীতল, বলকারক, কেশের সৌষ্ঠব কারক, অমপিত্ত নাশক, অগ্রি দীপ্তিকর,দাহ নাশক, মধুর ও ক্রচিকারক।

#### यानकः।

मानकः नाम् महोशवः क्वाट्ड छन्छवा अवः। मानकः त्यावक्षक्षीकः शिवतकः स्टा नवुः ।

### यानकडू।

ইহার পর্যার মানক ও মহাপত্ত। গুণ। শোপ নাশক, দীকল, রস্ক-পিত্ত শাস্তিকর ও লয়।

### वाबादीकमः।

वाजीयी निरामा बना। कहें। किका हमाप्तनी । बाह्यः सकाधि क्ष्यत्वस् कक कृतीनिर्माणया ह

# চ্বতি আলু।

গুণ। ইহা পিপ্তজনক, বলকর, কটু, ভিক্ত, রদায়ন, আরু কর, শুক্তখনক ও অগ্নিবদ্ধ ভি। ইহা মেহ, কফ, কৃষ্ঠ ও বারু নাশ করে।

### , হয়িকগা।

গলকণাতু ভীক্ষোখা তথা বাতকফাশ্বয়েং।
প্ৰতিক্ষরহারী স্বাপুং পাকে ভদ্যান্ত কন্দকরে।
পাতুশোধ ক্রিম প্রীই গুল্মানাহোহরাপইং।
গ্রহণ্যদা বিকারহা বনসূর্ব কন্দবৎ ৪

### माजकरू।

গজকর্ণা তীক্ষ, উষ্ণ, বাক্তপ্লেয় নাশক,
শীক্ত জ্বর নিবারক ও পাকে স্বাত্, ইহার
কন্দ পাতৃ, শোহ, ক্রিমি, প্লীহা, গুলা,
মানাহ, উদ্ধ বোগ, গ্রহণী ও অর্লোরোগ
দমন করে। বন্য ওলের কল্পের গুণও
এই প্রকার।

# (क्यूकम्।

কেছুকং কটুকং পাকে ডিস্কং গ্ৰাহি হিষং সন্থ দীপনং পাচনং হ্ৰদাং ক্ষপিত শ্বৰাপৰ্য্ । কুঙকাগ প্ৰযেহাত্ৰ নাশনং বাডলং কটু।

# (कंडेम्ड।

কেম্ক পাকে কটু, তিজ্ঞ, প্রাহী, দীকল, লবু, অগ্রিদীপ্র কারক, পাচক, জ্ন্য, বায়ুগুলক ও কটু। ইহা পিত্র-গ্রৈম্মিক জ্ঞা, কুই, কাস, প্রমেহ ও রক্ত্র-দোহ নিবারণ করে।

# कश्मसम्बर्भ।

কলেক ছিবিখা ডব্ৰু বছজাক্ষকসকন ।
মুখাকৃতি লখু স্যাধ্যবজিচোড়া মিতি ক্তৃন্ ॥
কলেকক্ষ্মা পীতা মধুরা ডুবরা গুলা।
পিতলোধিত মাহমুম ময়নাময় নাশম্ ॥
গ্ৰাহ্ম ময়নাময় নাশম্ ॥
গ্ৰাহ্ম অকানিল ভেষ্ফচিত্ৰাক্ষা অভিন্।

# कृष्ठे शकात क्ष्युत ।

ক্ষেপ্ত তুই প্রকার যথা রাজ ক্সেক্ত ও চিচোড় ক্সেক্ত, রুহৎ ক্সেক্তকে রাজ ক্সেক্ত বংশ, আর যাহার আকার মুস্তার ন্যার ও যাহা প্রঘৃ ভাহার নাম চিচোড়।

থা। কলেরছর দীতল, মধ্র, কথার, গুরু, প্রাহী, শুজেন্থোদক, বাতপ্রেয় কারক, রোচক ও শুনে কুদ্ধেন্থ-পাদক। ইহা রক্তপিত, দাহ ও নেজ-রোগ বিনাশ করে।

# 州福川甲等研81

পত্যাদিকদেঃ শাস্কং কর্মাটণ কলাতে।
মূলাল মূলং ভিজ্ঞাকং পাশ্কং তং প্রকলাতে।
শাশ্কং শীভলং বৃষ্যং পিও দাহাম্মনুত্ ওল।
দুক্তরং মাতু পাকক স্তন্যাদিল কম্প্রান্ধ।
বাসং মন্ত্রং ক্লমং ভিজ্ঞাও মিলি ভিজ্ঞান্ধ।
বাসং মন্ত্রং ক্লাবং বাধিতং ক্লিমি ভজ্জিন্ধ।
কদাং বিব্স্তবেহ সর্কাং যদ্বাধ্যাদি বিদ্যাভন্।
কর্তনাং কোলাভাগে ক্লমং সিভ্যদেশক্রম্।
কর্তনাং কোলাভাগি লীভ ব্যালাদি দুবিভ্যু।
সংক্রমং সকলং লাকং নাখ্যাদ্যানু মূলকং বিনা।

# भन्न भ्र केश्मनाभित्र कृत ।

পদা প্রভৃতির কলকে শাল্ক ও করকটে বলে। মৃণাল মূলের নাম ভিত্মাও ও শাল্ক। গুৰ। মৃণাপ নীতল, বুণা, গৈরিক দাহ নিবারক, রক্ত দেন নাশক, গুরু, ভুরুর, সাতু পাক, গুনে ভুরোং পাদক, বায়ুজনক, কফ্লর্ক ক, সংগ্রাহী, মধুর গুরুজ। মৃণালের ম্লেরগু এই রূপ গুণ জানিবে। আতি কোমল, অসমধ্যাৎ- গন্ন, চীন, কাটাদি বারা ভঞ্চিত এবং অগ্নি দয় মৃণাল ভক্ষণ রোগীর পক্ষে অকর্ত্রন।

ভাতিশার জীন, অকালে ৎ ায়, কক্ষণিক (মাহা কৈলাদি ঘারা শিক্ষ নহে ) কুৎ গিত ছানে, উংপল্ল, কর্কণ, অভিকোমন, শীত-বিক্তত, ব্যালাদি (সর্পাদি) দ্বাবা দ্যিত শাকভোজন নিধিক্ষ এবং মূলক বানীত আর কোন শাক শুক শুক্ষণ ক্বিবেনা, শুক্ষ মূলক উপকারী।

### गः दश्रमञ्जभ् ।

**केर मन्द्रमणन लाकर कृषिण्ड**कर लिनी क् कप्।

ক্ষিতি গোমর কাষ্টেমু বৃক্ষান্তির তুদুদ্ভবেহ ।
সংগ্রে সংবেদকাঃ শীতা দোৰতাঃ পিচছুলান্চ তে গ্রেবাছর্ণ) হীনার করেইয়েমানর প্রকাঃ ॥ খেতাঃ শুক্রমলী কাষ্ট্রংশমে ক্ষেকাঃ। মাতিবোৰ করা তেমুঃ শেষাধেতো বিগাইতাঃ।

কোড়কছাতা, ব্যাপের চাকা ।

ইহাকে ভূমিছেত ও শিলাক্ষ করে, মৃত্তিকা, গোমন্ত্র কাঠ ও বুফ্টানতে ইহা উৎপন্ন হইয়া থাকে।

গুণ : সংস্কেদক শাক মাত্রেই শীতল, দোব জনক, পিচ্ছিল ও গুরু, ভক্ষণ করিলে ব্যা, অতিসার, জ্বর জ গ্রৈছিক রোগ উৎপদ্ধ হয় ! যে সকল ছত্র শ্লেড-বর্ণ ও যাহারা প্রিদ্ধ স্থানে, কাঠে বাঁশে বা গোচরণ ছানে উৎপদ্ধ হর, ভাহার। অধিক দোষাবহ নহে, কিন্তু অন্য ছত্র অভি জগন্য।

# নপুবিংশতিত্তমোহধ্যায়:।

धानावर्गः ।

ত্ত ধানানাং ভেষা: 
বালিধানাং ত্রিগাকষ্ ।
বালিধানাং জুলধানা মিঠু। কং ধানা পঞ্চম্ ।
বালিয়ো রক্ত শালাদা। ত্রিগা ঘক্তিকাদ্য ।
ববাদিকং শ্রুধানাং মুদ্গাদাং শিবিধানাকষ্ ॥
কস্বাদিকং ক্ষুদ্ধানাং তুণ ধানাঞ্ডং স্কুদ্ধ।

#### शना ।

ধানা পাঁচ প্রকার যথা শালিধানা, ত্রাহি-বান্য, শুক্রণনা, শিধিধানা ও ক্ষুদ্রবানা। ভগাবো বক্তশালি প্রভৃতিকে শালিধানা, যাইক প্রভৃতিকে ত্রাহিধানা, যবাদিকে শুক্রনা, মুলা প্রভৃতিকে শিঘিবানা ও কল্পুপ্রভৃতিকে ক্ষুদ্রবানা বা ভ্রধানা বলে।

ভত্ত শালি ধান্যস্য লক্ষণ ধান্য ।
কওনেন বিনা খাক্সা হৈমধাং শাল্য খাড়াং ।
ভত্ত শাখানা\ নামানি ।
রক্তেশানিং সকলমং পাওুকং শক্নাংভঃ ।
সুগডকং কর্মনকো মহাশালিক দুৰকং ।
প্তাওকং পুতুরীক হস্তা। মহিষ মন্তকং ।
দাইবৃক্ত কাজনকো,বায়নো লোধু পুত্তাকঃ ॥
ইভ্যান্যাং শালয়ং সধি বহুবো বছুবেশকঃ ।
গাহু বিশ্বয় ভাতেতে সমন্তানাক ভাবিভাঃ ।

### नालिशना ।

কণ্ডন (কাড়া) ব্যজিরেকেও ছাহা শুক্রবর্ণ হর, ভাষাকে শালি বা হৈৰভিক ধানা বলে। রক্তনালি, কলম, পাওুক, শক্নাহত প্রথমক, কর্দমক, মহানালি, দ্বক, প্রথমক, প্রথমক, মহিব মন্তক দার্থ পূক, কাঞ্চনক; হারন ও লোগু-প্রপাক ইত্যানি নানাংধ শালি ধান্য নানা লেশে জন্মিব: থাকে, গ্রন্থ বিস্তার ভরে সমুদার উল্লিখিত হইল না।

#### CEB1: 431:1

• লালয়ে। মধুরাং স্থিকা বলা। বছাপো বছাপো বছার করায়। ক্যানে। ক্রচাং স্থানা ব্যাপে ব্ংহণাং স্থানে। ক্যানে ক্ষায়া ক্যানে ক্ষায়া ক্যানে ব্ংহণাং স্থানে ক্ষায়া ক্যানিক ক্ষাং লাভাং পিরেয়া মুক্তগাঞ্জা। লাভাগ্রে পুরুষালাক ক্ষায়া লাভাগ্রে লাভাগ্রে ক্ষায়া লাভাগ্রে লাভাগ্রে ক্ষায়া লাভাগ্রে লাভাগ্রের লাভাগ্রে

রোপিভান্ত নবা ব্যাঃ পুরানা সমবঃ ক্তাঃ। ভেজান্ত রোপিভা ভূয়ঃ শীশুপাকা গুলাধিকাঃ । ক্ছিয়কঢ়া হিনা ক্লা বল্য: পিত্তক্ষাপ্নীঃ। বন্ধবিট্নাঃ ক্যায়াত ধ্যবত্যাপে ভিক্তা

- ( ) रेक्यांका कृष्टिक का उप ।।
- (२) द:'नडाः कृष्टत्करक अकृष्टत्करक ह।
- ( ) कृषे (कार व वक्षे कार दा।

#### 439 10

শালিধনো মধ্ব, প্রিপ্প, বলকারক, আলপরিমাণে ব্রুমণ নি দারক ক্ষার, লবু, বোচক, স্বর বিশুদ্ধিকারক, গুক্তজনক, পৃষ্টিকারক, আল বাতপ্লেয় জনক। যে ধান্য কৃষ্ট (চনা) ভূমিতে উৎপন্ন হর,

তাহা বাষ্পিত্ত নাশক, থাক, কফবৰ্ষক, एक्कनक, क्यात्र व्यहागल निःमात्रक, ऋत्रामंदिर दक्षक १८ दशकत्र। ट्य शन्त অকৃষ্ট ভূমিতে সরং উৎপল্ল হর তাহা খাত্, পিরভ্লেম নাশক, বাধুপিত বর্জক, किक्षिप जिल्लाम, कमात्र भारक करूँ। কন্ত বা অকন্ত ক্ষেত্ৰে বাশিত ধানা মধুর, द्या, अन्तादक, शिखनानक, करावद्यंक, णञ्जभल निःभातक, कथाय, खक्न 🗷 मीकल। বপন করা ধান্য অংশেকা অবাপিত পালোর গুণ আহ। ,রোগিত নৃতনুধানা एकजनके, भूबाहन इहेटल लग इस। ष्यनामा पाना ष्यदनका द्वापिक शाना छन-কর ও শান্ত ভার্ব হয়, ছিল্লকচ্ ধান্য ক্মম্ম্, বলকারক, পিওলোগা,-নাশক, মল রোধক, ক্ষায়, লখ ও শাল ভিজা।

#### इक्तम्। लः।

# ( भाडमयानि )

সমন্ত ধানোর মধ্যে রক্তশালি লেওঁ, ইহা বলকারক, লাবণ্য জনক ত্রিদোষ নশক, চলের স্থান্তারক্ষক, মূত্রকারক, পর বিশুদ্ধি কারক, শুক্তকারক, প্রধানানক, নথিবন্ধিক, পুরিকারক ও জ্বন্ন। ইহা বিষ, ত্রণ, স্বাস, কাস ও দাহ নিধারণ করে। মহাশালি প্রস্থৃতির ক্র, ইহা অপেকা জার।

# जीहि भागाम्।

वार्षिकार किछार सङ्घा जोवस क्षित्र भाकित शाकित्र ।
स्वारोविः भाषेमक सुके हो। क स्वार्ण ।
न्यारोविः भाषेमक विद्यारा जोवसः स्वार ।
न्यारोविः म विद्यारा यः क्षा छुवछण्यः ॥
भाषेमः भाषेमा भूक्ष विद्यारा विद्यारा स्वार ।
क्षार् हो। किछा भूक्ष विद्यारा जे हिल्हा ।
स्वार्षा किछा भूक्ष हो। क छ। उठ ॥
सामार्थः क्षार्था कृष्ण हो। उठ ।
सामार्थः कृष्ण हो। काष्ट्र गर्थः ॥
जोवसः किछाः भारक सर्वा विद्यारा ।
सामार्थिः स्वार्थः काष्ट्र ।
सामार्थः क्षार्थः भारत विद्यारा ।
सामार्थः विद्यारा ।

### जीविशाना।

वीरियाना वयाकारल शतिशक करेता शांदक, এहे शाना कणिक (काष्।) इहेटल छक्रवर्ग दश्र। तीहिशाना अदनक श्रकात गया क्यातीनि, भाष्टल, कुक्री खक, नाला-भूष ७ जर्भेष हेल्यामि। गारात उप ও তত্ত্ব কৃষ্ণবর্ণ, ভাহার নাম কৃষ্ণরীহি, श्रहात वर्ग भारेला। भूटण्यत ना। श्र काशास्त्र পাটনত্রীতি, ঘাহার আকার কুরুটেব ভিষের নাাষ কাহাকে কুক্টাও, যাহার मृत (मृंश) । ए एपूल क्रक्ष वर्ग काशास्त শালামুধ ও সাহার মুখের বর্ণ লাক্ষার नाात्र छाटाटक छक्र्य औरि कटर। बीहि मकल जीर्न इहेश मध्यकार छ হিতকারক হয়। রীহি পানা অল্প অভি-यानो ७ मल द्राधक, उहि धाटनाव मटना कृष्ठ वीहि डे९क्टें, श्रनाना वीहि मधन्त कल जग विभिष्ठे ।

#### मंडिका।

গৰ্জহা এব বে পাক। বাঙিতে বক্তিকা দতাঃ। বক্তিকা পভপুষ্পাক প্ৰয়োহক বুকুষ্কে । महायकिक वेकाशोश यकिकाः महुमाककाः।
कार्किश विद्याः द्याका जी'दक्षक स्मानंद ।
दक्किश वर्षुताः मीका मध्या रक्तिकांनः।
वार्किश श्रम्भाः मीकिश मधुना श्रदेशः ।
वार्किश श्रम्भाः मीकिशिः मधुना श्रदेशः ।
वार्किश श्रम्भाः प्रवाश कृषी विद्या विद्यायक्तिः।
वाष्ट्रीका श्रद्धाः प्रवाश क्रम् व्यक्त वार्षिनी ।
वर्षकाणि श्रम्भ स्वभा क्रम् स्वभः श्रद्धाः भरद्धाः ।
वर्षिका वर्षा स्वका क्रम् स्वभः श्रद्धाः ।

#### णास्त्राम्।

গর্ভস্থ অবস্থাতেই যে ধানা পক্ষ হয়,
কাহাকে বৃদ্ধিক কহে। খনপুপ্প, প্রমোন্
দক, মুকুক্ষক, মহাষ্টিক ইজাদি
নানাবিধ ষ্টিক আছে। ত্রীহির লক্ষণ
থাকাতে উল্লিখিত ধান্য সকলকে ত্রীহি
শ্রেণীভূক বলিয়া গণ্য করা যায়। ষ্টিকা
ধান্য সকল মধুর, শীতল, লগ্, মল, রোধক, বাষু পিত্র শান্তিকারক, সম্দায়
ত্রীহি ধানোর মধ্যে যু ঠিকা প্রেন্ত, ইহা
লঘ্, সিদ্ধ, ত্রিদোষক নাশক স্বাহ্ন, সৃত্ত,
গ্রাহী, নশকারক ও জ্বদ্ধ, ইহার ওপ
বক্ষালির ন্যায়। অন্যান্য ধান্য ইহা
জ্বেক্ষা শক্তিহীন।

# युन्तर नाम्।

কুত্র ধান)^ কুখান)ক ত্ণধান) নিভি আ ্তম্। কুত্র ধন) মনুগু । কায়ে করু কেখনম্। মধুর্ কটুকি পাকে কুক্ত কেঘলোখকন্। বাত্তুদ্ বন্ধবিট্কভ পিতরক কফাপ্যম্॥

ক্ষুদ্র ধানা, কুধানা ও ভূণধানা এই গুলি ইহার পর্যায়।

তাণ। ক্ষুদ্র ধান্য সকল মধ্ব, পাকে কটু, রক্ষ, ক্লেদ শোষক, বায় ক্ষনক, মলরোধক, রক্তাশিক্ত শাক্ষিকর ও কফয়। বিশেষ বিশেষ কৃত্র ধানে।র বিষয় লিখিত হউতেছে।

#### कन्न ।

ক্রিয়াৎ কণু প্রিয়ণ্টে কুলা রক। সভা তথা। পীতা চতুর্বিধা কণু স্তাসাৎ পীতা বরা ক্তা। কণু ভ তথা সভান বাতক্ষ্ বৃৎহণী প্রকা। ক্লা প্রেরহাতীব বাজিনাৎ প্রণ কৃষ্তৃশব্ধ

# शिकी कश्रुनी।

কমু ও প্রিরস্থ এই গুইটা শব্দ ইহার পর্যার। কসু চারি প্রকার কথা কৃষ্ণ, রক্ত, শুভ্র ও পীত। তর্মধ্যে দীত্তবর্ণ কন্ম শ্রেষ্ঠ।

গুণ। কল্প ভাগে ছানের সংযোগ কারক, বার্জনক, পৃষ্টিকর, গুরু, রক্ষ, অভিশর কফদ্ব ও অপ্রগণের পক্ষে বিশেষ উপকারক।

### हीनकः।

চীনাকঃ কণ্ঠ ভেদোহত্তি স ভেদা কণ্ঠদ্ধু বৈ:। হিন্দী চ,না।

ইহাএক প্রকার কলু, ইহার গুণ কলুর ন্যায় ৷

# শ্যমাক:।

मा।याकः त्मायत्वा क्रदका वास्त्रः क्यन्तित हरः।

শ্যাৰা খাদের বীজ। শ্যামাক শোষক, রক্ষ, বারুজনক ও কৃষ্ণ পিত্ত নাশক।

#### (कार्षका

কোন্তবঃ কোরদুক্ষ স্যাধুকালে। বনকোন্তবঃ। কোন্তবো বান্তলো গ্রাহী হিছা পিন্ত ক্ষাপ্ছঃ র উদালস্ত করেপুকো গ্রাহী বান্তকরো তুপায়।

#### काम शाना ।

কোড়েবের অপর নাম কোরদূর, বনজ কোড়েবকে উদ্দাল কথে।

তা। কোডাৰ বাগুজনক, প্ৰাথী, শীতল, পিত্তনাশক ও কফায়। উদ্ধাশ উষ্ণ, গ্ৰাহী ও অভিশয় বাগুজনক।

#### 51李辛: I

চাক্রকঃ শায়বীক্ষৎ স্যাৎ কর্বাহন্ত জন্মধা অর । চাক্রকো মধুছো ক্লেকা ক্লেপিছ কাফপছ: ঃ লীডলো অযুসুষ্যাত ক্ষায়ো বাডকোপনঃ।

#### भद्रवीक ।

চারুক ও শর্মী**জ** এই চুটটী ইহার পর্যায়।

তাণ। চাক্সক মধ্যু, রক্ষা, রক্তপিত শান্তিকর, কফন্ন, শীতল, লগ্নু, তাক্র-জনক, কধ্যে ও বায়ু প্রকোণক।

# वः मंत्रीस्थ्य ।

যবা ন^ল ভবা ক্লাঃ কৰায়াঃ কটুপাকিনঃ। বন্ধৰুঙাঃ ক্ষয়াংক ব'তপিত কয়াঃ সরাঃ।

देवाटक दश्मावत छ कवित्रा पाटक।

গুৰ। ইহারক, ক্যার, পাকে কটু, মূত্ররোধক, ক্ষম, বাসুপত্ত বন্ধ ও শব।

# ( चुक शानाः )

य् व ३ ।

यशक निज्नुकः माश्रिःगृत्काञ्च वशः म्यू छः ।
त्साकास्वर मदिज्युष्ठः स्प्लाक कोर्किष्ठः ॥
यदः कवारमा मधुवः नीष्ठत्ना त्मर्थता मुनः।
त्यत्वयु जिनवर निर्मा मुन्तः। स्वत्वयु जिनवर निर्मा मुनः।
त्यत्वयु जिनवर निर्मा मुन्तः। स्वत्वयु जिनवर ।
कर्मेन्द्राकारमा वर्गः देख्या नाजी । निष्ठित्वयः ॥
कर्मेन्द्रशीमस् दक्षमा निग्रमम् ध्वत्वानियः।
नीमम् यामकारमास्यु ज्ञाति जुन्दे ध्वत्रः ॥
व्यवाष्ठियरमा नुग्नद्यारकाम् सूम्भवव्यु व्यव् ॥
व्यवाष्ठियरमा नुग्नद्यारकाम सूम्भवव्यु व्यव् ॥

#### ¥ 48 1

মাহার শুক ( ভূঁরা ) গুরু বর্ণ, ভাগার নাম ধব, শুক শুনা মবকে অজিদব বলে, হরিত বর্ণ যবকে ভোকা ও সামান্য যবকে সল্লয্য বলা বার।

ত্রণ। কষার, মধুর, শীতল, লেখন,
মূর্, বাবেরালে তিলের নারে উপকারক,
কৃক্ষ, মেধাবদ্ধ কি, অগ্নিকারক, পাকে কটু,
শ্রেমাপদাবক, স্বর বিশোধক, বলকর,
তক্র, লাবণ্য ক্রনক, ধাতুর সমলা রক্ষক,
বহুপরিমাণে বায় ও মূর নিঃদারক ও
পিজিল। ইহার দারা কর্সারাণ, ত্রাকর
পীড়া, শ্রেমা, পিত্ত, মেদ, পীনদ, শ্বাস,
কান উরুত্তভ্য, রক্তদোষ ও জ্ফা নিবারণ
হয়। ইহা অপেকা অভিযবের ত্রণ
অল্ল, তোক্যের ত্রণ তাহা অপেকাও হল্প।

# ( णुक शना ।)

গোধুমা সুমনোহপি স্যাথ তিবিধা স চ কীৰ্তিতঃ।
মহাগোধুম উড়াখ্যা পশ্চাদেশাৎ স্যাগতঃ দ্ব
মধুলী তু ততা কিভিদ্পো সা মধ্যকেশজা।
মিঃপুকে। দ্বিগোধুমা কচিন্নখীমুখাভিধা দ্ব
শ্বিয়াধুমা মধুরা শীতে। বাতপিত ঘটো প্রায়াঃ

কক শুক্রপ্রকোর বলাঃ বিশ্বঃ সন্ধানকুৎ সন্থঃ ।

ককপ্রকোর কঠানো নতু পুরাবং পুরাব ববগোধুন ক্ষেত্রভ জালন শুলাভুগিতি বাগ্ডটেন
বসতে গৃহতিক্রাৎ।

মধুলা শতিলা বিখা শিক্ষাী মুদুরা লঘুঃ।

### গোধুম।

खब्दना ३० वर्ग लेखा उद्यक्षभोगू वः ऋषः।

বোপৃংমর অপর নাম কুমন। বোর্ম তিন প্রকার যথা মহাবোর্ম, মধ্লা ও দীর্ঘিগার্ম। মহাবোর্ম পশ্চিম প্রদেশ হইতে আনীত হস, মর্লা বোর্ম তহো অপেকা। কুজ, মরা প্রদেশে জনো, দীর্ঘ গোর্ম শুক বিহীন, ইহা কোখাও কোথাও নকামুখ বলিয়া উক্ত হয়।

গুল। গোধ্ম মধ্ব, শীতল, বাধু পিত্তনাশক,
গুরু, ককবদ্ধ কি, গুরু জনক, বলকারক,
লিক্ক, ভারভানাদি সংযোগ কারক, পারণ
জনক, ত্রণবোগে হিত্ত করেক, বোচক ও
হৈছাঁয় কারক। কফ বদ্ধনি গুণ নৃত্তন
গোধুমেই ভানিবে, পুথাতন গোধুম কফব্দিক নতে, যে তেতু বাগ্ডই বসন্ত কালে
পুবাতন যব, পুবাতন গোধ্ম ও শুলা
ভালক মাংস ভক্ষণের বিধি লিখিবাছেন।

মবৃলী গোধুম শাতল, লিয়া, পিত নাশক, মধুব, লগু, শুক্ত জনক, পৃ'ষ্টকর ও অপথা; নন্দীমুখ গোধুমের ৩৪:৩ ইংগর নাাহ জ: নবে।

# निषीशामाम्।

नमीक्षाः निविक्षाः निवीक्षरः मृगीनः रेयप्नाः । रेयप्ना मधुदा क्रकाः क्यात्राः कट्टेनाक्मिः ॥ বাঙলাঃ কফ পৈওলা বন্ধমুক্তমলা বিমাং। এতে মুদ্ধ মধ্যাকামেনো ত্বাগ্নান কাহিনা হ

বুদ্দা মস্বয়ো রাধান কারিত্ব মন্য বৈষ্ণা পেক্ষমা নতু সংবলা এডয়ো রাপ কিকিদাগান কারিতাথ।

শমীজ:, শিষজ, শিগীতব, সুবাও বৈদল এই গুলি ইহার পর্যার ।

ত্তা। মধুর, ক্রজ, কষায়, পাকে
কটু, বার্বর্জক, কফপিত্র নাশক, মপমূত্র
ব্রোধক, শীতস ও আঝানকারী। ইহাদিবের মধ্যে মুন্গ ও মস্থেরর আঝান
কারিতা শক্তি অভি দামানা।

#### म्न्तः।

মুন্দো রুক্তে। স্মুগ্রাষ্ট কঞ্চিত হং.। (ছম:।
আনুরুল্যানিসো যেতে)। আইছো বনমন্ত্রা ।
মুন্দো বহুবিষঃ শানে ছারতঃ লীতক স্তরা।
খেতে। রুক্তেন তার্ড পুরিঃ পুরো সমুং আতঃ।
মুক্তেন পুনঃ থোডে। ই রঙ. এবরে। ওবৈঃ।
চরকাদিতি রপ্যক্ত এই এব এব ওব্ধিক:।

#### मुन्।

মৃদ্ধ কল, লঘু, গ্রাংহী, কফপিন্ত নালক, লীভল, সাতু, অঙ্কার জনক, চল্লের স্বাস্থ্যকর ও জরর, বনজ মুদ্দেরর গুণও এই প্রকার। মুদ্ধ বহুবিধ ঘ্রথা লাম মুদ্ধ, হরিত মুদ্ধ, গীভমুদ্ধ, খেড মুদ্ধ ও লোহিত মুদ্ধ, ইহাদের পর পর টী হইতে পূর্বর পুর্বিটী লঘু। সুক্রুত হুতিত মুদ্ধকেই শ্রেষ্ঠ বলিরাছেন, চরকাদি ক্ষি গণও এই ক্লণ বলেন।

#### मायः।

মাখো গুলুঃ স্বাস্থাকঃ বিজ্ঞো ক্রচ্যোহ্মিলাপছঃ ।
অংসন স্বর্গবের বলাঃ ব্যক্তনো বৃংহনঃ পরঃ ।
গ্রিম্বুর্মল স্তনের মেনঃ পিককক্ষেল্ড।
গ্রন্থানি স্থাস পংকি স্থানি নাশরেছ ।
কক্ষণিয় করা যায়াঃ ক্ষাপিয়করং দ্বি।
কক্ষািতকরা মহস্যা বৃহাকং ক্ষাপিয়কুছ ।
নাম কলাই।

মাধ শুরু, জীর্ণ হটলে স্বানুরদ হব, স্থির, রোচক, বারুনাশক, অংসন, তৃথি কনক, বলকারক, শুক্রবর্দক, অনুনিধর পৃষ্টিকর, মৃত্র, মৃত্র ও শুনা নিংসারক, মেদ, পিত্র ও কলবর্দ্ধক, ইহা অর্শং, অর্দ্ধিক, বাতব্যাধি, খাদ ও পরিণাম শৃল নাণ করে। মাদ, দধি, মৎস্য ও ইস্তাক (বেগুণ) ককপিত্র বর্দ্ধক।

### वाक मायः।

্ বীজা যস্য স্ত বৈরাজন্ন লোবিয়া

ইজাদ্বো ভেলাব।

রাজ মাথো মহানাধ শুপল শুবল আ্বা ।
রাজ যাবো ধানাধ শুপল জবন ভাগন সরং ।
রাজ বালে ধানাধ কান্ত। জন্যভূরি বলপান।
শোলো চকুন্তনা কুজ জ্লিবিধা স্থানিকৈঃ।
বো মহাৎতে ভুকুন্তনা কুজ ক্লিবিধা স্থানাধিকা।

রাজমায়, মৃগামায়, চপল ও চবল এইঞ্লিইহার লয়ীয়ে।

গুণ। রাজমাধ গুরু, সাত, কবার, ভৃপ্তিকর, সর, কৃষ্ণ, বারু বর্ক ক, রোচক, স্তনে ভূমোৎপাদক ও বলকারক। খেড, লোহিত ও কৃষ্ণ এই ভিন বর্ণের রাজমাষ দৃষ্ট হর, ইহার মধ্যে বৃহৎমাষ্ট অধিক গুণকর।

#### मिल्मी यह ।

( স ডু রাজ লিখী বীজৎ ভেউবাসু ইতি লোকে।)
নিজাবো রাজলিখিং বাাদ্ বল্লকং খেন্ড লিখিকং।
নিজাবো দধুবো ক্লো বিপাংক>ল্যো গুকুং সরং ছ ক্ষায়ং ভনা পিতাজ বুজবাত বিব্যুক্থ।
বিদাহত,ভো বিষ্টোল লোগকাক্ত জনালনং।

প্য্যায়। নিস্পাব, রাজশিষী, বল্লক ও খ্যেত শিদ্ধিক এই গুলি ইহার নাম।

গুণ। ইহা মধুর, কুক্ষ, পাকে অস, গুরু, সর, কধার, গুরুা, পিন্ত, রক্ত, মূত্র ও বাবুহাস কারক, বিদাহী, উষ্ণ, বিষয়, শ্লেমনাশক, শুক্তক্ষের কারক ও শোধ নিবারক।

### मक्षेकः।

মকুটো বান্দুদ্য সামুকুটক মুক্টকো।
মকুটো বান্তলো গ্রাছী কফালিও ছরো সমুঃ॥
বাহিজিন্ মধুরং পাকে কৃষিক ক্ষানাশনঃ।
তথা ক্ষায়ত্ব\ ক্লাপিও ছরত্ব পথাত্বপাস্য

वनमूत्र । रिक्नाटम है।

মত্ঠ, বন্যুদ্ধ, মতুইক ও মৃত্তক এই গুলি ইহার নাম।

তা। বার্জনক, গ্রাহী, কফপিত নাশক, লঘ্, অঘিমাল্যকর, পাকে মধ্য, ক্রিমিনাশক, জরগ্ন, কঘান, রঞ্গিত-নাশক ও পথ্য।

### स्र्रः।

सम्भारको यनुदः मान् यम्भा । यम्दिको । यमुद्रा यसुदः भारक मान्द्राची भीखला अधः । क्षानिकाळाज्या राख्या खड्यानेमः ।

# शिली मरुवी।

মন্ধল্যক, মন্থর, মন্ধল্যা, ও মন্থরিকা এইগুলি ইহার পর্যায় !

ওণ। ইহা পাকে মধুর, সংগ্রাহী, শাতল, লঘু, কফপিত নিবারক, রক্ত দে। ঘ নাশক, রুঞ্চ, বারুজনক ও জর্ম।

# व्याप्की।

आहको छुरही हालि मा त्थाका नवनून्यका। आहको छुरहा क्रका यदुहा नीख्ना मधूर॥ आहिको राख्यनमा सन्।। (शहककाळकिर।

### शिला बरबी।

আন্কী, তুবরী ও খণপুশ্পিকা এই ওলি ইহার ন্ম।

গুণ। কষার, ফক্ষ, মপুর, শীতল, লঘু, গ্রাহী, বায়ুজনক, বর্ণকারক, পিন্ত-নাশক, কফ্মুপ্ত রক্তদোধ নিবারক।

চণকো হরীমনঃ স্যাৎ সকল প্রিয় ইডাপি।
চনকং শতিলো ক্লকং পিতরক ককাপহঃ ৪
লয়ুং করাড়ো বিউদ্ধি বাতলো জ্লর নাশনং।
ল চালারের স্বাভৃতী তৈলভুক্তন্ত ভর্তাবঃ ॥
আর্ভিকা বলকরে। রোচনক্ষ প্রকাশিরঃ।
অন্ধৃত্তী বলকরে। রোচনক্ষ প্রকাশিরঃ।
অন্ধৃতীভৃতি ক্লক্ষ বাতকৃত প্রকোশবঃ।
লিক্ষা পিতক্তা হন্যাৎ সূপঃ ক্লোভ করে। মৃতঃ।
আর্ভিভিত কোমলো ক্লচ্য পিত্তাক হরে। হিনাঃ।
কর্মায়ো বাতলো প্রাহী ক্কপির্ভ হরে। ল্যাঃ।

#### 594: 1

চণক, হরিমন্থ ও সকল প্রিয় এই গুলি ছোলার নাম।

ত্ত। চণক শীতল, কৃক্ষ, রক্তপিন্ত নাশক, কৃষ্ণ, লঘু, ক্যার, বিষ্টঞী, বারু জনক ও জরয়। ছোলা অলাবে ড.জিলে
অথবা তৈলের সহিত্ত ভাজিলে উক্তরুপ
ওপ হয়। আজু করিয়া ভাজিলে বলকারক ও বোচক হয়, শুক্ক অবছায়
ভাজিলে ফুল্ল ও বাত কুঠ প্রকোপক হয়,
দিদ্ধ ছোলা কফপিত্ত নালক, ইহার স্প
ক্ষোভকারক, ভিজা ছোলা অতি কোমল,
বোচক, পিন্ত নালক, শুক্র ক্ষর কারক,
লীতল, কযার, বারু বছ্কি, গ্রাহী, কফপিন্ত নালক ও লঘুণ

#### कलातः ।

कमारया वर्तृकः स्थाकः मिष्ठकण पर्वत्कः। कमारया सर्वतः सामृत्र श'रकः कृष्णकः गोठकः।

यहेंद्र ।

কলায়, বর্জুল, ভিল ও হরেণুফ এই গুলি ইহার পর্যায়।

প্রণ। ইহামধ্র, পাকে স্বাহু, কুক ও দীতল।

# जिल्हेः।

ত্তিপুটঃ থতিকোছপি স্যাৎ কণ্যতে ভদ্ধবাজন । ত্তিপুটে, মধুর ডিক ব্যরো ক্লমবো ভূপন্ । ক্লমেন্ড হলো ক্লচো প্র'ছকঃ লীতল ভবা। তিন্ত খন্তত্ত্ব পল্লুকারী বাডাভি কোপনঃ ।

**८७ ७६।, ८४**मादि ।

ত্তিপুট ও বভিক এই ছুইটী, বেস;বির সংক্ষম নাম।

তা। ইহা মধুর, ভিজ, কবার, অভিশয় কৃষ্ণা, কম পিত নাশক, রোচক, প্রাহী ও শীতস, কিন্ত ইহা অতিশর বার্ প্রকৃপিত করে। অধিক কাল ভক্তবে ধঞ্চ ও পঞ্জু হইবার সম্ভাবনা।

#### कुल्य ।

কুলখিকা কুলখাত কথাতে তদ্ধণা অধা।
কুলখা কটুকা পাকে কৰায়ঃ পিবরককুৎ ।
লযুক্তিবাছী বীৰো)ভা খাসকাস ক্লানিলান্।
ছঙি ছিকাখারী স্তুক্ত ভাষানাহান্ সপীনসাম্।
ভেষ সংগ্রহকা বেংগা করা ক্লিছিবরং পরঃ।

#### • कुल्य क्लाहे।

কুলখিকা, কুলখ এই দুইটি ইহার পর্যার।

ত্ব। ক্ষায়, পাকে কটু, রস্তাপিত্ত জনক, লঘু, বিদাঘী, উফ্চবীর্যা ও স্বেদ প্রভিরোধক। ইবা খাদ, কাদ, ক্ষা, বারু, হিকা, অখানী, কক্স, দাহ, আনাহ, দীনদ, মেদ, ক্ষম ও ক্রিমি নত্ত করে।

### क्ष्रख्यीकम्।

কসুত্ৰ বীষ্ঠৎ বর্টা ইসৰ প্রোক্ষা বরট্টিকা। বর্টা বনুরা স্থিতা হক্তবিত্ত ক্ষাপদা। ৫ কমারা শীতলা গুজী স্যান্ত্র্যানিকাপদা ৪

# कुत्रमवीख ।

কুমুক্তবীজ, বরটাও বরট্টিকা এই তলি ইচার প্রাার।

তাণ। মণুর, স্বিধ্ধ, রক্ষণিত শাভিষর, কফর, কবার, শীভল, ওস্কু, বলনাশৃত্ধ ও বাতর।

#### गदनश्रका ।

গবেধুকা ডু বৈদ্বন্ধি গবেধুং কৰিত। ক্ৰিয়ান্। গবেধুঃ কটুকা যায়ী কাৰ্ণ্যকৃৎ কক্ষাশিনী॥

হिनोग बदग कुष।

গণেপুকা ও গবেপু এই ছুট্টী শব্দ ইহার পর্য্যায় ।

ওণ। ইহা কটু, স্বাহু, কুণতা কারক ও কক্ষ

#### किनः।

जिला वृष्णः गिर्डा वृष्णः गर्गरागी १६०० जिला स्टः। जिला व्राप्त कर्षे सिर्द्धा स्वरंद्धा स्वरंद्धा स्वरंद्धाः । विभारक कर्षे का सामूः सिर्द्धांष्णः कर्षाण्यन्यन् । वलाः क्रिला। विस्मानामं स्वाः स्वरंद्धाः विद्धाः। प्रद्धाः व्यक्तिस्वस् स्वरंद्धाः स्वरंद्धाः म्वरंद्धाः। क्षाः व्यक्तिस्वस्यस् स्वरंद्धाः स्वरंद्धाः स्वरंद्धाः।

#### चिंश।

কৃষ্ণ, শুল ও লোহিত এই তিন বর্ণের তিল আছে, ক্ষুদ্র ভিলকে স্বর্ণ্য কহে।

গুণ। তিল কটু, তিক্ত, মধ্ব, কবাব, গুরু, পাকে কটু, মধ্ব, স্থিন্ধে'ফ, কফ পিত্ত নাশক, বলকাবক, কেশের পক্ষে হিত্ত কারক, স্পর্শে শীতল, তুকের স্থান্থা-রক্ষক, স্তনে সুয়োৎপাদক, ত্রণের পক্ষে উপকারক, দক্তের স্বাস্থারক্ষক, আল মৃত্র-কারক, গ্রাহা, বায়ু নাশক, অগ্রিকারক, মতিপ্রদ। ভিলের মধ্যে কৃষ্ণ তিল শোক্ত, তাত্র জিল মধ্যা উহা শুক্ত জনক। জন্যানা ভিল হানগুণ।

#### ভঙ্গী।

ষ্ডনী দীক পুষ্পী চ পাঠ্যতী ন্যাপুষা কুষা। অত্তনী মধুৱা ডিক্টা কিন্তা পাকে কটুও কৈ । উচ্চা দুক্ প্রক্রবাড্নত্রী ক্ষপিত বিদালিনা।

# भिना, जिमी।

প্র্যার। অভনী, নীলপুন্সী, পর্ক্তী, উনাও কুমা এই তালি তিনীর সংস্কৃত নাম।

ক্প। ইহা মধ্র, তিন্ত, স্থিম, পাকে কটু, গুরু, উষ্ণ, দৃষ্টিশক্তির থর্সত। কারক, শুক্ত ও বাত নাশক এবং কদ পিতার।

#### मर्भभः ।

সর্যপ: কটুকথেই ভছজক ক্ষমক:।
গাে, ভ স্বপৃঃ প্রাজৈ: সিদ্ধার্থ ইতি কথাতে।
সর্যপত্ত রসে পাংকে কটু: রিজ: সভিকক:।
ভীক্ষোভা ক্ষরাভয়ো রক্ষপিতাগাি বর্দনং।
রুক্ষো হরেদ্রগ্ কড়্ কুঠ কোঠ ক্রিমিগ্রহ:ন্।
বর্ধা রক্ষেতা গৌর: কিন্তু গৌরে। ধরে। মতঃ।

# क्रे क्षकात्र त्वक नर्यण।

দর্ষণ, কটুকলেহ, তুক্ত ও কম্বন এই গুলি ইহার পর্যায়। সৌর (ভুত্ত) দর্ষণকে দিকার্থ কহে।

তা। দর্যণ আহাদে ও পাকে
কটু, স্মিগ্ধ, তিক্ত, তীক্ষ, উষ্ণ, বাতলেম
নাশক, রক্তপিত্ত বৰ্ষক, অধিকাচক ও
কম। ইহা ত্রণ, কণু, কুঠ, কোঠম
কিনিম ও গ্রহাদি শান্তি করে। রক্ত
সর্যপ ও গৌর সর্যপ উভরের ওন এক
প্রকার, কিন্তু গৌর সর্যপ্ত উৎকৃষ্ট।

#### রাজিকা।

রাজী তুরাজিকা তীক্ষণধা কুঞ্জনকাস্থা।
ক্ষর কুজাতি জনকঃ ক্রিমিছৎ কুজ স্বপঃ ঃ
রাজিকা কক্ পিত্রী তীক্ষোকা রক্তপিতকুৎ।
কিভিজকার্থিণ কত্ত্ত কোঠ ক্রিমীন্ হরেং ঃ
অভিত্তীক্ষা বিশেষের ওদ্বৎ কৃষ্ণাপি রাজিকা।

पृष्टे श्रामात्र कृष्ट महिया।

পর্যায়। রাজী, রাজিকা, তীক্ষণদ্ধা, কৃঞ্জনিকা, আসুধী, ক্ষণ, ক্লুডাডি জনক, ক্রিমিজৎ ও কৃষ্ণ সর্যপ।

গুণ। বাই সর্যপ কফপিত নাশক, ভীকু, উষ্ণা, রজাপিত জনক, কিঞাং রক্ষ ও অধিবন্ধক। ইহা কণু, কৃষ্টা, কোঠ (গাতে চক্রাকার চিহ্ন) ও জিমেনিষ্ট করে। কৃষ্ণ (কাজলা) স্থাপেরে গুণ ও এইরণ, অধিকন্ত উহা অভ্যন্ত তীক্ষা।

न्द्रम श्रुवाङ्म धामा। माः खनाः।

ধানাং সাধং নবং মাধু এক প্লেক্ডবং স্মৃত্য । তত্ত্ব বৰ্ষোবিভাং পৰাং মহেতা লম্বুত্ত হৈ তং । বৰ্ষোবিভাং সাৰ্ক্ষধানাং ধৌরষণ পরিমুক্ত । নতু ভালতি বীধাং সাংমান্ মুক্তাতঃ পরম্ । এতের যব মোধুন ভিলমাধা নবা ভিডাং। প্রাধা বিরুষা ক্লোন ভবা এব কারিবং ।

পূর্বে। বর্ষদ্বাদুপরিন্ধিতা: । ব্যাদ্যো নবাং ক্ষান্ প্রতি হিতাং । পুর)'শিনাক্ষ পুর'বা হিডাং ।

ন্তন ধ না, স.চু 'গুরু ও কফজনক।
একবংশরের পুরাতন ধানা কঘু ও পথা
একবংশরের পুরাতন ধানোর গুরুতা নত্তী
হর, ভিঙ বীহাঁ নত্ত হর না, ইহার পরে
যত অবিক দিন যার ততই ধানোর বীহা
ভাগ হটরা থাকে।

ধান্য সকলের মধ্যে হব, গোধ্য, ভিল ও মাব নৃতন অবস্থার উপকারী, তুই বংসারের অধিক কালের পুরাতন হইলে ক্রমাও ওব হীণ হয়। কিন্তু প্থাভোক্তীর প্রাক্তন ইহারাও পুরাতন ব্যবস্থের।

#### नीवातः ।

প্রসাধিকা তু নীবার স্থাম মিতি চ স্মাতব্। নীবারঃ শীওলো গ্রামী পিরস্তা: কফবাতকুৎ ॥

हिसी छोनी।

প্রদাধিকা, নীবার ও চণান্ন এই ওলি ইহার পর্যায়।

জা । শীকল, আহী, পিত্ত ও বাত শ্লেম বৰ্দক।

#### भवमामः ।

भवनाला दियः चानू त्यांदिङ स्त्रच भिवस्ति । च्युवा खरादा त्रकः क्रियकृत कवित्ता मधुः॥

# किसी भूरमता।

ইহা শীক্ষ স্বান্ত্, লোহিত বর্ণ, পিত্ত প্লেম নাশক, ক্যার, ক্লে, বলনাশক, ক্লেকারী ও সমু।

#### माजाः ।

(सवारका स्वामा सामि वामानि मजुवानि छ। कृष्णिन का विश्वामास नीसानित वर्मीवनः ॥ नकारका वंश्वार नीशा नवादा वीलमाण्ड स्त । बल्लाकु वन्ना कृष्ण राना (लवक्ष्म व्हनः ॥ इन्।डोन!इ नाव'स्य स्वद स्वय स्वय न्या नवार।

### वह ।

যে দক্ষ ধান্যের ততুল হয়, সেই সকল ধান্য সতুৰ ভক্তন করিলে ক্টিড হইরা লাজ প্রস্তুত হয়। লাজ মধুর, দীতল, লঘু, দীপন, আন মলমুরকারক, কৃষ্ণ, বলকর, পিড নাদক ও কৃষ্য। লাজ ভক্ষণে বমি, অভিসার, দাহ, রক্ত দোব, মেহ, মেদোরোগ ও ভৃষ্ণা নিবা-রণ করে।

### कि शिवेकः।

লানয়ং সভুষা আপ্রতিভাল তথ। কুটিড়া লিগেট'ং প্রোকা ভে আ্ডাং পূর্কা ঋণি । পূর্কা ধরবো বাত নাননাং শ্লেমলা ঋণি। সজারা বৃংখনা বুষ্যা বল্যাঃ সংগ্রাধিনক তে।

# किए।

তৃষ সহিত শালি ধান্য জলে ভিজা-ইয়া এরণে ভর্জন করিবে যেন ক্টিভ ন। হয়, অন্তার উহা কুট্টিভ করিলেই চিপিট প্রভাত হয়, চিপিটের অপর নাম পৃথুক।

চিপিট গুরু, বায়ু নাশক ও ককজনক, হ্রা সংযুক্ত চিপিট বৃংহণ, বুবা, বলকর ও মল রোধক।

# অন্টাবিংশতিত্তমোহধ্যায়:।

याश्मनर्गः ।

यारमञ्जू निर्मिष्ठर क्रम्या वाविषर निर्मार निर्मा । यारमञ्जूष्ट्रिक वर्षार पुरस्तर क्रम्युष्टिक्ट । श्रीनमर सक्र सम्प्रक मसुतर त्रम नोक्टलाः।

পৰ্যায়। মাংস, পিশিক, ক্ৰব্য, আমিব, প্ৰসন্ধ পল।

. ७१। मारम मार्द्धहें बाक नामक,

বৃংহণ, বলপ্রদ, পৃষ্টিকর, তৃপ্তিকারক, শুরু, হৃদ্য এবং আত্বাদে ও পাকে মধুর।

# व्यव क्षम (क्षमाः ।

মাংস বর্গো ছিবা জ্ঞেছো স্কাদলানুপ ভেবজঃ।
মাংস সকল ছুই প্রকার, জালল ও
আনুপ।

#### G 197 : 1

मारम वर्तांश्व समाना तिम्मान समानग्राः।
छवाननं मूगा (छम्। विक्ता अपुरमार्ग ह ।
अममा व्यव ह आमा व्यक्ते कामन काउनः।
सामना मनूना क्रमा व्यक्ते नगरस्थ। ।
सन्तारस त्रक्ता वृत्ता मीनमा रमाव सानिवः।
सूमकार सिम्बिनक्त ह सम्बद्धानिए छव। ।
दासिया सङ्गि छामि श्रास्थ सूचकान् भनान्।
सीनवर भनावक सानग्रहानिनामग्रान्।

#### का जला।

জান্দল জাতি আট প্রকার যথা জান্দল, বিলন্থ, গুংগাশার, পর্ণমূন, বিকির, প্রত্ন, প্রদাহ ও গ্রামা।

खन। काक्रम माश्य मध्य, तक्क, करात्र, लघ्, तक्क, व्यात्र, लघ्, तक्का, करात्र, लघ्, तक्का, करात्र, लघ्, तक्का, व्याद्य के कि त्मार नामक। काक्रम माश्य क्वाप्त मानक। काक्रम माश्य क्वाप्त, व्यक्तिकात्र, व्यक्तिकात्र, व्यक्तिकात्र, व्यक्तिकात्र, व्यक्तिकात्र, मुद्राद्यात्र, ज्ञांलम, तल्यक के वाक वावि निवादन करत्र।

## व्यान्याः ।

क्रमहन्नाः संबोक्तांन (कावमाः नाप्सस्याः) स्थमा वर्षः नमार्थ।।साः नक्षांमून सास्त्रः ह सामूना महुताः सिया सत्तरां रस्मिनावनाः। क्षिप्रमाः शिष्यमः काणि वाष्त्र शूक्तिश्रशः कृणेम् । सर्वाक्षिपः स्मितः स्थापः स्थापः सम्बन्धः ।

## जानून मारम।

কুলেচর, প্লব, কোষন্থ, পাদী ও মংশ্য এই পাঁচ প্রকায় অনুপ জাতি।

আমূপ মাংস মধুর. দ্বিত্ব, গুরু, অপ্তি-মান্যাকর কফজনক, পিচ্চিল, অভিশর মাংস বর্জক, অভাত্ত পুঠিকারক, অভি-যান্দী ও সুপধ্য।

#### काष्ट्रनाः।

र्रावित्य कृत्रक्षी शृष्टमाञ्च महत्वाः । ब्राक्षीत्वार्शम ह यूषी ८६ष्ट्राप्ताः सम्मान म्/व्यकाः ॥ र्रावित्यक्षात्रप्तिः माद्यप्तः स्वासीर्विः

হৈ বিশ্ব ভাষেণ্ স্থানেণ কুলা প্রকার্তিত।
কুরল এব ভাষা স্থানেণ ভূলা।কৃতির্বহান্ ॥
ক্রেল এব ভাষা স্থানেণ ভূলা।কৃতির্বহান্ ॥
ক্রেল এবিলাভেল লোকে সংয়ারুহেনি কীর্তিত।
প্রকারে বিবাবেছিল স্বয়ো প্রয়াকৃতি।
বাজীবন্ধ মূগ্য জেলো রাজিভিয় পরিভোরত।
বা মূগ্য শুলহানা স্থাৎ স মুক্তীভি নিগদাতে।
জলালায় প্রায়শ্য সংক্ষা শিক্ষােল হরাংক্ষা।
কিঞ্চিদ্ বাভকরা শুলিশ ক্ষাণো ক্ষাধ্যা ব্যাকর্তা।

#### खन्नान ।

ছরিণ, এণ, ক্রঞ্গ, প্রায়, পৃষক্ত, নাঞ্চু, সম্বর, রাজীব ও মুত্রী ইত্যাদিকে জন্মল কহে।

ছবিণ ছাত্রবর্ণ, এবঁ কৃষ্ণবর্ণ, ক্রক্ষ ক্রবং ভাত্রবর্ণ ও রবং ইহার আকৃতি এবের ন্যার, প্রবা ইহার অপর নাম নীলাও, ইহা বৌট বলিয়া প্রদিদ্ধ, পূবড হবিণ অপেকা কিছু ক্ষুন্ত, ইহার অপর নাম চক্রবিশু, নাকু ব্যুদ্ধ বিনিষ্ট, সম্বর দেবিতে বনরের (গবর শব্দে গো সম্বা পাত বিশেষ) নাার, মাজীবাধা মূবের পাত্তে ডোরা ডোরা চিক্ আছে এবং মুণ্ডী শৃক্ষীন। আছাল মাংল প্রার পিত শ্লেম মাশক, কিঞিৎ বার্বস্কুল, লবু ও বলকারক।

#### विद्रमान्त्राः ।

त्त्राथा चर्च कृष्णको न्याकाणा विस्वविद्याः। विस्वविद्या वाष्ट्रश्चा यपुता क्षत्र भाकत्साः । दुष्टवा वष्टविनुमूत्रा वीदवाष्ट्राक श्राकोतिष्ठाः।

## विष्णभन्ना

গোধা, শল, নর্গ, মৃষিক ও শল্পী প্রভৃতিকে বিলেশর করে অর্থাৎ যাহারা গত্তেবাস করে ভাষাধিককে ঘিলেশর বলে।

ইহানের মাংস বায়ুসালক, আভানে ও পাকে মধুর পৃষ্টিকারক, মলম্ত্র বোধক ও উফ্লবার্থা।

#### श्वकाष्ट्राः ।

নিংহকাত্র রুখা থক করকু দীপিন করা। বজ্ঞসমুক নাজ্জারা ইকাল্যাঃ সূঞ্জিলয়াঃ ট বুল পুলের রুজনেত্রা বজ্জেখ ননাকুনঃ। গুরাপায়া বাক্তরো গুরুকা মধুরাদ্য কে। বিদ্যা বল্যা হিলানিকাং নেত্র গুমবিকারিনামু।

### खराज्य ।

সিংক, ব্যান্ত, বৃক্ষ, গুক্ষ, গুরুষ্ণ, বীপী, বভ্ৰ, জন্মুক ও মাক্ষানি ইন্ড্যানিকে গুলা-পর করে। (ভরক্ষু অর্ধাৎ মূলভোকী, বীপী চিকাবাদ, বাহাদের পুদ্ধ ক্ল. ठक्क् प्रस्कर्ग छारापिगटक वस कटर, रयसम्मक्ता

ইহাদের মাংস বাষু নাশক, গুরু, উষ্ণ, মধুন, স্নিগ্ধ, বলকর এবং নেত্ররোগী ও গুহা রোগীর পক্ষে উপকারক।

## পর্বমূগাঃ।

বনৌকো বৃক্ষ মার্ক্সার বৃক্ষমকটিকাদরঃ।
এতে পর্বমুগাঃ প্রোক্তাঃ সূক্র্যভাবৈ। মহর্শ্বিক্তিঃ ৪
ক্ষান্তাংপর্ব মুগা বৃদ্যা শচকুষ্যাঃ শোবিবে হিডাঃ।
ন্যাসালিঃ কাল শমমাঃ সৃষ্টমুত্র পুরীরকাঃ॥

## পূর্মধ ।

বাশর, বশবিদ্যাল ও বৃক্ষমক্টিক। প্রভৃতিকে পূর্ণ মূগ কছে।

ইহাদের মাংস শুক্রজনক, চক্সুর উপ-কারক ও শোষ রোগীর পণ্য। এই মাংস খাস, আর্দ্য ও কাস নিবারণ এবং মলমূত্র নিঃদারণ করে।

## विकिताः।

বর্তকালাব বস্তার কপিঞ্জলক ভিত্তিরাঃ ।
কুলিল কুকু ট্রাম্প বিজিরাঃ সম্বাজ্তাঃ ঃ
বিকার্য্য ডক্তমজ্যেন্ত ক্লান্তনালি বিজিরাঃ ।
কপিঞ্জল ইতি প্রাঠজ্ঞা কবিজ্যে বেগার তিথি রৈঃ ।
বিজ্ঞান মধুরাং পরিঃ ক্লান্তনাল কটুপাকিনঃ
বক্সা ব্যাজিবোনস্থাঃ পর্যান্তে জ্যবং জ্তাঃ ঃ

## विक्रित ।

বর্তকা, লাব, বত্তীর, কণিঞ্চলক, তিবিএ, কলিক্স ও কুকুটাদি পদ্মী সকল বিকার্ণকরিরা ভক্ষণ করে বলিরা ইছা দিগকে বিদ্বির করে। কপিঞ্চলের অন্য নাম গৌর তিথিরি, কুলিক্স গবরৈরা ইহাদের মাংল মধুর শীতল, ক্যায়, পাকে কটু, বলকারক, বৃষ্য, ত্রিদোবম্ব, পথ্য ও লমু।

### श्राप्ताः।

ছারীতো ধবলং পাঙু শিক্ত পক্ষো সৃহজ্জুকং। পারবেতং থক্সরীটং পিকাদ্যাং প্রজুদাং ফাড়াং। প্রভুদ্য ভক্ষান্থ্যেন্ডে ডুকেন প্রভুদা ভঙ্গ। প্রভুদা মধুরাং শিত্তকক্ষান্তবর। হিনাং । লয়বো বন্ধবর্জ ভা কিঞ্চিন্ত করাং ফাডাং ।

#### প্রভূদ।

হারিত, ধবল, পাণু, চিত্রণক্ষ, রহৎ শুক, পারাবত, খঞ্চরটি ও কোদিল প্রভৃতিকে প্রভুদ কহে। ইহারা অত্রে তৃগ্রারা খাদা বস্তু প্রভৃদিত অর্থাৎ ভয় করিয়া পরে শুক্ষণ করে।

ইহাদের মাংস মধুর, কফপিত ন:পক, স্পীতল, লঘু, মল রোধক ও কিঞিৎ বারু জনক।

#### थगर!।

কাকো গুধু উপুক্ত চিল্লন্ড লগযাডকঃ।
চাসে: ভাসন্ত কৃত্তৰ ইঙাগিয়া: প্ৰসংগৰ কৃত্তাঃ।
প্ৰসংগঃ কান্তিভা এচে প্ৰসংগাজিলা ভজাগাং।
প্ৰসংগঃ থলু বাংগাজা ভজাগসং ভজাতি যে।
ভে পে'ৰ ভন্মকোনাইদ ব্যক্তিখা ভবিভ 'ছ।

#### প্রসহ।

কাক, গৃগ, পেচক, চিল, শশদাতক (বাজ), চাধ, ভাগ, (গৃধ্বিশেষ) ও কুরব প্রভৃতিকে প্রস্থাই বলে। প্রস্থা শব্দের অর্থ বাহার। বলপুর্বক ছিনিরা শইষা ভক্ষৰ করে। (প্রসহা আচ্চিদ্রা ভক্ষরভিবে।)

#### श्रामा: ।

ছাগ্ৰেৰ বৃষাশ্চাৰা গ্ৰাম্যাঃ প্ৰোক্তা মহৰ্তিছে । গ্ৰাম্যা বাতহরঃ। সধে দীপনা কফ্পিয়লাং । মধুরা রূল পাকাছ্যাৎ বৃৎছণা বলবর্জনাঃ।

#### शाया।

ছাগ, মেষ, বৃষ ও অধাদি গ্রামা জন্ধ। গ্রামা মাংস বাত নাশক, অধি দীপ্তিকারক, কফপিওজনক রুগে ও পাকে মধুর, পৃষ্টিকর ও বলবর্দ্ধক।

#### क्रमहर्वाः ।

লুলাপ গও বারাছ চমরী বারগ'লয়ঃ।
এতে কুলচরাং প্রোকাং যতঃ কুলে চরস্কাপান্।
কুলেচরা মরুৎ পিত হয় বুহা বঙ্গাবছাঃ।
পুরাং শীওল'ং নিজা মুখলাঃ স্থাবছানাইনাং ।

#### क्टलहब ।

মহিদ, গণার, বরাগ, চমরী ও হস্তী প্রভৃতি ভিত্ত দকল কুলে বিচরণ করে বলিরা ইহাদিনকে কুলেচর কহে।

ইহাদের মাংস বার পিজনাশক, বুষা, বলকারক মধ্র, ভীতপ, স্বিদ্ধ, মূত্রকারক ও কফবদ্ধ ক।

#### श्रीताः ।

হ' স সারস কারত বক্তেই ক পরারিকার।
নক্ষীমুখী সকাৰথ। বলাকাখ্যার প্রবাহ আছোর ॥
প্রবাহ সলিলে ক্ষানেতে তলাও প্রবাহ আছোর।
দুলা কঠোর বুখা চ যস্যান্ডক, পরিন্দিতা ॥
গুলিকা ক্ষমু সদৃশী প্রোক্তা মন্দীমুখীডি সাঃ।
প্রবাহ পিত্তবরা বিখ্যা মনুরা গুরুবো হিষার ॥
বাভয়েমুখ্য প্রহান্টালি বলগুক্তক্যার সরার।

#### 211

হংস, সারস, কারও, বক, ক্রোঞ্চ (কোচবক), শ্রারিকা, নশীমুণী, কলহংস ও বলাকা প্রভৃত্তি প্রফীকে প্লব কহে।
প্লবন অর্থং সম্ভরণ করে বলিয়া ইছাদের
কাম প্লব। বাহার চঞ্চুর উপর স্থল,
কঠোর, গোলাকার ও অন্ব ফলের নাার
ক্টিকা থাকে, তাহার নাম নশীমুণী।

ইহালের নাংস পিত্তনাশক; বিশ্ব, বীধুর, ত্বকু, শীতল, বাতলেয় বন্ধ ও সর।

## (कावश्वाः ।

শক্তা: শক্তানথ শ্চাপি শুক্তি শগুক কর্টাঃ। জীবা এবংবিধা শ্চামো কোষস্থাঃ পরিকীর্থিডাঃ ॥ কোৰস্বা মধুরাঃ স্থিতা বাজপিত্ত হয় হিনাঃ। কৃষ্ণা বন্ধবৰ্টভা ব্যাশ্চ বন্ধর্মনাঃ॥

## (काषच् ।

শথ, শথনব ( ফুড শথ), ওজি ( বিমুক), শব্ক ( শানক) ও কর্মট প্রভৃতি জীবকে কোষত্ম করে।

ইহাদিগের মাংস মধুর, স্থিয়, বারু পিতনাশক, শীতল, পুরিকারক, বছ প্রিমাণে মল নিংসারক, শুক্রেজনক ও বলবর্জক।

## लामिनः।

কৃতীর কুর্মনক্রাশ্চ পোধা মঞ্চর শস্তবঃ। যন্তিকাশিল বারশেচতাবিদ্ধা পাবিনং আ্তা: । পাবিনোহশি চ যে, তে তু কোবদানাং এবৈঃ স্বাহ।

#### शामी।

কুন্তীর, কৃষ্ম, নক্র, পোধা, মকর, খড়, খণ্টিক ( ঘড়িয়াল ) ও শিশুমার ( ওওক ) প্রভৃতিকে পাদী ক্ষমে।

ইহাদের মাংশের গুণ কোষত্ব দিগের ম্যার।

#### मदम्यः ।

মংক্রো দীনো বিসারত ক্লেবা বৈশারিবেহি জন্ধ।
আকৃলো পূর্বেমা চ স সুধর্মন উভাল ।
ব্যোহিভাদাান্দ্র যে জীবাজে মংস্যাং পরিকার্তিভাই।
মংস্যাং সিজেজ মধুরা প্রবংক কল্পিভালাঃ ।
বাভন্না ব্যহণ স্থ্যা স্লোচকা বলবর্জনাই।
মন্ত্যাবার সকানা দীপ্রান্ত্রীমাঞ্ পৃত্তিভাঃ ।

#### मद्मा ।

মৎস্য, মীন, বিসার, শ্বষ, বৈসারিণ, অণজ, শক্ল, পূণ্লোমা ও স্কর্মন এটগুলি ইছার পর্যায়। রোহিত প্রভৃতি নানা প্রকার মৎস্য আছে।

ত্থা। মৎসা সকল লিগ্ধ, উফ, মধুর, গুরু, কফ পিওজনক, রাত্ম, পৃষ্টিকর, ব্যা, রোচক ও বলবর্জক। মদাপারী ও সভত স্ত্রীপ্রসন্ধীদিগের এবং দীপ্তায়ি লোকদিগের পক্ষেমৎসা অভিশয় উপ-কারক।

> অৱ স্থানগাদীনাৎ নামানি প্রবাস্চ। হরিবঃ।

वृत्तिवः योख्या वस्तिवसूरमा योगस्य मधुः। स्रद्भ शास्त्र व मधुनः मुचित्रः निवनास्त्राः॥

### एतिन ।

হরিণ মাংস শীভল, মলমূত্র মোবক, অগ্নিকারক, লঘু, রসে ও পাকে মধুর। স্থুপদ্ধি ও সন্ধিপাত নাশক।

#### जनः ।

এবঃ কৰায়ে; মধুরঃ পিঝাসূক্কবাডহাং। সংগ্রাহী রোচনো বল্যো অর প্রশমনঃ স্কৃড়ঃ ।

এ। हिन्दोकश्रीमारेल रुदिन।

এব মাংস কবার, মধুর, রক্তপিত্ত শান্তিকর, বাতল্লেম নাশক, সংগ্রাহী, রোচক, বলকর ও জর নাশক।

### क्रमः ।

कृत्रका न्ष्यत्व। वष्णाः जीखनः निवक्षत् धंत्रः । सपूर्वा नाउक्षत् आहो किकिश कथकदः स्र्वः ।

## क् द्रन ।

কৃরন্ধমাংস বৃংহণ, বলকারক, শীতল, পিত্ত নাশক, গুরু, মধ্র, বারুনাশক, গ্রাহী ও কিঞ্ছিৎ কফজনক।

#### वगः।

ধ্বব্যা নীলাওকল্ডালি গ্রন্থো রোউ ইত্যলি। গ্রন্থো মধুরো বল্যা গ্রেক্ডাক্ডা ক্রুলিভলঃ (

शिकी दबोडे।

নীলাত্ত, গরর ও রোউ ইহার পর্যার। ইহার মাংস মধুর, বলকারক, দিয়া, উষ্ণ ও কফলিজজনক।

## नुबद्धाः ।

भूत्रक छत्त्वः वाष्ट्र श्रीष्टकः वीष्टता सपूरः। वीर्णता त्रावनः चान सक्तवंत्र अस्तवंत्रः ।

## विनी विक्रित

পুষত ভাতু, গ্রাহক, শীতল, লঘু, দীপন, রোচক, খাদ নিবারক, জরম, ত্রিদোব শাভিকয় ও মঞ্জদোব নালক।

### माकः ।

नःदूर दावृत्रपूर्वरका। वृत्यम त्वावस्त्रानवः।

रिमी वाबारिभणा।

ইতা স্বাতু, লঘু, বলদারক, র্যাও ত্রিয়োধ নাশক।

#### न्।वस्या

भारतः भागमः अकः भीतमः सङ्गः सृष्यः । तरमः भारतः व सप्तः सम्बन्धः अक्षानिसन् ।

#### मावस् ।

সাবর মাংস প্রিপ্ত, শীক্তন, গুরু, রসে ও পাকে মধুর, কক্ষানক ও রক্তপিছ নাশক।

## ब्राष्ट्रीयः ।

हाक्षीतक श्रदेशकां प्रश्न शृष्टका मत्या स्रोतः।

हेशा थ। श्वरकत्र नाव ।

## मुजी।

वृठी कु क्षत्र कामांखकत चानानावा विमाः।

मुजी। दिलीगाठी।

म्जी नीष्टमः देश खतः, कामः, तक्कमः। ७ चामः रताव विवादन करतः।

## विटमणहाः । जनाः ।

मयकर्षः चंनान्युकी क्षायक्रदर्श विद्यान्यक्षः । चनाः चौरक्षा असु अस्ति क्षाव्यः स्वृत् अस्तिक्षः ॥ राक्ष्युवः कष्ण शिक्षरभूति योख शायाप्रवः मृष्यः । क्षत्राचि मात्रं पुक्ताव्य चामानग्र दसण्यं सा ॥

#### थश्राम ।

লয়কৰ্ণ, পদা, দুলী, লোমকৰ্ণ ও বিলে-পম এই ওলি ইহাৰ প্ৰয়ীয়।

গুণ। শশক্ষাংস শীজন, লগু, প্রাহী, কক্ষ, সাত্র, সভত স্বাস্থ্যরক্ষক, অধিকারত, পিরপ্রেম নাশক ও বাছু সামাকারক। ইহা জের, অভিসার, রক্তব্যেষ ও শ্বাস রোগ নিবারণ করে।

#### मनामः।

त्मको कू मेमासः पोविष स्वादंश सन्तन। पतः । मेमासः पोन सामासः (मेविटनाय सन्तनितः ॥

## मनाम । दिलोगादी।

শেবা, শশ্রক ও বাবিৎ এইগুলি ইহার পর্বাায়। ইহা খাদ, ফাদ, রক্ত দোদ, পোষরোগ ও ত্রিদোব নষ্ট করে।

অৱ পজিবাৎ নাখানি ব্রবাক। পজী ব্রাথা বিষয়ক বিষয়ক বিষয়ক। শক্ষিথি পজতী চ দিজিলো বিজিলোহকল। চ ধান্য ক্ষেত্রচয়া বেচতা কোশে বাংসং সম্ভবন্। আমুশং ব্যক্তম্বাশসং দিজং ওয়ক্তর আ্তব্য

## नकी।

পর্যায়। পদী, ধন, বিহন্ন, বিহন, বিহলন, শক্ষি, বি, পজারী, বিজির, বিক্ষির ও ুবাওল এই কলি ইহার গরিয়ে। ধান্যক্ষেত্র চারা পক্ষার মাংস লঘু ও স্পুথা এবং আন্দ পক্ষার মাংস বল-ফারক, রিশ্ব ও ওক্তর।

#### বর্ত্তকঃ।

বন্ধীকো বর্ত্তক শিক্তর স্কডোহম্পো বর্ত্তক। আ ডা। বর্ত্তকোহপাকরং দীতো অর দেশবর্ত্তাপহং । কুমচ্যুঃ প্রক্রদো বল্যো বর্তকাম্পে গুলঃ ডভঃ।

#### वर्षक ।

ইহার অন্য ন'ম বতী কি, ক্ষুদ্র জাতীর বর্ত্তকদে বর্ত্তক। করে।

থাণ। বর্ত্তক অগ্নিকারক, শীকল, জবন্ন, ত্রিদোষ নাশক, দৈরম রোচক, শুক্রেবর্দ্ধক ও বলকারক। বার্ত্তকার থাণ ইহা অপেক্ষা সাল্ল।

#### लावाः ।

লাবা বিভিন্ন বর্মেরু তে চতুর। মতা বুবৈ: ।
পাংখালো গৌরকোচনান্ত পোণ্ডুকো ঘটরগুরা ।
লাবা বহুকরাঃ 'সুন্ধা গরন্ধা আছিল। হিতা: ।
গৌরো সম্পূর্তনো ক্রন্দো বহুকনারী ত্রিবোম কিং ।
পোণ্ডুকঃ পিত্তকুং ক্রিভিন্নম বাত ক্ষপান্ত: ।
দ্র্ভব্যে রক্তপিতন্তা জ্বানার হরে। 'হুনঃ ।

#### काव।

বিভিন্ন বর্ণের মধ্যে লাব চারি প্রকার ঘণা পাংগুল, লৌরক, পৌগুক ও মর্ভর।

লাব পক্ষীর মাংস অগ্নিকারক, বিশ্ব বিষয়, গ্রাহী ও স্থাপ্ত। পাংশুল লাবের মাংস শ্লেয়জনক, উষ্ণবীর্যাও বাযুনাশক। বৌরলাবেব মাংস অভিশায় লঘু, ক্লাক, আদিকারক ও ত্রিলোবন্ত। পৌতুকের মাংস পিত্তকারক কিঞ্ছিৎ লঘু ও বাত-

শ্রেয় নাশক। দর্ভর মাংল রস্কুপিন্ত শাক্তিকর, হুড়োগ নাশক ও দীতল।

## वर्षित्रहेकः।

ব'লীকো বার্ষিচটকো বান্ধীকলৈত স ব্যুক্তঃ। বালীকো শধুরঃ লীন্ডে। ক্রম্বশন্ত কম্বশিস্তমুৎ ঃ

## शिक्षीवरभेता।

বাপীক, বর্ত্তিচক, ও বত্তীক এই তালি ইহার পর্যায়।

ওাণ। মধুর দীছল, রক্ষ, কফর ও শিতনাশক।

কৃষ্ণতি তিরি, গৌরতি তিরী।
ভিতিরিঃ ক্জবর্ণ স্যাজিতোহনো) গৌর ভিতিরিঃ।
ভিতিরিরবল্যে জানী হিজা দোব হয় পদঃ।
খাস কাসজ্ঞারত ক্রমাদ্যোহাহধিকো ওইবং

বৃষ্ণ ভিতির ও খেত ভিতির।

কৃষ্ণ প্র প্র এই দুইংনেবি ভিতিরি আছে, ভন্মধো গোর ভিতিরিকে চিত্র কহে।

তিতিরি বলকারক, গ্রাহী ও ব্রিদোষ নাপক। ইহা হিকা, খাস, কাল ও কব নাশ করে। বোর তি'ত্রির মাংস ইহা অপেকা ধাবকর।

## हुदें के

চটকা কলবিতা স্যাৎ কুলিকা কালক ঠকা। কুলিকা লীচনা স্থিঃ যায়ু অঞ্চলক প্রদাঃ সম্বিশাত ইয়ো যেখা চটক স্থাপি স্থাঞ্জন।

## ठफ् है।

চটক, কলবিছ, ছুলিক ও কাল-কঠক এইওলি ইহার পর্যায় ! তা। চটকমাংল দীতল, বিশ্ব, সাচ্: ভক্তকনত, কলপ্ৰদ ও গ'লগাড় নাপক, গৃহ চটক অভিশয় ভক্তকনক।

कृत् व व्यक्त देवी।

कृष हैः कृषवाकः भार क्षधणत्रवासुवः।

छात्र हृष्णवा वृष्टः व्यास्तावी निर्धादकः ।

कृष्ट्रा वृष्ट्रवा वृष्टः व्यास्तावी निर्धादकः ।

कृष्ट्रा वृष्ट्रवा वृष्ट्रवा विद्यारकः ।

क्षाद्रवा कृष्णु हैः निर्द्धा वृष्ट्रवा (स्वयुर्गा स्त्रवः।

वास्त्रवा कृष्णु हैः निर्द्धा वृष्ट्रवा (स्वयुर्गा स्त्रवः।

वास्त्रवाक्षक्ष वृष्ट्रविषय स्त्रवा व्यव्यवः।

क्कृते ७ वनक्कृते।

কুৰুট, কৃকবাকু, কলন্ধ, চরণার্ব, ভাত্রচ্ড, দক্ষ, প্রাভগাদী ও শিধতিক এইগুলি ইহার পর্যায়।

खा। क्कूरियाःम दृश्रा, चिक्र, देखवं घा. वाव नाणक, खक्र, हक्रावा, एटक्रार्शामक, करूवक्रक, वनकातक, द्वा ७ क्याव। वना कुक्रुटित मार्ग विक्र, दृश्या, स्थापकत ७ अक्र, देश एक्राट्ग वाम निक्र क्याद्वान, विक्र ७ विवस क्याद्र निवास द्वा ।

> श्रद्धाः । वाद्योकः ।

যারীতো রক্ত কর্মসার স্করিতাহপি গ কর্মন্ত । যারীতো রক্ষ উক্তশ্ব রক্তপিত ক্ষাপর: । বের বরক্তম জোক্ত উধন্ বাভক্তপ্র সং।

विनी शबील्।

হারীত, রক্তকঠ ও হরিত এইগুল ইহার পর্যার। ইছার মাংল রূজ, উষ্ণ, রস্তালিয় লাজিকর, ক্ষম, ঘর্ষকারক, স্বর বিভঙ্কি কারক ও কিঞ্চিৎ যায় ক্ষমক।

পাত ্ধবলপাত,।

भाव स विविध्धाः (स्वयं क्षित्रभाष्टः सम्बद्धाः । विकीरम् विवादः (श्रीकृतः स करभाकः स्कृष्टेवाः । भित्रभाषः स्वयदः। वाक्तम् अवनी श्रान्तः। विवादः भाक सम्बद्धाः । क्षित्रभावदः। विवादः ॥

बार्के स सरध्वावां ।

পাত তুই প্রকার এক প্রকারকে চিত্র পক্ষ (হিং, পিশুরোষা) ও কলগুর নি করে, অপর প্রকারকে ধবলপাতু বা করেশাক বলে। চিত্রপক্ষ ক্ষম, বার্মাশক ও গ্রহণীবোগ নিববিক। করেশাক মাংল শীভ্যা ও রক্তণিত্র নাশক।

मह अः।

मयुड म्हळ ते त्यको त्यक्षशेषी कृष्णकुक्। निश्ची निष्यत्यता वर्षी निष्यं हो मोनककेकः इ स्टक्स्मानामः कनानी ह त्यक्षमामानुनामान्। इत्य नटिक ह यथुडः अर्थासी सम्माखिक्य इ

यम् त ।

মন্ব, চক্ৰকী, কেকী, মেখরাবী, ভূজসভূকু, শিৰী, শিৰাবল, বহাঁ, শিৰতা, শীলকঠক, ভক্লোপাল, কলাপীও মেখনাদামূলানী এই সম্বায় ইহার প্রায়

सन्द माश्न ज्याचात्र ७ शास्त्र मध्य, नःत्राची ७ वाह्न समन कामक।

# खबार्गनम् ।

#### शाबावकः।

পায়াৰতঃ কল্পন্ন ডপোলো র ক্ষর্ত্তন। পায়াৰতো প্রক্রানিতো রক্ষাপ্তাপন্থ। ক্ষুত্রানী দীত্তন ১ক্তেঃ ক্ষািতো বীব্য বর্ত্তনঃ।

#### थात्रज्ञा ।

পারাবত, কলরব, কপোত ও রক্ত বর্জন এই গুলি ইহার পর্যার।

তা। পাররার মাংস তক্ত, লিও, রক্তাপিত শান্তিকারক, বারুনাশক, সং-গ্রাহী, শীতল ও বীর্ষ্য বন্ধ ক।

#### शकाजमा खर्गाः ।

নাডি থিখানি বৃষ্যানি বাদুপাক রদানি চ। বাতস্থানাডি শ্বফানি ওয়নাগুলি পকিবাৰ্ ৪

## नकीत जिया

পঞ্জীর ডিম্ব অধিক লিগ্ধ নতে, পাকে মিষ্টরল হয়, ইহা বুষ্য, বায়ুবাপক, অভিপর অফ্রেম্বনক ও ওকা।

#### आयााः।

#### ए जिः ।

 वृष्टमा वांचमः क्रष्टाः स्थाः स्थाः भूकमा ४ ६ केष्क्रस्य विकारमः चांचमुकः स्थाः अवस् । स्रक्रमा वृत्रस्थानाः स्था वसून् (असदिकः वस्त्रः ।

#### ष्ट्रांगमार त्म्र चन ।

প্রায়। ছাগল, বর্তন, ছাগ, বন্ত, অজ, ছেলক ও স্থান এই ওলি ছাগলের পর্বায় এবং অজা, ছাগী, গুলা, ছেলিকা ও গলত্তনী এই নাম সঞ্চল ছাগীবাচক।

ছাগমাংস লঘু, বিশ্ব, 'দ'তু পাক, ত্রিদোষর, অনজি দাঙ্কল, অবিদাহী, স্বাহু, পীনস বাশক, অভিশব্ধ বলকর, ব্লোচক, বংহণ ও বীর্ঘ্যোৎপাদক।

অপ্রস্ত হাপীর বাংল আয়িদীপ্ত কানক, ইহা পীনন, ভঙ্কাল, অক্লচি ও শোষ রে গে উলকারক।

ছাগ শিশুর মাংস অভিশর পদ্ হৃদা, উত্তম জনম, স্বাস্থাপ্রদাও অভিশর বন্ধবারক।

নিদাশিসাও (ধাসী) ছাগলের বাংল কফজনক, ওফ, জ্রোজ্য শোধক, বলকর, নাংশ বর্ত্তক, বায়নাশক ও শিক্তর।

বৃদ্ধ অথবা কোন বোধে মৃত ছাপলের মাংস বায়ুজনত ও জল। ছাগমুও উদ্দ জক্রবোগ নাশত ও ক্লচিপ্রর। ইবাদিনের মৃত্রপ্রছি ও অপ্রকাষ শুক্রবৰ্দ্ধ এবং যক্তব বা মেটিলা চক্ষুর কো।'জ বৃদ্ধি ।

#### C454

त्याहा त्यरमा संदर्भ त्यत्र स्वाधनाक्ष्माकः स्वाहत्य ह ।

व्यविर्मि स्थानीहूः क्वार्थ छन्छन। वर्ध । स्थाना गी८न८ मुटकी मार्थ निकास्मक्त सम् स्टेनावाथ विरोजमा वर्धनार किकास कुछन् ।

## **C44** 1

ৰেচ, বেচ, বড়, বেড়, উরণ, এড়ক, অবি, বৃষ্টি ও উন্পর এই ওলি ইহার পর্যায়।

বেষমাংল পৃষ্টিকর, পিন্ধপ্লেম জনক ও ওক্ল। অওবিহীন (ধানী) নেধ্যের মাংল কিঞিৎ লমু।

#### 四百年81

बक्कः भृत्मृषः नारक्षिः शुक्तकः दूषयः । बक्कना लंगरः स्वयं रववंशियमणः स्टेनः । स्वयं भूरक्ष्यं विश्वति स्वयं। वृष्यः स्वयं भवत् ।

लिख (अञ्चलकः किकिन्शंक वार्षि विमानमम् ॥

## रिया च्या।

ওড়কের অপর নাম পৃত্তুর, মেয়া-পুছ্র বেধকে চুধক কছে।

এড়ক মাংসের ওণ মেব মাংসের ন্যার। ছুব মেবের মাংস জন্য, রুবা, ভ্রম শান্তিকর, কিঞিৎপিস্তপ্রেশ্বরূদক ও বাড-ব্যাধিনাশক।

## यमीयम ३।

वजीवर्षक द्वाक श्वकक क्या द्वा । कावणुष्य (गोतरक्यक त्योतका क्या वेकाल ३ वृत्रका त्योतरक्यो क सार्वते त्योत्रवासका । त्योपाश्यक व्यवक्यश्यक (श्वक त्यापा विश्वक्यव् । वृश्यवश्यक्यक्य व्यवक्षण्यक शोवन श्रम्

#### वृष् ।

वनीवर्ष, द्वपण, द्वय, धनकृत्म, त्नोद-टब्स, त्या, केक्न था कह बहेर्जन हेशात नर्थात । अन्य प्रवस्ति, त्मोत्रत्यहो, मारक्षे ७ त्वा अहे श्रांत वाकित नाव ।

গোধাংশ ওয়া, প্লিয়া কছালিত বছ জ, রংহণ, বাছুমার্শক, বলকর, আপবা জ পীনন বাণক।

### द्वाडेकः ।

त्वाडेटक शीक्षित्रुवयं क्षूत्रकामः कृष्ययाः। याक्षिपायात्रं सवस्तं वत्त देशवर मस्तवः इ व्यथं वारमञ्ज कृषदे व्यक्तिकृष्ट क्ष्यः शिवनम्। याक्ष्यम् दुर्श्वर सन्तरः अकृषार वद्वतः सर्वः व

#### व्यम् ।

বোটক, পীজি, জুরনা, জুরজ, জুর-জম, বাজি, বাহ, অর্কা, গন্ধকি, হর, দৈয়ব ও সপ্তি এই সমুদার ইবার নাম। অপ্নাংস ক্ষার, অন্তিভারক, কফপিজ জনক, বায়ুনাশক, বুংছ্ণ, বসকারক, চক্ষের স্বাস্থাকর, মধুর ও পায়ু।

# क्टनात्र वर्षः ।

#### मश्चिकः।

वरित्व। (विविधाविः मानि सामहण्य प्रस्नवसः । नीनकसः कृषकात्मा सुमारणा यय सावमः । विविधायाम् वृद्धाः विद्यांक्षाः वास्त्राण्यवः । निक्षायाम् स्ववः विद्याः विद्यांक्षाः स्वानम् । वृद्याःक मुकेरियुष्यः वास्त्रीकास्य मानमम् ।

## विषि।

পর্যার। মহিদ, ঘোটকারি, জানর, রজখন, গীনকক, ভৃত্তকার, সূলাগ ও ব্যবহার এইখানি ইহার পর্বন্তা।

তা। মহিব বাংল ভাছ, ছিল্ল, উঞ্চ, বালুনালক, নিজাভায়ক, গুল্লোৎপাৰক, বলকর, শরীরের মৃচ্চাকারক, গুরু, রুষা, মলন্ত্র নিঃসারক, বাতর ও রক্তলিত নাশক।

#### म्कृकः।

वक्षः श्वरम। त्करका वर्गाकृषंबूदा एकि । मध्या समामा नाषि शिक्षाना वनसाहरू ।

(公章 )

প্রায়। মৃত্ক, প্রবর্গ, ভেক, বর্ণভ্, দর্জন ও হরি।

ওণ। কফলনক ও বলকারক, ইহা আধিক পিতজনক নতে।

**帯阪**역: 1

काहरणा शृष्णाव कृत्रीः कमरो मृष्णुवेकः। काहरणा यमस्या यावनिवसूव गुरस्कानकः।

#### 都原門!

কচ্ছণ, গৃড়থাৎ, কৃশ্ব, কমঠ ও দৃঢ় পৃষ্ঠক এইখালি ইহার পর্যায়। কচ্ছণ মাংল বলকারক, বার্ণিত নাশক ও ধ্বজ-ভক্ষ নিধারক।

नदशारहकाः भाष्यम् । नदशारहकाः संपन्न नामः साम्यादि वयापृष्ट् । वयनाप् तृष्ट्वर माञ्चा प्रमाना कम् विवर्ष्ट्दारः ॥

গছো। মারিক জীবের মাংস অর্চ সদৃশ, ব্যাহিনাশক, বয়ঃ স্থাথক, বৃংহব ও প্রা। অন্যবির মাংস পরিত্যাক্ষ্য। श्वतः मृष्या क्षेत्रा महीमात्रका अक्षः।
श्वतः मृष्या क्षेत्रका महीमात्रका अक्षः।
श्वतः मृष्य कीटवतः माश्यः वलः श्वामक,
श्वतः अः श्वरोगातः (ताशः क्ष्यकः।

বৃদ্ধবাল মাংলম্।
বৃদ্ধানা খোলত মাংল কালানা বলত লড়।
বৃদ্ধানী বের মাংল ভোজন করা আবিধের, কারণ ভাহা রোলে। পোদক। বাল

वियामि महना मारमम्।

कौटवत्र माश्म मध् भ वनकात्रक ।

गर्भ वेकेमा मार्गक सक्त मार्गर जिल्ला क्र । यान एकेक पूर्वक सक्तर मृनक्रर भव्न । विषात्र क्र व्वेत्र, उन् युक्ता त्यार क्रकाक्रम् । क्रिस्ट्र क्रम् क्रम्यर क्रम्र व क्र क्षाक्रम् । राज्य भूग्री क्रम्यर क्रम्र व क्र क्षाक्रम् ।

দর্পদিত লীবের মাংস ও শুক্ষ মাংস ভোজন করিশে বাজা'দ দোষ এয প্রক্ পিজ হয়, হিংজ্ঞ জয়দত্ত মাংস, অভিশার দোষাবহ, শুক মাংস ভোজনে শুলরোগ উৎপার হটতে পাবে। বিষ ও রোগ-ঘারা শাথবা জল মবো মৃত লীবের মাংস ভোজন করলে দোষাবের প্রকোপ, নানাবির রোগ অথবা মৃত্যুপর্যাক্তও হইজে পারে। পচা মাংগ ভোজন করিশে বম-নের বেম হয়, লীব মাংস বায় প্রকোপক। জলমধা ময়িলে এয়ং উহার শিরা দকল জলে পরিপূর্ব হইলে ঐ মাংস ভক্ষণে ত্রিরোধ কুপিত হয়। विवदम्यू भूवाय् त्यकः को ठलुन्नव का ठन्। भन्नाक्षर नष् भूरमार मध्य कोवार भूकार्क गामनर १

(स्वयं। अझ्थां। मर्व्यां। आंना म्यूडम् ।
लक्षरक्षणम् विव्यांमा खर्म्य लग्न् कर्नारः ।
अञ्चन। ति नर्व्या। अर्थी औरा ह लक्ष्मिम् ।
छेत्रः खर्डाम् इत्यां न बज्जनी व्यां स्वत्यं ।
लक्ष स्वत्यं प्रमुख्यां न बज्जनी व्यां स्वत्यं ।
लक्ष यह्मधां न बज्जनी व्यां स्वत्यं ।
लक्ष यहम् धां न बज्जनी व्यां स्वत्यं ।
क्ष्म यहम् धां न बज्जनी व्यां स्वत्यं ।
क्ष्म विवा लिक्षा वाल्यं । अस्य क्ष्म विवा ।
क्ष्म विवा वाल्यं । अस्य व्यां ।
क्ष्म क्ष्म वाल्यं क्ष्म व्यां ।
क्षम वाल्यं क्ष्म वाल्यं क्ष्म व्यां ।
क्षम वाल्यं क्ष्म वाल्यं क्ष्म व्यां ।
क्षम वाल्यं क्ष्म वाल्यं क्ष्म वाल्यं क्ष्म व्यां ।
क्षम्म वाल्यं क्षम वाल्यं क्षम वाल्यं क्षम वाल्यं ।

शक्तिनदेशव सद्धा श्रक्षेत्र काछित्र माश्य त्लके, हर्ष्याम धार्गामरात्र मर्या छो का कित्र भारमहे लागन्छ। भूक्ष का कित দেহের নিয়ার লয়ু এবং শ্রী জাতির डिक श्म लघु, श्राप्त भम्मात्र श्रामीद रमस्त्र म्याज्य गुक्र, किन्न विक्रम्यायत प्रतर्व के प्रश्म मर्कम। शक्य शक्कर टिकु वस् इटेवा बाटक । शक्तिनटनत च क्र ও গ্রীবা ওক। প্রাণাদিলের বক্ষাস্থল, दक, डेबब, कृष्णि, शाम, दख, नहीं, शृहे. ष्क, रक्ष ७ व्या बरेशनि क्रमनः व्यक्ति श्रद्धः। शाना ८ छ। जी नकी निर्धात माःन लघू । वाय कनक, मर्भा (खाको পক্ষীর মাংস পিত্তকারক, বায় নাশক ও ওরু, ফলভোকী পক্ষীর যাংস কর্ম क्षनक, लघु । कक्ष, मारमाभी शक्रीत बारम दुःर्भ, श्रद्ध श्र वाखन्न । दुर्श्कन्त्र लानी मक्टलब मरधा खळाखीत लघु रमश लानीत यारम विकक्त अवः मधु रम्द खीरनटनत्र मद्या रम ही खुनकात्र, छादात मारम अपय ।

यएगावर्गः।

द्याश्किः ।

রকে দরো রক্তমুবো রক্তাকো রক্তপক্ষতিঃ। কৃত্তপুরক্তা ক্ষত্রেটে। স্থোবিতঃ কবিতো সুধৈঃ ৪ লোকিডঃ সঞ্জীবংগালা৲ বরো মূখোছবি-

616 ac 1

क्यामम् प्रनः सातृ सील्या माफिल्यक्र ॥ उक्तमक गर्कात्मामाम् वन्।त्यापर युक्तम् ।

द्याद्भिष्ठम् मा।

বেশহিত মৎলোর উদর, মুধ, চক্ষুং ও পক্ষ রক্ষরণ এবং পুরু ক্ষকবর্ণ। মংল্যের মধ্যে রোহিতই লেক্ট, ইহা অধিক পিত্ত-কলক নহে, রোহিত মৎস্য স্টাম্থ ক্যাস, স্থান্থ, ব্যা, বাত লাশক ও অর্দিনাধ্য বাত ব্যাধি শান্তিকর, ইহার মন্ত্রক ওক্ষণে উক্তিব্যাত রোগ নিবারিক হয়।

ामनीकः।

শিল'ছ: ক্লেম্বল্য বজ্যো বিপাকে বনুহো ওঞা। বাতপিকহয়ে ১ হা আঘৰাত কর্মত সংগ্র

नामभदमा ।

শিলীকা, মৎশা কমবন্ধ কা, বলকারক বার পিউ নাশকা, জ্ঞান ও আমবাজ রোগোৎপাদক। ইহা জ্ঞান করিলে উদবস্থ হইরা মধুরাখাদ হয়।

कक्त बदमा।

ককুরো মনুরঃ দীতো রুখ্যং জেলা করোঞ্চঃ। বিক্তি জনক শ্চাপি রক্তপিরবরং ক্তঃ রু

(विनया बदमा ।

खब्दमरण मधुत, भीतम, त्रुवा, कस-कनक, कक्र, विहेटी क त्रक्काणिय मार्थक।

#### त्याहिका।

स्मिष्ठिकः वाणक्षत्वनाः ३०वने मधुत्रा खद्राः । लिखकः कम्प्रकृष्णकाः वृत्राः विश्वविद्याः विकाः

#### क्विला।

মোচি শামৎস্য বার্নাশক, বলকর, বৃংহণ, মধুর, গুরু, পিরু নাশক, প্রেয় বন্ধক, বোচক, বুষ্য ও দীপায়ি ব্যক্তির পক্ষে হিককারক।

### भाष्ठीकः।

लाहीनः स्त्रपादना वरणा विश्वालुः लिलिकः नमः। पृषक्तः कथार लिक कुषेदद्यापर कद्याकि ह ॥

### (वाश्वव्यक्ता ।

পর্যার। পাঠীন, ক্লেছল, বল্য, নিদ্রাপু ও পিশিতাপন এই গুলি বোরাল মাছের সংস্কৃত নাম। ইতা ভক্ষণ করিলে রক্ত বিকৃত্ হটরা গৈত্তিক কুঠবোগ প্রকাশ পাইতে পারে।

## पत्री।

जुजी कु वाख नवमी सिखा झाल श्रारकांनवी । इस्य किका कथाना ह कवी क्रमा क्रमा क्रमा हरेवः ह

# म् जीमरमा ।

প্রী মৎস্য বার্ পান্তিকর, রিম্ব, খেল প্রকোপক, ভিক্ত, কবারাখার, লঘু ও ফুচা।

# के विकास

वैज्ञित्मी ववूतः विस्था (त्राष्ट्राः) यवयर्षमः । करुणिककरता तृरका पूर्वतः कृषिमाणवः।

ইলিব মৎসা মধুর, স্বিশ্ধ, রোচক, বলবর্ত্তক, পিন্ত প্রেয়া জ্বনক, রুব্য, ভূব-পাচ্য ও বাসুনাশক।

#### मक् लो।

नक्त नी जोविनी क्या। यहूना कुनमा क्या।

मक्त बद्मा ।

वाही, क्रमा, मनुब '8 क्यांबाचाए ।

नर्नतः ।

धर्ततः निकनः किश्वशृष्ट जिल्कासम्मानसः।

चहर्त ।

গর্গর মংসা কিঞ্চিৎ পিত্তলনক, বারু নাশক ও কফবর্জ ক।

#### कविका।

कविका वधुद्र। चिका कक्या क्रिकाहिनी। विक्रिय लिखको वाध्यालिमी वस्थिवर्किमी ।

#### कहे।

মধুর, রিশ্ব, কফন্ন, কৃচিকারক, কি-কিৎপিত্তক্ষক বাসুনাশক ও অধিবন্ধ কি।

द'र्भ मदमाः।

विकिथ रत्ना। बरहक्षां प्रितः क्रिकरता क्रयूरः।

চিশ্বটী। ইহা ব্যুক্তিৰ নাশক, ক্লচিক্তর ও শবু।

#### I PACA!

पक परस्ता इटन विका निवडक र करूर घटतर । याद्य जाराह्मस स्थापन सकल्या रणवर्षमा इ

## यानबद्मा ।

ইহা ভিজনার, রজনিত বাতিকর, কলম, বাবুর অবিরোধী, ভজ্জনক ও বলবত্তি। 4 : FED

बद्धामा मधुदा सित्का विकेको मोछत्मः मधुः।

(हक्कार्मा ।

এরক মংসা মধুব কিয়া, বিষ্টিয়ী শীতল ও লয়।

यण्यकती।

মধাসকর সংজ্ঞভ্জতিকঃ পিকৃক্ফাপরং। * শিশিরো মধুরো ক্রেচ্য সংভস্ম ধারণঃ ঝৃতঃ ঃ

अवन भूषि

ইচা কিন্তু, পিন্তন'শক, কফয়, শীত্ৰ, মধুর ক্চা ও বৰুষ কণিবেবী।

214

त्रक्षेत्र सम्ब्राहिका कृतर, त'द**िनक**रू क्षक्षेत्र क्षिकुण्या कृषको तन्न ये तृथ्य

ইহা মর্র, কিন, কম'স, হসু পির নাশক, কফর শ'চকাবক, লঘু, আমি দাপ্রকারক ৪ বলাই'ফোহি পাদক।

में दे हैं ।

মনগুরো শভকন্ বলেগা গুলাগ কফকবেং লযু:।

মন্তার ব'লুনাশকু, ললকারক, রুধা,
কফজনক ও লাবু।

म्पारमाः।

मभाव वर्षम्॥ विशेषक्त् विषः क्षत्रकृत्व मः । वाडीनवरुक्तानि क्रविकृत भद्रसा वर्षः ॥ **टिश्रता** ।

हेश्द्रक मश्युक ভाষाय मुलाप मर्मा वटल ।

টিছা মেধাকারক, মেদঃ ক্ষমকর, বাব পিত্তজনক ও বিশক্ষণ ক্ষচিকারক ।

गरुदी।

প্রোষ্ঠ ডিফা কট্টঃ স্বাদু, শ্রুত্মী কফরান্তজিৎ। মিগুগাস কঠারে গছা রোচনা ৮ লগুঃ ক্রুঃ।

र्षिभएगा।

ইহার সাস্থাত নাম সকরী ও পোষ্ঠী। ইহা দিক, কটু পাতু, প্রেনাশক, বাছ-শ্বেম নিবাবক, ক্মিয়া, রোগনক, লমু এবং মুখবোল ও কপ্রবাল নাশক।

क् मभरमाः।

कुछा मध्यातः ब्राष्ट्रमः (भाषत्तः रिमाणिनाः । स्यापातः अधिकतः तक्षपात्तः स्थितः स्थारः ॥

क्षमभदमा ।

ক্মুদ্রমৎস্য স্বাচ্বস, ত্রিদোস নাশক, লঘু পাক, ক্চিকারক, বলপ্রেদ ও স্থপর।

श्रामि शुप्रमः गाः।

व्यक्तिक्ष्याः पुः खु बडा झठाः कामानिवानदाः। व्यक्ति कुन्त्रम्थम्।

অতিশব কুন্তনংগা সকল পুণ্তঃ-নাশক, ক্লা, কাদ শান্তিকর ৪ বায়ু নাশক। भ्रा ११

यरमान्यत्त्वा कृष्यः न्याः मृक्यः पृष्टिकत्या व्ययः। कृष्ट्यपः श्राप्ता राजाः श्लोक्ष्यम् साम्बरः॥

मश्रमाव जिल् ।

মৎসা ডিম্ব জাতিশর বুষা, রিপ্পকর, লঘু, কফজনক, মেদোবদ্ধক, বলকারক, গানিকর ও মেহ নাশক।

एक गद्भााः।

सक्तमर्गा दिला न স্থা পূর্মরা বিজ্বিক বিনঃ।
ত্রুত্ত সংসা উপকাবক নতে, ইহা
সুজ্জু বি ও মলবোধক।

मध्र गरमाः।

मध्यपरमा। श्रदेवः त्यकः पुष्टिक्षणदश्चनः।

স্থা মংশ্য বিশেষ তাণকর, ইহা বল প্রায় ও পৃষ্টিকারক।

कनवामि मदमायानाः।

কৌপ্যংস্যাং শুক্রমুত্র কুঠ শ্লেষ্ম বিবর্জনাং।
সংরাজা মধুরাং শ্লিকা বল্যা বাত বিনাশনাং ।
নাদেয়া বৃংজনা দংগা গুরুষোহনিক নালনাং।
মুক্রপিতকরা ব্যাং শ্লিকোনাং স্থানে কিনাং।
ডৌড্যাং পিতকরা ব্যাং শালিকা বক্ষাং।
ডাড্যানা গুরুষো ব্যাং শীলকা বক্ষাং।
ডাড্যানা গুরুষো ব্যাং শীলকা বক্ষাং।

কৃপজ প্রভৃতি মংশা।

কৃপজাত মংসা ভক্ষণ করিলে শুক্র, মৃত্র, কৃষ্ঠ ও প্রেমা কৃষ্ণি হব। পৃত্রিণী-আত মংসা মধুর, মিগ্রু, বলকারক ও বায়ু নাশক। নদী ভাত মংসা বংহণ, প্ গুরু, বাবু নালক, রক্তেপিত জনক, রুষ্য, বিশ্ব, উষ্ণ, অল্ল পুরীষ জনক। চৌড্য মংস্য পিত্রকারক, ক্লিয়া, মধুর, লবু ও লাকল। তড়াগ লাভ মংসা গুরু, রুষ্য, লীতল, বলপ্রদ ও মৃত্রকারক। নির্বর লাভ মংস্য সকল তড়াগ জাক মংসোর নাার গুণ বিশিপ্ত, অধিকন্ত ইছারা বল, আরু, বৃদ্ধি ও দৃষ্টি শক্তি বদ্ধ ন করে।

अञ्बिद्भादि बर्मा विद्भवः।

চেমধ্যে কুপজা মংস্যাং শিলিরে সারসা ছিডাং। সমস্থে তে তু নাল্যো গ্রীবো ভৌডা সমুদ্ভবাং॥ তজাগজাতা বর্ষাসু তার্পান্য নদীজনা। নৈর্বরাং শর্কি শ্রেষ্ঠা বিশেষোহ্যমুদান্ডভঃ॥

কলে সর্বোধর কালে, বসস্ত কালে নদী-কালে সর্বোধর কালে, বসস্ত কালে নদী-কালে, গ্রীয়ে চৌডাজাল, বর্ষা কালে তড়াগ জাভ ও পরংকালে নির্মার জাত মংসা উপকারী, বর্মাকালে নদীক্ষাত মংসা ভক্ষণ নিমিদ্ধ।

# উनजिश्चखरमाञ्थापः।

क्षदर्गः ।

पूंकर कोतर नगर समार रामकोवन विकालि ।
पूंकर स्वयंद्वर जिकर राकलिस स्वर सदम् ॥
समार स्वक्रकद्वर भोकर सांख्यार सम्मनोविवरम् ।
कोतमर दुर्श्वर रामक्र रामकोदि वसायमम् ।
विद्यान वाद्वि वस्तीयार क्षांस्कृतः स्वयंद्वा ।
विद्यान वाद्वि वस्तीयार क्षांस्कृतः व्याप्यु ।
विद्यान वाद्वि वस्तीयार क्षांसम्भा व्याप्यु ।
अस्तीर भाव् द्वाराय क्षांसम्भा व्याप्यु ।
अस्तीर भाव् द्वाराय स्वायंद्वा क्षांसद्य ॥
भूकामायस्य द्वाराय व्याप्यु विद्यारम् अस्ति क्षांस्य ॥
भूकामायस्य द्वाराय व्याप्यु व्याप्यु व्याप्य स्वरम् ॥
सक्तियार्थ क मक्कर विद्यार स्वायंद्वा स्वयंद्य स्वयं ॥

राजदृष्क च्छा कोशाः कुम्रात्रायः कृषान्तः स्य । एककाः महाविषय्विष्ठः विख्यसम्बद्धाः क्ष्यम् ॥

সুগ্ধ, ক্ষার, পরঃ, গুলাও বালজীবন এই গুলি সু:গ্ধর নাম।

ত্ত্ব ভ্ৰমধ্র, প্লিক্ষ, বায় পিত নাশক, मत्र, भएाः एखालनक, नीकल, गकल প্রাণীর সান্ধা, জীবনী শক্তি প্রদ, বৃংহণ, वलकातक, त्मशक्किक, छेएक्ट वाकी-कद्रन, दश्रष्ट्रांशक, जाह्रमा, त्मश्रष्ट शमार्थ সকলের সংশ্লেষ কারক ও রসায়ন। ইহা विद्यहन, यमन ७ विश्व क्रिशांत्र डेल्यांशी u अटहार्वक्त । की बंद्ध त, भागमिक द्रांग, (माव, मृष्ट्री, जम. গ্রহণী, পাঞুরোগ माद, कृष्ठा, श्रुटकान, मृल, डेबारर्ख, खन्म, रेख-রোগ, অর্শ্য, রক্তপিক, অভিযার, ঘোনিcain, खम, क्रम, नर्डखर **এ**ই गक्ल ম্বলে দুগ্র সক্ত হিত্তক্তন্ত। বংলক, রুদ্ধ, ক্ষতে, ক্মীণ, ক্ষ্পাত্তভু ভাগবা স্ত্রী मरछात अर्क द्रम देशास्त्र भरण दुत्न জাতিশয় উপকারক।

## त्त जुद्रमा खन्ः।

গতা দুজা বিশেষে মধুর রূপ প'কয়ে। দীতলং জনাকুছ মিন্দা বাতপিছাজ নাদান্য। দোষ্যাকু মল আেডা কিজিং ক্লেদ করং গ্রহ। জয়া সমস্ত রোগাণাং শাঙ্কিছ সেবিনাং সদাঃ

#### ८माङ्क ।

গবাহন্ধ স্থান্ত, শীতল, তন্যবর্জক, দ্বিপ্ক, বাহুপ্রশাসক, রক্ত পিতনাশক, দোষ, ধাতৃ ও মল সম্বন্ধীর স্রোত্ত কিঞিৎ ক্লেদ করিক, গুরু, জরা নিশারক ও সমস্ত রোধের শান্তিকারক। বৰ্ণ বিশেষৰ পাণ বিশেষাঃ।
কুজায়া গোৰ্ডবৈদ্ধ গুণ বাত্তারি গুণাধিকন্।
পীডায়া হয়তে পিশুৎ ওলা বাত্তহৎ জন্মবা হক্ত পিশুলাক বাত্তহৎ।
গাভীন বৰ্ণ বিশেষে সুম্বের ক্তৰ বিশেষ।
কুফুবৰ্ণ গাভীর কুগ্ধ বারুমাণক ও

ক্ষমর্থ পাড়ীর কুর বার্মাণক ও বিশেষ তাশকারক, পাঁওবর্ণ নাঙার কুর বার্ পিত্তনাশক, শুক্লবর্গ গাঙার কুর শুক্ল, কর্মজনক এবং রক্তপিত্র ও বাত-রক্ত রোগে উপকারক।

দেনো বালবংশারা বিবংশারাশ্চ গুণাঃ। বালবংশা বিবংশানাং পথাং দুক্তং কিলোফুং। বালবংশা ও বিবংশা গাভীর তুল্ধ। বালবংশা ও বিবংশা গাভীর তুল্ধ কিলোষ জনক।

## वक्तिनी ।

दक्षणमा किरमायञ्च एर्मन् रमकृर नगर।

বন্ধর শব্দের অর্থ বক্ন। বাছুর, এক বংশরের বাছুর। যাহার বাছুরের বয়ঃক্রেম এক বংশর ভাহাকে বন্ধনিনী গো কংগ। বছরিনী গভৌর ভুগ্ধ জিলের নাশক, তুপ্তি জনক ও বলকারক।

দেশ বিশেষ চরণাদ্ধাণ বিশেষ:। জনস মূল শৈলেষু চরতীনাৎ যধে করব। লংগে গুরুতরৎ সেবো ধরাহারৎ প্রবস্তঃ ।

দেশ বিশেষে জুগোরর তাশ ভেদ।
জন্সল, কন্প ও শৈলে বিচরণ
কারিনী গাজী শক্ষেত্র জুগুর যথে।-

তার আধিক তারু জানিবে, ইছার কারণ ভত্তৎ স্থানের আহারীয় বস্তার তারেছমা।

আহার নিশেদেশ গুণ বিশেষঃ। স্বন্ধান ভক্ষণান্ধান্ত জ্ঞারৎ গুরু ক্ত প্রব্য ভকুষলান পরুগ বৃধাৎ স্বন্ধানাৎ গুণনায়কম্ ॥ পলাল তৃণকার্পাস বীমস্তান্তৎ গুণৈছিতম্।

गा**के**|त्र काहात्र वित्नाटम का नित्नम ।

স্থাতার তাত তুগ্ধ গুরু ও কফজনক ঐ তুগ্ধ বলকারক, অভান্ত র্ধী ও হুস্থ বাজির বিশেষ উপকারক। খঙ, তুগ ও কার্পাদবীক প্রভৃতি ভক্ষণে যে তুগ্ধ উৎপন্ন হয় বাহা সুপধ্য।

यदिशे दुग्धम्।

माविष्यः मधुतः जेवारि विका स्वक्रकः धकः। मिस्रोकतं मध्यिमान्य स्वधिविका स्ट्रीः हमम् ह

मिरियो कुछ।

মহিষী তুগ্ধ গৰা তুগ্ধ অপেক্ষা মধুব, স্থিগ্ধ, শুক্রকারক, গুল্প, নিজাকারক, অভিযানী, কুশাইন্ধিকারক ও শীক্ষা।

छाती कृत्सम्।

ছাম কৰাৰ মধুর পাঙ্গ গ্রাৰ জন। স্মু। রক্তশিস্তাতিসাহম্ম ক্ষমনাস অরাপহয়। অজ্ঞানা মধ্প কারত্বাৎ কটু ডিক নিবেবণাৎ। ভোকামু পানাদ্ ব্যায়ামাৎ সম্বরেগাপদ্য পথ্যক

চাগ হৃগ্ধ।

ছাগতুগধ কথাৰ, মধুব, শীতল, আহক ভালমু ৷ ইহা যক্তপিত, অভীসার, ক্ষযকাশ ও জরবোবে পথা। ছাগলের দেহ ক্র ও ইহার। কটু ও ক্তিক বস্ত আহার করে ও জর জল থান ও গ্যারাম করে বলিরা হুহাদের দুগ্ধ সর্ববোগনাশক।

मृत्रो कुन्रम्।

दुवान' र समस्याथान मसाक्येत सन् न्यः।

गृगीव द्विश्व।

জন্পলোৎ শন্ন মৃগার ছুগ্ধ ছ গ জুগেবুর নাটে গুল বিশিষ্ট।

स्या पुत्र तथ ।

আবিকং লবনং মাদু নিজে। অকাশারা প্রন্থ। অক্সর, তপনং বৃদ্ধং অকপেন্ত কফপ্রদ্ম। অস ক সেহনিলে দৃড়েওে কেবলে চানিলে বরুম্।

ध्यय जून्य।

মেযত্র ব লবনাসাদ, স্ব তু, 'ল্লর্থোফ্ট, অশানী রোগ নাশক, অচদ্য, তৃথিচনক, র্ষা, শুঞ্জনক, পিতৃবদ্ধক, শ্লেগ্লোৎ-পাদক, শুক্ল, বাষ্ শান্তিকর ও বাত্ত কাদ বোলে উপকারক।

(च'डेकी मृत्रम्।

ক্ৰেছে বত্তাকীর বলা পোষানিলাপক্। অন্ন পটু বযু ধানু স্বধেকলক জ্বা।

(चाहकी हुन्स ।

খোটক দুগ্ধ রুক্ষ, উষ্ণ, বলকারক, শোষ রেগ শান্তিকর, বাগু নাশক, অস্ত্র, লবণাসাম, লঘু ও স্বাদু। অথতিত ক্র বিশিষ্ট সমুদার প্রাণীর দুগ্ধ এই রূপ।

# डेडी जून शम्।

किए पूष्ण मधु चामू मतवा शोलमा छवा। मिनि कुछ क्षानाव (मारवामत वता जतन ।

# डेड्डीजूग्य ।

উত্তীতুগ্ধ লঘু, স্বাদু, লবণাস্থাদ ও দীপন। ইহা পান করিলে ক্রিন, কুন্ঠ, কফ, আনাহ, শোধ ও উদর রোগ নিবারিত হয়।

## दिखनी पृग्धम्।

त्रहनः वस्ति मृक्षः वसूत्रः जूदद्रः श्रतः। वृष्यः रकारे विसर्गाञ्चकः वृष्यः विद्यकान्नसम् ॥

## रिखनी दुग्ध।

হস্তিনীতৃগ্ধ রংহণ, মধুর, কষাদ, গুরু, রুষ্য, বলকারক, শীকল, স্নিগ্ধ, চকের স্বাহ্য কর ৩৪ কৈছব্যকারক।

# नात्रे'ज्ग्धम्।

নাৰ্য্যা সমৃ পয়ং দীঙং দীপনং বাঙলিত্তিত। চকুং দুলাভিয়াভয়ং নস্যান্ধোভনয়োবঃমৃ॥

# नाबीम्ग्राम्।

নারাত্রগধ পর্, শীতল, দীপন, বায় পিক মাশক এবং চক্ষুঃশৃল ও অভিযাত নাশক। ইহা নস্য ও আংশ্চাতন ক্রিয়ার ত্রেষ্ঠ উপযোগী।

## संदर्शकामि मृग्र खनाः।

ধারোভং বোপয়ে। বলাং ক্র্পীড়ং সুধাস্থ। দীপনও ত্রিহোবস্থা ডদ্মারালিলিরং ডাজেং র ঘারোভং লস্যতে বয়াং ধারালীডভ মাধিবয়। দুডোভ মাবিকং পর্বাং দুডলীড মঞ্চাব্য: র व्यायः कोत्र मांक्यांकि संक्षः (क्षणाय वर्षत्र । (व्यापः मार्व्यापक्षः वरः) माहित्य वं व्याप्त ॥ मात्रीकोतः व्यापद्यत् एउः माष्ट्र मृष्ठः विस्तृ । मृद्याकः क्षण्यास्त्रः मृष्ठः मीत्रकः 'श्याक्षः ॥ व्याप्तामकः कोत्रानिके नामाञ्चक् व्याः श्राः । करमा त्रव्यः पृष्ठं मिक्षः यं स्थाः । व्याप्ता स्वर्वा स्वर्वः व्याः यं विवर्कत्त्रः ।

शादाक्षामि कृतन्त्र छ।

ধারোক্ষ লোচ্গ্ধ বলকারক, লঘু, শীকল, অয়ুক্তুলা, দীপন ও ত্রিদোষ্ নাশক। ধারাশীকল দুগ্ধ (দোহনাত্তে কিবৎ কাণ থাকিয়া শাকলত। প্রাপ্ত ) বজ্জনীয়।

শৃতোষ্ণ ছগ্ধ বাতলেয় নাশক, শৃত শীতল ছগ্ধ পিন্তনাশক, দৃদ্ধ অংক্ষ কল দিবা অধি সন্তাপে জলভাগ মারিয়া দৃগ্ধ মাত্র অবশিষ্ট রাখিলে ঐ দৃগ্ধ অপক দৃগ্ধাণৈক্ষা লঘুতর হয়। নির্দ্ধ দৃগ্ধ জালাদিয়া যভ অধিক ঘন করিবে, উলা তত্ই গুরুতর, দ্বিগ্ধ, প্রা ও বলবদ্ধ ক হইবে।

পেয়ু ব বিলাট কীরণাক ওচ্চেপিও নোরটামাং লক্ষণ নি গুগাঁশচ। কীয়া ভংকার সূভায়া ক্ষা পেতৃত মুচাতে। মাই মুগুরা পাকাঃ পিও: প্রোক্তঃ ক্ষিয়ারকঃ। অপক্ষেব বয়কী জীৱলাক হৈ ৪২ পয়ং।

য়ধা তজেৰ বা নকী দুৰ্ব বন্ধ সুবাসসা।

অবভাগেন র'ছত ভক্রপিও স উচাতে।

নকীপূৰ্ব ভবনীর মোরউভ্জেল্ডে হত্তবি ।

পেরুবক কিলাউন্চ জীরলাক ভবৈব চ।
ভক্রপিও ইবে ব্যা বৃম্হণা বলবর্জনাই।

ঘীপ্তায়ীনাম বিনিজানাম নিজবে চাভি পুজিভাই ই

যুধলোয় ভ্যান্য হুক্পির কর প্রবৃথ।

লযুর্বলক্ষেরা ক্রচ্যো মোরউঃ স্যাংনিভাবুডঃ ॥

পের্য, কিলাট, স্টীরশাক, তক্রপিও ও মোরট ।

অচির প্রস্ত গাভীর ঘন তুগ্ধকে পেষ্য বলে। নষ্ট চুগ্ধ জ্বাল দিয়া পিও कांत्रत्न छाटाएक किनाहे नटर। जनक নষ্ট ভূগেধর নাম ক্ষীরশাক। দুধি বা ডক্র স্বারা বিকৃত চুগ্ধ বন্ধে বন্ধ করিয়া তাহার দ্ৰব ভাগ নিৰ্গত হইয়া যাহা অবশিষ্ট থাকে, ভাহাকে ডক্রপিও বলে। নষ্ট তুগ্বে। ९ शत्र क्रमीत्र छानदक द्यादि रतन । পেযুষ, কিলাট, ক্লারশাক ও ডক্রেপিও धरे नकल खवा द्र्या, दुःश्व, वलवक्र क, থ্যু, শ্লেম জনক, হৃদ্য ও বাব্লিভ नामक। এই मकन खवा पीक्षांत्रि । निकारीन यांकित शत्क अवर विक्रंश द्यारम वित्नय केलकावक । हिनि मः युक মোরট লঘু, বলকারক ও রুচা। ইহা ट्याकटन मूर्यत्नाव, कृष्का, पार, त्रकिशिव ও জর নিবারণ হর।

সম্ভানিকা।

मग्रामिका चेका बीखा वृथा बिलाका वांक्यूर । क्षेत्री वृश्यनी विद्या रकाम यक सकता ह স্ব

সম্ভানিকা অর্থাৎ পর গুরু, দীজন, ব্যা, তৃথিজনক, বৃংহণ, দ্বিগ্ধ, বলকারক, কফজনক, শুল্লোৎপাদক, বায়ুপ্রশমক শুরক্তপিত নাশক।

খণ্ড। দি সুক্ত তুগ্ৰ গুণাঃ। খণ্ডেন স'ছত ও দুগ্ধ কৰ্ফিছে প্ৰনাপ্তন্। সিভা সিভোপনাযুক্ত গুলুকা ভিন্তাপ্তন্ত্ৰ সঞ্জ মুক্তভুদ্ধ পিক্সেয় কর পরস্।

थ शामित्रक क्रांत्रव छन ।

থতের (খাঁড়ের) দহিত ছুগ্র পান করিলে কফ বৃদ্ধি ও বায়ুনাশ হর। চিনি বা মিছরি সংযুক্ত তুগ্র শুক্তকলক ও ত্রিদোষ নাশক। গুড়ের সহিত পান করিলে মৃত্রকছ্নোগ নিবারণ ও শিস্ত-শ্লেয়াব বৃদ্ধি হয়।

প্রভারে। দিভবং তুগ্ধম্।

ছাত্রী চক্র গুণাধিক)দ্ ব্যায়ামাকরণার্থা। প্রাভাতিক ওদাপ্রায়ং প্রাদোষ দ্ গুরু শীতসম্ । দিব কর করাঘাতাৎ ব্যায়ামানল সেবমাৎ। প্রাভাতিকালু প্রাদে মৎ লঘুবাত কফাপছম্ ॥

ममत्र विरमटिष छून् रभव था एक ।

বাত্তিকালে স্থিপ্তা হেতু ও শারী-রিক শ্রমাদি বক্ষনহেতু প্রাতঃকালীন চুগ্ধ সন্ধ্যাকালের চুগ্ধ অশেক্ষা গুরু ও শীকল এবং স্থ্য কিরপ ও বারোম সেবনাদি হেতু প্রদোষ কালের ছুগ্ধ প্রাভাতিক চুগ্ধ অপেক্ষা পদ্ধ বাছ প্রোম্বান্তিক। मृत्य (मदन मधत्र वित्यत्वन खन्नार । वृषाः युःदव वश्चि दोलनकतः शृक्षाक्कात्म लत्वा धरात्क जू क्वावदः ककवतः लिखालदः दोलमव्। धारत वृष्ठिककः क्या कत्र नदः वृष्ठव्

য়াত্রৌ পধ্য মনেক জোর শমনৎ ক্ষারং সভা পেতাতে চ

ষদ্ভ পেরং নির্নি কেবলং পরে।
ভোক্তাং ন তেনেছ সহে'দ্নাদিকন্।
ভবভাজীরে ন লারীত সকবো।
ভীরসা পীউসা ন লোৰ মুৎসুজেং ॥
বিষাধীনাম পানানি দিবা জুংকে ছি যথরা।
ভিত্তিকাং প্রান্তী ভীরং সদা পিরেং ॥
দীপ্ত'নলে কুলে পুংসি বালে বৃদ্ধে প্রথপ্রের।
মতং ছিড্ডমং প্রাং সদা: ভজকরং যতঃ ॥

मभन्न विद्याद्य मृत्य (मवद्यत्र एव।

প্রাক্তঃকালীন দুগ্ধ বুষা, বুংক্প ও অধিদীপ্রিকর, মধ্যাহেক বলকারক, কফ পিত নাশক ও দীপন্ন, রাত্রি কালের দুগ্ধ পথা ও অনেক দোষ নিবারক। দুগ্ধ বালকের দেক বুদ্ধি, বুদ্ধের ভক্ত বুদ্ধি ও ক্ষরবোগ শান্তি করে।

জনেকে বলেন বাত্তিতে কেবল মাত্র দুগ্ধ পান করিবে, দুগ্ধের সহিত ভোজা জ্ববা আগার করিবে না, জ্বার্নি হইলে কিবংক্ষণ শরন করিবে না। দুগ্ধ পান করিয়া ভাগাব অবশিষ্ট রাখা উচিত নহে। দিবলে মে দকল বিদাহী জন্ন-পান সেবন করা যাব, ভাগাদের বিদাহ শাস্তির নিমিত্ত রাত্তিতে দুগ্ধ পান করা উচিত। দীপ্রাধ্বি, কুশ, বালক, বৃদ্ধ ও দুগ্ধ প্রিয় বাজিক পক্ষে দুগ্ধ অভি হিতকারী পথ্য, কারণ ইহা সন্ধাঃ গুল্লেক মবিজস্য দুর্গ্বস্য গুণা। ।
कोরংগব্য মধাজংবা কোজং দুগুদ্তাং লিবেং।
লঘু ব্যাং জয়হাং বাত পিত্ত কঞাপহয় ।

मिकि मृग्द्धन छन ।

भविक क्रेयन क्षा त्वाम गृह वा छात्र मृग्ध अध्, त्वा ७ जिटनाय मानक ।

म् श्रामकानाः ।

त्भाषुष श्रष्ठयः किश्या क्वाचीषुक्षमयुम्कवय्। कटवर रक्षमः विद्यायश्चः द्वाक्षः वश्यर्क्षमय् । वस्त्रिक्षः वृष्यः सम्बद्धाः स्त्रिक्षः स्त्रु । ° क्राजाद्वर्श्वसारम् । अस्त्र स्त्रीदर्व श्रणमाद्व ॥

## म भ सदकन ।

গোদৃগ্ধ বা ছাগদৃগ্ধের ফেন ত্রিদোবর, রোচক, বলবদ্ধক ক, আগ্রন্থি কারক, ব্বা, সদ্যা তৃত্যিকর ও লবু। দৃগ্ধকেন অভিসার, অধিমান্দ্য ও জীব-করে বিশেষ উপকারক।

मिलिकः मृग्धम्।

বিবৰ্ণ বিষ্ণাশ চাল্লা পুৰ্বজন প্ৰান্ত প্ৰান্ত বিশ্বলাপ কৰিব বুক্তন বুক্তা বিশ্বলাভঃ ৪

নিশিত দুগ্ধ।

বিবর্ণ, বিরস, ভার, দুর্গন্ধ, প্রাধিত (ছেঁড়া) ও আয় লবপযুক্ত দুগাধ বক্তনীয়, কারণ উহা পান করিলে বৃদ্ধি প্রভৃতি নষ্ট হয়।

ত্রিংশন্তমোহধ্যার:।

मधिनर्गः।

मद्द्रा श्वाः ।

वरा,कः वीनमः विका कवार्यामुद्रमः सङ्गः । लाटक्ष्मः चान निवास त्वीस विकासक सवस्। षु अकूटम्ब् अधिन)रिप्र मीक्ष्म विश्वत्य स्वद्धः। व्यक्तिमाद्धः क्षार्टि नार्टिंग नाग्रस्क वस्यस्वकृषः ।

#### म भ

দ্ধি উষ্ণা, দীপন, স্নিশ্ব, স্বীয়ং
ক্ষার রস, জরু ও পাকে অন্ন। দ্ধি
ভোজনে বাস, রক্তপিন, শোগ, মেদঃ
ও কফ জন্মিয়া থাকে। কিন্তু মৃত্তরুচ্ছু,
প্রভিশ্যায়, শীতসংযুক্ত বিষমত্বর, অভিসার, জারুচি ও কার্শ্য রোগে দ্ধি বলকারক
ও শুক্ত কনক হট্যা উপকাব করে।

#### मिश्रिक्षाः ।

कारमे मन्त्र उत्तर सामृ साम्रक उत्तर शहर । कार हर्जुर्थ गडाझर शकर परि शकरा ॥

### मनिएअम ।

মন্দ, স্বাদু, স্বাবয়, আয় ও আত্যয় এই পাঁচ প্রকার দধি।

मन्द्रामिनः र लक्ष्णांन ख्राम्ह ।

मन्द्रप्रवराकः उत्तर किष्क्रम् चनर क्ष्ट्रर ।

मन्द्रप्रवराकः उत्तर किष्क्रम् चनर क्ष्ट्रर ।

मन्द्रप्रवर्गकः र गाउर राज्ञस्य दिष्ट्रक्र ॥

यरम्यान् स्वर्गर खाउर राज्ञस्य मृत्रम् ६ द्र्याप्त्रम् अख्याप्त्रम् ।

याष्ट्रप्राप्तरम् छवांन्य स्वर्गर स्वर्गक्षेत्रम् ॥

याष्ट्रप्राप्तरम् अपारकः स्वर्गम् स्वर्ग्यस्य ॥

याष्ट्रप्राप्तरम् अपारकः स्वर्गम् व्यवस्य ।

याष्ट्रप्राप्तरम् अपारकः स्वर्गम् विरुद्धस्य ॥

याष्ट्रप्राप्तरम् प्रवर्गम् स्वर्गम् ।

याष्ट्रप्राप्तरम् व्यवस्य क्षेत्रम् वास्त्रम् ॥

ख्राण्डाम् व्यवस्य विरुद्धस्य ।

ख्राण्डाम् व्यवस्य स्वर्गम् वास्त्रम् ।

मक्षि अञ्चित्र चन ।

.संस्थिति द्वितिष्ठ श्रीत पृत्रवत्र सिक्ति, स्वतिकाषीय श्रीकिष्ट वन । सन् मिर मनम्ब धार्कक, बिलाय कनकं अ रिनाको ।

যাহ। শম্যক রূপে কল হইরাছে, স্পাঞ্চ পাদ্বস উৎপন্ন হইরাছে ও অন্তর্ম বিশেষ বে,বা; মার না ভাহাকে পাদ্দধি কহে। স্থাদ্দ দিবি অভিশার অভিযালা, ব্যা, মেদোবন্ধ ক, কফজনক, বায়্নাশক, পাকে মধ্র ও রক্তপিত শান্তিকর।

সাচর দ্ধি ঘর্ন, মধুর, ঈ্বং ক্ষার বদ, ইহার গুল সাধারণ দ্ধির ন্যার জা'নবে। যাহার মিষ্টরস তিরোহিত হঠবাছে গুল বাজকল অমুরস উৎপদ্ধ হইবাছে ভাহাকে অমুদ্ধি কহে। জুল দ্ধি দিশিল, রক্তুপিত বদ্ধ গুল ক্ষরকা জারক। জারার দ্ধি ভোজন করিলে দ্যুহর্ষ, রোমাঞ্চ ও ক্যাদ্ধি দৌপন, অভিশ্ব হক প্রক্রিপ্ত হব। এই রূপ দ্ধি দৌপন, অভিশ্ব রক্তিপ্ত জ্বনক ও বাজ রক্তোৎ পাদক।

## त्नामित्र खनाः।

त्रतार विधि विष्णेष्य वाष्ट्रक क्रिक्ष्म् । भागत्वर वीभनर क्षणार शक्तिकर भरनाश्यम् ॥ के कर वश्चा मर्णयानार यस्या भरार खनाविकम् ।

## त्नामि ।

গব্য দ্বি উত্তম স্বাদু, আন্ত্র, ক্রচিপ্রদ, পবিত্র, দীপন, হারা, পৃষ্টিকারক ও বারু-নাশক। সকল প্রকার দ্বির মধ্যে গব্য দ্বি উৎকৃষ্ট।

## मार्थिष्विषि खनाः।

বাহ্মিৎ বধি সুক্তিও স্লেলন বাৰ্ডলিকসুৎ। স্বান্ পাক বভিষ্যান্দ ভূমাৎ প্ৰৰ্জন দূৰকৰ্।

# विश्व विश्

বাৰিং দ্বি ত্ৰিও, ককজনত, বাহু-পিত দ্বাপক, স্বাস্থ্ৰ পাত, অভিবাদী, ব্ৰ্য্য, কক্ষ ও মন্তব্যক।

## छात्रीवृद्धि ।

আল্লং ন্যুন্ত্রয়ং প্রাঞ্জ্ লয়ু নোবত্রদাপদন্। লন্যতে দান কানার্লঃ করকার্লোয়ু দীপদন্ঃ

#### क्षामध्य ।

ছাগদ্ধি উত্তম গ্রাহী, পঘু, দীপন ও ব্রিদোধ নাশক। খাস, কাস, অর্পঃ, ক্ষারোগ ও কার্শ্যরোগ ইহা প্রশস্ত।

## लक्षुस्वधि।

श्रक पूर्वक्षर क्रहा९ व'र्यक्षक श्रद्धाक्षर । श्रिकामिमाशक्षर मन्त्र वास्त्रश्चि वनवर्षमम् ॥

## शक्तुरस्त्र मिर्व ।

পরুত্ত জাত দবি রুচ্য, স্পিন্ধ, উৎ-কৃষ্ট গুণবিশিষ্ট, বায়ুপিত্তনাশক সমুদ।র ধাতু পুষ্টিকার, অমিকারক ও বলবর্ত্তক।

# निः नत चुक्क परि ।

खनात्र वृद्ध मध्याचि चीखनः गाउमः स्यू । विकेषि वोणसः स्रव्धः अववी द्वायनानस् ।

## मबरीम कुरबंब परि।

निःमत वृति नः शार्थी, भीकन, तातु-स्नमक, नयू. विक्रेकी, वोनन, स्नृत्र ७ श्रव्यी द्वान नामक।

## शानिक वृधि।

वाक्षिकः वाद वृष्टिकः वाक्ष्यः सम्बूब् बक्षः। वसन्त्रिकः सधाः वर्षः नाकि निव हुः ।

## नामिक विवि।

গালিত দ্ধি তুলিত, বাতস, ক্ষ-কারক, ওরু, বলকারক পুটিকর, স্বচ্চ শুমধুর ইহা অধিক পিত জনক নহে।

## पर्कत्रामि नशिष्ठ परि।

मनक्त्र पृषि स्थिषे कृषा शिवास शस्तिकः। मक्षण शिवमूर द्वार दुरवर्ग वर्गर वर्णा

## भक्तापि नश्युक पशि ।

চিনির সহিত দবি সেবলে ভ্রুণা, রক্তপিত ও দাহ নিবারণ হয়। এড় সংস্কুত দবি বায়ুনাশক, স্বুবা, সুংখ্ণ, ভ্রিকর ও ওয়া।

त्राटको स्विष्टश्यम् निर्दर्भ ।

स मकः प्रिकृश्वीस महाना स्वस्थित् ।

मात्रु एश्वरूषः मा (कोकः स्मान्यस्थिति ।

स्वति । जमारस्य स्विरमा हारको ज्ञास्ति ।

स्वति ।

स्वति सरकारस्य दिकारहत् स्वरूपः ॥

রাত্রিতে দবি ভোজন করিবেলা যদি ভোজন করিতে হল ভালা হইলে মুদ্দা যুব, মধুবা আমলভের লহিভ ভোজন করিবে, উষ্ণ করিলা ভোজন করা নিবিশ্ব।

অনাত্দেও এই য়ণ উক্ত আছে, বৰা মাত্ৰিতে যথি ভোলস বিভিন্ন, কিছ কল ৯ বুক সংস্কৃত ক্ষিয়া ভোলস कतित्न त्माचावर इत्र मा। त्रक्तशिख । क्यम्ब त्यांत्र शांकित्न मधि अत्कवादत निश्चित्र।

ধ্ৰু বিশেষেণ বিধি নিষেধী।

বিষয়ে লিশিয়ে চাপি সহাসু দ্ধিলস ডে।
ভারত্ গ্রীধ্বসহের্থায়ত্ত্পিক্তিন্।

अङ्ग वित्नारम विनि नित्यत ।

বেম্স, শ'ত ও বর্ষাকালে দরি ভোজন প্রশন্ত এবং শরৎ, গ্রীম ও বশস্ত কালে দরি ভোজন প্রথম নিষিদ্ধ।

আবিধিনা দ্বি সেবনে দোষম'হ। আয়াসূক্ পিশুবীসপ কৃষ্ঠ পাঙ্গময়ক্ৰমান্। এগাধুয়াৰ কামগাঞোনা বিধিৎ ছিত্ৰা দ্ধিনিয়ং।

> বিধি লভ্যন করিব। দধি ভোজনের ফল।

আবিধি মতে দ্ধি ভোজন কবিলে, আর, রক্তণিত, বীসর্প, কুঠ, পাণ্ডুগোর, ভ্রম ও উৎকট কামণা রোগ উপাস্থত হয়।

## नत्र म्खा

ষয়নূপরি যোভাগো খনং যের সমস্তি । সংগাবে সর ইতু তো বর্গো সংগ্রুত । সরং বাণুরারুর যো বাতবলি প্রণালন । সাম্মেরি প্রশ্বমাং পিরস্লেয়া বিবর্দ্ধনা । বঙ্গুমের্ম বল ১ সন্ত্রকাভিলাবকুই। প্র্যোজ্য বিশোধন জোগে ক্ষত্ত্রামিরাপর্য । অধুযার প্রথম শীত্র ভিনার ক্ষসকর্য ।

#### गत्र ४३ यम् ।

ষ্ঠির উপরিভাবে ছন ও স্থেছ পৃষ্ঠি সংস্কুত যে অংশ থাকে ভাষাকে দ্ধির সর এবং মঙকে মস্তুবলে।

দবিব সর স্বাতৃ, গুরু, ব্বা, বাবুনাশক তা গ্রিম, ক্যুকারক, অমুবস বিশিষ্ট, বস্তি শে ধক ও কফ পিতৃবদ্ধ ক। দধির মস্ত (মাত) ক্লান্তি নাশ্দ্দ, বলকর, শঘু, তারে কচি প্রদ, স্লোত্তো বিশে ধক, আইলাদ জনক, কফনাশক, তৃফানিবারক, বারু-ন শক, বলভাস কাণী ও তৃপ্তি জনক। ইহা শীঘ্র মল সংঘাত ভেদ করে।

# धकिविश्नेखरमा २ शांग्रः।

ডক্রবর্গ । ডক্রম্ ।

খোলত মধিতং ভক্র মুদ্খিক্ত ভিক্রাপি চ।
সসরং নির্মাণ যোলং ম প্রতং জ্বরোরকম্ ।
ভক্রং পাদ্ জসং প্রোক্ত মুদ্খিন্তুর্জ বারিকা ।
ছাক্তিকা সারহীনা স্যাহ শুক্তা প্রচুর বারিকা ।
খোলন্দ শকরা যুক্তং গুলিভের্মং রসালবহ।
বার্ডপিক হরং লাগি মধিতং কফপিকমুহ ।
ভক্রং এগছ কবারাল্লং বাদুপাক রসং কল্প।
বার্যোজ্ঞা দীপনং বুকাং প্রথম বার্তমালনম্ ।
গ্রহণাপি মতাং পর্যাং ভবেহ সংগ্রাহি লাখবাহ।
কিক্ষাণু বিপাকিত্রাল্ল পিক প্রকোপনম্ ।
ক্বারোজ্ঞা বিপাকিত্রা ভেক্তি পি ককাপহম্

নত্রদদেবী ব্যথতে কদাঙিৎ
নত্রদ দ্বাঃ প্রশুবধিরোগাঃ।
যথা সুরাগাং অমৃতং সূবায়
তথা নরাগাং জুবিতক্রম হুঃ ৪
উন্ধিং কফকুছসাং আবস্থং প্রথং মন্তব্।
ছাক্রিকা লাভাগা লাভাগী পিতক্রম ভ্যাহরী ৪
বাতরুং কফকুৎ সাতু বীপণী স্ববাহ্নি।
সমুষ্ঠ্ ভংযুতং ভক্ষং পরাং স্বা বিশেষ্ডঃ ৪

(खादकाख् ख्युकं क्षेत्रांष् क्षेत्र वृष्ठ) कर्मावष् । ध्युक् ष्ट्रक माळा छत्र पृथ्ठि कप्तराव्य । धारक्ष्मा मेनारक करू छो तेनकर मर्युक्य । चित्रक्षाम मुक्त स्थाम तेनकरक्ष मर्युक्य । ध्यामान कर्मा (कारके बिकरके मरवा के क भीममं धान कार्नारको संक्रिय अर्थुकारक । धरवस्कीय व्यक्त सर्वारकोमान करम् ॥ मूर्वक्रक्ष्म मुख्य सर्वारकोमान करम् ॥ मूर्वक्रक्ष्म मुख्य सर्वारकोमान निमानम् ।

#### (नाम ।

त्यान, विषक, कता, डेमचिर छ ছচ্ছিকা এই গুলি ইহার পর্যায়। সর नः भुक्त निर्श्वल परित्र न म एशल, नत्रशैन निकल मधित नाम मथिक, प्रकृतिश्म कलमः मृक पश्चित्र नाग कतः, खाः करु कल विभिष्ठे प्रति नम डेन पट, माइयोन प्रित्र माग एकिना थ'र श्राप्त जल मः त्रुक प्रतित नाम आका। भेकता मि भव ঘোল রসালবৎ গুণকানী ও বাধ পিত নাশক ও আহল।দ জনক। মণিক কফ পিত নাশক। ভক্তগ্ৰাহী কথাৰ ও অমু-तम, कीर् इटेश अष् तम रम, दूरा ण्यू, डेक्शवीर्घा, मीशन दूषा, खें,हिक्मनक বাৰ নাশক, প্ৰহণী প্ৰভৃতি বোলে পথা লম্ম হেতু সংগ্ৰাহী, তাৰ হট্যা পাত্ ক্ষার ৩৪ উষ্ণ হর বলিয়া এবং কুল্লভা হেতৃ পিত প্রকৃপিত করে না এবং কফ निव'द्रव कदत्र।

ভক্ত দেবী ব্যক্তি কপুন ব্যথিত হণ না, ভক্ত দেবনে রোগ দকল প্রবল হইতে পারেনা, অমৃত্ত যে রূপ দেবতা-গণের ত্ব জনক, পৃথিবীতে ভক্তাও দেই রূপ মুখ্য দিলের উপকারী। উহাখিৎ কফজারক, বলকর ও উত্তর্গ আবহ। ছবিকা জীতল, লগু, পিওঁছ আজি নালক, তৃষ্ণা নিবাংক, বাযু নালক ও কফ জনক। লবন মিপ্রিত করিয়া ওক্রে সেবন কবিলে অগ্নি নিথি ছব।

তক্র হটতে সম্পুরিপ গৃত উদ্ধ কিবিদা লইলে তাগা অদিশন লঘু ও মুগ্থা হয়, অল পরিমাণে উদ্ভ করিলে উহা ওফ, বুরাও কফ জনক হুদ এবং ফুল উদাব না করিলে খন ওক্ন পুষ্টিকর ও প্রোয় নর্মিক হন।

বয় রাদ্ধ হটলে শুগু ও নৈকার

লগণের স্থিত তক্ত সেবন উপকানী, পিত্ত
প্রবল হটলে স্থান্ধ চিনিব সহিত এবং
কফাবিক্যে শুগুঁঁ।, পিপুলা ও ম্রিচ
চুপের স্থিত তক্তা স্পাধা। ছিলু,
ভাবক ও নৈকার সংস্কু ঘোলা ক্রচি
কাবক, পৃষ্টিকর, বলাস্কুক, অভিশার
বাহল এবং বস্তিশুল আর্ম-ও অস্পিনার
রোধ্যে স্থাপা। মৃত্রকভ্রোগে শুড্রের
সহত ও পাপুরোধ্য চিতার মুলের
মহিত মেবনীয়।

আশিক হক্তে কোঠের ককনাশ ও কঠে কফশশক্ষ করে। দীনস, খাস ও শা-সাদি রোগে প্রকৃতক্ত প্রশাস্ত।

## कक्रायन विशिः।

লী হকালেছ গ্রম'ম্পে) চ তথাগাতাব্যের চ।
আন্তেটা স্তোগাতাগাং বাবে হক্তংসান্ম তেওঁপন্ম ।
ভনুম্বি গ্রম্মু বি প্রস্কৃতি প্রস্কৃতি ব্যম্মুর ।
লাভ বেলে প্রকানেশ্য সুত্ত আক্ষান্ম ।
মেহা গুলু মতীগারং মূল প্রীয়োম্বাক্ষরী।
বিক্রকোঠ গড়বাটান্ কুঠলোক ভুষাক্ষিমীন ।

रेमश्ककः करक वृशांश्याककारमः मृत्रारमः । सब्धः अवदारम् म टारमः त्रकणिवटमः । साब्राकामि वृशोगारका वृष्ट्यनः चळमादिरम् ।

## **छ**क्क स्मरन विशि ।

শীতকালে, মন্দায়িতে বাতরোগে, অক্লচিতে ও লোভঃ ক্লছ হইলে তক্ত্রে অমৃতের ন্যার হিভকারী। তক্ত নেবনে বিষ, বমি, প্রদেশ, বিষমজ্ঞর, পাওু, মেদেশ রোগ, গ্রহনী, অর্দার, মৃত্রগ্রহ, ডগন্দর, মেহ, গুল্ম, অভিসার, শূল, শ্লীহা, উদর রোগ, অক্লচি, খিত্র, কোষ্ঠ গত ব্যাধি, তুষ্ঠ, শোথ, তৃষ্ণা ও ক্রিমি রোগ নিবারিত হয়। ক্ষত, দৌর্মবল্য, মৃদ্র্যা, লম, দাহ ও রক্তেপিত্র বিকাদর এবং উষ্ণকালে তক্তে অব্যব্দ্রেষ। যে কপ ম্ব্যাদি অষ্ট প্রকার দ্বি লিখিত হইরাছে ভাহাদের তংক্রেরও সেই সেই গুণ জানিবে।

# बाजिश्मखत्मार्थात्र ।

নবনীতবৰ্ম । নবনীতম্।

মুক্তবং সরজং বৈশ্বকাশ নবনীতকৰ । *
লবনীতং হিতং ব্যাং বৃষ্যাং বর্ধবলাগ্রিকুর ।
সংগ্রাহি বাস্তাপভাস্ক্ ক্ষয়ার্গোহ্রিক কাসকং ।
ভাজিতং বাসকে বৃত্তে বিশোধাসমূতং বিশোধা ।

भवामवनीख ।

मृक्ष्य, अञ्चलः देशत्रश्रदीम ও नवनीठ ध्रदे श्रमि देशात्र भर्धात्र ।

्र_{क्र}भग नरनीच रिख्यनक, त्रुग, लाब-ल्यांस्थाहक, वसकातक, व्यक्तिकत्र ७ নংগ্রাহী। নবনীত ভক্ষণে বাভিক রক্তা-পিত্ত, ক্ষরমোদ, আর্কা, আর্কিত ও কাস মোনে উপকার দর্শে, ইহা বালক ও ব্যক্তের পক্ষে উপকারক, বিশেষতঃ পিত্তর পক্ষে অমৃত সম্বৃধা।

ম। হিষ নবনী ভ্ৰুম্। নবনীত গৰিখাক বাজন্তেক কর গুরু। দাহপিত অগমহাৎ মেদঃ শুক্ত বিষৰ্ভন্ম ৪

मारिष नवनीछ।

্ মাহিষ নবনীত বাতপ্লেম অনক ও গুরু। ইহা কক্ষণ করিলে দাহ, পিত্ত ও শ্রক্ষ নিবারিত এবং মেদঃ ও ভুক্ত বন্ধিত হয়।

পরদোনবনী চক্ষম্।

দুঝোরণ নবনীত ও চকুষা ইকশিকর্থ।

বুবা বলা দভি বিধা বরুর প্রাহী দীতন্ত্র

मृत्धाः शत्र नवनीक ।

দুর্থেখি নবনীত চকুর স্বাস্থ্যকর, রক্তেপ্ত নাশক, রুষ্য, বপকারক, অভি-শব স্থিত, মধুর, গ্রাহী ও শীতপ।

সদাঃসমূক্ত ন্বনীকৃষ্। নবনীতত সন্যত\ আধুআছি হিল\ কছু। বেধা\ কিজিৎ ক্যায়ায় নীযভক্তা\ৰ স\ক্ষাং &

महा डेड्ड नवनीक ।

ন্দ্যোজাত নগনীত ভাদ প্রাহী, নীতল, লমু সরণশক্তি বর্মন্ত প্রথ আর পরিমাণে ভক্ত সংযোগ হেতৃ কিঞিৎ অর ও ক্যায়াভাদ। हित्रखनः वनमोक्षम् । मकान्न क्ष्मिन्नान्त्वा व्यक्तानाः कृषे कान्नम् । रक्षकमः बाह्यसम्माः वस्त्रीकः विज्ञवसम् ।

# চিत्रक्रम नवनीछ।

আহিক দিবলের নবনীও প্রেম জনক, গুলু, মেলে। বর্জক এবং উহাতে কারগুণ কটু ও আররস থাকাতে, দেবন করিলে বমি, অর্শ- ও কুঁটরোগ উৎপন্ন হইতে পারে।

# जयुज्जिः नंखरमार्थायः ।

মুক্ত বর্মঃ।

## चुक्रम्।

ষ্ঠ বাজাৎ ছবিঃ সপিঃ করাতে ভদ্ধবা অব।

মৃত্তৎ রসায়বাং স্বাদু চকুমাং বাঁহু দীপনব্ ।

মীভবার্যাং বিষালক্ষী পাপপিভানিলাপত্ম।

অংশাভিয়ান্দ কাৰ্যোজঃ ভেজো লাববা

বৃদ্ধিকৃষ্ট

বরস্থিকর ( বেখা দাসুখাৎ বলকৃদ্ধক । উদাবর্ত অবোদাদ শুলানাহ এণান্ হরেও । বিশ্বং কৃষ্ণকরং কৃষ্ণা কর বীদর্শ রকানুও।

#### वुक्त ।

ম্বত, আজা, হবিঃ ও দর্পিঃ এই গুলি ইহার পর্যার।

দ্বস্ত রসারন, স্বাচ্ন, চক্ষ্মা, অমিদ্বীপ্রভারক, শীতল বীর্ঘ্য, বিষয়, দারিত্র
নাশক, পাণধুংনী, শিক্ত নাশক, বার্
লান্তি কারক, অর অভিযালী, লাবণ্য
ভারক, প্রভাবর্ত্তক, ভেজরর, কাভি
ভারক, বৃদ্ভিউৎপাদক, স্বর বিশোধক,
স্বরণাক্তি বর্ত্তক, বায়ু বৃদ্ভিকর, বলকারক,

श्वज्ञ, जिस्र ७ द्वाच क्रमक, वृक्ष नामि कतिरण डेवावर्ड, क्रम, डेवाव, मुन, जानार, त्वन, डेवाक्ष्य, बीमर्ग क्र ब्रक्टरमाय डेग्णमिक दम्र।

## वया चुक्रम्।

খন্যৎ বৃতৎ বিশেষের চকুষ্যৎ বৃষ্য মন্ত্রিকৃষ্ট । বালুপাক রসং দীভং বাতপির ককাপষ্য । নেধা লাবনাকারেয়া জরেজো বৃদ্ধিকরং পরন্ । অলক্ষমী পাপরক্ষোপ্রং বরসঃ ক্ষাপকং গুলু । বল্যং পবিত্র দান্ত্রুখং সুক্ষল্যং রসাচুমন্ । সুক্ষাং ব্যোচনং চাকু স্বাধান্ত্রেয় প্রধাধিকন্ ।

## भवाश्व ।

গবাদ্বত চক্ষুর বিশেষ উপকারক, বৃষ্, অধিকারক, স্বাদুপাক, শীতল ও বিদোষনাশক। ইহা মেধা,লাবণ্য, কল্পি, ওজ: ও তেজ: বর্দ্ধ ন করে, অলক্ষ্মী, পাল ও রাক্ষণ ভব নিবারণ করে, গব্য স্থত ব্যঃস্থাপক, ওকে, বলকারক, পবিত্র, আরুষ্য, সুমন্ধল কনক, রলায়ন, স্থাপ্প, রোচক ও মনোহয়। গবাদ্বত সকল মৃত্ত অপেক্ষা শ্রেষ্ট।

# माहिय शृक्या

যাহিবন্ধ সৃত্ত৲ যাদু শিক্ষাকা নিমাপমন্। লীক্তম৲ স্লেঘত্ত বুব্যৎ কলবাদু বিপাচ্যকে।

## मारिय शुक्र।

মাহিব মৃত খাদ্, মক্তপিত শান্তিকর, বারুনাশক, শীতল প্রেমকারক, বৃষ্য ও ওয়া, ইহা জীর্ণ হইলে খাদ্ হয়।

## छाती च्छम्।

व्याक्रमाकार करवाछ।शिर ठक्तार राजवर्कतम् । कारम बारम करम छार । विखर शास्त्र करवरकर्रे ॥

#### ছাগন্ত।

ছাগদধি উত্তম গ্রাঠী, লঘ্, দীপন ও ব্রিদোষ নাশক। খাস, কাস, অর্শঃ ক্ষয়রোগ ও কার্শ্য রো.গ ইহা প্রশস্ত।

## खेड़ी शृह्य।

**क्षि ९** कर्ष्ट्रिष्ट्र**९ भारक (नाविक्य विद्यालस्य ।** सीभन९ कथनाटञ्च९ कुठे उत्तासकालस्य ॥

## উট্টা মূত।

উট্রী ঘ্ট দাণন ও ব ত শ্রেম নাশক তা হিইয়া কটুরল প্রাপ্ত হয়, ইহা পান করিলে শোষ, ক্রিম, বিষ, বুই, গুম ও উদর্রোগ নষ্ট হয়।

## जातिक श्रम्।

পাকে জ্যাবিক সপি সর্বরে গ কিনাশনম। বুঝি করে। তি চাক নামখারা শক্রা প্র্যুঃ চকুষ্য মগ্রিধাষণ বাতদে, ব নিবারণম।

#### নেষ মূত।

মেষ ছত লঘু পাক, সর্করেণ নাশক, আহিবদ্ধ কি, চকুষা ও অগ্নিশ্ব কি। মেষ ছত পান ক'রলে, অখ্নী, শকরা ও বাত দোষ নিবারণ হয়।

## ন। বী ঘুতম্।

शीरकश्मिरण या मिरवारव शिरक इरक्षक ए किछम्। इक्षुवा बोजारे कोशारे दो मुश्लि म १६ गुरकाशमन् ॥

## मात्री चुछ।

কমাধিক্য, বাবুর্দ্ধি, বোনিদোর, পিড প্রকোপ ও রক্তদোবে মনুষা ঘৃত বিশেষ উপকারক। ইহা চক্ষুষা ও ক্ষমত সদৃশ; অন্য ঘৃতও এই সকল ছলে উপকারক।

# वाशी घृष्य ।

तुकि । करतील (मस्टश्रेक्चू । रेक्क वियानसम् । जनव । स्वद्रागन्न । मास्तुम् वस्या गृजम् ॥

## জনী মৃত।

আখন্ত লঘুণাক, দেহ পুষ্টিকাবন্ধ, অণিবৰ্দ্ধি, বিষয়, চ্'প্ত জনক, চক্ষরোগ নাশক ও দহ নিবাবক।

### इक्ष म्डम्।

যুক্ত দুজভাৰ গ্ৰ'ছ পতিলা নেতলোগছৎ। নিছ'ও পিলগালা আ মণ্মুছি নিমানিলান্ত ডুকুভৰ ঘুত।

তৃশ্ধ ক্লাত ঘৃত গ্ৰহী ও শীকল, পান-কবিলে নেৱবোগ, ৈ তিক দ হ, বক্ত-দেষ মান মূচ্ছা, ভামবোগ ও বাসু নাই হয়।

## ह्यान्छन प्रवित्त घृष्यः । इन्ह्यान्धम पूर्णः थे९ छश्मारंदेक्यण्यदीनकम्। देवयण्यीमः हम्बन्धः संभागः स्रविद्धः महस्य ॥ दनवस् पुरुष्ताः वृद्याः विद्यासार व्यवसाणनस्।

পূর্ব দিবদার দধিজাত অর্থাৎ সংদ্যালাত মৃত।

गामाण । इंडिक टेरव क्रीन वरण। टेरव क्रीन हक्षा, मोशन, व्यक्तिक रुटि-कावक, वनकाबक, बुश्रम, वृषा ४० विटमंब

## পুরাণ ছতম্।

वर्षामुक्ति खरवशकाः । भूत्रावि । छित्यायम् । मूक्तायुके विद्याचाशाभकात्र (७'भता भद्य ॥ यक्षा यक्षाविक । मार्गः भूताव मधिकः । ७८वर । खना कवा क्षरेवः देशः देश त्रस्कि । छनूशक्षत्र ॥

# পুर्बो छन धृष्ठ।

প্রস্তুত হইবার প্র একবংশর অতীত হইলেই ঘৃতকে শুপুরাতন কহা যায়।
পুরাতন ঘৃত ত্রিদেয়ে নাশক। ইহা
ব্যবহার করিলে মৃদ্ধি, কুঠ, বিষ, উন্নাদ,
অপ্রার ও ভ্রমবোগ নট হয়। ঘৃত সম্দাব মত পুরাতন হইবে, ততই তাহাদের
গুণ বুদ্ধি হয়।

# न्छन च्छमा विषयाः।

যৌষ্ণাচন্ত্র যোৱাষ্ণা৲ ভোষ্ণান ওপরে প্রথম । বলক্ষরে পাঙ্গুর গে কামলংন এরোগয়েঃ ঃ

## नृजन मृज (गैरन एल।

ভোজন বা শেতা করণার্থ এবং প্রাম, বলক্ষর, পাতুবোগ, কামলা ও চক্ষুরোগে নৃতন স্বত ব্যবস্থের।

## चुक द्यारामा विषयः।

রাজ্যক্ষা প্রাক্তে চ কৃত্রে প্লেম্ম কৃত্তে গবে। রোগো স'মে বিস্কৃত্যাঞ্চ বিবক্তে চ মহাভ্যমে । অবের চ ফ্রনে মদেশ ন স্পিনিইমন্যতে।

# मुख धारतारतत विवत ।

রাজযন্ত্রা রোগে, বালক বা রুদ্ধের পক্ষে, কজজ রোগে, তরুপ রোগে, বিস্থ-চীতে, মণাদি রোধে, মদাতার রোগে, জ্ঞারে ও অধি মান্দ্যে মৃত প্রশস্ত নহে।

# **हकू जिल्ला खट्या २ था। यः ।**

# हेक्यू वर्गः । हेक्युः ।

ইক্ দার্গজন থোক অধাতৃনি রসোহপি छ। ওড় মুগোহনিপত্রণ তথা মধুতৃন ক্তঃ । ইক্ষবো এক পিওয়া বল্যা ব্যা ক্ষঞান। ফালু পাক রসাং বিভা গুরবো মুত্রলা হিমাঃ।

# हेका।

পর্যায়। ইক্ষু, দীর্ঘছদ, ভূমিরদ, গুড়গ্ল, অসিণত্ত ও মধুতৃণ।

তা। ইক্রজপত নাশক, বল-কারক, ব্যা, কফজনক, খাতু পাক, স্থিত, তার, মূরকারক ও দীতল।

# हेका एक मः।

পৌষ্কো ভীক্ষকণ পি বংশকং পউপোয়কং। কাঙার স্থাপনেক্ষ কাডেকুঃ সুচিপত্ত হং। বৈপালো মার্চপত্র স্কালোরে।হ্র কোলকং। ইতেগ্রা মার্চয়: তথাৎ কর্ত্মানি প্রবানপি।

# हेक्ट्रज्य।

পোত্রক, ভীরুক, বংশক, শতপোর কান্তার, তাপনেক্ষু, কাতেক্ষু, স্চিপত্রক, নৈগাল, দার্ঘপত্র, নীলপোর ও কোশক এই করেক জাতার ইক্ষু আছে।

## (भी ) क छोक्रकन्छ।

বাঙলিভ প্ৰশংলো মধুরো রস পাকরোর। সুলীতো বৃৎহলো বল্যো পোগু কো জীক্তক ভবা ৪

> শামসাদ্ধ ও সাচি ইক্ষা পোশুক ও ভীকক এই উভয় বিব

ইক্ মধুরাখাদ খাদুপাক, বার্পিত্ত শাঞ্চিকর, ভুণীতল, বুংহণ ও বলকারক।

दकाशकातः ।

কোপকারো এক পীড়ো রক্তপিত ক্ষয়াপহ:।

क्लहे।

কোণকার ইক্ষু গুরু, দীতল, রক্তণিত্ত নাশক ৩ ক্ষর রোগ শান্তিকর।

কান্তার ।

काषात्त्रकृ शंक वृ वाः (अशाला न् एवः नवः ॥

क्षा है गा ।

काष्ठादस्य, श्वक्र, द्वेषा, त्य्रधन, दृश्र्व ७ मत्र।

मीर्चटलात वश्मकण ।

बीर्चरभातः मुक्ठिनः मकारता राजकः मालः।

मीर्चरभात्र ७ वश्मक ।

দীর্ঘপোর হৃকঠিন ও বংশক ইক্ষ্ ক্ষার বিশিষ্ট। ইহাদিগকে ব্যাই ইক্ষ্

मकर्भाहः।

প্তপর্জা ডবেৎ কিঞ্চিৎ ফোপকার প্রবাহিত।। বিশেষাং কিঞ্চি মুক্তক সঞ্চারঃ প্রবাপকঃ ৪

ब्रह्मांबक ।

শতপোরক অল পরিমাণে কোষকার ইক্ষুর ন্যার গুণ বিশিষ্ট অধিকন্ত ইহা কিঞ্চিৎ উষ্ণু, ক্ষার বিশিষ্ট ও বারু নাশক। ভাপদেশ ।

ভাপনেক্ষু ভবেষ্ মূদ্বী সধুয়া স্লেখকোপৰী ৷ ভপৰী ফুডিক্জাপি ব্ৰয়া চ বলকারিবী ॥

किटनब्रद्वाषाई।

ভাপদেক্ মৃত্, মর্ম, প্রেম প্রকো-পক, তৃথিকারক ফুচিপ্রেদ, বুষ্ ও বলকারক।

कारजच्मा

बर् बरेन्ड कार्टक्र मजु वाजश्रकानमः।

काटलका ।

কাতের তাপ তাপদেক্র ন্যার কিছ ইহা বার্প্রকোপক।

> স্চীপত্রনৈপাল দীর্ঘণত্র নীল পোরকাল্লাং গুণাঃ।

ষ্ঠীপত্রো নীলপোরে: নৈপালো দীর্ঘপত্রকঃ । বাতলা: কক্ষপিত্রমাঃ সক্ষায়। বিদাহিনঃ ।

> স্টাপত, নৈপাল, দীর্ঘপত্ত, নীলপোরক ইক্ষু।

ইহার। বাযু জননক, পিত্তশ্লেম নাশক, ক্যায় ও বিছাহী।

बदमाख्या ।

যনোগ্ৰপ্তা বাৰছত্নী তৃত্বাবদু বিনালিবী। সুলীতা মধুৱাতীয় ব্ৰক্তলিক প্ৰবালিবী ।

मत्नाश्यक्षा हेका।

যনোকপ্তা, যার নাশক, ভ্রনারোর নাশক, ভূলীভল, অভি মর্র ও হক্ত পিস্ত , নিবারক। वाल स्वा वृद्धान् छन ।।

यात देखूः क्यं कृत्री 'एमास्प्रम्कत्मा मः । युवा कु वावकः बालूशेवलेक्नः लिलन्सः । यक्तिकः क्रिकेत्रम्

खावशारलाम हेन्स्य छन।

বাল ইক্ প্রেমাংশাদক, মেনোবর্দ ও মেহ রোগ জনক। যুবা ইক্ বায়, মালক, স্বাচ্, ক্রীবং ভীক্ষ ও শিক্ষ। বৃদ্ধ ইক্ষু রক্ত নালক, ফত নিবারক, বল-প্রাদ্ধ বার্যোৎশাদক।

जान्द्रस्थान ८ चपः।

बूटल जू बधुरदा के उपर्थ ( सरका के भिस्तः आस्टः। ब्यट्ध अक्ट्रित व्याप्त के कृत्र लिहिटला स्नेटेन ॥

व्यक्तकान राग ।

ইক্ষুর মূলে অভিশ্য মধুর রস, মধ্যে মধুর ও অগ্রন্থিত প্রস্থিতে প্রণ এদ । বিদ্যান থাকে।

দন্তপীড়িতেক্ষু রস্পা ৩০। । বহু নিজ্ঞীজ্ড সেংক্ষ্ রসং পিতাক্র মাধনং। ধর্করাসমবাধ্য সাদ্বিদাহা কফপ্রদং ।

पष्ठ निर्शास्त्र हेना अम ।

দক্ত চকিতে ইশ্ব রস রক্তিত নাশক, শর্করার ন্যায় বীস্যা বিশিষ্ট, আনি-দাহী ও শ্লেম জনক।

মন্ত্রনিম্পাড়িতে ক্ষুৎসমা গুণা:। মুনার জন্ত রহ্যাদি পীড়নান্ নলসন্তরাং। কিঞিং ভাল বিষ্ণুভা। চ বিকুজিং বাভি বাজিকঃ। ভুজাছিলাছী বিউভী গুলুং সাদ্ বাজিকেরৈনঃ। यत्र निष्णी फिक देक्द बन ।

ইক্লুব মূপ ও অগ্রন্থিত জন্ত এবং প্রেম্ব সকল নিজেপিছিত হাওবাতে ও মণ, নিভিড থাচাতে এবং কিছু ল'বেক ক'ল ।।পিগা অবিশ্বিত থাক তে যাধিক রম বিশ্বত হাইয়া উঠে। সেই হে হু উক্ত কপ রস বিদাহী, বিপ্তমী ও গুক।

श्रा । 'बरक्या तम्या खनः।

। রসঃ পরু বিভো কেটোছালো দাভালাছা প্রকঃ। কফ'লব করং লোধী েদ্নলচ'তি মুবলাঃ।

प्रमाणक ( वाभि ) हे सूर्यम ।

ব নি তইলে ইক্ষুবস বিক্ত হইব। ইংঠ, ত'লুশ এম তামাস্বাদ, বায়ুনাশক গুঞ্, শিত্তশ্বে কারক, শোষক, ডেদক ও মতিশ্ব মৃহকারক।

०। भ न्याम् तममाखनाः।

পকো হলে। প্ৰক্লং মিঞ্চ সূতীক্ষা ককবাতনুৎ। প্ৰ'ন্ন হ প্ৰশমনঃ কিঞিং পিৰকরঃকা্ডঃ॥

शक हेक वम ।

টক্রদ অগ্নিতে পাক করিলে গুরু, শ্রিক স্থাকা, বাতভ্রেম নাশক, গুলু নাশক ও কি'কং পি একর হয়।

हेक्त्रममा विकात गाः छनाः ।

ইন্ফোবিকারা ভ্রত্থাত মৃক্ষা পিঙাক্ষমালনাঃ। ধরবো মধুর। বল্যাঃ স্থিকা বাতহরাঃ সরাঃ ঃ বুড্যা মোহহরা- দীঙা বুংছণ্য বিধহারিণঃ।

# ইক্ষুরদের বিকারের কথ ৎ গড়াদির গুণ।

ইক্ষু বিকার শুরু, মধুর, বলকারক, শ্লিগ্ধ, বায় নাশক, সর, র্যা, মে:হনাশক শীতঙ্গ, রুংহণ ৩ বিষয়, দেবন করিজে তৃষ্ঠা, দাহ, মৃত্র্য রেজপিত রোগ নিবারিত হয়।

### थ। विक्

ছকোরে সক্ষ পঞ্চ কি কিলগাতে। সকরেবঃ।
সক্রেক বিকারে গুখাত ফা নত সং জ্ঞা।
ফানিত ওসেভিয়া প গুছল কফলক কুই।
বাঙ্পিত শুমান্হ ও মুক্রডি বিশোধন্য।

त्वि (हेक्क निकाय विद्रमध्)।

কিঞিং গাচ ও বছদৰ বিশিপ্ত ংক ইক্ষুরসকে ফাণিত বংশ

ফাণিত গুড়, অভিষ,দী রংহণ, কফক্ষনক ও শুক্তে ৎপাদক। ইচা শ্যু, পিতা, শুমা, মুম্বিরিক'ত ও বস্তিদেশ নি-বারণ করে।

#### गरमाः)

ইক্ষোরসো যা সক্ষাদে ঘন কি বিংগ্ দুসারিও। মুক্ষা ঘৎস্কাতে ওঝাৎ সাদংস্কাতী নিগদাতে র মৎসাতী ভেদিনী বজা। জঘু পিষা নিগদাপদা। মধুরা বুংহণী ব্দ্যারকদে ধাপদাব্যাতা র

মৎশাহিকা (মিছরি)।

কিঞ্ছিৎ দ্ব বিশিষ্ট প্রক খন ইক্ষু মন্দের নাম মংসাতী (মিছ্রি), মন্দ স্যাদান জারণ হেডুইছার নাম মংসাতী। মংশাতী ভেদক বলকর, লঘু, বারু পিত্ত নাশক, মধুর, বৃংহণ, বৃষ্য ও রক্তদোষ নিবারক।

#### 13.23 I

উল্লোৱগো যা সক্ষণকো জাগতে লোই বন্দ চঃ। সগুড়ো গোড়লেশে তু মহস্যতে)ব গুড়োমছঃ ॥ গুড়ো ব্যে,। গুড়া ক্রিছো ক্রলোখন। নার্ভিপত্ত হতে মেদ্র ক্রেক্সি বলপ্রদঃ।

#### 1 50

ইক্ষুবদ পাক করিখা নোষ্টের নাার দৃচ কবিলে ভাষাকে গুড়বদাখাব গৌড় দেশে মংস্যাতা অর্থং মিছবিকে গুড বংশ।

গুড় রুষা, গুরু, স্নিপ্ধ, বাজন্ন, মূত্র বিশুদ্ধিক বক, মেদোবৰ্দ্ধক শ্লেমকারক, কি'মজনক ও বলকর, ইহা বিশেষ পিত্র নহে। •

## ल्याच्न करः।

প্তরো জীবে পয়ু পলে/২ন'ভদান্স পু**টি**কৃৎ। পিওয়ো মধুগে হুখেন বা**ডয়ো২সূক্ প্রসাধন।** 

भ्दाह्म छछ।

জী-থিড় লঘু পথা, অনভিষানী, অধিকারক পৃষ্টকর, পিতম, মধ্র, র্যা, বায়ুনাশক ও রক্ত প্রসম্ভাকারক।

नवीन खड़ः।

গুড়ে 'নবা ককৰা দ' ক্ৰি' মকরে। ইগ্নিকৃৎ।
স্থোগ মান্ত বি'নৰতি সহাত্ৰ কৈব পিৰু নিৰ্যাণ্ড চ ডবেব হুৱাডকা জিঃ।
স্থানীয়াম হয়তি ব'ডমপেৰ বিশ্বং
দোষকা ক্ষম করার নহে। গুড়ার ঃ

## म्डम छए।

নুষ্ঠন গুড় অধিকারক ইহা ভক্ষণ করিলে কফ খাদ ও ক্রিমি উপস্থিত হয়।

নিহ্য আছে কের সহিত ওড় ভক্ষণ করিলে শ্লেমা নষ্ট হয়, হরীক্রীর সহিত ওড় ভক্ষণে পিত্রনাশ ও ক্ষণীর সহিত ভক্ষণে অশেষ ব্যুতরোগ নাশ হয়, অত্রহ হে ত্রিদোষ্ম ওড়। কোমাকে নম্বার

#### य ५भू।

থাওন্ত সধুর্থ বৃষ্ণ চ কুষ্) গুণ্ছন থাক্ষিম বাতপির হর 'জক্ত বল্য বা'বছর পরস্ক

#### गं फेख है।

টছ। মধর রুষা, চহ্মুষা, রুংহন, শীতৃক্স, বাষুপিত নাশক, রিয়া, বশ-কারক ও বমন নিবংকে ১০

#### मिका।

ধওত সিকতা ক্লাথ সুগেত। শর্কা সিতা। সিতা সুমধুনা সূচ্যা ব তলিক'ত দু হছৎ। মুক্ত্যি জুন্দি অধান্ত ও সুশাতা স্ফুক্রক।বিনী।

## हिंन।

খণ্ডতে পাক ধারা বল্যার ত করিলে ভাহাকে চান বলে চিনি ফুন্দব খেতবর্ চিনির সংস্কৃত নাম্পর্করা ও দিতা।

চিনি ক্মধ্য, ক্লচা, বায় পিত নাশক ।

রক্তদোষ নিবারক, দাই শান্তিকর, কুশা ।
ভল ও শুক্তফনক ইহা ভল্প করিলে

মৃদ্ধ্যি, বমন ও জার নিবারণ হয়।

### শিভাগ্নম্।

ভবেৎ পুষ্পারিকা লীডা রক্তপির হরী বসুঃ । সিডোপনা সরা সন্থী বাঙ্গিতহরী হিমা ।

हिनि ७ मिছ्ति ७१।

চিনি শাতল রক্ত পিত না**শক ও** লঘুমিছবি সর, লঘ্, বায়ুপিক না**শক ও** শাতল

### म्प्रम्म न ता।

मध्का गंकडा क्रका कथालिय हडी खक्राः। फर्काट'गाँव पृष्ठ्वाह ब्रक्कक्रकृतद्वा हिंगा।

## भत् इहेरड शकात मक्ता।

মৃত্যাত শক্ষা কলা, পিততে লাল নাশক, গুক, ক্যাস ও শীতিল। ইহা ভক্তৰ ক্ষিত্ৰে ব'ম, অছাসাব, ভ্ষা, দাহ ও রক্ত দোষ নিবারণ হয়। যদা ঘলৈষা নৈক্ষ্যাং মনুক্ত্বং হলা তথা। ধ্যেই সহব শৈত। দুস্কুত্ৰ তথা তথা।

উলিনি শ উল্পানকার সমস্ত মত নির্দ্ধান হইবে ত এই মবুর, লিগ্ধা, লগু, শীতল ও সর হইবে।

# शक्षित्र गखरमार्थायः।

यस् वर्गः ।

## गर्

মধু নাক'ক মাধ্যাক ক্ষেত্ৰ সার্থমির ভব।
মাধ্যনা বংগ্যান্ত ক্ষা বাঙং পুস্পরক্ষান্ত ব ।
মধুশীতং কযু বাবু ক্ষমেগ্রাহি বিকেখনন্।
চকুষ) ঘৌগনা ব্যাং ব্রবশোষন হোপনন্।
বোপকুমার্য কয় সুক্ষম পর ভোভোবিশোহনন্।

ক্ষায়াসুরসং কাদি প্রসাধস্তনকং পরম্ ।
বলাং নেধাকরং বৃষ্) বিল্লং দীপনং হরেং।
কৃঠাপন্তিল পিতাক ক্ষামহ ক্রম্কানী ।
স্থেক্ত্রা বনিধা স হিত'ভাসার বিভ্এহ'ন্।
দ্'হক্ষতক্ষাং তত যোগবাধ্যা বিভক্ষা ব্

#### मभू ।

প্র্যায়। মধু, মাক্ষিক, মাবুকি ক্ষৌদ্ধ, সার্থা, মাক্ষিকাবান্ত, বর্টিবান্ত, ভূক্সাক্ষ ও পুপেরসোদ্ধ্য।

গুণ। ইহা শাত্র, লঘ, সাত, क्रमा, श्र हो, दार्थन, हक्ष्मि वादक, मोशन, श्रद्भव छेदनर्थ कावक जा भावक (রণ হটতে প্যাদি নির্গত করে), उन द्वांशन ( जाशक उत्न मः लग्न करित्ल বেশ ব্সিয়া খাষ), দেহেব কে'এপ'ৰ' कात्रक, एक रेगरिक ट्लांकः मकरलद विश्वाक कांब्रक, जेवर करांग वगः. আছল,দ জনক, অদিশ্য পেংশ্ৰু काबक, दर्शन উৎकर्भ मानक, ध्यना कानक, त्रुगा, विभाग, दशहक, वाशे ७ काझ वायु लगक। यत (भवन स्विद्रिल नुष्ठे, अर्थ., क्षा, एक रिक, रक्ट-त्थर, क्रांख, ति म, त्यम कता व म শাস, হিকা, জাতিগার, ম্পারাপ, দাহ, क्षक ७ व्यवस्थान देशम्ब इव ।

## म्पूड्ननः ।

ষা ক্ষিক ১ জামর ১ ক্ষেত্র ১ গে বিকং ছ র মিস্তাপ আর্ঘ্য মে'দালক ১ দাল শিক্ত কৌ মধুলাত্য । ঃ

## মধুব প্রকাব ভেদ।

মধু জ ট প্রকার যথা মাজিক, ভামর ক্ষোত্ত, পৌটক, ছাত্ত, আর্ঘ্য, উদ্দালক ভাষা।

## याकिक्य ।

মাজিকাঃ শিশবণান্ত সৰজো বধুসজিকা:।
ভাজিঃ কৃত্ৰ ভৈলবৰ্ত মাজিক পাছকাজিজ্ম ॥
মাজিক মধ্যু ভোঙা নেৱাম্য হয় লয়।
কামলাৰ্গঃ ক্তৰাস কামজ্য বিনাশন্য ॥

## भाश्चिक मन्।

পিশ্বল বর্ণ বৃহৎ মক্লিকা বিশেষকে
মনুম্গিকা কহে। মনু মক্লিকা কর্তৃক
সঞ্চিত মনুকে মাজিক বলে, ইহার বর্ণ
কৈলের নাম। মনুর মধ্যে মাজিক শুর্তি লগু। মাজিক মনু ব্যবহারে নেত্র
রোগ, কামলা, অর্থা, ক্ষত, খাস, কাস
ভ ক্ষয় রোগ বিনষ্ট হয়।

#### जामवम्।

বি কিং সুকৈন, প্রসিদেকত, ভটপনেতে)।১লি-ডি শিচ শ্। নির্মান শ্রুটিকাড শ্রুমাধু ভ্রামরং স্মৃত্যু । এ এবা রক্ত প্রস্থা বুরা ফাড্যকর ওরে । আদুপ'ক ম ভ্রুশি বৈশেষাৎ পিচ্ছিল বিষম্ ।

## ल' व मध्।

প্রদিক ভমর ভাগেক। কিঞিৎ স্ক ভানর কর্ক সঞ্চিত নির্মাণ ও ফটিক বন্মপুকে ভানর মধুকতে।

ভ্রমর মধুরক্ত পিক্ত নাশক, মৃত্তের বিকৃতি কাবক, গুরু, স্বাস্থ পাক, অভি-যান্দী, অদিশয় পিচ্ছিল ও শীতল।

# (को प्रम्।

ৰজ্ঞকাং কণিলাঃ সূজ্ঞাঃ কুজাখ্যা ভৎকৃত১ মধু। মুমিডি ক্ষৌত্ৰ মিতৃয়ক১ ভছৰীৰ ক্ষপিল১ ভবেৰ ঃ ভবৈ মাম্পিক বৰজ্ঞোত্ৰ বিশেষদেশ্য নাল্যন্।

## क्लोख मन्।

সৃত্ম ক্পিলবর্ণ মন্মিকাকে কুজাবলে, কুড়াদিনের দক্ষিত মণ্কে কৌত বলে। ইহার বর্ণ কপিল।

ইহার গুণ মাক্ষিক মণুর ন্যায, অবি-্রু কল্প ইহা মেহ নাৰক।

## टल्यु विकश्।

কুজা যা মশকোপনা কযুত্র। প্রায়ো নহ প্রাক্তিক। বঞ্চানা স্তক্ষাকাট্যাতর গতাং পুজ্যাসবং কৃষ্তিতে। ভাতজালৈকি পুরিকা নিগদিত। স্তাভিগ্রুৎ

खुमा । यथ मपुतर्कतमस्त्र स्वतेनः मः के विंठ। त्म 'खक्य ॥

পো'ধকৰ সমুক্তেশফাৰ পিওদ হ'বে ব ডাঃ । বিদ্যাধী মেছকুচ্ছুমুৰ এক 1কি ক্ষত্ৰো'ব চ ॥

## (भी कि भर्।

মে সকল মশক সদৃশ ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র
মক্ষিকা বৃক্ষ কোটরে মধু চক্র প্রস্তুদ করিষা মধু সঞ্চয করে তাহাদিগকে পৃত্তিকা কছে। ইহাদের কর্তুক সঞ্চত দ্বত সদৃশ মধুকে তদ্বন্যাসি লোকে পৌত্তিক মধুকলে।

পৌতিক মধু কৃষ্ণ, উষা ও বিদ্যাই। ইহা পৈতিক দাহ, বাতবক্ত, মেহ, মূত্রকৃষ্ণ, প্রাস্থা ও চফার ফাছ নিবারণ। করে।

## PEN,

বরটাঃ কপিলাঃ পীতাঃ প্রায়ো ব্যবড়ো বনে। কুর্বান্ধ ছব কাকারাৎ ভক্ষৎ ছাত্রৎ মধু ফাড়ণ্ র ছাত্রং কপিল পীতংক্যাৎ পিচ্ছিলৎ দীওলং कारूभाक्य किर्मस्त्री त्रकाश्च श्रामस जिल्ह । सम्बन्धान विवाद कर्मनक स्वाधिकम् ।

## छाज यथु।

কপিল ও পীতবর্ণ ববটা সকল প্রার হিমালর পর্বতের বনে ছতাকার চক্রে প্রস্ত করে, তদুংপল্ল মধুকে ছাক্র 'মধুকতে।

ছত্র মধু কপিল ও শীতব পিজিলে, শাতিল, গুরু, ছতু পাক, জিনিম নাশক, কৃথি জনক ও উৎকৃষ্ট গুণ বিশিষ্ট ইহা বাবহারে রক্ত্রপিন্ত, প্রমেহ, জেম, তৃষ্ণা মোহ ও বিষ নষ্ট হব।

### व्यर्गाम् ।

মধুক্রক শিষ্যাসং জরৎকারাপ্রামাণকবন্।
ক্রেন্ত্রামাওদা খ্যাতং খেতকং মাধ্রে পুনঃ ।
ত ক্রুড় দ্বয়া পাঁড়া মক্ষিকা ঘটপদে প্রাঃ।
ত মাুড়া তথকত যথাই।মক্ষিকা দ্রুগ প্রথঃ ।
ত্যা, মার্ড চক্ষুষ্য নফ্পিক ছরং প্রথ।
ক্ষুণ্য কটুক পাকে ডিকল্ব মধ্য দুব

## व्याचा मत्।

জরৎকার মুনির আশুনে ২০ল মণ্ক রক্ষের (মউপ গাছের) নির্দাদকে প্রবিষ্ঠা ও অর্গুক্তে, মালব দেশে ইহা প্রেক্তক লামে প্রাদিদ্ধ। অণ্টর এই কথা বলেন বে ত্রিক্ষ ভুগু বিশিষ্ট পাজবর্ণ প্রমর সদৃশ মক্ষিকা গণকে আর্দা ও ভাহা-দের স্কিত মধুকে আর্দ্য মধুক্তেই।

এই মধু চকের অভিশয় হৈত কারী, ভােষ্ট কংপিত নাশক, ক্ষাব, কটু পাক, তিক্তা, বলপ্রদ ও পৃষ্টি কর।

## खेल, नक्म्।

প্রামোবদ্দীক মধ্যক্ষাং কলিলাং হল্পেনীটকাং।
কুমাতি ক'পলং হল্পে তংগ্যাদে দালিকং মধুঃ
ক্তদালকং ক'চকর হ্যাং কৃষ্ঠ বিষাপ্রম্।
ক্ষায়মুখ্য মন্ত্রক কটুপাক্ষ পিতকুৎ ঃ

## डेकानक भन्।

বলীক (উইএর মাটি ছিত কপিল বর্ণ ক্ষুদ্ধ কাট বিশেষে কপিল বর্ণ ও অল্প পরিমিত একপ্রকার মধু সঞ্জ করে ভাগ্র নাম উকাবক মধু।

গুদালক মধু, ক্ষতিকারক, স্বর পরি-জ্বার কারক, কুষ্ঠ নিবারক বিষয়, ক্ষার, উষ্ণু, অমরস কর্মুণাক ও নিত্ত কারক।

## मालश्।

म् रख् डा निख्डर भूक्यान्यत् भटाभिर्वाच्छम् मधुत्राञ्चक्य यक उमान् मधुकः उत्ति ॥ मान् यपु अधु (धा कः मोभनेग्रः कस् भ्रम् कथाग्रान् तमर स्टब्स् ४० । कार्य धरम् खर्म खासकर मधुत्र जिख्डर दुर्ह्योर स्टब्स् खादिकम् ॥

# मान भगू।

থে মধ্ পূজা হইতে ধ্যেইর।
পারোপার সঞ্চিত হ্রমাথ কে এবং মন।
ক্ষাৰ, জয় ও মিই রুমা বিশিপ্ত হাহাকে
দাল মধু কহে। দাল মধু লঘু পাক,
ক্ষান, কফ্ম, ঈষৎ ক্ষাৰ রুম, প্রুম্ম, ক্ষান্ত।
ব্যাবিক, প্রেমহ নাশক, অভিশ্ব
ক্ষানী, স্থি, বুংহণ ও গুরুভার।

#### न्द्रान मर् खनाः।

सन्दर्भ करवर मुर्टिको साँक (अवाहत) महस्।

भृदावी बाहको अका (मरवाधू माँक (कर्यसम् ॥

मधूनः मौर्कतावाम्य स्वयम्। भित्रविकः।

कर मध्याद्रश्रुको १ भूदाविक्या स्वर्थ दूरियः॥

# নৃত্ন ও পুরাজন মব্র গুণ।

নতন মধৃ পুষ্টিকারক ও সর ইহ বিশেষ প্রেয় নাশক নতে। পুরাহন মধু গ্রাহক, রুক্ষ, নেদোর ও আভিশ্ব শেখন। মবু, শকরা ও ওড়ে এক বংসর অভীত হইপেই পুরাণ বলাগায়।

# মবুন° শীতদা গুণ।বিকা মুক্ত তাখা নিধেব।

া বিষপুলপা দ'ল রূপং স'ব্যা অমরাদ্যা। গুহ'ল্লা মধু কুবল'ও ওলভাঙে ওপবন্মধু । বিষার্থাঙগুখান্ড এবেলা নোখেন বা সহ। উষ্ণাত্রিলা।যত কালে ৮ ফা ডং বিষস্থ মধু ॥

# मी छल ७ डेक भन्द्र छन ।

বিষ বিশিষ্ট ভ্রমরাদি বিষ পূপা হইকেও রস গ্রহণ কবিরা মধু প্রস্তুক করে অত্এব মনুশাতল হইলেই হিত-কব হং, বিষাংশ থাক তে উষ্ণ মনু অভি অশকাবক এবং উষ্ণ কালে, জ্মধবা উষ্ণ দ্ববোর সৃষ্টিত কিংবা উষ্ণান্ত ব্যক্তির প্রেক্ষ মনুবিষ্বৎ।

# मध्किष्ठेम् ।

মযনক মন্ত্ৰিক কা মধুলেক কিন্তুক নৃ।

সম্পন্ধ মূলু সূজিকা ভূতত্ব ব্ৰৱোপন নৃ

কা সভানত্থ্যত কুঠ বীসপ্রভাৱিত।

# यश् व्हिष्ठे (त्याय)

ময়ন, মধুচিচষ্ট, মধুশেষ, সিক্থক, মন্ধাহার, মদনক ও মধুষিত এই ওালি মোনের সংস্কুত নাম।

মণুচ্ছিষ্ট মৃনু, 'সুনিশ্ধ, ভূকন্ন, ব্রণবোপণ।

# ष्ट्रेजिः শত্তমा २ शायः।

वाति वर्षः।

### জ শুম্।

পানীয়া সজিলং নীরং কীলাজগ্ধন মধু চ।
আবো বাবারি কভায়া পান পান করে দক্ষ্
আবিনা বন মন্তেহিবোঁ মৃতি হনরসোহপি চ।
পানীয়া প্রমনাশনং ক্রম্ভর
সূজ্যা পিপান,প্রম্।
উদ্ধান্থি বিবদ্ধ ক্রম্ভরং
নির্দ্ধর তপ্রম্।
ইন্য গুরুরা ক্রান্থি

#### रगाउँ ।

भीगृत वक्कीरनम् ।

পানীয়ৎ মুদ্দিভি প্রোক্তৎ বিদ্যুৎ ভৌষমিতিবিধা। বিষ্যুৎ চট্টারথং প্রোক্তৎ ধ রাজং করকান্তবন্ । ভৌষারক তলা বৈদদেরমুখারং প্রবাধিকন্।

खन ।

পর্যার। পানীর, সলিল, তোর, কীলাল, কল, অসু, অপ্, বার, বারি, ক, ডোর, প্র: পাথঃ উদক, জাবন, বন, অস্ত: অবং, অমৃত ও ঘনরস। জ্ঞাল ভাষ, ক্লম. মৃত্যা, পিপালা, তন্দ্রা, বমি, বিবন্ধ, নিয়া ও অজ্ঞানী মিবারণ করে। ইহা বলকর, ডাগু জনক, ত্বা, গুপুরদ, নহত হিতকর, শীওল, লঘু, স্পদ্ধ, রসহেতু ও অমৃত গল্প জীবনী শক্তি সম্পন্ন।

জল তুই প্রকার দিব্য ও ভৌম,
 তন্মধ্যে দিব্যজল চারি প্রকার যথা ধারাজ,
 করকাভব, শৌষার ও হৈম ইহাদের মধ্যে
 পারাজ জল শর্কা শ্রেষ্ঠ।

## ধার জলম্।

ধারাজ্য পতিত্ব তোর্য গৃহীত ফ্রীত বালসা।
পান্দারা বা সুধারা বা দেতারা পাতিত কত ॥
সে,বর্লেরাজতে তালে ফ্রাটিকে লাচনি মাতে।
ভাজনে মৃন্ময়ে বা প ফাপিত ধারমুচাতে॥
ধারণ নীরং তিদোহর মনিদেশারমণ সহা।
সোহাণ র্যার্মণ বলাণ তপান জাদি জীবনম্।
পাচনং মতিকুরা ছে। তলা দ হ শ্ন ক্লম্য।
তুক্ষণ করতিত থানা বিশেষা থারু বিশ্বেষ্

भाद कलमारकमा।

ধারাক্সলা ছিবিলং গালং সামুদ্র ভেদত:।

क द्वाप्त शासूष कलाग्।

गणामानप्रताम मार्ग श्रात्म गर्गाल वाजिमः।
गणामानप्रताम भर्गाण श्रात्म हित्सवहः ॥
स्थानित देवस्य नार्य वाण्य मुणास्य निया।
नाजाभः स्मान मर्गामकः जस्य मुणास्य निया।
नाजाभः स्मान भर्गाकः जस्य मार्थ मनाथा।
उद्य मणाव भर्गाः द्वाप्ति वनाणस्य ।
दिख्य स्थान मर्गामकः महास्थि वनाणस्य ।
विख्य स्थान मर्गामकः महास्थितः ॥
मानुस्याभित्न माणा स्रोत्योकः स्थानित्येदः।
सरकार मिक्सियः साम् स्थानकः स्थान्यस्य ।

#### তাৰ্ব কলগ্।

स्मार्थितः श्रमुक्षित्र वाह्नि वाह्निधनास्त्र सः । सः जिल्लाबाद्य मल्लायः १ (मृष्टमाः भदिकीर्वित्यः ॥ स्मार्थितः तम् वाह्मिमानाः कृष्टिस् विवयम् ।

#### ধারাজল ।

রৃষ্টিকালে শিলা, বৌদ ইপ্তকামর খান, স্থাণ পাত্র, বৌপাপাত্র, তামুদাত্র আটিক পাত্র, কাচ নির্দ্ধিত পাত্র আথবা মৃণ্মর পাত্রর উার কুল বল্ধ ধারণ করিলে ঐ বল্ধ হইকে বিগলিত হইখা যে জল নিয়ন্ত্র পাত্র পাত্র পাত্ত হ্য, তাহাকে ধারাজল কহে।

শারাজল ত্রিদোষর জনিদেশ্য রস বিশিষ্ট, লঘু, সৌার, রসাযন, বলকাবক ভূপ্রিকারক, মাফলাদ জনক, জাবনী শক্তি সম্পার, পাচক ও বু'জ প্রদ। ইহা মৃদ্ধ্যি, ভন্না, দাহ শেম, ক্লান্তি ও গ্রহা নিবারণ করে, ব্যাকালে ধারাজল বিশেষ উপকারক।

ধারাজল তুই প্রকার ঘণা গান্ধ ও
লামুদ্র, আধিন মানে ঘে বু প্র ইয়, সেই
কল প্রারই গান্ধ, চরক বলিযাছেন ঐ
কল প্রারই গান্ধ, চরক বলিযাছেন ঐ
কল প্রারই গান্ধ, চরক বলিযাছেন ঐ
কল পর্বেথা ব্যবদ্ধের, গে জল পর্ব,
রৌণ্য অথবা মান্তকার পাত্রে রাব্ধরা
ভাষাকে লালি তিওুলের অন্ন সংগিন্ত
করিলে ক্রেন্ন বিশিষ্ট ও বিবর্গ হয় না,
শেই জল সর্বেথায় নাশক, ত্রেগার নাম
বান্ধ, অনাধিধ জলকে লামুদ্র বলে, সাকল কান্ধ্র লবিভা কারক, তীক্ষ
কর্মান্ধর্মী ক্রিভা আধিন্মানে

বিশিষ্ট হয় কারণ তৎকালে অগন্তোলয় হৈতু সম্পাব জন, নির্মাল, স্বাচ্ছ, নির্মিষ, শুক্রজনক ও দে, ব রহিত হয়। বর্ষা-কালের জল বিষাৎ। আকালে অর্থাৎ পোষ, মাঘ, ফ:ল্গুল ও চৈত্রে মাসে যে র্মিট হয় শে জল সকল প্রাণীর প্রেম্ম আ নত্ত কর তাহা ত্রিদোষ জনক।

#### করকাজলম্।

ৰিব্যৰ যুগ্মিশং যোগাৎ সংস্কৃতীঃ খাৎপত ৰি যাঃ। পাষ'ণ খাচত পাস্ত'ঃ কাহিকে) হৃমুভোপনাঃ ॥ কঃকাষ্মজ্জ লাং কৃষ্ণ বিশাদ্ধ প্ৰকৃত দিহ্ন। দাক্ষণ শীভলং সাদ্ধা শিক্তহৎ ক্ষবাভকুৎ ॥

#### কঃক। দুশ।

আকাশ মতলে শীকল বাষু ও বিত্রাদ্বির সংঘোগে জল সকল সংহত হইর।
প্রস্তর বতবং চাপ চাপ হইরা ভূমিতে
পতিত হব: উহাকে করকা বা শিল বলে, করকা সকল অমৃত সদৃশ। করকা জাক জল কল, বিশদ, গুরু, শির, দারুণ শীকল, ঘন, পিতনাশক ও বাজপ্রেয় জনক। কৃত্রিম করকা অর্থাৎ বরফ অলের প্রণ্ড এই কপ।

# क्षित्रकलम्।

অপিনদ। প্ৰাতে বজিরাপ ভদুত্রা:।
ধূম ব্যব পিয়ু ওকভ্ষার খ্যান্তভাং মাৃতাং ।
অপথ। প্র বিনাৎ প্র যা ভুরুই গান্ত নাহিতাং।
তুষারায়ু হিমৎ ক্লাং সাাহাতল মপিতলম্ ।
ক্ষোরায়ু হিমৎ ক্লাং প্রাতিল ব্যাসনুহ।

আপ্নদ্যা: সধুরাঙে বন্দিন্দী ষায়ভা সমূর প্রাঙে বন্দিয়াতে ভণুত্বাঃ। বন্দিভবা ধূ্যা-বর্ব নিষ্ঠাঃ ধূ্যা\প রহিভাঃ। আপ্রভা-রাবাঃ। বিশির ইভি লেংকে। ভূবার ইভি ৪ ।

#### ट्योबात जन।

কি নদী कি সর্ত্ত সর্ব্ব জ্বি (তেজ্ব: পদার্থ) বিদামান আছে, সেই অগ্রির ভাপে উৎপন্ন ধ্নাংশ রহিত কলারাংশকে (বাস্পকে) ত্যার বলে। ত্যার প্রার সমুদান প্রাণীর অপারক কেবল ব্লাদির পক্ষে উপকারক

ভূষার ফল শীতল, কৃষ্ণ ও বাযুক্তনক পিত্রক'রক নহে। ইহার ঘার। কফ, উক্তপ্তন্ত, কণ্ঠরোগ, অমিদোব, মেহ ও ও গও।দি রোগ নিবারিত হর।

#### रेश्य अलग् ।

হিন্দ ক্ষিপটা হিছে । জবী ভূমা ভিবর্ষ ।
মন্তবে শ্রম হৈন্ম জনমান্ত মনা বিবাং ।
হিনামু ল'ত শিক্তপুম প্রকাত বিবর্জনম্।
হিনন্ত ল'ত সক্ষম দক্ষেণ সূক্ষা মিত শি ।
নতদ্বাতে ব ত ম চ শিক্তমে বা কক্ষ্।

#### रेर्मणन ।

হিমালর শৃদাদি হইজে হিম সকল

দ্ববীভূত হইরা জল কণার আকারে
প্রিভিত হব তাহাকে হৈম জল কহে।
ইহাকে কোবালা বলে। এই জল শীতল
পিত্ত নাশক ও বায়ুবর্দ্ধক হিম, শীতল
দারুণ রক্ষ ও স্কা। ইহা বায়ু পিত্ত

অধবা কম কিছুই দূষিত করেনা।

# त्कोयक्षम् ।

ভৌন মডো নিগদিত প্রধান ক্রিবিধ বুলৈ।
আহাল পর্নানুপভত সাবারণ ক্রমাৎ।
আলেগারকোল্পানুক পিকর কামনাস্থিত।
আনুবার সাক্রমান্ত ক্রিক ক্রামনাস্থিত।

वस्य प्रस् वृक्षक वाष्ट्रस्य प्रशासिकः।

त्यत्य वृक्षक वाष्ट्रस्य प्रमुणः वह्यः सम् ॥

विस्त विक्षक त्या (कृषः महि मात शत्यः सम् ॥

विस्त विक्षक त्या (कृषः महि मात शत्यः स्व्यः ।

विस्त विक्षक व्या (कृषः मात्र स्वयः स्वयः ॥

वाक्षकः मंगान क्ष्मकः व्यवः वश्च व्यवः वृक्षः विक्षः वृक्षः विक्षः विक

#### (छ)यखन ।

ভৌমজন প্রথমতঃ তিনপ্রকার, যথা জাঙ্গল, আন্প ও সাধারণ।

্য দেশ অর ফলাশর ও অর বৃক্ষ বিশিপ্ত ও রক্তপিত রোগেংপাদ্ধ, ভাগাকে জাগল দেশ এবং তত্তে জলকে জাগল কল বলে। যে দেশে আনেক ফলাশন অনেক বৃক্ষাদি অছে এবং লক্ষদ। বাক প্রৈয়িক রোগ উৎপন্ন হইয়া থাকে বাগ কে আনুপ দেশ ও ভব্তে

দে দেশে আলাল ও আনুপ উভর দেশের লক্ষণই বিদ্যান থাকে, তাহাকে সাধারণ দেশ ও তত্রতা জলকে সাধারণ জল বলে।

জ লগ কল ক্ল লগণাখাদ, লঘু,
গাতলা, অধিকারক, কল নালক, পথা ও
বহুবোগ কনক। আনুপ জল অভিযানী,
হ সিন্ধ, বন, বহু, আৰি কারক, কল
কনক, কলা ও বহুবোগ আনক।
বন কল মধুর, দীপুর, বীক্ষা,
কনক, বোচক, দুকা। ক্রান্ধ্রী দানি নিধান

Tap a

#### त्छोगानात्यव नःतमत्र मोनाः

লক্ষণানি ৩-11=6। ভৌম জালের অভগত নাদেশ প্রস্তি জালের তানাদি লিখিক হইডেছে।

#### नाटम त्रम् ।

नम्। नम्मा वा नीहर नात्मय 'मिल कीर्डिंडम् ।
नात्मय यूमकर कृष्णर वाजनर नम् भोगमम् ॥
धनाध्याम्म विनामर कर्ष्णिर कर्ष्ण भोगमम् ॥
धनाः भोग्र वद्याः कृष्णः मन्द्राः य'न्धांमरामान्यः ॥
धूर्याः रेणवन मर्द्धाः मन्द्राः मन्द्राः यंन्धांमरान्यः याः ।
द्यावर अक्रवाः मन्द्राः नात्माः कृष्णाद्यः । '
मम्। रेणनम्या गरम्। रान्। रान्। रान्। यूमः ॥
कृष्यि आद्यानः मृष्ठे भीयद्याल कृष्णः वद्याः ।
कृष्यि आद्यानः मृष्ठे भीयद्याल कृष्णः वद्याः ।
कृष्यि आद्यानः कृष्ठे भीयद्याल कृष्णः वद्याः ।
कृष्यः ।

#### नाटमश कर्ना

मन निषेत्र जनदक नाइन । कदर। नाटार अम अभ, वागू अनक, लघ, मीमन जनाज्यानी, विभान, करूँ । भाव (भ्रम नामक त्य मकल नन क्र क नामिनी ও যাহাদের জল নিলাল জাহারা লঘু बदः देनवामाध्यम् मन्त्र नामिनी अकन् भ्रा मगांत जल राष्ट्र । य मकल नगां रिया-লয় পর্বত হইতে উৎশল্ল হইয়াছে कारात्मत्र कल श्रद्ध वार्क रक्षाटक विट्मिष উপकात्रक, धरे निमन गनः শক্ত স, সরমূ ও যমুন। প্রভৃতি নদার জল **उरकृष्टे खन मन्मम । दिना द्या**भावती ক্রছাত্র সংগ্র প্রতিভাব শ্র নদীর জল পান ক্রার পুরবোগ ক্রামা থাকে ঐ माका नहीं विक्य कि किर शब्दश्य जनक। ৰহী, সংগ্ৰহ, তড়াগ, কুপ ও वित्र पदनाव दलना टक्टम विदर्भ व के विद्याला प्रक्रित्य ।

#### उडिए खनम्।

বিদার্থ ভূমিং নিলাং রন্ মহত্যা ধাররা জ্ববেৎ। ওব্যের মে'ছেদং নাম বছঙাতি মহর্বরঃ। ও'ছেদং বারি পিওল্ল মবিদাহতি পাত্তনম্। প্রাবাং মধুরং বলা মামছাতকরং সন্ম।

#### छेडिए कल।

নিয়ভূমি বিদার্থ করিয়া প্রবলবেগে যে জল ধার। উথিত হয় তাহাকে উদ্ভিদ জল বলে।

ঐ! দ্রদ জল পিত্তম, অবিদাহী অতি শীতল, তৃপ্তিজনক, মধুব, বলকারক ঈষৎ বায়ুজনক ও লঘু।

## देनवा त सक्तम् ।

শৈগস:নুস্তাবদারি প্রকাষে নিকরে। করং। সতু প্রস্তাবন শ্চাপি ডএজাৎ নৈকরেৎ জ্ঞানম্ ॥ নৈকরৎ ক্লচি কুমীরৎ কফল্লৎ দীপনৎ লঘু। মধুরৎ কটুপাকক বাডলং শাদ্পিরলম্॥

## नियात्र जल।

পর্বতের সামুদেশ হইতে যে জল ধার। নিস্তুত হর তাহাকে নিঝার কহে নিঝারের অধ্যর নাম বার ও প্রস্তুবণ।

নিঝারের জালা ক্ষতিকারক, কলম, দাপন, লঘু, মধুর, পাকে কটু ও বায়ু জনকঃ ইহা পিত জনক নহে।

# मादम जनम्।

नहाः रेननाविक्रक्षः स्व मध्य छ। विकेषः । खरमद्याः सनमञ्चरः चनुकः मात्रमः स्वृक्षः मात्रमः स्वृक्षः मात्रमः स्वृक्षः मात्रमः स्वृक्षः मात्रमः स्वृक्षः मात्रमः स्वृक्षः स्व

#### मातम कल ।

শৈলায়ি কৃষ্ণ শৃদী চইকে জ্লাসংক্রত হটরা যে ছলে সঞ্চিত থাকে তাহাকে সরং কহে উহার জলের নাম সাবস জ্লা। সারস জল বলকারক, ভৃষ্ণা নাশক, মধুর, লঘু, অভিশয় রে।চক, কৃষ্ণ ও ফলমূত্র রোধক। ক

#### জাড়াগ জলম্।

#### व्यक्ति क्या

পশস্থ ভূতাণিছিত বত বংগবের কলাশসকে কড়াগ কহে, তড়াগোর জলকৈ
তাড়াগ জল বলে। কড়াগের কল পত্
কমার, পাকে কট্, বায় জনক, মলমূর
রোধক, রক্ত পিত্ত শান্তি কর ও কফ
নাশক।

#### वःशाक्रमम्।

পাষ্ট্ৰ'রবীকাভিনি বছকুপা চুহনর।
সাসোপানা ভবেষাপী ভজ্জন বাপায়ুচাতে ।
বাপাৎ বা'র য'দ জারুৎ পিবকৃৎ কফ্যাভছাং।
ভবেং বিক্তিৎ কফ্যাভছাং।

#### ব'গ্যকল্।

প্রস্তর বা ইউড়াদি বন্ধ সোপান বিশিপ্ত বৃহত্তর, কৃপবৎ জলাশবকে বাপী কহে বাপীর জলকে বাপা জল বলা সায়। বাপীর জল ক্ষার গুণ বিশিষ্ট হউলে পিতৃকারক ও বাজহোল নালক হব এবং নিই হউলে কফ জনক ও বায়ু পিও নাশক হয়।

# (क)शक्तम्।

জ্যে খাজে:১২শ বিভারে গন্ধীরো মণ্ডলাকুজিঃ। বংক্ষা-১৭ক্ষা স কূপঃ স্যাধদভঃ কৌপ মুচ্যজে। কেশেৎ পালে য'দ ঝাদু তিলোবছুৎ দিজৎ লঘু। তৎক্ষারৎ কক্ষরাভয়ৎ দাপনৎ পিন্তকৃৎ পরম্।

#### (कोश खन।

জন্ম বিস্তৃত্ব মণ্ডলাকৃত্বি ( স্তন্তালার )
গণ্ডীর ধাক বন্ধ বা অবদ্ধ হাউক জাহাকে
কুল বলা সাম। ক্পের জল স্বাত্ হাউলে
বিদ্যাসন্ত্র ও লঘু হয় এবং স্বার বিশেষ্টি হতলে বাক্রেয়ে নাশক, দীপন
ভ কাজ্বা পিত্তকাবক হয়।

# ८ ने ज ज नग्।

শিকাকৰি । হয় । খাত্ৰ নীলান্তৰ সংঘাদকৰ্।
তাতানিভান ল'ছ ৰ ৷ চেডি মিতানিধীকতে ॥
ভাখাদিভিত্ৰতা ৷ যতচেট ডামিভিচাপরে।
ভাত্যমূৰক ৷ চৌডা ৷ মু'নিভিঃ সমুদাকতৰ্য
চৌডান ল'ফকৰ নীৰ ৷ কক্ষা ক্ষত্ৰ শস্ত্ৰ ॥
মধুৱা পিতনুক্তচা পাচন বিশ্বাস মৃত্ৰ ॥

# कों डा जन।

লকানি দ্বারা আছেয়, নীলায়ন সদৃশ জল বিলিট লিলাকীর্ণ অক্তির গহরেহেক চৌডাবলে কেছ কেছ বলেম বালা এক রাপি দ্বাবা বন্ধ নহে, ভাহায় নাম বেছিক ভত্তবা কলকে চৌডা ক্রম

চৌডা **অল অবিষ্ঠানৰ ব্ৰু** নাশক, পদু, **বধ্ব, বিক্ত** সালহ পাচক ও বিশ্ব ।

# পালুল জলম্।

অস্প শ্রঃ প্রজ স্যাদ্বর চক্রফ গেরবৌ। ম ভিঠতি জল কিভিত্ততা বারে পাল্পণ্ড পাল্প বার্থাতিবালি ওর বারু কিদেবৈত্য।

#### প্লুল কল।

সে ক্ষুত্র কলাশবের সাগ্রহারণ মানেই কল শুক্ষ হইরা যার সাহার নাম পালুল। পালুলের কাশ অভিযাদী, গুরু, সাতু ও ত্রিদোষ কানক।

#### विकित कलम्।

নকাপি নিকটে ভূমিন। ভবেদাকুকান্দ্রী। উদ্ধান্তে ভভে যন্ ডক্তন্স বিকির্থ বিদুঃ ॥ বিকির্থ শীতলথ নচ্ছুথ নির্দোদ্য লঘুচ ক্ষৃত্যু। ভূমর্থ নাদু শিক্সুথ ভারও ডং শিক্সথ মনাক্॥

#### विकित्र कन।

নদী প্রভৃতির নিকটভ বালুক।মব ভূমিতে যে জল উদ্ভ হর ভাহ।র ন।ম বিকির।

বিকির জাল শীতল, স্কচ, নির্দোষ, লঘু, ক্ষার, স্বাছু ও পিত্তয় ঐ কল পক্ষার হ**ইলে কিঞি**ৎ পিত্ত কারক হর।

## देकमात्र कलम्।

কেছার কেন্দ্র মুশ্লিক হৈছার তক্ষস ক্তর্। ইঞ্জার বার্ডিবাশ্দ ব্রুব গ্রন্ন বোদক্র।

## देखवात जन ।

देखारक रक्यांत ७ छ।शात कन्तरक वर्गात कर क्रमात क्षेत्र विक्राणी, मध्द, खक्र दृष्टि कन्यू।

বাৰ্ষিক ওদ্ধনু উৎ জুমিছ মছিত জনন্। তিয়াত্ৰ মুখিত ওল, প্ৰসন্ন মমুভোপমন্।

#### दृष्टि जल।

বর্ধা ঋতুতে জজিবসর্ট্ট ভূমিয় জল আপকারক, ঐ ফল তিন দিবস পরে নির্মুল হইয়া অমৃত সদুশ হয়।

## হেমস্থাদি কাল বিশেষে বিহিত জল বিশেষঃ।

হেনছে সারস্থোহৎ ডাড়াগং সা হিতৎ আন্তর্। হেনছে বিভিন্নং ডোহং শিশিয়েইপি প্রশাস্তে । বসভ প্রীয়ায়োঃ কৌপং বাপাং বা নৈর্বং

নাদেয় বারি নাদেয় বসত প্রীয়াঘো বুঁ গৈঃ । বিষয়ন বৃক্ষাবাৎ পত্তালৈ দু বিজং যতঃ। উদ্ভিদ্ধ বাত্তবীক্ষা বা কোপন বা প্রারুষি ক্ষ্ডেন্। লাভ্য লার্ডি নাদেয় নার্ম্যান্দ্রম পরন্। লিবা রতিক্তিজ্ঞ ক্ষা নিশি লাভ করা আভিঃ । জ্যে মান্দ্রক্ষাম বিজ্ঞা দোষত্ত্বা পদন্। জনভিয়া দিন্দ্রিয় মাত্তবীক্ষ কলোপমন্। বলাগ রসায়ন মেধা পভিগ লঘু সুবাসমন্। বৃদ্ধসুক্রেড । পোৰে বারি সরোজাভগ নামে ভক্ত জ্ঞাপঞ্জন।

কান্ধনে কুপসভ্ত হৈতে চোডাং হিডং ২ডন্।
বৈলাবে নৈৰ্য্য নীয়ং বৈচাঠে শক্তবোদ্ধি হৃদ্।
আযাতে দাসাতে কৌপং প্রাবধে হিবা বেব চ চ
ভাতে কোপং পরং শক্তং আধিনে চৌডা যেব চ।
কান্তিকে বার্যপাতে চ ক্রমাত্রং প্রশাসাতে ।

# काल विटमंदय वावदामा कल ।

হেমন্ত কালে দারদ বা তাড়াগ জল ব্যবহার্যা দীত্তকালেও ঐ জল হিতক্তনক। বদন্ত ও গ্রীয় কালে ভৌপ, বাণ্য ও নৈর্ম্বর জল প্রশন্ত, তৎস্যুলে নদীর জল

वावश्वां नर्छ, कात्रव के ममरव वना दृशा-पित्र शख शिक इश्वाटक नदीत खन पृषिक इटेश विषव इत। वर्षाकाटन উদ্ভিদ, আন্তরীক্ষ, কৌপ কল প্রশস্ত। भंतरकाटन समोत्र कम अवता अःभूतक वावश्या, ज्ञानमा अहे जाल असम कतिएंड इत्त घर्षा (कामभारत कल त्रांथरा मम् प्रविम द्वीर प्र क्यः मम् अवित हल कित्रप्त वार्षिक इव ( हत्म भूर्विया जिल्ल काम पिरमहे मथल तालि डेपिक शारक ना, কিন্তু অংশুদক প্রস্তুত করিবার জনা জল मध्य त्राति भिभित्त त्राथिल हे वहेद्व । ) हेरात नाम जाः भूमक । जाः भूमक जिस जित्माय नामक, ज्यन ख्याना, निर्पाय, च्याञ्चत्रीका कल महुन छ। कत, तलकांद्रक, तमाम्रन, स्मितावर्कक, भी छल, लघु । अग्रन जुला।

বৃদ্ধস্থশত বলিয়াছেন যে পৌয মাদে সরোবরের জল, মাঘ মাদে জড়াগের, ফাল্গনে কুপের, চৈতের চৌড্যের, বৈশাধে নির্বরের, ক্যৈছে উন্ইএর, আষাঢ়ে কুপের, গ্রাবনে অন্তরীক্ষের, ভাষে কুপের, এবং আধিনে চৌডোর জল প্রশন্ত, কার্ত্তিক ও অগ্রহারণ মাদে সমুদার জলই ব্যবহার্য।

জল গ্ৰহণ কালঃ। ভৌগানা মহলাৎ প্ৰায়ো প্ৰহণ প্ৰায়ণ্ড।

অল গ্ৰহণ কাৰ।

भी अञ्च मिर्मान युक् य कर ख्वा परका स्वः ।

ভৌম জল প্রাভঃকাণে তুলিষা রাথা উচিত, ভারণ তৎকালে জল শাতল ও মিশ্বল থাকে। জনসং পান বি'ধ্য।
অভ্যব পানাম বিপচ্চতেইছ নিরমু পানাজ স এব ছে যাঃ। ভ্ৰমান্তে স ছি বিবর্দ্ধনায় মুন্তমুন্ত বারি পিবেদড়বি॥

कन भाग निधि।

অধিক জল পান করিলে আহার
পরিপাক হর মা, একবারে জল পাম
পরিহাার করিলেও ঐ দোষ জানিবে,
অকএব অশ্বিদ্ধানেব নিমিন্ধ মৃত্যুত্ঃ
কর পরিমাণে কল গান করা উচ্চিত।

শীকল কল পান্সলম্।

মজে বিকেক খাছেমু সিনে ককে মহাভাৱে।

অনে জনে সিহজেন্দ্র জমকে সমনৌ ভলা॥
উদ্ধার ক্লিপিকে চলীক্ষমু প্রশাসাতে।

चौकन कन शादनदङ्ग।

মৃদ্ধ (, পিতৃপ্রকোপ, ইঞ্জা, দাই, বিষরক দেবে মদাত্য , জাম, জুম, জারের আদমাক্ পরিপাক, তমক খাস, বমন ও উর্দ্ধণ রক্ষ পিত্র এই সকল ভ্রালে শীজল জল পান প্রশাস্ত।

দীতিল জলস্য পান নিষেধঃ।
পাশ দিলে প্রতিপাণের সাভতাবে সক্ষারে।
আধ্যানে বিনিজে কোঠে সম্যান্তরের সক্ষারে ।
অসুতি প্রবাধী বাল্য বান কানের বিন্তুরে ।
বিনারণ স্বের পানে ভাগিছ প্রতিশ্বিক্তির

শীতদ কৰ পান বিভাগ কৰ পাৰ পূল, কাজা গলপ্ৰহ, আমাৰ, , ক্ৰ থিক। এই শক্ষ পত্তে এবং সদাঃ ব্যন বা বিরেচনের পর কিয়া ক্ষেত্ পান ক'রলে শাতল জল পরিবজ্জনীয়।

জাল্পজল পানসা বিষয়াঃ। অবোচকে প্রতিশায়ে সন্দেহগ্রী শায়থৌ কয়ে। মুখ প্রসেকে ক্ষাইরে কুঠে নেত্রাময়ে জবে। এবে চ মধুমেরে চ পিবেৎ পানীয় মনসক্ষ।

प्रम जल शारनद्रचन ।

অফ্রনি, প্রতিশ্যাশ্য, মন্দায়ি, শোপ, কর বোগ, মুথ প্রদেক, জঠরবোগ, কুঠ, চক্ষু-বোগ, জর, তা ও মধুমেহ এট সকল সত্ত্ব অল্ল পরিমাণে জল পান করা বিহিত।

#### क्षण शानमा। वर्षाक्षा

জীংনং জা'বনাং জীবে। জগৎ সকলে তথায়ন্।
আংচাহতাল নিৰেধেন ন কচি ছারি বাবাতে ॥
ত রাজ-চ তৃষ্ণা গরীয়নী ঘোটো সদাং প্রাণ বিনালিনী।
তথাদেন্দ ভূষাতীয় পানীয়ং প্রাণধার্ণন্।
তৃগতে নেছ যায়াভি যোহ হ প্রাণান্ বিমুক্তি ॥
আঙা দার ধ্বস্থানু ন কচিছারি ব্যক্তিয়েং।

#### জল পানের আবশ্যকর।।

জল সমস্ত প্রাণীর জীবন, সম্লায় জগং জলাত্মক অভ এব কল,চ জলের সম্পূর্ণ বিহবধ করা করিবা নহে।

হানীত বাল্যাছেন তৃষ্ণা পদি গুক তৃষ্ণ জ ভাষর ইবার হার৷ সদাং প্রা-নিল্ট হারে পারে অভএগ তৃষ্ত্তি কিন্তে আন হারণোপ্যক জল পান কিন্তু কেন্দ্র করেবা, তৃষিত হইলে হইকে পারে। অতএব কোন জাব-ছাতেই জল নিষেধ কর। বিধের নহে।

প্রশাস্ত জলম্। আগন্ধ মনাক্ষ রসং সুলীতং ওর্নালমন্। অস্ত্রং সমুচ জন্ম ডোয়ং গ্রনদুচাতে ।

ल्यां के क्रम

গক্ষহীন, অংশকৈ রস বিশিষ্ট, কুশীতল, ডুফা নাশক, স্বহু, লবু ও জ্যা জল্ জুণ কর।

#### নিশিক জলম্।

পৈতিচলং ক্রিমণ প্রার্থিপ পর্ব শৈব শল কর্দ্দি:।
বৈবর্ণ বিরুশ সাজে পুর্ণজ্ঞান হিতে জলম্ ।
কল্বা ভ্রমনডোজ পর্ব নীলী তুরাদিভিঃ।
দুর্দেশভ্রমণ্যস্থাই কৌর চাক্স মরী চিডিঃ ।
আনার্ত্বা বার্দিকভ্র প্রথমণ তক্ত ড্রেগন:
ব্যাপর্থ পরিভর্তব্যা সক্ষেদ্ধে প্রক্রেশনম্ ।
তহকুত্যা হ জ্ঞান পানাভ্যাণ ত্রভাগ্রানোদর জ্ঞান্।
কালাগ্রামাল্যাভির্দ্ধ। কল্গাল্লিকণ তলা ।

#### নিশিত কল।

যে জল পিচ্ছিল যাহাকে নীট জন্ময়াছে যাহা পত্ত. শৈবাল ও কর্মম হাবা
কোদ যুক্ষ বিবর্ণ, বিরুদ, ঘন, তুর্গন্ধ, মলিন
মালা পত্তা, লীলকা ও ত্থাদির হারা
আছেল্ল, মাহাকে চক্ত ও স্থেটার কিরণ
প্রিভ হর না যাহা স্পর্ল করিলে কপ্ত
বোধ হয়, জাদুমরের ইপ্তির জল, বর্ঘাকালের বৃষ্টির ভূমিশ্ব প্রথম জল ও যে
জল নপ্ত হইয়া গিয়াছে এই রূপ জল
অতিশ্র অপকারক, অভিযুক্তী ও ত্রিদায়
জনক, অভ এব উহা পরিক্যাজ্য। এ জলে

ন্ধান বা তাহা পান করিলে তৃষ্ণা সাধান, উদর রোগ, জর কাদ আধ্যান্দ্য, কণ্ডু ও গলগণ্ডাদি রোগ উৎপন্ন হয়।

কুষ্ট জলম্য নিদ্যাধী করণোপাধ।
নিন্দিত অপি পানীয়া করিত। স্বাঙা পত্ন।
সূবর্ণ রক্তাও পেতা পান্না সিক্তামপি ঃ
ভূপা সভাপা নির্মাপা স্প্রধা মাধিত। তবা।
কপুর জাতি পূধার পাটগাদি সুবাসিত্য।
কপুর জাতি পূধার পাটগাদি সুবাসিত্য।
ক্রিমান্ত প্রাবি কুমান্ত বিব্যক্তিশ্।

कुष्ठे जनक निर्द्धाय कतिवात डेलाव ।

দ্যিত জলকে প্রথমে অগ্নিতে উত্তপ্ত করিবে। অনন্তর প্রণ, রোপা, লোহ, প্রস্তর ও থালুকা এই গুলি একে একে অভিতপ্ত করিবা ঐ জলে কর্ত্তা পরে ঐ জলে কপ্রি, জাতি, পুরাস ও পার লাদি শুগন্ধি দ্রং। মিলিত করিয়া শারিক্ত ঘনবস্তে ছাকিয়া লাইবে এই রূপ করিবো জল নির্দেশ ও কার্টাদ্ বাজ্জিত ইইবে।

পীতদ্য জলদ্য পাককালঃ।
আমং অলং জীঘ্যতি যামগুলাদ্
যানৈক মাঝাং দুত লীতগৰু।
ভদক মাঝেণ দুতং কদুজ্ঞং
পদ্ম প্ৰপাকে এয় এব কালাঃ।
পীত জাগের পরিপাক কালা।

কাঁচা জল পরিপাক হইতে তুই প্রহর লাগে, শৃতশাত শাতল ( । সিদ্ধ করির। শাতলাকৃত ) জল এক প্রহরে পরিপাক আদ্ধাবলিষ্ট হয়, সিদ্ধ জল ঈষৎউষ্ণ থাকেতে পান করিলে তাহা চারি মতের মধ্যেই পরিপাক পার।

# আধুনিক জল পারভার ক্রুরণ প্রণালী।

্য। জলে কিজিৎ ফটকিরিও নির্মালী ফল অসমা শিকাইয়া লওয়া।

২ য়। একটা কাঠ নির্মাত ত্রিপথের উপরে ক্রামণা । টা মৃথিকার কলস আপান করেবে উপরের ২ টা ছিম্র যুক্ত নিম্নটি ছিম্র রছিত, উপরের কলসটিতে জল ছিবে তৎপরটিতে কাঠের অলার চূর্ব এবং তাছার নিম্নের টি বালুকা বা প্রস্তুর অভ ছারা পূর্ব করিবে। উপরের কলসাতে কল ভালিয়া ছিলে উলা কলসার তলম জ্বন্ধ ছিম্র দিয়া অলেপ অভেপ কয়লা ও বালীপুর্ব কলসার ডিতর দিয়া পরিক্ত ছইয়া তলম কলসাতে পতিত ছইবে তলম কলসার মুখে একথানি ক্রম ও পরিক্ষার বস্ত্র খণ্ড রুপ পরিক্রের করিয়া এই রুপ পরিক্রের করিয়া এই রুপ পরিক্রের করিয়া এই রুপ পরিক্রের

 अग्रः। दक्षक द्वांता कृषेया अध्या । विका अक्षा क्कि व्याप अवस्थ अक्षा क्षा ।
 अक्षा क्षा ।

# দপ্ততিংশন্তমোহ ধ্যায়।

আল হৈছল বর্গঃ।

टिल्म् ।

जिनापि विक रहनार स्वव देखन पूपाण्डम् । एक् वाउद्वर मध्यर दिल्पार किन मुख्यम् ॥

ton .

তিল সম্প প্রভৃতি বিশ্ব বৃত্ত হৈছে প্রদাধকে তৈল বাবে। তেওঁ বাত বাত, নালক বিশেষতা তিল ক্রিকার বাত নালকতা শক্তি অধিক দ

## छिन टेहनम्।

क्षित्र देखन अक रेक्ष) वृत्तवर्ग कर्ने नद्रम्। वृषा शिकाणि विषय महुद्र द्रम भाकत्याः ॥ मृक्ता क्यांग्रान् उमा खिळा वाढ क्यांभवन्। वीर्यादवाका विमा न्यादन तुरस्वर व्यक्तनिस्कृद । (मधन रक्त रम् ज १ मर्डानम् विल्ली धनम्। मीलन् शृक्षिम् (यथ) राताग्नि उवस्यबन् । श्वाक (यानि नितःशृंव नानेन । नग्डाकत्य्। क्षा (कर्णाक क्ष्म्य) मक्ति (कास्त्रस्य)नी । ভিন্ন ভিন্ন চাতোহপিট যথিত। ক্ষত পিভিতে। ভগুস্কৃটিত বিদ্ধাগ্নি দক্ষবিশ্লিক দারিতে॥ ভলাভিছত নিভু'शে মুখবাছাদি বিক্ষতে। वरको भारतक्ष ग्राह्म त्राह्म नरमा कर्नाक भूत्रव । (मकाष)कारगारबयु डिकरेडम् धनमारङ । नम् वृ९६० (मधनर्याः मायानाभिकत्र) 'यखाचः । क्रमापि पृष्ठेः भवनः त्याउः गटकाहरप्रम्यम्।। व्रत्माश्मयाक् वह्य क'नार कुर्याक्ष कामा दर्जयन् । (उपु शारतके । महला (म स्वत) विश्व द्वयार्फरेवः। रेजमा क्रमा इमा (मजुर क्षानार (जन न्रव्यम् ॥ व)वाधि मुक्त्र छीटकांक महदेजु व्यवमा कथम्। मोनः अनुकृष्ठ रेखमः (छम मिचन मोन्डिम् ॥ क्रका नुत्रोया तथानि स्मिका छर अवर्त्तरम् । आहरू भावकथानि उन रेखन युपोदिखम् ॥

# जिन देखन।

তিল তৈল গুরু, দৈর্য্য কারক, বলকর, বর্ণের উৎকর্ম সাধক, সর, বৃষ্ণা, বিকাশী, বিশ্বন, আভাচে ও পাকে মধুর, হল্ম, ঐবৎ কলার রস, ভিজ্ঞ, বাত প্রের নাশক, উন্ধার, লেকর শীজন, বৃংহণ, রক্তপিত কর্মার, লেকর, ব্রাধক, গর্ভাশর ব্রোধক, গর্ভাশর ব্রাধক, কর্মার ক্রিক্তির ব্রাধক, কেশের ব্রাধক, ক্রেক্তির ব্রাধক, ক

জনিবে, ভোজনে অন্য প্রকার হইরা থাকে। ছিন্ন ভিন্ন, চ্।ত, উৎপিষ্ট, মধিজ, ক্রত, পিণ্ডিত, ভয়, ক্ষুটিভ, বিদ্ধ, জন্মিদ্ধ, বিশ্লিষ্ট, বিদানিতে অভিহত, নির্ভুগ্ন এবং মৃগ বাাছাদি কর্তৃক বিক্ষন্ত ছানে, বস্তি ক্রিয়ায়, পানে, অন্নসংস্করো, কর্ণপুরবে, নেত্র পুরবে, কেচন ক্রিয়ায়, মর্দ্ধনাদিতে ও অবগাহন কার্য্যে তল তৈল প্রশস্ত।

রংহণ ও লেখন এই ছুইটি গুণ প্র-স্পার বিরুদ্ধ, তবে কিন্ধপে একাধারে বিরোধি গুণধ্য অবস্থিত করিতে পারে ইহার মীমংশা এই।

क्रमा का का वा वा वा के हिंदी। यद-काल देविक ट्याकः मकनदक मक् किक कद्र, ज्यन तम मधाक अकाद्र अवाहिज वहेटल न। পরেতে রক্তাদি বর্দ্ধিত হয় ন। এই জন্য भदीत कृष दश, मुद्रका, कुन्नका, ক্মিত্ব ও মতুতা গুণ পাকাতে তৈল সমস্ত সক্ষতি জ্যোতঃপথে প্রবেশ করিছে मभर्थ इत्र, रेडल खिवष्टे इहेरलहे खादः मकल को ह र खतारह देशारह दम खरिले रहेशा, क्रमेका पृत करत, व्याक्त कल द्रःश्य धदः वादाश्ची, स्मा जीका, देश, नव এই मनल खा बारक क्रमणः त्मा क्रम करत, এই निभिन्न देश लिथन वलागात्र निःमत्रवणील खरीजुक भृतीयत्क धन कटव ও কঠিন পুরাষকে স্থালত করিয়। নিঃদা-রিভ করে এই নিমিত্ত ইহা প্রাহক ও मात्रक ।

# मर्ग टेडम्।

शोलमा नार्यला देखना क्ष्रूणाक उत्तर कथा। स्वथनर म्लाम वीर्याध्यर कीक्सर लिखांक सूचकव् ক্ষমেণ্ডেনিলার্লোয়াৎ পিরং কর্বাধ্যাপ্তর্। ক্ষমুক্ত ক্রিনি বিত্র কোঠপুট তান প্রন্থ। ভয়ত্রাজিকয়ো ভৈলৎ বিশেষামূত্রকৃচ্ছু কৃৎ।

#### मर्भ रेखन।

সর্থ জৈল দীপন, কটু পাক, লঘু, লেখন, উষ্ণ স্পান, উষ্ণবীর্যা, তীক্ষ ও রক্ত পিত দূষক। কক, মেদ, বাতার্না, শিরো-রোগ, কর্ণ রোগ, কণু, কুঠ, ক্রিমি. খিত্র, কোঠ ও গুপ্ত ত্রণ প্রভৃতিতে সর্থ তৈল প্রয়োজ্য।

কৃষ্ণবাই ও আরক্তরাই এই ছুই প্রকার সর্যুপ ভৈলের গুণও এই রূপ।

# कृवत्री देखनम् ।

ভীজ্যোক্ষা ভূবরী তৈলা লয়ু এছি ককাঞ্জিং। বন্ধিকুদ্বিক্ষা কণ্ডু কুঠ কোঠ কিমিপ্রণুথ । মেদে। বোষ প্রকাশি রণশোলয়র পর্যু।

#### विश्वात वोटकात टेक्न ।

তুবরী তৈল তীক্ষ, উষ্ণ, লঘু, গ্রাহী, ক্ষম, রক্তদোষ নিবারক, অধিকারক ও বিষয়। ইহা ব্যবহারে ক্তু, কুঠ, কোঠ ক্রিমি, মেদোদোষ, এণ ও শোথ হোগ বিনষ্ট হয়।

# कहमी टेक्स्य ।

कलमो रेडम शास्त्रप्रश्वित्वाक्षश्वम् ।
क्षूम्लाक महसूर्वाश्वम् । यत्रश्वा वात्र हर्वत् ।
वात्रक्षमञ्ज्ञा वात्रु श्वां व्यक्ष्म व्यक्षम् चनम् ।
वात्रो लात्म स्थास्त्रास्य मत्मा कृष्मा शूश्व ।
सम्भाम विदयो शालि श्वरप्रास्त्रश्च श्वास्त्राः।

## मिनाव रिक्त

মদিনার তৈল আংগর, স্থিত্তাঞ্চ, কচপত্ত নাশক, কটুপাক চন্দের অপ- কারক, বল কর, বারু নাখক, ওরু, মলোৎপাদ্রক, স্বান্ত্র রস, প্রাহী, স্বকের দোব নাখক ও বন। বন্তি ক্রিরার, পানে, মর্কনে, নস্যাধে, কর্ণ পূরণে, অন্তুপানে ও বাত শান্তির জন্য মসিনার তৈল ব্যবস্থের।

## क्रूड टेडलम्।

নুসূত তৈল মন্ত্ৰ\সাাধুক্ষ\ গুড় বিহাহি চ। চকুৰ্ত্তামহিত্ৰ\ বল্য\ রক্তশিস্ত ক্ষঞ্জিম্ ।

# . क्ल्मशैरकत टेडल।

কুসুত্র তৈল অমাসাদ, উষ্ণ, ওয়া, বিদাহী, চকুর জানিষ্ট কারক, বলক্ষর, রক্ষপিত জনক ও কক্বর্মক।

# थायम वीख रेखनम्।

रेकम र कू संमगी सामा र समा र प्रशास श्री स्थाप । गण्डार सम्बन्धां कर सामू भाग्न समा ४ छ पर ॥

# **ं** शकात देखन ।

এই তৈল বলকারক, র্য্য, গুরু, বাত-নাশক, কফম, শীজল ও স:ত্ পাক।

# এরত তৈপ্র।

क्षत्र देखा। श्रीत्वाकः श्रीत्वाकः विकार वह त्रवा। कृष्ठा। स्ववाधि प्रवश्न वर्षाः स्वापान् स्वरः त्रव्यः श्रीतः स्वरं । विकार वर्षः व्यवः श्रीतः स्वरं । विस्तरमञ्ज्ञ स्वरं वर्षाः स्वरं विस्तरमञ्ज्ञ स्वरं वर्षाः स्वरं विस्तरमञ्ज्ञ स्वरं वर्षाः स्वरं । स्वरं वर्षाः स्वरं स्वरं ।

#### । एक्ट्रे हिल

এরও তৈল তীকু, উক্ষ দীপন, পিছিল, গুরু, ব্যা, ত্বের সাছ্য জনক বয়ংছাপক, মেধাবদ্ধ ক. কাজিপ্রদ, বল-কারক, ঈবৎ কবার রল, স্কু, বোনি-বিশোধক, ভক্রেদোষ নিবারক, আমগন্ধি, ভাতুরস, সাতুপাক, তিকে, কটু ও ভেদক ইহা ব্যবহারে বিষম জর, লক্রোগ, পৃষ্ঠভূল, গুহা ভূল, বাভোদর, আনাহ, গুরু অগ্নীলা, কটবেদনা, আমবাত ও বাতরক্ত এরও ভৈল দারা বিশেষ উপকার, দর্শে।

वाम देखम् ।

বৈজাৎ সংক্ষা রনোদ্ধ্ তেৎ বিক্ষোট তাৰ নাৰ্যনদ্। কুঠপাৰা জিবিদ্ধাৎ বাজ প্লেমাময়াপছন্ ঃ

ধুনার তৈল।

ধুনার তৈল মর্দ্ধনে বিক্ষোটক, ত্রণ, কুষ্ঠ, পামা, ক্রিমি ও বাত গ্রৈমিক রোগ নিবারণ হয়।

नीकारक देवनम्।

কপুর তৈলং হৈলেয়ং সৌগতিক মহৈলকন্।
লীভাংত তৈলং পর্বোধং শাহেতেল মধ্য কৃতন্।
শীভাংত তৈলে হাজেপ শ্রম বাষ্মাশনন্।
ক্রিক্স প্রান্ধানি ভারে স্থিতনা মদ্।
শীভাংত ভারেতি হিতিশ্রং প্রিম্ভাতে ।

रायकः द्रमीविषयः, क्रांतिः क नाव-स्टब्रिकेट स्टब्र নাম। কাজুপুট তৈল আছেপ নাশক, বার্ণান্তি কর, স্বেদক্ষক, শৃদপ্রশমক, উপ্রবিধ্য, জরম্ন ও কফনাশক। আমবাত, উদরাগ্রান, জর, শিরংগীড়া, মন্ত্রাণ প্রক্রোক্য।
মাত্রা ও বিশ্ব।,

গঞ্জ ম তৈলম্ ।

বক্ষ তিত্ৰ ক্ষেত্ৰ কুঠান্য বিনাশনৰ ।

কক্ষ লেখন ক্ষ্ৰে অৰু বিবাপনৰ ।

ক্ষা নামা ৮ বিকাশঃ ।

नक्न रेडन

গৰুনি তৈলের সংস্ত নাম সক্ষ তৈল বা সক্ষম তৈল । ইহা কাত-নাশক, কুঠন্ন, কফশান্তি কারক, লেখন, কণ্ডুন্ন ও কীটাদির বিষনাশক। মাত্রা ৮ বিশ্ব।

वाकाम देखलम् ।

বাভাৰ ভৈলৎ মৃদু হেচনং ন্যান্ সাজীকরং মুর্ভগন প্রবন্ধ। পিতামিলছাং খলু বাহনালি লাবণ্যনং হেচ্ছরং সুলীভন্ ।

वाशादमत देखना

ইহা মৃত্বিরেচক, বাজীকর, বাঙ্গুপিত্ত প্রশমক, দাহ নিবারক, লাবণাঞ্চনক ও শীতবীর্যা। মেহ ও শিরোরোধে দর্কদা বাবহুত হইয়া থাকে। মাজা ২ মাবা।

নারিকেল তৈলম্। নারিকেল ফলোস্কুড়ং ইডলং ধান্তাফরং ওরু। লোমধং জীবদাতুলাং বাডলিভ প্রধাশনম্ । कटक नत्त्र क्षायरह ह चांद्रन क्षाँद्रन ह चक्क वि । विश्वा (मार्ट्न ह विश्वव) क्षांस्थ्यस्थ ख्यां ।

## माब्रिट्डम रेखम ।

আরিকেল তৈল বাজীকর, ওয়ে, জীপত। প্রাপ্ত ধাতু সৰ্হের পোষক, বার্পিত নাশক ও ক্ষত প্রশমক। ইহা ভক্তনাশ, প্রমেহ, খাল, কাল, যন্ত্রা ও কুরণ শক্তিলোপে প্রয়ে,জ্য। মাত্রা ২ মাধা।

# मादश टेजनम्।

করঝ তৈলং ভাজোজং ক্রিবিছন্ত স্থাপিনকৃৎ। নয়নাবয় বাণ্ডার্টি কুঙকণ্ডুরণ প্রবৃৎ। বায়ুনুৎ শিকস্কৎ কিঞিল্লেপনাক্রমন্বেবছন।

# कत्र रेखन ।

ভহরকরঞ্জের তৈল তীক্ষ, উক্ষণীর্ব্য, ক্রিমানালক, রক্ষণিত জনক, বাগুনালক ও ক্রিছে পিতবর্দ্ধক। নেত্ররোগ, বাত ব্যাধি, কুন্ঠ, কণ্ডু, ক্ষত ও চর্ম্মদোধমাত্রে উপজারক। স্থলভেদে বিবেচনা মতে বাহা ও আভাস্তর প্রবোগ কর্তব্য। মাত্রা ব বিন্দু।

# ाहेनी टेडनम्।

यायमा शांडेजी टेडजा मुखे सण् विमर्फनम् । समयक्तिमा क्रिक्टाम स्कृतनाम्रमम् ॥

# हाडेलम्भ्रात टेंडल ।

চাউলমূল্রার তৈল বঁমনকারক, কুঠ নিবারক, কণ্ডুর, বলকর, আধ্রের, চর্দ্দ দোষ প্রশমক ও রলায়ন। মাত্রা ১-বিন্দু।

# काकीयल देखन्य।

ভৈলং স্বাদ্ধীকলোজ্বং সমুক্তেমন বায়িব্দু। স্বাণ্ডিলায় পৰন বায়াবাকেপ খুলস্কং গ্ৰ আনবাড হয়ং বলাং ক্ষমেক্টব্ৰণাৰ্ডিমুং।

## कात्रकटलत टेकल ।

ইহা পরুভেক্তক, অগ্নিকারক ও বল কারক। পুরাভন তাতিসার, আগ্নান, আক্লেপ ও আমবাত রোগে উপকার করে। দক্তবের ক্ষতে ইহা লাগাইলে তৎক্ষণাৎ বর্ষা নিবারণ হর। মাত্রা ৫ বিক্ষা

#### लवक रेखनम् ।

(मर्ग्यूष्ण कर्र देवल मश्चिक्ष् राख्याणसम्। मद्दरके क्टार्स्क्ष्र गर्किन)! रममालद्म ॥

#### नवम टेकन ।

লবন্ধ তৈল অগ্নিকারক ও বাগুনাখক। গর্ভাবস্থার বমন নিবারণার্থ ইহা বিশেষ উপসোগী। সন্তবেষ্টক্ষতে লাগাইলে শীস্ত্র যন্ত্রণার নির্ভি হয়। মাত্রা ৫ বিক্লু।

#### पाठ टेखन्य।

বন্দিসাধানিকছর দীগ্নানাক্ষেপ নালনস্। বাকু)হক্লেল প্রজাননং সংগ্রাহি দলনাবিদ্ধং। ডুচং তৈনং রক্ষানাবি ভোৱে ক্ষিপ্ত দিয়ক্ষড়।

#### माक्रिकिक देखन के विकास

ए। क्रिकित रेका से हार्ग । १९ तकः व्यक्ति व्यक्तिकाः चारकतः, स्मि व्यक्ति लोकात संस्कृतिक रेक्स क्रिकाः

#### मीभाक रेखनम्।

योभवारिकम् यारशसः मृजारकभानिमाकक्रः। व्यामामाकोनं प्रमास अवनी त्यायमाननम् ॥

#### गमानीत्र टेक्न ।

সমানীর তৈল অধিকারক ও বাঃ নাশক। শূল, আক্ষেপ, আধানে, অজীব অর্শঃ ও এহনীদে:বে ইহার প্রয়োগে উপকার দশে।

भिधि टेडनम् !

रेक्क रेक्टबब्र मांट्यंबर गुनाधानानिन अन्धः

## दमावीत देखना

মোরীর তৈল জাগ্নিকারক ও বাসু-নাশক। শূল ও জাগ্যান রোগে প্রয়োজ্য। মাতা । বিশ্ব।

जीवक टेडलम् ।

विवि देवनस्वर (अपूर देवनर स्रोहक नक्षरम्।

कीतात टेच्ना

জীরার হৈলের ৩১৭ মোরীর তৈলের ন্যায় ৷ মাতা ব কিয়ু :

जुनान करोक टेडनम्।

# শেরাশকীটার তৈল।

নোৱাৰ কাঁটাৰ বীজ হইতে এক আহাৰ তৈপ পথ্যা হায়। ইহা ওয় বাব, কৰু ও স্বাহ্মীতে উপকাষক শেষাৰ কাঁটাৰ কাঠা চকুৰ প্ৰীকাষ ব্যবহৃত কাষা বাচক

# निंक्ष देवनम्।

তৈলৎ নিকুছ বাজে। বাজ্য মতু মাৎ ব্লেচনং প্ৰন্ ।
আনাহ বুৰুৱং হছি সংনাগক লিবোগৰম্ ।
বনুং ভছং ছবোগাহং গ্ৰুবেকাল সংজ্ঞান্।
আনহাতক লোকক মৰ্পনাং কাস্পাহনম্ ।
নাহা : বিকুঃ।

#### वत्रभागवीटकत्र देखन ।

জরপালের বাজকে নিপীছন করিলে এই তৈল নির্গত হয়। ইহা অভিশর উপ্রবিগ্য ও জতি বিরেচক। আনাহ, উদরী, সংন্যাস, শির পীড়া, ধন্মপ্তকার, উন্যাস, পক্ষাহাল, আমবাত ও শোধরোগে প্রয়োজ্য। কাসরোগে ইহা বক্ষের উপর মর্জন করিলে কাদের উপ্রতানিবারণ হয়; ইহার দ্বানা বক্ষের চল্ম আরক্রিম, উপ্রতাপর ও পিড়কা ব্যাপ্ত হওরাতে ঐ অন্যাভিমুথিনী ক্রিরার বলে কাদের বেগের থকাতা হইয়া থাকে। মাত্রা ২ বিন্দু।

## मर्दरेकन खाः।

रेजभः सरमानि सनकृत् योग्रस्टमाधिमः मस्त्रः। भाकः त्नेयम्। रेजनम्। सन् राज्यः। सरमानित्रः।

#### रेजन माटडेंब खन।

যে কৈল যে বীক হইতে উৎপন্ধ হর, ভাহার গুণ সেই বীজের ন্যার, ইহা বাগ্ডট প্রসংছেন। অভএব যে সকল তৈলের বিষয় উল্লিখিত হইল না ভাহা-দের গুণ ভবুৎ বীজের ন্যার জানিবে।

# व्यक्तीज्ञः भक्तावार्थात्रः।

मृखदर्भः ।

#### र्गाम्ख्य ।

খেৰুৰ কটুতীক্ষোজ ভাৰ ডিজ কৰাৰক।

কৰ্ণী দীপন বেৰা পিজকুৎ কক বাজ্জং ।

কুল প্ৰশ্বেনাম কৰু কি মুখ বোম কিং ।

কৈলাল মদ বাডাম বৃতিকক্তু ক নাপন্ম।

কাল খালপৰ পোৰ কাৰলা পাড়ু রোমজং।

অন্যচ্চ। কৰু কিলাল মদ্যল মুখাজি রোমান্
প্রশাভিলার মন্ত্রাম্ম মুব্রোধান্।
কাল সকুঠ জঠর ক্রমে পাওরোম ন্

মোরুর মেকমলি পীডমপাকরোভি।

সংক্রেম্ গোযুর প্রবঙ্গ হিলিক্ষ্ ।

অভোহবিশেষাং কর্পনে মুব্র গোযুর প্রবঙ্গ হিলিক্ষ্ ।

প্রক্রেম্ পায়ুর প্রবঙ্গ হিলিক্ষ্ ।

প্রক্রেম্ পায়ুর প্রবঙ্গ হিলিক্ষ্ ।

প্রক্রেম্ প্রাধ্র সক্রাল লোখনচোচা

শুলৱল্ কুলানাৰ কামলা পাঙ্যোগকং। ক্ৰায়ং ডিজডীক্ষক পুরবাং ক্ৰশুলনুং।

গোম্ত্র কটু, তীক্ষ, উষ্ণ, ক্ষার গুণষ্ক্র.
তিক্ত, ক্ষায়, লঘু, অগ্নিদা প্রিকারক, অরণ
শক্তি বর্দ্ধক, পিত্তকর ও বাতপ্রেম নাশক।
গোম্ত্র ব্যবহারে শুল, গুলা, উদরবোগ, কোনাহ, কগু, নেত্রবোগ, ম্থরোগ, কিলাস, আনাহ, শোল, কামলা ও পাগু-বোগ উপশমিত হয়।

অন্যত্ত্ব পোদুত্ত্বের এই রূপ গুর্গ বর্ণিত অ'ছে, যথা—পাণু, কিলাস রোগ, শূল, ম্থারে'গ, চক্ষুরোগ, গুলা, মতী সার, বাতব্যাধি, মৃত্ররেগা, কাস, কুন্ঠ, কাঠররোগ, জিমি ও পাণ্ডুরোগ এই শমস্ত ব্যাধি কেবল গোমৃত্র পানেই উপ-শমিত হয়।

সকল মৃত্র অপেকা গোম্ত্রের ৩৭ অধিক। অভএব বিশেষ: স্টল্লেখ না থাকিলে মৃত্র শক্ষে গোম্ত্রই ব্রিভে হইবে )

গোমুত্র সেবনে প্লীহা, উদরবোগ, খাদ, কাদ, শোগ, মলবোধ, শূল, গুন্ম, আনাহ, কামলা ও পাগু-রোগ নিংাবিত হয়। গোমুত্র কয়ায়, তিক্ত ও উষ্ণ। কর্ণেপুরণ করিলে কর্ণ শূল নিব রিত হয়।

#### (सथग्रास् ।

অবিষ্তাং সভিকাশ স্থাৎ প্রিকাশ পরি ছোবি ছ।

নেষমূর ভিক্ত, শ্লিক্ক ও পিত্তের আবি-রোধী ( অর্থাৎ, পিত্তবন্ধ ক নহে, পিত ব্যাধিটেত প্রয়োগাং )।

#### ভাগম্বাম্

व्याक्षः क्यांत्र मधुत्रः नवाः (नायाविवर्थं ह ।

ছাগম্ব হ্যাব, মনুরী, পুণা ও তি-লোম্ম।

## मादिम मृत्यु ।

व्यर्गः ल्योत्यापरचुक्त मकात्रः यादियः नहस् ।

माहित मृत काम्र थन विविश्व कु क्ष्मक । देश व्यर्गः, स्थाय थ केश्वस्तादनी टामाया ।

, establication of

शक्ति वर्षा मूल मूल मूल । वर्षा । वर । वर्षा । वर्षा

হতিষ্ত্র লবণাখাদ। ইহা ক্রিমি, কুঠ, মলম্ত্র রোধ, বিষল পাঁড়া, গ্রৈলিক বাাধি ও অর্শ : বোগে হিতকর।

डेब्रे मृद्धम् ।

मिकि भाग कानम्पर्लाम् १ हो मूहारह।

উষ্ট্রমূত্র শ্বাস, কাস ও অবেশ।রোগে উপকারক।

व्यथम्बम् ।

বাজিনা ভিক্তকটুক কুঠবৰ বিৰাপন্।

শেশুমূত্র কিন্তুচ ও কটু। ইহা কুঠ. ত্রণ ও বিষয় ব্যাদিতে প্রয়োজ্য।"

পৰ্দভ গতাম।

ধরমূত্র মপস্মারোখাদ গ্রহ বিনাশন্।

গর্মার জ্বারার, উন্মান ও এহা-ময়ে হিত্তপ্রদা

नत्र गृज्य ।

নরমূত্রণ গরণ ছবি সেবিভগ্তরসায়নম্। রকশাদা দরণ ডাক্সণ সঞ্চার স্বরণণ স্বাভ্যু

मञ्जा ग्ता

নঃমূত্র বিষয়, সেধন করিলে রমায়ন ক্ষরেপ হয়। ইহা চৌকু, ক্ষার, গুণগৃক, শ্বণাস্থ,দ ও রক্তপামারেরার নিবারক।

स्त्रीक्षाचे वहिबोसार सु स्वीदार मुखर सन्नाटन। इर्साहरू के मधाबासार सुरमार बुदर दिवर स्मृत्यू ।

क्षण्यम्, ज्ञानं, रामनं ७ वर्षिनं वरे नकन स्मिनीतं तीकाणितं मृद्धं द्वानंत्रः वर्षः, नर्कणः, क्षणः, सम्बद्धः च क्षणं रेवारमत शृक्षः চরক ও স্ক্রেন্ড ঋষি নর্ম্ত্র জ্যাগ করিয়া অবশিষ্ট অন্ত মৃত্তের বর্ণনা করিয়া-ছেন। ঐ ৮ টীকে অষ্ট মৃত্র বলে।

# केन ठ खा दिश्याखरमा ३ था था।

लदग कांत्र दर्गः।

देगक्षवम्।

সৈদ্ধবেং আ লীত লিক মা'ব্যক্ত সিজুজন্। সৈজকং জননং স্থাদু দীপনং পাচনং লঘু ঃ বিশ্বং ক্লচাং ছিমা সুখ্যং সুক্ষমং নেত্ৰাং ভিদেশ্যক্তং ।

टेगक्रवलवन ।

দৈশ্ব, শীতশিব, মানিমস্থ ও শিক্জ ইহার পর্যায়। দৈশালবণ স্বাত্ত, অগ্নি দীপক, পাচন, লঘু, স্থিপ্ন, রোচক, শীতল, বলকারক, স্থা, চন্দের উপকারক ও তিদোদ নাশক। এই লবন পঞ্চাব দেশের পাশিকীয় বনিতে ক্ষমে।

(मो १६६ नम् ।

দৌবর্জন স্যাক্ষচক মঞ্চং পাক্যঞ্চ ওদ্মন্তম। স্লচকং রোচনভেদি দীপমক্ষাচনকারম্ । সুমেছং বাঙলুমাতি পিবলং বৈশদং লয়ু। উদ্যার শুক্ষিৰং সূক্ষাং বিশ্বদ্ধানাৰ শুল্জিং ।

महल लवन ।

নৌবর্চল, ক্লচক, অক্ষ ও পাক্য এই গুলি ইহার পর্যার। এই লবৰ রোচক, ডেনক, অপ্রিনীপ্রিকারক, উৎ-কৃষ্ট পাচক, ক্ষেহ বিশিষ্ট, বায়ু নাশক, বিশব, লঘু, সৃক্ষ, উব্পার গুক্কিয়রক, অধিক পিন্ত বর্জক নহে এবং বিষয়, আনাৰ ও শূল রোগে উপকার করে। হিমালর প্রভৃতি পঞ্চিত্র সক্ষার লবণোদক আবা প্রজ্ঞবন সমূহের জল হইতে এই লবন প্রস্তুত হয়।

#### বিভ্যু ৷

বিজ্পাক্ত ক্তক্ তথা জাবিত মাসুরম্। বিজ্পাক্ষার মূর্দ্ধারা ক্তব ত নুলোমনম্। দীপান করু ভীজ্বোজ্প ক্রজ্প ক্রচাপ বাবায়ি চ। বিব্রুলার বিউদ্ভ ক্রজ্ব গোরব শাসনুৎ।

#### विष् न वन ।

বিড, পাক, কডক, ছাবিড় ও আহ্বর এই গুরার বিট লবণের নাম। বিট লবণ কার গুণ বিশিন্ত, দীপান, লঘু, ভীক্ষ, উষ্ণ, রক্ষ রোচক ও ব্যবারী। ইহা কফ ও বারুর অন্যুলোমন অর্থাৎ কফকে উর্দ্ধ দিকে ও বায়ুকে অপোদিকে নিঃসারণ করে এবং বিবন্ধ, জানাহ বিষ্টুড, সুন্দ্রোগ, শরীবের ভার নিবারণ করে।

## माव्यलवन्य ।

সাযুক্ত বধু সবণ মক্ষিণ বলিরক তথ।
সমুদ্রজ্ঞ সাগরজ্ঞ সবণাদ্বি সভমু র
সাযুক্ত মধুর পাকে সভিজ্ঞ মধুর ওর :
মাতুল্জ দীপন ভেদি সক্ষার মনিদাহি চ র
স্প্রেল্ড বাওনুথ ভিক্ত সক্ষাৎ নাভি লভিজ্ম ।

#### कत्रक लवा।

সামুদ্রিক লবংগর অনাচন্য নাম অক্ষিব বশির, সামূদ্রক, সাগরক ও লবংগাদ্ধি সম্ভব।

নামুত্তিক লবণ পাকে মধুর অথবা ক্রমং ভিক্রম বিশিষ্ট, অবিদাহী, কফ বছ কি বারু নাশক, ভিক্তা, আরুক্ষ ও নাতি শীতোঞ্চ।

# द्रोभक्रम्।

নাক্তবীয়া কৰিতা ওড়াখা বেইন্ড্রা। ওড়াখা প্রতিয় বতুঃজা তেছিলিজগন্ত ভিজ্ঞানা স্কাঞাতিখালি কটুলাকি চ।

#### সান্তার লবণ।

শাকস্ত্রীস, রৌমক, ও গুড়াখ্য টুরার পর্যায়র সভারী লগণ লঘু, বীয়ুনাশক ও অভিশয় উষ্ণ, ভেদক, পিওজনক ভীক্ষোষ্ণ, স্কাও অভিষ্যকী, ইহা পাকে কট্রস হয়। এই লগণ রাজপ্তানার অন্তর্গত সম্বর্দ হইতে উৎপদ্ধ হয়।

## संदिष्ध ।

डेम क्षित्र भारभन्तर्गर यक्तालर कृषिकः स्रम्। भारत्र सत्त्व कृष्टे सिक्षर जीउनर गाउम जनम्॥

#### ात्रा लगा

ইহা সমুদ্রতীরস্থ নৃত্তিকার জন্মে। ইহা কার গুণবিশিষ্ট, গুরু, কটু, সিষ্ট, শীতল'ও বায়ু নাশক।

#### क्षाद्रल ग्रम्

टेनड:१२ कात्र शवनर मूझकर मंगरकंपनम् । व'७ नृतर कातर शवर विश्वकाशाम मोनासम् ह

वाजीनन रेन जनावस, मृत्यार विद्युष्ट । मृत, बा शार, बेन्स्य माश्राम त्यारन देशों क्षेत्रा केन्स्य क

trees promisely from a species and the second secon

- 5, 4,

উল্লেখিত লবণ দকলের মধ্যে দৈশব দোবর্চল, বিট, সামুদ্র ও সাস্তার এই পাঁচটীকে পঞ্চ লবণ বলাযার। এক লবণ বলিলে দৈশ্বব, দিশ্বব ও সচল, ত্রিস্বণ বলিলে দৈশ্বব, দচল, বিট ও সামুদ্র ও পঞ্চলবণ বলিলে ঐ প চটীকে বুঝিতে হইবে। চরক সাস্তারকে পরিত্য গ ও উন্ভিদকে গ্রহণ করিয়া পঞ্চলবণ বর্ণন করিয়াছেন। দ্যা—ইমাবর্চলং দৈশ্ববঞ্চ বিভূমেভিদকে গ্রহণ করিয়া পঞ্চলবণ বর্ণন করিয়াছেন। দ্যা—ইমাবর্চলং দৈশ্ববঞ্চ বিভূমেভিদকে গ্রহণ করিয়া পঞ্চলবণ বর্ণন করিয়াছেন। সামুদ্রেণ সইহতানি পঞ্চন্ত্রালিবান চ ইতি।

#### **ठ**नकामग्।

हनकाञ्चक मङ्ग्राकः शोलनः एक वर्षतम् अवनाम् वतः कहाः जुलाकोनं वनकनुरः।

हर रेम्प्रा हरकदलानी।

ইহার অপর নাম চনকাল। ইহা আকিশ্য উক্ষ অগ্নিনীপক ও দক্ত হর্ণ। ইহার আগাদ অল ও লবন। ইহা শূল অজীৰ্ব ও বিবন্ধ দূর করে।

#### न्यमातः।

#### निष्माप्त ।

উষ্ট্র, মহিব অথবা লোকাতির বিষ্ঠা দগ্ধ করিয়া ঐ ভন্মকে কার পাকের নিয়মানুসারে পরু ক্রিলে নিসাদল প্রস্থাত হয়।

প্রকারান্তর। পাজুরিয়। কয়লা হইছে
আনক বাহির করিয়া লইলে মাছা অবশিষ্ট
থাকে, তাহাকে লবণ দ্রাবকের সহিত
মিখ্রিত ও শুভ করিয়া উর্জপাতিত
করিয়া লইলে নন্সার অর্থাৎ নিশাদল
প্রস্তুত হয়।

নিদাদল লবণাখাদ। ইহা নির্থমন দীল শারীরিক পদার্থ দম্বের (কফ, পিন্ত, মল, মৃত্র, স্বেদ ও রক্ষঃ প্রভৃতির) প্রাবক, শোধর ও শীতল। মকুদোর, জর, প্রীহা, শির:শূল, জর্ব্বাদ প্রভৃতি, জন রোগ, রক্তাপিত্র, কাস, ভর্মরোগ ও ঘোনিবাপিৎ পীড়ার নিদাদল হিতকর। শোস্বার্থ ইহার বাহ্যপ্ররোগ ও অনাত্র আভ্যন্তার্কিক প্ররোগ কর্ত্ব্য।

#### गवकातः ।

যবল্ কডবে আবে জিপ্তা প্রদেশিক্ত জলম্। স্তোগমান নথাভত্তৎ সকাল্\ীপূর্বাসসা । ত্রিংসপ্তকৃত্বে: বিস্তাব্য পচেৎ ভীত্রেধ ব'ক্ষা। নিংগেষে সালিক ভাষানু যবজারোহবলিয়াতে ।

#### भवकात ।

ষবের শ্রা, সকল দগ্ধ করিরা সেই ভক্ম ২ সের লইরা উহাতে ৬৪ সের কল দিরা মিশ্রিত করিবে এবং ঐ জল ২১ বার স্থূল বস্তবারা ছাঁকেরা লইরা অগ্রিতে চড়াইরা ভার অগ্রিবারা পাক করিবে। শন্ত্যার জল নিঃশেব হইলেই পাক পাত্রে যবক্ষার অবশিষ্ট থাকিবে।

#### সক্তি কাফারঃ।

यक्ष विषयः हुउ न् गः हिए। व्याव तृष्णकात् । वालराव विकाश नम क खद्दाः सालराव चहित् । व्याव्यात्वते पूर्कः न् मृश्वात्व्य सविद्वते । कृतास्मे व्याव्यक्ष क्षयः कृत्याम् क्षयः । वरदक्ष क्षयनः 'व्यक्षा (क्षयः)। कृत्यां वर्षः । यरहेषु 'मलराव (क्षयः) वर्षः वर्ष्याक्ष्णकातः ।

#### माहिकात ।

পঞ্জাব প্রভৃতি দেশে এক পেকার
কার বৃক্ষ জন্ম। উহাদিগকে তেদন
করিরা অগ্নিহারা প্রজ'শত ও তরিথে
কৃত্র ছিদ্র মুক্ত অদাহ্য আবরণে আবৃত
কতিপর ঘটমাপন করিবে। অগ্নি প্রজলক্ত হইলে ততুপরি পুনঃ পুনঃ কৃত্র
কৃত্র সরম কার বৃক্ষ সকল নিক্ষেপ
করিবে। এই প্রক্রিয়ার দেই কাঠ সকল
দল্প হইবে এবং ভল্লিংস্ত রস ঘট
সম্ভ মধ্যে সঞ্জিত হইবে। এ রস অগ্নি
ভাপে করেবা লইলেই স্বজ্জি কাকার
প্রভৃত হইল।

## डेक्टबार्नामानि क्षान्छ।

পাকাং কারো যবক'রো যাবস্কে, যাবাল্প বর্ত্তিক পি ক্রং কারং কাপোডঃ সূথবর্চকং দ কবিতঃ বর্ত্তিক শতেবো বিশেষ ভু সূব'র্ককঃ। যবকারে। লঘুং রক্তঃ সুবুক্তো ব্যক্তিপানঃ। নিহতি শুলবাভাষ প্লেল্প খাল গলামন্থান্। পাত্রশৌ প্রহণী প্রস্থানায় স্নীত জ্বশ্যন্ত্রান্থ ব্যক্তিকালপু প্রণা ক্ষ্যাভিশেষান্ প্রস্থা শুলঙ্ক। সূষ্য ক্রা মুর্জিকাবদ্ বে,জবা) প্রবড়ো ক্রমৈঃ।

# প্রক্ষিক প্রক্রির নাম্

পাক্য, ক্ষার, যবক্ষার, যাবশুক ও যবাগ্রেজ এইগুলি ইবার পর্যায়। সাক্ষিকাণ
এক প্রকার ক্ষার ভাহার অপর মান
কাপোড ও স্থবর্চক। আর এক প্রকার
ক্ষার আছে ভাহার নাম স্থবিচিক
এই ক্ষার সক্ষিকালারেরই প্রকারান্তর
মাত্র। মবক্ষার লঘু, বিশ্ব, জাভিস্কা,
আরিকর। ইহা শুল, বাব, আম, ব্লেমা,
বান, গ্লেরোগ, পাওুরোগ, অন ই, গ্রহণী
গুলা, আনাহ, প্রীহা ও ক্রজোগ নিবারণ
করে।

সভিত্কার তাগ ইহা অপেকা মৃত্
কিন্ত ইহা ওল্ম ও শ্লরোগে বিশেষ
উপকার করে। সুবর্চিক। সন্ধিকার
ন্যায় তাগ বিশিষ্ট।

#### कात्रवर कात्रवाकः।

বাকি দা যাবপুরুণ কার্যম সুদার ভদ। উলনেন যুক্ত ভড়ু কার্যম সুদারিভদ। যিলিভত্ত এন হৃদ্ধিপোশাদ্ প্রশাহত পরস।

#### पृष्टे अवः किन श्रकात कात्र ।

দর্জিকা ও সবন্ধার এই উভরকে

নারম্বর এবং দর্জি ডা, সবকার ও দোহাগা
এই ভিনকে নারত্রর মতে। ইয়ারা একত্র

মিলিড হইলে পুর্বোক্ত রূপ তব কর্ম

হর বিশেষ্তঃ গুলুরেট্র বিলেধ উপুডার্জ

করে।

काताहेक्य

INIT T'S MANY TOOK AND THE

মবজা ক্রিকা চেডি কারাইক মুবার্ডণ্ হ কারা এডে>গ্রিমা ডুল্যা প্রশু শূল হরা ভূপন্।

তাটে প্রকার করে।

প্লাণ, বজী (সুহী বিশেষ), স্পামার্ম, তিডিড়ী, আকদ ও তিললাল
ইহাদের ক্ষার এবং দক্ষিক। ও স্বক্ষার
এই অষ্ট্রন্যা মিলিত হইলে ক্ষারাইক
বলে। অষ্ট্রন্যার অগ্নি দদৃশ, ইহা
তাল্ম ও শুল রোগ নত্ত করে।

# हिस्तिः मंख्रमार्थायः।

मकान वर्गः।

#### मभाग ।

মন্থাৎ বছবিধা প্রোক্তং তরাম ব্যবহা সূর।।
বাক্ষণীরা মহানন্দা তর্কারণ বানিকাঃ ও
অমুজী বাধবী মতা মন্ধনী যোগিনী মধু।
হলিপ্রেয়া ব্যবস্তী। কামিনী কলিশীত।লি র

#### म्मा ।

মদিরা, সুরা, বারুণী, ইরা, মহানক্ষা, তত্ত্ব, কারণ, মানিকা, অমৃতা, মাধবী, মতা, মদনী, মোদিমী, মধু, হলিপ্রিয়া, দেব-সৃষ্টা, কামিনী ও কণিশী ইত্যাদি শক্ষ মনোর পর্যায়। মদ্য অনেক প্রকার, তত্মধ্যে নিমে কভক গুলির বিবরণ লিবিত ছইতেছে।

# व्यक्ति।

बाइको खेलवृष्यः वा त्वाची ना वावरागातः । बीरकुला वृष्ट्या त्वाची वावज्ञी ववन्त्रकृदः । व्यक्तिकृषिः क्ष्मी नृद्धाः युव्यस्य क्रवोननी ।

शासिक के चंद्र दिश्वि शासा मदान कि सिन्धाकारम देवन प्रवितरक গোড়ী বলে। গোড়ী মদিরা ভীক্ষ, উঞ্চবীর্যা, মধুর, বায়নাশক, পিতকর, বলপ্রাদ, কান্তিবদ্ধ ক, তৃপ্তিকর, পথা, বহিংবদ্ধ ও কানে:জীপক।

#### माश्री ।

মধ্বাদি বিহিন্ধ ম'তু ম'প্রী সা মদিরে:চ)তে। নাতু)কা মধুরা মাপ্রী পিতা'নল নিস্থনী । কামলা পাত গুলার্শঃ গ্রহের মৌহ যাতিনী।

মধু প্রভৃতি হারা প্রজ্ঞত মহিরাকে মাধনী বলাগায়। ইহা অনতি উষ্ণ, মধুর, বার্পিত নাশক এবং কামলা, পাতু, ওলা, আর্ল, প্রমেহ ও প্লীহা রোগে উপকারক।

#### * 1

कुछ। रखतिदेव धं'रेमाः रेलकी'ख समिद्राहारख । कुछ हा राजनस्कर उल्लाहारकोकी समाह सा ॥

বজ্বিদ ধান্য স্বারা প্রস্তুত মদিরাকে দৈলী বলে। ইহা কট্, স্মাস্থাদ, বাজস্মেম নাশক, কীক্ষবীষ্ট ও গৌড়ীর ন্যার ত্থা বিশিষ্ট।

## काष्ट्रश्री।

काव्यक्री क कचिका सामा जना कव्यका । काव्यक्षी मुम्बुद्रा अवनिक अन्। सिनी ॥

নান। ছবা কদ্ভ কৃত মনিরার নাম কাদ্দরী। ইহা সুমধুর, আভিহর ও পিত্র।

#### मार्की।

বধুকু পুজ্ঞান্ত। যা বাহুকী সা নিগণাতে। বাযুকী বাদিনী বল্যা পুতিকৃৎ ফামবর্ত্তিনী ই सडेल मृत इहेर्फ श्रम्भ इन्द्राटक माध्यो व वर्ण। हेदा मामक, वनकत्र, शृष्टिकातक छ काम वर्षकः।

#### टेमटब्रही।

यान्त्र यून् र व्यक्ती निर्मता ह स्टेब्स ह । क्यात्मक्त न सानारेमारको यिवश मर्का ह रेमरक्त्री वास्कृत वन्त्रा खरन्नी विद्वितीनो ।

বিল্মৃল, কুল ও চিনি ইহাদের সন্ধান । ক্রিরার হারা প্রস্তুত মদিবাকে মৈরেনী বলে। মৈরেরী সুরা বাধুনাশক, বল-কর, ক্ররম ও অগ্রিপ্রদীশক।

মৃত্দপ্রীবনী নামক স্থবা প্রেক্তক করিবার নিরম ও তাহার গুণ ভৈড্কর রতাংলিতে বর্ণিত হইরাছে।

मर्ख्याः भूतावाः नामाना छवाः।

﴿ (त्राष्ट्रमः मोननः क्ष्यः स्वर्गः स्वर्गः स्वर्गः क्ष्यः।

﴿ (त्राष्ट्रमः मोननः क्ष्यः) क्ष्यः स्वर्गः स्वर्गः स्वर्गः ।

﴿ (त्राष्ट्रमः मानः) विवक्षः। विवक्षः ।

त्राष्ट्रमः भिक्षः। विवक्षः। विवक्षः ।

वर्षः भीतः वास्रोकः मानः ।

वर्षः मानः वर्षः मानः ।

वर्षः मानः वर्षः मानः ।

वर्षः स्वर्गः स्वर्गः ।

वर्षः स्वर्गः स्वर्गः ।

वर्षः स्वर्गः ।

वर्षः स्वर्गः स्वर्गः स्वर्गः ।

वर्षः स्वर्गः स्वर्गः ।

वर्षः स्वर्गः स्वर्गः स्वर्गः ।

वर्षः स्वर्गः स्वर्गः स्वर्गः ।

वर्षः स्वर्गः स्वर्गः स्वरं स्वर्गः ।

वर्षः स्वरं स्वर्गः स्वरं स्वरं

#### मदमात्र माधादन छन ।

মদ্য রোচক, অগ্নি দীপক, জ্ল্য, সর পরিভারক, বর্ণ প্রসাদক, প্রীতিজনক, বৃংহণ, বলকর, ভর পোক আছি নি-বারক, নষ্ট নিজ ব্যক্তিগণের নিজ্ঞা প্রদা-রক, বাক্শক্তি বিহীন দিগের বাক্য প্রবর্ত্তক, অতি নিজ্ঞাপীল ব্যক্তিগণের নিজ্ঞা নিবারক, মলাদিরোধ পীড়িত ব্যক্তিদিশের বিবন্ধনাশক, বধ, বন্ধ ও ক্রেলোৎপাদক ভাষ্য বেডুক জুংবের বিদ্যারক, অভিনর বাজীকর ও প্রীতি সংযোগ বন্ধ ক। বত্তু: ব ক্ষম্ভ ও শো-কোপহত চিত্ত বাজিকর, যথাবিধি মিধে-বিত মদাই তত্তৎ জুংধের বিশ্বারক ও কিরৎকাল বিশ্রাম প্রদা

नीयशानना यथःना विष्यक्ति।ख्याद्यां यथाः । श्चनदर्वा मध्रदर्वा २६) भ5 वाष्ट्रदेव छ'म् विष्वा वस् ॥ श्रद्धः श्रीक्रिक्तः भागाव स्वव्यक्तिः। गानागील श्रदानामा र क्यामाक श्रवस्तु है। न ह नुक्तिमा कि बदर्श विचारम् म मक्तिक्र । अर्थ निक्षा क्षातां भण क्षत्र ममुर्थ। पष्ड । क्यित्कनाव वर्षना यश्त्रुषं वर्षाय मत्त्र । क्टमार्थिय। अभकाव किर्देश में मुन्नाटक ह युस्र मा जिन्न स्टमं:तवा राका माळकि वा युस्र। युक्त युक्त श्रामान का का प्रमायम व्यव है। काम लाबाब मां कत्या त्यासमा मधिलयां,गां। लिकारमाण्डामि कामीशाव विरक्षे मधारम मरव ह पुष्टोग्रन्ह सव[्] श्रांभा कश्चामा किन सिष्धान ग्रहः। मभरवाष'तृष्ठ मन। कीत्रश्रीम सुरङालमः ॥ द्रम्भीशास् म विषयाम् म द्राष्ट्र म मुक्कासम्। यमर्था भोग्रास्थ्री मा दिला ही के म विक्षित । कार्याकार्याः मृथाः मृश्ये । कांद्रक मक विकारिकम् ।

যদক্ষোন জাসাতি কোছক্ষাৎ তাৎ ব্যেল্ বুধঃ । মধ্যোপছত বিজ্ঞানো বিশুক্তঃ সাস্থিকৈ গ্রেণ। সামুখ্য সর্বস্থিত। নিশ্যসংগ্রেছ) এব চ ॥

গীরমান মদাকত তিন্ন প্রকার মদাবছ। দৃষ্ট হয়। আন উত্তেজনাবজাকে
প্রথম নদ, ভাষা অপোকা আবিক মুক্তাবছাকে মনান বা বিক্তান মদ এ সংজ্ঞান
বানি অবছাকে অভা বা ভাইন না
বলায়ায়। শীয়নান মদোয়া আনি বিক্তান
প্রভান মদের ( মুক্তান ক্রিয়ার বিক্তান ব্যাস্থ্য বিক্তান

প্রথম মদ হবে থিপাদক, প্রীতিজ্ঞানক পান ভোজনের সমাক জিরা সাধক, বাদ্য গীত হাস্য ও বিবিধ কথার প্রবভূক, ইহার ছারা বৃদ্ধি ও স্কৃতিশক্তির কিছুমাতা বৈলক্ষণা হর না এবং কার্য্য সম্পাদনাদিকেও শক্তির লোপ হর না। ফলতঃ প্রথম মদ অতিশর সুখপ্রদ। অধিক কি প্রথম মদে যে রূপ সুখ সম্ভাত হর, অগতে ভাহার ভূলনা নাই।

ছিতীর মদে মুহু মঁহং আৃতি ও মুহু
গহং মৌং উপদ্বিদ্ধ হয়। কথন কথন ঐ
আৃতি অর্থাৎ চৈতনাবেছা স্থাক বাক
হইরা পৃষ্ঠার দীন হইরা যায়। যুক্ত
আযুক্ত প্রদাশ, আনিত ভাবে চলিরা
বেড়ান এবং অবছান শান ভোজন ও
শর্মপার সম্ভাষণ বিষয়ে সবিপর্যার যোভ্যনা এই শক্ষা অবস্থা উপ্ছিত হইরা
থাকে।

তৃতীর মদ প্রাপ্ত ব্যক্তি ভরকতেইর
ন্যার নিছি য় এবং মোহারত চিত্ত হইর।
জীবিক থাকিরাও মৃত দদৃশ হইবা পড়ে
দে ব্যক্তি রমণীর বিষর সমস্ত বা বজুজন কিছুই জানিতে পারে না এবং যে
উদ্দেশে মধ্যাপান করা যার, সেই রভিও
লাভ করিতে সমর্থ হর না। সে অবস্থার
কার্যাকার্যা, স্থ ভূংগ ও হিতাহিত
জ্ঞান্মের নাশ হর, কোশ বুরিমান্ ব্যক্তি
কার্যাকার বিষ্ণু হুক্তান ও স্কৃত্ণ বিষ্ণুক্ত
লাভ্যান বিষ্ণু হুক্তান ও স্কৃত্ণ বিষ্ণুক্ত
লাভ্যান বিষ্ণুক্ত হুবা, নিক্সীর

all a partie annihit sellen Partie Sellen Sellen মুধরোগ, কর্ণরোগ, নেত্ররোগ, বেদনা, ন্তন বিজ্ঞাধি, ত্রণরোগ ও ভন্নপীড়ার মন্ত্রের বাহ্য প্রয়োগ করা যার।

#### में दः।

वित्याः शेक इतिः निकः मोधुः शक्तमण मः।
वात्रि हेस्टर वः मीधुः म ह मीख्यानः ख्रुष्टः ॥
नीधुः शक्तमः स्वदेः बत्ताधुवन वर्त कृषः।
वाष्ट्रिक करतः क्रमाः स्वद्याः द्वाहर्ति वर्दत्यः॥
विवद्याद्याः स्वाधार्यः स्वत्यान् हेमांच्रकामधान्।
वन्यावृत्या स्वतः मीख्यमः शुक्तिन स्वतः ॥

#### मिक्।।

পক ইকুমন হার। প্রস্তুত সাধুকে পক্রন সাধু ও অপক রস হা । প্রস্তুত সাধুকে শীতরস সাধু বলাযার। এই ত্-রেহ মণ্যে পক্রন সাধুই শ্রেষ্ঠ। উহঃ পর পরিকারক, অগ্লিকর, বলবছ ক, শরীরের বর্ণিনক, বাছু শিন্ত নাশক, জন্য, সিগ্ধকারক ও রোচক এবং বিবন্ধ, আগ্লান, শোধ, অর্শঃ, প্রয়েহ ও শ্লৈমিক ব্যাধি সমূহে উপকারক। শীতরস শীধু, পক্রন সাধু অপেক্ষা অল্পণ বিশিষ্ট, ইহা পৃষ্টিকর ও বলবছ ক।

#### काकिक्य ।

কাভিক\ ভেদ্বি ভীজেু:ছ\ পিবরুচ্চ'গ্নবর্দ্ধনন্ . বাভিআভি ক্লমহর\ অবস্থা তৃত্তিকৃৎ পরন্ ঃ

#### कें जी।

কাঞ্জিক ভেদক, ভাকুবীর্ঘা, উক্চবীর্য্য, শিক্তকর, ক্লচিপ্রাদ, অগ্নিবর্ক্তক, ব্যি নাশক, শ্রামহর, ক্লাভি নাশক, ক্ররগ্ন ও ডুপ্তিজনক।

#### शानामम् ।

वामाञ्जार वामा (यःमिञ्चार ओवमर अष् पोणमम् । स्मृत्तो ब्रास्टबारसम् विस्थान्धानस्य ६ सर ॥

#### धानाम् ।

ধাৰ্যায় ধাৰ্য হইতে প্ৰস্তুত বলিয়া তৃপ্তিপ্ৰদ, লঘু ও অগ্নিদাপক ইহা অফুচি, বাত্ৰোগু ও আছাপ্ৰাৰ্থ প্ৰয়োজ্য।

# धक हवा दिश्य खरमा २ शां यः।

खाल श्रानः

#### ত্রিফল।।

পথাবিভাতধা এবাৎ কলৈলে)। বিক্লা সমৈ:। কল'ব্ৰক্ক ভিক্লা সা বরা চ একাতিক। র বিক্লা ক্ক পিন্তমু মেছকুঠ হয়া দরা। চকুষ্যা দ্বাপনী ক্লচ্যা বিষ্মস্থায় নালিনী র

## विक्ना ।

হরীতকী, আমলকী ও বহেড়। এই তিন্দল একত্র হইলে ত্রিকলা বলা যার ত্রিফলার অপর নাম ফলত্রিক ও বরা। ত্রিফলা কফ পিত্ত মেহ ও কুঠ নাশ করে, ইহা সর (বায়ু ও মলা বর প্রবর্তক), চল্লুর হিতকর, অন্নিদাপ্তি কারক ও বিষম্ভ্রন নাশক।

# जिक्ट्रेकम्।

বিৰোপকুল্যা বয়িছে এছং বিষ্টু কৰা,তে। কটুবিকত বিষ্টু জ্বাহাৰং বাোৰ উচ্যতে হ ব্ৰাৰং দীপনং যতি থাল কাল ভ্ৰথাবয়ান্। বানুবেহ কক খৌলা দেহালীপদ পৰিদান্ত

# विकृषेक।

ন্তঠ, শিপুল ও মরিচ এই ভিন মিলিড হইলে ত্রিকটুক বলে। ইবার পর্যার ত্রিকটুক, ত্রিকটু, ত্রুয়ণ ও ব্যোষ। ত্রিকটু অবি দীপ্তিকারক, উহা খাস, কাস ত্বকের রোগ, গুল্ম, মেহ, কফ, স্থুলভা, মেদ, শ্লীপদ ও শীনদ রোগ নষ্ট করে।

ব্ৰিহ্মাতক চাতৃজ্জ তিকে।
জ্বনেলা পএকৈ ছলৈ। ক্ষিত্ৰ কি ক্ষাভূক । বা নাগকেশৰ সংগ্ৰহণ চাতৃক্তাতক বৃচ্চকে। তদ্ ধ্যাং রেচনং ক্ৰম্ম ভীক্ষোজ্ম মুখনক্ষৰ। সমু পিভাগ্যি কৃষ্ণীং ক্ষবাত বিষাশয়ম্ম

ত্রিজাতক ও চাতৃক্ষ পিক।

দারুচিনি, এলাইচ ও তেজপত্ত এই তিন জব্য একতা মিলিত হইলে উহাকে তিশুগন্ধি ও ত্রিজাতক কহে, ঐ তিন বস্ততে নাগকেশর সংস্কুত করিলে চাতু-ক্ষাতিক বলা যায়।

তাণ। রেচক, রুফা, তীক্ষ উষ্ণ, মুবের তুর্গন্ধ নাশক, লঘু, লিভ জ্ঞানক, অগ্নিবদ্ধকি, উৎকৃষ্ট বর্ণোৎ পাদক, কফ নাশক, বায়ুনাশক ও বিষয়।

## ठलुक्ष्यनम् ।

ज्ञायनः सम्बायनः कविषः **स्त्रुस्य**नम् । रक्षायस्त्राज्ञीकनाः स्थापनः व्यविष्णेकस्यस्य ॥

#### क्रम्बर्ग

कर्र, निश्रम, ७ वृतिस् क्रिकेट अबद्ध रहेरन स्थापन स्टब्स क्रिकेट इरेश्रहक क्रिकेट महिला निर्म মূল শংষ্ক হইলে চতুর্বণ বলাযার। ব্রিকটুর যে গুণ বলা হইর ছে চতুক্ষণের ও সেই গুণ জানিবে, তবে ইহার গুণ ভাহা অপেকা প্রবল।

#### शकारकाम्य,

लिल्ला (निल्ला म्ल हर) हि बक् नागरेडः।
लक्ष्माकः (कालमाकः) यथ लक्ष्माकः उन्ह ह्व ।
लक्ष्माकः (कालमाकः) यथ लक्ष्माकः व्राह्माकः ।
लक्ष्माकः (कालमाकः) विश्व (कालमाकः) ।
लक्ष्माकः (कालमाकः) विश्व (कालमाकः) ।

পিপ্লা, পিপ্লাম্ল, চই, চিতা ও ভঠী এই পঁচ এব্য একত্র মিলিত হটয়াকোল (ভোলা) পরিমিত হটলে । পঞ্চকোল বলায়ায় । পঞ্চকোল কটু, রুচিকারক ত'ফু, উফ, উভ্য পাচন, অগ্রিদীপক, কফ বায়ুনালক ও পিত্ত প্রকোপক। পঞ্চকোল সেবন করিলে ভোলম, প্রাহা, উদর রোগ, আনাহ(মুদ্ ) ও শুলরোগ নষ্ট হয়।

# यक् भगम्।

लकरकांत्र। नमहितः यज्ञतं ग्रुवाञ्चलम् । लक्षरकांत्र सन्। जस्युक्तकः ग्रुव्यः। विवालस्यु ।

পঞ্চকালের সহিত মবিচ সংগৃক্ত ।
করিলে বড়্ষণ বলাগার। ষড় মণ
পঞ্চকোলের ম্যাব গুণ বিশিষ্ট বিলেষত
উহা ক্ষয়, ইফা ও বিষয়াশক।

को स्मीत्रक्षाः

पुर वृद्धिकारकः कोश्यको पूर्वण विका । विकासकारक कोशकोशकारकः कृत्वा । कोत्रत्ना यपुत्र न्ह नि माक्षा म शदिकोशिकः। कोत्रनीग्रत्रभाः त्थां कः खळकृत् दृष्यत्भ विषशः ह सङ्गर्वस्थ्यम्: स्त्रा संस्कृत् शिक्षत्रस्य स्वरः। पुष्णार त्यापार स्वतः स्वरः श्रद्धारास्यः।

श्वहेरतं. यष्टीयधू, जीरखी, सूर् शनीं अ सायशनीं अहे समुनाव्रदक जीरनीवर्गन कट्ट। देशंव शर्याव जीरने अ सधुत।

তা। জীবনীর গণ শুক্তজনক, পৃষ্টিকারক, শাতল, জুরু, গর্মপ্রদ, শুনে হুয়েংপাদক ও কফনাশক।

প্ররোগ। ভূফা, শোষ, ছর, দাহ ও রক্তপিতরোগে প্রয়োজ্য।

ক্ষীরবৃক্ষ প্রথবর্জধ্যেল ক্ষণং ৩৪৭ দি।
না ১৯ দেশপুদরাক্ষণ পারীর প্লক্ষ পদাং।
পরিওক্তে ক্ষীরের বৃক্ষা ভেরা ত্রক্পঞ্চ বন্ধলম্ ।
কেভিন্ত পারীর ফানে শিরীরং বেডসং পরে
বদ্ধীত শোরঃ।

ক'বৰ্ক হিমা বৰী' যোনিবোগ এলপহ'।
কুক্ষা কছ য় সংহায় কিলপাময় নাগনাং।
লোগ পিত কফ'প্রয়া জনা ভগ্ন'ক যোককাঃ।
ভূক পভকং হিমা এ ছিত্র পোল নিলপ ভিং ॥
ভেমাং পঞা হিমা গ্রাহ ক্ষরভাজানুমেয়ু।
বিক্তভাগ্নাম্ভিং ভিকা ক্রায়া ক্ষ্ডভান্য

# क्षीत्रक्ष ७ श्थावस्य ।

পর্যার। বট, উত্থর, কর্ম্ম, পারীয ও প্রাশ্ব এই পাঁচটী বুক্লের নাম জীরা-বৃক্ষ। ইংাদের তুক্কে পঞ্চ বহল কহে।

কেহ কেছ পারীয় স্থানে শিবীয় কচেন কেহ বা বেক্তম বলেন।

ত্তণ। ক্ষীরবৃক্ষ দকল শীতল, বর্ণা, কৃক্ষ, ক্ষার ও গুনা বৃদ্ধক। ইছাদের প্রধ্বেশ্যে, যোলিরোগ, ত্ত্বণ, মোলে।রোগ বিস্প্, শোথ, পিত্র, কফ ও রক্তদে য নিবারিত হর। পঞ্চরজন দীকল, এাইী এবং রণ, দোগ ও বিস্প্ নাশক ইহাদের পত্র দাকল, গ্রাহী, লঘ্, কিল, ক্ষার লঘু ও লেখন, এই সকল পান ব্যবহারে কফ, বায়্ বক্ত দেংম, বিউভ ও আধান উপাশ্যিক হয়।

## অন্তৰ দৈৰ্গ ।

জ্ঞান রুসাগ্রন নাগপুল্পা পিরস্থ নীলোগেল নগদ নলিনকেশরালি মধুক্তফেতি। জ্ঞানাধিললে। ফেষ রক্ষণিত নিবছণঃ । বিষোপ্লমনো দ ছা নিছ্ড) ভারা ভলা।

শো বিগপ্তন, রলোক, নাবেশ্বর, প্রিরুজু, নীলোংপল, বেবার মৃশ, পালকেশ্বর
ও ঘষ্টিমরু ইহাদিগকে অঞ্বনাদিগণ করে।
অঞ্চনাদিগণ রক্তপিত, বিষ ও অন্তর্জাত্বর
শাস্তিকর।

## शक्छ मिः।

অনুষ্ঠা যাতকীকুসুৰ সৰজ। কটুক মধুক বিজ্ঞ-পোশিকা রোধনাবেরে:ধূপজাপ নদ্দ পদ্ধ-কেলর'বে চেভ। এতদ্ববস্য প্রবাং প্রিছম্বিধবস্যের।

আকনাদি, ধাইফুল, বরাক্রান্ডা, শোনা, ষষ্টিমধু, বেলগুঁঠ, লোধ, দাবরলোধ, পলাশ, নন্দীরুক্ষ ও পদ্মকেশর ইহাদিকে অমন্তাদিকাক কহে। ইহারা পকান্তাসা-বেরর শান্তিকর, ক্ষত সংযোজক, পিত্তর ও বেগাপক।

#### अर्कामिः।

অক্লিক কর্ম্বন্ধ নাগদ্ধী মন্ত্রক ভাগী রাজে-অপুস্পী কুমন্তে। মলন্তেও তৃশ্চিকাল্যলবর্ণ ভাপলবুখণেডিঃ ककाष्टिका गर्ना (ए)च ककरप्रस्थितियानकः। कृषिकुष्ठे क्षणभरमा विरम्पयान् तन्याधनः॥

আকল খেত আকল, নাটাকরও, ডহরকরঞ, হাতিওঁ ড়া, আপাল, বালুন-হাটী, রালা, বিবলাগলা, ক্ষভূমিকুমাও-খেত ভূ'মকুমাও, বিছাটী, আলবণাব্রজ্ঞ উলুদী ইহারা অর্কাদিগণা এই গণোক দ্বন্য সমস্ত কলম, মেদঃ পোষক, কৃমিনাশক, কৃষ্ট নিবারক ও ব্রণ পোষক।

#### जाभनकाानिः ।

আৰলকী ষরীভকী পিপপেল্যশিচএকশেচভি। আমল্যক্যাদিরিভেয়ের গর্বং সংক্ষরাপ্রঃ র চক্ষুব্যে। দীপনো বুরাং ককারে।চক্তনাশনঃ ।

আমলকা, হরীতকা, পিপ্পলী ও চিতা ইহারা আমলক্যাদিগণ। ইহারা সর্পর-প্রকার জর, অফুচি ও কফের ধৃংস কর, চংফের হিত্তজনক, অধিস্কীশক এবং শুক্রপ্রক।

#### खादचनामिः।

আহমণ মদন গোপখোলা কৃটক পাঠা কটকী প'টকা মুক্রেক্ত্রেয় সপ্তপন নিম্ন কুত্রনীক মানী-কৃত্রনীক ওড্চীচিত্রক পাল্লিটা কর্প্তব্য পটোল কিহাত জিকানি সুষ্বী চে'ড। আহম্পালিহিন্সে গ্রন্থায় বিশ্বাপ্যঃ। দেহকুত্রজ্ব কিত্রেয়া ত্রব্লোষ্ট্র

त्मान, यहनकन, त्नश्राह्म, क्फिह, वाकनान, केंद्रोटारकन, शांक्रम, क्कि, वेक्ष्यर, काकिय, निष, शोकियों, जीन-विक्री, किक्स, यहाक्य, किक्स, केंद्रिक्य, कर्मक्य, किक्स, क्ष्याक्य, किक्स, क्ष्याक्य, किक्स, क्ष्याक्य, किक्स, क्ष्याक्य, किक्स, क्ष्याक्य, किक्स, क्ष्याक्य, क्ष्य, क्ष्

প্লেয়া, বিষ, মেহ, ক্ট, জ্বর, বমি ও কপু মালক এবং ব্রশপোধক।

#### डे९ शमाबिः।

উৎপল রফোৎপল কুবুদ দেশিভিক কুবলয় পুতরীকাৰি বধুসঞ্জি। উৎপলাদিরয়৲ দাইপিরয়ক বিমাশমঃ। পিপান। বিষক্তপ্রাধ ক্ষমিবুক্সবিহার পৰঃ ॥

উংপল, রক্তোৎপল, কুম্দ, কহলার, নীলোৎপল, শেতপাম ও ঘাটমধু। ইহা-দিগের ঘারা পিপাদা, গাত্রদাহ, রক্ত-পিত্ত, হ্রজোগ, ছর্দ্দি ও মৃচ্ছবির শান্তি এবং বিষ নত্ত হয়।

#### **উ**षकाणिः ।

উৰক সৈদ্ধৰ শিলাক্ষতু কাদীদ্বয় হিদ্*নি* ভূখককেভি। উৰকাদিঃ কক্ষ\ ছবিগবে। খেলোগিলোছবঃ।

खेयकाषिः कक्ष्रः च विश्वरणः (यद्या तत्वाचनः । चन्नातीनकाम्बद्धान्यम्

ক্ষারম্ভিকা, গৈদ্ধলবণ, শিলাজতু, চুই প্রকার হীরাকদ, হিন্দু ও তুঁতিবা। ইহারা কফল্প, মেনঃগোষক এবং আশ্রা, শর্করা, মৃত্তকুছ্ত ও ওল্মরোগের শান্তি-কারক।

#### अभाषिः ।

वनावयत्र स्वेशात्मे धामसद्द्र् भव मार्थम्ण वित्रस्वत्त्रपुष्टा ग्रीश्रम्थं खंक ३०। त्यात्वर्र वित्रस्व कार्यक्रम्य यावन वन्त्रम् सम्बद्धः वृद्धस्य क्ष्म्यकावस्य न्यात्वानीत् व्यवस्य स्वामीय ग्रीश्रम्थात्रकावस्य

gal (Magair unimaten) den egite fregsere i Magaillage gang den un en ballege i প্রাইচ, তগরপাতুকা, কুড, কটামাংনী, গল্প, দাকুচিনি, তেঅপত্র, নাগেপর, প্রিরন্ধু, রেণ্ক, পদ্মন্ধী, দন্ধিনী,
গেওঁলা দরলকাট, গুড়ত্বক্, চোরকাঁচিকি,
বালা, গুল্ গুলু, ধুনা, শিলারস, কন্দ্ক্রোটী, অগুরু, গুনা, শিলারস, কন্দ্ক্রোটী, অগুরু, গলপিড়িঙ্, বেণার
দ্বা, দেবদায়া, ক্লুম, ও প্রাণ পুলা।
ইহারা বায়ু, কফ ও বিবের দান্ডিকারক,
দারীরের বর্ণপ্রসাদক এবং কণ্টু, পিড়কা
ও কোঠরোগের নির্ভিকর।

#### काटकान्। पिः।

कारकानी कीव्रकारकानी खीवकर्षकर वृश्तनभी वावनभी (यदा मदारवषाच्छ्रकट्या कर्क वेण्नी जुनाकोडी नद्याक श्रात्मीक्डीकर्ष्ट दृष्टि सृदीका खोवरका। मधुकरक्षि।

कारकाम) विश्वप्रः निश्वरची विश्वासम्बद्धाः स्वीवरमा तुर्वरमा । स्वीवरमा तुर्वरमा स्वाप्तमा स्वाप्तमा स्वाप्तमा

কাকোলা, ফারকাকোলা, জাবক, ঝণভক, মুগানি মাধানি, মেদ, মহামেদ, গুলঞ্চ, কাকড়াশৃন্ধী, বংশলোচন, পদ্ম-কাই, পৃথরিষাকাই, ধন্ধি, র্দ্ধি, জাফা, জীবজা ও ষ্টিমধু। কাকোনাদিগণ বায়ু নিবারক, রক্তপিত্তের শান্তিকর, জীবনা শক্তি ব্দক্তি, পৃষ্টিকর, স্তন্যজনক ও কল্বদ্ধি ।

# थक् ह्यादिः।

ধজুচা নিং কৃত্যুদ্ধ চলনানি পল্কতেওঁ। *
এং স্কৃত্যুদ্ধ প্ৰত্তাহিত্যীপনঃ ।
হুলাসায়োচ্যবেদীপিপাসাহাহনাশনঃ ।

গুলক, নিছ, ধনিরা, চন্দন ও পদ্ম-কাঠ। ইহাদের হারা দর্ম্ম প্রকার জ্বের শান্তি, অগ্নিবৃদ্ধি এবং হিকা, অফচি, বমন, পিপাসা ও গাত্রদাহের নিবারণ হয়।

## ज्यामः।

অপুনীস ভাষ ব্যন্ত কুলগের সুবনানি পোর বলভেতি।

যুক্তপুনি হৈভেচ্ব গঞ্জিনিবর, পর:।
শিপানা বিব ক্রোব পাণু মহ বর্তবা।

রক্ষ, সীশা, ভাষা, রূপা, দোনা, কান্ত লোহ ও মণুর। এই সকলের দারা বিষ, ক্রিমি, পিপানা, ক্রেরার, পাণু ও মের নত্তির।

# जिकड़े कम्।

শিপানী মরিচ শুখনেরানি ত্রিকটুক্রম্। জুখ্যন্থ ক্ষমেনোয়াথ খেছকুঠনুগাময়,ন্ত নিহন্যাদ্যাপন্থ ওলুপানগার্য্যাপ্তাম্পি।

পিপুল, মরিচ ও তঠি। ইথার: ক্লো, মেদ, মেদ, কুষ্ঠ, চর্ম্মরোগ, কলা পীন্দ ও অগ্নিমান্দ্য নিবারণ এবং অগ্নির উদ্দীপন করে।

#### दिक्षा।

ষরীভক্যামকলবিকীওকানি ত্রিকলা। ত্রিকলা কফশিবস্থী মেহদুঙ্বিনাশিনী। চকুষ্যা দ্বীশনী চৈত বিষয়ক্ষরনাশিনী।

হরী হকী, আমলকী ও বহেড়া। ইগা-দের ছারা কফ, পিত্ত, মেহঁ, কুঠ বিষম জর. ও নেত্রদোষ নিবৃত্ত এবং ক্রি উদীপ্ত হয়।

#### তিবুতাদিঃ।

বিবৃত্তাল্যামানতী প্রবন্ধী লপ্তলা ল'জ্থনা বিধা-বিকা প্রশাস্থান্দ্র গণান্ধী অকুসুষ্থান্দ্রী চিত্রজ্ব-কিবিদীকৃশ কাল ভিত্তক কম্পিল্লক ক্ষাক্ পাটলা পুন হরতিক্যামলক বিভীতক নীলিমী চতুরক্লৈরও পুশিক মহাব্দ্ধ সপ্তচ্ছ্বাক্জো-ভিত্ততা তেওঁলোধান্ধহ্যাবি।

রক্তবিহুং, সৃষ্ণাত্তিরুৎ দক্তী, উন্দ্র-কাণী, চামারক্যা, চোরকাঁচকি, মেন্দৃষী রাথ লসসা বিদ্ধান্ধক, মন্ধানিজ, স্বর্ণ-কারী, দ্বিতা, আপাঙ্গ, কুণ, কাণ, লেখি ক্মণাগুড়ি, পটোলমূল, পারুল, গুলাক হরাক্টা, আমলকা, বহুড়া, মীলরুক্ষ মোনাল, এরও নাটাক্ষপ্ত, মন্যাসিজ্যের আটা, ছাত্মি, আকল ও লভাফটকী। ইহারা বিরেচক।

#### नारशानामिः ।

মত্রাংগ্রেছ হাজাগ্র প্রক্ষ মধুক কপীতন ক্ষমুক ভাম কে লাম টোকক পত্র অগুছমু পিয়াল মধুক গোহনী বঞ্জ কছা বছরী ভিন্দুকী লল্লেকী কে,গোবহুতে ধ ভলাভক পলালা মন্দীবৃক্ষণেডি। ন্যুত্রে,গালিগানে, এন্যাং সংখ্যাই ভল্লাবক্ষ। বৃদ্ধপিত্রকো ক্লেমেল্যুয়া খোনিকোমছার ।

বট, গত্তভুপুঃ, তার্থ, পাকুড, মৌল, তামড়া অভ নির্লা, আম, কেওড়া, চোরকাঁচিকি, তেজপত্ত, আম, বনজাম, বিয়াল, গান্তিমধু, কটকী, বেজস, কদমু, কুল, গাব, সম্মন্তা, লোধ, সাবনলোধ, ভেলা, পলাপ ও মশীরুক্ষ। ইহারা ত্রণরোকে উপকারী মলদংগ্রাহক ভাষাভ্রিম্মারক, রক্তপিজ্ঞানিক, মুন্তাতিকর মেন্তার ও বোরিয়ের বিয়া

প্रश्न १ विश्व । (विश्व । विश्व विश्व । विश्व विश्व । विश्व विश्व विश्व । विश्व विष्व विश्व विष्व विष्य विश्व विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य व

ফুশকাশনসদভক তেজুক। ইতি তুগলং জ্বকঃ।
(তৃগপঞ্চমুন)
মুহদোহবিকারজ রক্ষপিরং উগৈর চঃ
অন্তঃগ্রন্থ লামুমের বিনাশয়েই ।
এমাং যাভ্ররারাদ্য বঙ্গাপের্যনাশনই।
প্রক্রিক্টিভৌঃ

क्रकशिक्षण्डां ८६८छो लोक्षकप्रतिनान्देनो । क्रक्रायण्डारतः देशत न्युक्तरपायतिनान्दनी ॥

कर्षक्षश्यम् ।

করম্বা, বোক্সর, বারী, শতম্পী ও কেলেকড়া। ইহারা রক্ষাত্র, হি-বিশ্লোথ, শক্সিকার মেহ, শুক্রনোষ ও শ্লেমা নত্ত করে।

क्रमाक्षम् ।

কুণ, কাণ, নল, উলুও কুণেকু। ইচারা পিতের, কুন্ধের সংগ্রু সেবন করিলে মুর্বেন্য, মুর্বিকার ও রক্তবিত্ত নিবারিত হয়।

वद्यो शक्षम्ल ।

ज्ञान, जानसम्म, रतिजा, श्रमक ७ (मयन्त्री। देशांत्रा तकाशिक, जि'वर लाव, नसे क्षत्रांत्र तका, क्षत्रत्राव क

# तृर्रभ्यम् ।

বিলু গণিরাটী, দোনা, পারুল ও গভারী। এই বৃহৎ পঞ্চম্ল ভিক্ত মধ্র, কফর, বায়ুণাভিকর, লঘুপাক ও অমি বর্কন।

## यश्रव्यक्षम्य ।

গোলুব, কর্ডকারী, বৃহতী, চাকুলে পু শালবান। ইতারা ক্যান, ভিত্তেও মধুব। ইতারের ছারা বায়ু ও পিত্তের শাভি, দেহেব পুঠি ও বলরু হয়।

# शरहोलामिः।

পটোল চক্ষন কুচক্ষন মুখ্র। গ্রন্থ কিছ্চীপাঠাঃ কটুলোভিগ চেডি। পটোলাভিগনঃ পিত্তকক'বোচকন'শনঃ। অবোপশমনো এণ্ডিকি কণ্ডিবাপছঃ।

পটোলপত্র, খেতচলন রক্তচনন, মুর্কা, গুলঞ্চ, আকনাদি ও কট্কা। ইহারা পিত, কফ, জ্ব, অফুচি, ব্মন, কুডু ও বিষ্মাশক এবং এণের হিতকর।

## श्क्रमका मः।

প্রমক ড'ক কট্থল ছ-ডিম রাজার্ন জ্জার্ন ন ল' (ক্ফেল'ন বিফলা চেডি ) প্রেরক'মিবিতে য গ্রেছিনিক্সিনাল্নঃ ) মুব্রুদ্ধ ছবে। হুজ্য শিশালাছো ক্লচিপ্রকঃ ঃ

ফল্না, জাকা, কটফল, দাড়িম, পিহাল, নির্মন্নিফল, দেগুনফল ও ত্রিফলা। ইহারা বার্ণাশক, মৃত্তদোষ নিবারক, হুদা, তৃষ্ণা নাশক ও ফুচিপ্রদ।

#### शिक्षाला मिः।

লিপ্লালী লিপ্লালীযুল চবা চিত্ৰক শৃক্ষের ক্ষিত্র ক্ষিত্তিপালী ক্ষেত্ৰকৈলাজ্বেং দেকত্ব পাঠা জীৱক লবল ব্যানিত্ত্তিল বিজ্ঞানী মধুত-লাভিবিধা বচা বিজ্ঞানি কটুৱোহিলী চেভি। লিপ্লালা ক্ষেত্ৰয় প্ৰভিলালা গ্ৰামালী নিহন্যাদ্দীপনো প্ৰস্থালয় স্চান্পাচনঃ ।

পিপুল, পিপুলম্ল, চই, চিত্তামূল, ভক্তী, মরিচ, গলাপিঞ্চীনা, কেশুক, এলা-ইচ, বন্যমানি, ইন্দ্রাব, আকনারি, ভারা, স্বাল, ঘোড়ানিনের ফল, তিপু-বামুনহাটী, মুর্কা, আত্তইচ, বচ, বিড়ম্ন ও কট্কী,। ইহারা কফ বায়ু, প্রতি-ল্যাস, অক্লচি, ওল্ম ও শুলারেনের লাভিকারক অধিবদ্ধক ও আমণাচক।

# श्रियम् ।भिः।

প্রিয়ন্ত্রসমন্য হাতকী পুদার্গ রক্ষতন্দন কৃচন্দন সোচরল রলাক্ষম কৃষ্টাক তে'ডোগ্রন পঞ্চকেপর যোজনবল্লো দীর্ঘনুলা চে'ড।

खर्क। शंककोकृत्रमङ्गां श्राह्म काहर काट्यशः विर्गतः। तत्नी श्रियम् दक्षेणो शकाकोत्रादन गत्नो। महामीद्यो (द्राह्म) शतकाना काशि द्राश्रान्।।

প্রিরস্থাজাপ্, ধাইকুল, পুরাগপুপা, রক্তচন্দন, বকম, মোচরম, রসাঞ্চন
পানা, স্পোতোহঞ্জন, প্রকেশর, মঞ্জিতী
পি শ্যামালতা। ইহারা পক্,তীমার
শাক্তিকর, ক্ষতসংযোজক, পিরয় ও
ব্রেপ্রক।

# मूहकातिः।

যুক্ত পলাপ ধ্বচিত্রক স্থানতুক বিংশপা হয়-বুকা প্রিক্ষা চেডি: मुक्कसमिर्वाली (द)व स्वरहान्नः सक्कालावज्ञः । •स्वरार्वः लोकुरत्रारान्नः सर्कतानासः ॥

ঘণ্টাগারল, প্লাশ, ধাওরা, চিতা, মহনা, শিশু, মনসাসিজ ও ত্রিকলা। ইহাদের ছারা থেলোরোগ, শুক্রদেখি, মেহ, অর্শঃ, পাণুরোগ, শর্করা ও অ-শরী রোগের শাস্তি হয়।

#### मुख्काषिः।

যুকা হ'রজা দ'কেহ'রে হা হারতক্যামতাক বিক্রাতক কুইবেনবভা বচা পাঠ। কটুরেছিবা লাজ্ল'উ।তিবেছি প্রবিদ্ধা ভলাতকানে চিএকস্টেত।
এব যুকাদিকো ন'লা গণং জোলনিস্থান বুদ্ধা।
হোনিদোধহর কুন্যপোধনং পাচনস্থা।

মুহা, হরিন্দা, দারুহরিদ্রা, হরীতকী, আমলকা, বহেড়া, কুড়, খেতত্ব, বচ, আকন'দি, কট্কা, মহাকরঞ্জ, আহেইচ, এলাইচ, ডেলা ও চিতা। ইহারা কচ্ছু যে'নিলোম নিবায়ক, স্তন্যশোধক ও আমণাচক।

#### द्यानामिः।

্রোদ্সাসরহোধু প্লাল কৃট্ছটালোক কথা কট-ফলৈপ্রালুক স্লাকী জিলিনীক দুংল লাং ক দ্লী চেডি।

এম কোগদি হৈছু।কেন মেদ্য কফচরো গ্রা: : যোমিদোম্মত ৬৬) এলো বিম্বিনাশনঃ ॥

লোব, সাবের লোব, পালাপ, সোনা, আপোক, বামুনহাটী, কটফল, এলব্লুফ, সল্লকী, ভিজিনী, কদস্ব, সাল ও কদলী ইহা মেদশোষক, কফল যোনিদ্বোষ নিবারক, বিষয় ও ত্রণের হিতকর।

#### माथातिः।

লাক্ষারেবন্ড কৃটজাক্ষমার কট্কল ব্রিজান্ব্য নিবসপ্তক্তল মাল্ড)স্কাম্মানা চেভি। ক্ষায় ভিক্তমপুর্ফেক'প্রাতিনাশনঃ। কৃতকৈমিভ্রিচিত্স দুক্তির বিশোধনঃ॥

লাক্ষা, সেঁ।দাল, কুড়টা, করবী, কট্ ফল, হরিন্দা, দাকুহরিদা, নিম্ব, ছাতিম, মালতী ও বলাডুমুর। ইহাবা ক্ষায় ভিক্ত ও মধুর। ইহারা ক্ফল্ল ও পৈতিক লীড়া সমস্তের উপশম কারক, ক্রিমিল ছুইব্রব শোধক ও কুঠ রোগের শান্তিকর।

#### वठामिः ।

ষচা যুক্ত'তিবিখ'তয়া ভালপ'রুৰি ন'গকেশর-ক্ষেতি। হ'রদ্রাল্যক্তরিয়েত্যাদি হরিদ্রাদিগণো যধান্দ্রসা বক্ষাত। এতেঃ বচ'হ'রদ্রাদী গবৌ হুনাবিশোংখনৌ।

कामाकी माराणेमध्या विटलेमा एका ये न हत्ना ॥

ৰচ, মৃতা, আভইচ, হ্রীতকা, দেব-দাক্ষ ও নাগেশ্ব। ইহাদের দান স্তন্য সংশোধন, আমাতিদারের শান্তি এবং বায়ু পিত ও শ্লেমার পরিণ ক হয়।

# बक्रगा मिः।

चस्रवंशिक विध्नं यधुनिधं छर्तः हो य्ययम्को भू' छक्त क्यांन त्यांद्रणे श्वायक टेनडोद्रक्षप्र निष्ठी-चनुक य'नद्र डि. क नेडावडी विभूव छ। वृष्ठी-चग्रक्ति । चग्रक्ति ।

दिनिष्कि निकः मृत बलाखा कहितारीम् ॥

বরুণরুক্ষ, নীলঝিন্টী, দজিনা, রক্ত-দজিনা, কর্ম্ভী, মেহখুনী, করঞ্জ, নাটা-কর্ম্ভ, মুর্বা, গণিয়ারি, পীত্রিন্টী, নীল-বিশ্বী, ক্রেলাফুচা, স্মাহত্ম, গজণিপ্পলী, চিতা, শতনূলী, বিল্, কুশ, রুহতী ও কণ্টকারী। ইহারা মেদ ও কফের দমন এবং শিরঃশূল গুলাও আভাস্তরিক বিদ্র-বির শাস্তি করে।

#### विमादीवकामिः।

বিদ্বিগভা বিদ্বি সহদেবা বিশ্বের শ্বন্থ কুন ক্পনী শতীবরী সারিবা ক্জনারিবা জাবক্ষভকে: মহাসহ: কুজসহা বৃহভে, বুমর্ম-বৈরতে, হ\সপাদী বৃশ্চকাল্যবভী চেভি। বিদ্যুলিক:দিরম্ম গ্রুপভানিসাপ্য:।
শোষ্প্রপ্রস্থাসকাল্যিমাল্য:।

শালপানি, ভূমিকুলাও, বেডেলা।
নোরহ্নচাকুলে, নোকুর, চাকুলে, শতন্তী,
অনত্তম্প, শামালতা, ভাবক, ঝবভক,
মুনানি, মাযানি, বৃহতী, কণ্টকারী, পুনর্নবা,
এরও, নোষালিষা, বিচুটী ও আলকুলী।
ইহাদের দ্বারা বায়ু, পিত, শোষ, ওলা,
অসমল, উর্থাস ও কাদের শান্তি হয়।

## বীরত্ববিদে:।

বীরতক সহচরদ্য দর্ভবৃদ্ধাদনী গ্রন্থানক কৃপ কাশান্যতেদকাগ্রিম মারটা বসুক বসির ভালুক কুলনিকেশাবর কপোভবজ্ঞাং শ্রন্থ বা চেভি। বীরতারা দিরিভাগ গ্রে। বাভবিকারমূথ । অপারী শক্রা মুক্তি বিভার ক্রন্থান

অর্জ্ব, নালবিণ্টী, পীতবিণ্টী, উলু, পরগাছা (বাদরা), নাগরমূচা, নল, কুশ, কাশ, পাতরকুরা, গণিরারী, মুর্বা, আকল, গজণিপ্রলী, দীর্ঘত্ত শোণা, বিণ্টা, নীলোৎপল, ক্রনীশাক ও গোক্ষর। ইহাদের হারা বাযুজনিত বিভারের শান্তি এবং আশ্বী, শর্করা, মৃত্তক্ত্ব ও মুত্রা-হাত রোগের উপশম হয়।

# बुर्छ।मिः।

্বৃহতী কণ্টকারিক। কৃষ্টঞ্জকলপাঠা মধুককেন্দ্র । পাচনীয়ে। বৃহত্যাধিবনিং পিতানিলাপবং । ককারে।চক ছালাল বৃত্তুক্ত কুলাপহং ।

রহতী কণ্টকারী, ইক্সম্বৰ, আকনাদি ও ষষ্টিমধু। ইহারা, বান্ধু, পিন্তু, কফু, অকুচি, শুল্লাস ও মৃত্রকৃচ্চু নিবারণ করে। শ্যামাদিং।

শ্যাবাবহাশ্যাক তৃবদ্ধতী শজ্ঞিনী তিলুক ক'ফগল্লক রব্যক্তমুক পুত্রশ্রেণী গৰাক্ষী রাজ-বৃক্ষ কর্মাব্য প্রভূচীনপ্রলাক্ষ্মলাক্ষ্মী সুধাঃ সুবর্ণকারী চেতি

উ জঃ শ্যামাদিরিভেচ্য গণোগুলু বিযাপছঃ। আন ছে: দর বিভ্তেষ্ট ওখোদাবর্তনাপনঃ ঃ

অনস্তমূল, শ্যামালতা তেউড়ী, দ্বস্তী, চোরকাঁচ কি, লোধ, কামলাগুঁড়ি, পটো-লম্ল, রক্তলোর, ইন্দ্রকানি, রাখালসদা, সোঁদোল, নাটাকরঞ্জ, ভহরকরঞ্জ, গুলঞ্চ, পারুল, বিদ্ধান মনসংশিক্ষ ও স্বর্ণফারী। ইহার। মলভেদক, আনাহ, উদর্রোগ ও উদাবর্ত্ত পাড়ার শান্তিকারক।

# मातियापः।

সারিবা মর্কচন্দন কৃচন্দন পল্ককাশারীক্ষ মধুকপুস্পাৰ্যদীরভেতি। সারিবাদ্যি পিপাসাল্লোর কপিত্তরো গ্রাথ। পিক্তরে প্রবাদনা বিশেষাল্যনাশনঃ

অন্তব্দ, যপ্তিমধু, খেতচন্দন, রক্ত-চন্দন, পদ্মকার্ড, গান্ধানীকল, মৌলফুল ও বেশারমূল। ইহাদের দ্বারা পিপাদা, রক্তপিত, পিতক্ষর ও দাহ প্রশমিত হয়।

# मानमात्राप्तिः।

সালসারাজ্যর্থ থবিরফরর কালডভ জযুক ভূজ্জবেষপূথী ভিনিশচপদ কুচলন শিংশপা শিরীযাসন ধবার্জ্ব ভাল পাক বক্তমাল পৃতী-কার্থকর্ণাগুরুবি কালীরক্তভেডি। সালসায়াকৈরিছে)য গ্রং ফুঙবিলালয়ঃ মেছপাঙ বিয়হরঃ ফফ্যেছে।বিলোয়রঃ ৪

ধুনা, পের।শাল, ধদির, বাবলা, পাব, রক্তলোধু, ভূর্জপত্র, বেবগুলী, ভিনিপর্ক্ত, বেতচন্দন, প্রভালন, পিন্ত, শিরীব, আসনর্ক্ত, ধাওরা, অরু ন, তাল, সেওল, করঞ্জ, নাটাকরঞ্জ, সাল, অথক ও কালিরাকান্ত। ইহাদের দ্বারা কুঠ মেহ ও পাতুরোগ প্রশমিত এবং কক্ষ ও মেদ শোষিত হয়।

#### ञ्बनामिः।

সুরসা শেভসুরসা ফণিজ্বকাজ্ঞাক্তৃত্ব সুমাজ্জ সুমুখ কাগমান কাসমূদিক্ষরক কুরক বিজ্ঞ কট্-ফল সুরসী নিগুঙী কুলাললোক্ষকবিকা স্কন্ধী প্রাচীবলকাকম'চেনা বিষমুক্তিকক্ষেত্র। সুরস্যাদিগণো ছেখ কক্ষেৎ ক্রিমিস্থনঃ। প্রস্যাদিগণো ছেখ কক্ষেৎ ক্রিমিস্থনঃ।

নাল লেফ লিকা, খেত শেক্ষালিকা,
ক্ষুদ্রপত্র তুলদী, বাবৃইতুলদী, কাক্ত্ণ; বনবাবৃই, রক্তুলদী, ক্ষুতুলদী, কালকাদলা, আপান্ধ, কুলেথাড়া, বিড়ন্ধ, কট্ফল, স্বদারক্ষ, নিদিলা, কুক্লীমা, ইল্বকানি, বামুনহাটী, প্রাচীবল্লাক, কাকমাচী
ও বিষমৃত্তি ক্ষুপ (বিষ্ণোড়ি)। ইহাদের ঘারা কফ, ক্রিমি, প্রতিশ্যার, অক্তি,
খাল ও কাদ প্রশমিত ও ব্রণ সংশোধিত
হর।

## र्तिसानिः।

হয়িত্র। বারহয়িত্র) কলসী কুটজহী**লাশি** মধুসংক্ষেত্র

कडव्मनमा खना वडाविमन्द्रमाय ।

হবিত্রা, দাক্ষহরিত্রা, চাকুলে, ইশ্রেষবঞ্চ যাষ্ট্রমধু। ইহাদের ছারা গুলা বিশোধন, আমাজিলারের শান্তি ও বোষের পরিপাক হর।

# পরিশিষ্টম্।

ब्रमात्रन्दर्यः ।

त्मामलका।

त्नावरको त्नावकडा (न'यक्कोडो विक्रक्षिण त्नावरको जित्त बन्नो कर्ष्ट्र'कका इन'ग्रमी ॥

সোমলত।।

পর্যার। দোমবরী, দোমলভা, দোম ক্মীরী ও বিজপ্রিয়া।

থ্য । ত্রিদোগ ন শক, কটু, রসায়ন ও তিক্ত ।

बुक्तम'द्रकः ।

বৃদ্ধদারক আবেগীস্কুশলীস্কুশলাক্ষিকা।
রুলায়নো বৃদ্ধদ রং পোলবাডাগবাডাগ্র র কালখাল অর্বরো বল্যং লিচ্ছিল এব চ।
অস্য বীজাদিক্ৎ আশ্বং মাত্র ২ মাবকে।

বিশ্বভুক।

বৃদ্ধারক, আবেনী, ছগলী ও ছগল ল'ব্রিক। ইত্যাদি শব্দ বিশ্বত্যকর সংস্কৃত নাম। ইহা রদারন, বায়ন শক, বলকর ও পিছিল। শোগ, আমবাত, কাল, খাল ও জ্বর রোগে প্রয়োজ্যন। ইহার বীকাদি প্রহণীয় থাত্র। যাবা।

वाकः दर्शः।

शात्रीयः ( अन्य (छनः )।

পারীবোহন্যং পঞ্চাশক কলিরবং কবচলু। বর্ণভাতক্ষরালং কলোন্তন সুপার্যকৌ । लांडीरयां पूर्व्यवः विश्वतः क्रिक्षिकः क्ष्मक्षयः। क्रिक्तिः समूद्वः यूट्ण क्योप्रः बांकूमक्काकः॥

অবথ বিশেষ। হিন্দী গজনতসহে।
পর্য্যার। পারীষ, পলাশ কলিরজ,
কমওলু, গর্দভাও, কলরাল, কলিজন
ও সুণার্সকঃ।

তাণ। ছুজ্জরি, স্থিরী, ক্রি**নিজনক,** শুক্রবারক। ইহার ফ্লেশ অমরদ, মূলে মধুর ও কধার এবং ম্ক্রায় সাহ্রদ আছে।

> পিতস্বর্গঃ। হিস্তালঃ।

ৰিঙালঃ সুসভা^{ও মণকাল}েৱাটো সুহক্ষল:। পিয়প্তে: বিশাণেগ্, শিরপেনেছিলেরাজ্ব ॥ বিভালে: বপুরোহয়ণ্ড কক্ত শিক্ষাহনুত। প্রমৃত্তাপ্রাইটাল কিলিয়ে। বাভ্লোবকুব ॥ অন্য জুক্ ব্যুলাপিকং প্রাশ্তং

ভুচো দাত্রা : মাবকা, ব্রুপস্য : ক্রিঃ। হিস্তাল ( হেঁতাল )।

হিন্তাল, তুলভাল, প্ররোট, বুহন্ধল, ছিরপত্র, হিরালেখা, শিরাপত্র ও অন্থির। আত্ম কর্ত্র ইত্যাদি শব্দ ইহার পর্যার। হিন্তাল মধুর ও অন্নাখাদ, কক্ষমক, পিতালন ও বাভপ্রকোপক ইহার হারা রাহ, প্রম ও ভূফা মহারশ হয়। ইহার ভ্রক্ত ও অরনাদি প্রহণীর, ভুক্তর কাত্রা ১ ব বা, স্বর্গনের ২ ভোলা।

## व्यामानाद्दाहेः।

রষ্ম্রকালালাথেটিঃ স পিরক্ষনাপনঃ ( ষাত্তন্দ ক্রিমিংছতি পাত্তাজরকামদাঃ র অস্যত্তুক্ বরসাধিকং প্রাত্তং দ্বুচো দ'লা ১ মাধকং বরসস্য ১ কর্ষঃ।

#### वाम् रथक्रा

ইহাকে সংস্কৃত ভাষার রক্ত ও আস্যা পাথেটি বলে। ইহা কফপিত নাপক, বার্জনক এবং জন, ক্রিমি, পাণু ও কামলা রোগের শান্তিকর। ইহার ত্বক্ ও অনশাদি গ্রহণীয়, ত্বকের মান্তা সমাদা, স্বরদের সভোলা।

#### न्यावर्ख की।

আবর্ত্তকী হক্তপুষ্পী পীন্তকীলা বিষণ্ণিক।। আবর্ত্তকী ক্ষংমাল্লা দীন্ত। পিন্তনিসূদ্নী। মাত্রা ১ যাবকঃ।

> আবর্ত্তকা (কোকণদেশীর ভগত বল্লা নাম ষ)।

রক্তপুষ্পী, শীন্ত নীলা ও বিষাণিকা এই তাল ইহার অপর ন:ম। ইহা কবার ও অল্লান্ডান্ত বং শিত্তব্যাতা ১ ম বা।

#### क।कि जिल्कः।

কাকেন্দ্র কুলকং কাকপীলুকং কান্তভিন্দু নং। ক্ষায়ো নধুরোচয়ক কাকেন্দ্র স্লেক্লো গুরুং। বার্তিবার্তিশ্যনো বাধিপ্রাতি মিসুর্বঃ।

# याक्षा शाव।

ইহাকে সংষ্ঠ ভাষার কাকেন্দু,
ফুলক, কাফপিলুক ও কাকভিন্দুক বলে
ইহা ক্যার, সান্তু, অন্তরস, বাভপিত্তজ
ব্যাধি শাশক, বদননিবায়ক ও আভিহর।

## कक्षतर्भः ।

## मानभूको।

মাগপুন্দী খেডপুন্দা মাধিনী রাষদৃভিকা। মাধিনী রৌচনী ভিকা ভীজোন্ধা কফপিভসুৎ । বিনিহতি বিষ৲ শূলং যোনিবোষ ববি কিমীন্।

• য্যায়। নাগপুস্পা, শেতপুস্পা. নাগিনী, রামগুতিকা।

গুণ। রোচক, তিব্রু, তীক্ষ উষ্ণ, কফ পিত্ত পুও বিষ নালক। ইংার হারা শূল, গোনিদোষ বমি ও ক্রিমি হোগ নিবারিত হর।

#### (मवकाष: ।

বেদডাড়া ধরা দেনী সরী জীবুড ইড়াশি। বেদডাড়া ককহরো মুখাছীনাং । ১৯৯৫ । জন্ম অন্য বুলং গ্রাছং মাত্রা ১ মাধকঃ।

#### (मकाड़ा

দেবভাড়, খবা, বেণী, গরী ও জীয়ত ইত্যাদি শক ইহার সংস্কৃত নাম। ইহা কফ্যু ও মৃষ্কিদির বিষ নাশক। ইহার মূল গ্রহণীর, ম'আ ১ মাবা।

#### হান্তভা

হ'ৰিব হ'ৰেখন চ দ্বৰী ধুনরপৰিকা। মধ্য কট্টা কৰোকাচ দলিপাত অৱাহকুৰ। হাতীক দা।

ছন্তিনী, হন্তিওতী, ওতী ও ধুসর পত্রিকা এইওলি ইহার পর্যার। ইহা কটু উষ্ণ ও সন্ধিপাত জ্বরনাশক। ইহার স্বর্গ গ্রহণীয় মাত্রা ১ তোলা। শিরাসমূহের মধ্যে বছতর শিং। স্কা ।
ও বছতর সূল, কতকগুলি শিরা দেহের
গভীরতর প্রদেশে, আর কতকগুলি
বাহা প্রদেশের কিঞ্চিৎ নিম্নেই অবস্থিত।
বাহু ও সক্ষিত্রের অধ্যেতাগস্থ অগভীর
শিরা, অমাংসল প্রদেশস্থ শিবা ও বাাধি
ক্ষীণ বাকিনিগের অস্বের শিরা সম্গ্র্যাক্ত অর্থাং চক্ষ্মারা লক্ষিত হইয়।
থাকে। এইরপ শিরা প্রকাশ বলক্ষানের
লক্ষণ জানিবে। ঈদুশ ভলে বুংহণ ও

এই ০ সং দিতে ক থ গ্রামাপার্শন্ত বাহ। প্র ভাওত্তের কঠনিয়া।

- গ তান খাত শিরা।
- म जुड़ानिस भिना।
- तु दुक्तभग।
- म तुक् भिदा।
- भ উक्रंत्रकशकि निदा।
- फ द्राराष्ट्रात्रकः निवा।
- থা বাহা বস্তি শিরা।
  জ্ঞান নিমে উপজি মহাশির। ও
  বস্তিতে অধ্যয় মহাশির।।

# नवत्यारशायः।

ख्य (खाकाशम ।

क्ट क्ट ब्लन भिता, धमनी ७ **ट्यांकः देशामित व्यटक्य नार्वे, भगनी ख** স্রোতঃ শিরার রূপান্তর মাত্র। বিশেষ যুক্তি সমত মহে, জ্বোতঃ ও वभनी नित्रा दहेटल भूषक्। क्रभएडम, मूल निदयभ ८७म 😕 কার্যাকারিত্বভেদ एक हेशारमत किनक्कि विक्रित विक्रिक र्य। ८कदल शत्रभातं मिल्लियं, मध्य কতাক বিস্ত र्जार जार वास भाटका मम् भ किटल वर्गन ८ इन्हें हैं दावा গভিন্ন শলিয়। অফুভুত হইতে পারে। वास्तर देशास्त्र आठकारका, कार्या प्रार्थन 378 1

्ळातः ेग गिर्ध (५८६६ जास् ध्यस) किता यथी।

लान जगो का शिर्धान कम्म कृद्धि विक्य स् स् सिक्ष्य का लिता यथी।

सिक्ष्य कर्त्राचा का सिक्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य स् ।

निद्य कर्त्राचा का निक्ष्य क्ष्य क्ष्य स्था ।

महात्या हो भूष का निक्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य स्था सिक्ष्य ।

महात्या हो भूष का निक्ष्य क्ष्य क्ष्य

श्राक्तास्त्रास्त्र भगावीस् त्वस्थास्त्रस्य । ध्रम्।, (वक्षः) का नाम् उस्य सामाद्रस्य कथा ॥ विश्वादर्शन क्षम्य सामग्रीक्ष विश्वक्षस्य । रुक्ता श्रुष्टिक कार्यक्तार त्वस्क्षिकासात्रस्य ॥

ত্রেতঃ শ্রহত প্রনা ও শিরার নার এক প্রকার নাড়ী বিশেষ, ইহ'দের জভ্যস্তরে এক প্রকার জলীয় পদার্থ থাকে, তাহাকে ল্যাকা বলে। ইহা-রাভ দেহের প্রায় শ্রমাংশ বর্ত্যান থাকিবা বৈহিক ভাষা নির্মাহ্য করে। যান্তিক, নাভিক্ষা, শ্রেক্সা মজনা, নথ, কণ্ডরা, অহি ও উপাচি এই সকল স্থানে লোভোনাড়ী দেখিতে পাওরা যার না।

যাবতার স্রোভঃ মিলিত হইর। তুইটী
মহাস্রোজেরলে পরিণত হইরাছে। ঐ
তুইটী মহাস্রোভঃ জ্বক্রর নিমে শিরা
সঙ্গনে (মেখানে শিরাগণ মিলিত হইরা
মহাশিরা রূপে পরিণত হইরাছে) মিলিত
হইরা তথার আত্ম গর্ভত্ব রস নিক্ষেপ
করে। ঐ রস শিরাত্ম রক্তের সহিত,
মিলিত, ল্থকোঠে উপত্মিত এবং তথার
রক্তিত্ব প্রাপ্ত হইরা নির্ভর দেহ ভ্রমণ
করিরা থাকে। ঐ রস প্রথমে দেহ হইতে
উৎপন্ন ও প্রের রক্তত্ব প্রাপ্ত হইরা
থাকে।

ভ্রোজোনাড়ীগণ ধমনীম্ব রক্ত হইতে
দেহ পোষণোপযোগী পদার্থ আকর্ষ্
করিয়া দেহের বর্দ্ধন করে। ইহারাই
গ্রহণী ( ক্লুডান্ডের জংশ বিশেষ )
প্রভৃতি হইতে আহারক্ত রস আকর্ষণ
করিয়া শিরামার্গে ক্রেরে লইয়া যায়।
ভল্লাভে দেহের বল, পৃষ্টি ও লাবণ্য
রিদ্ধি হইয়া থাকে।

# ममद्याञ्चामः।

অথ স্থারবঃ।

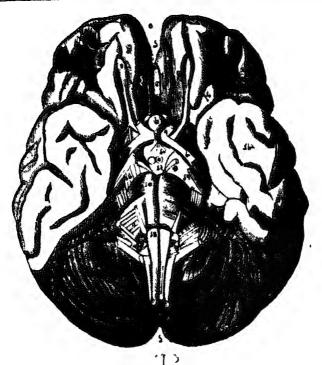
মারবং স্করং স্করাঃ শুরা নিধিল বেছমাঃ।
কারবানি চেডনানাৎ লয়া চৈডনা লাবনে ॥
স্থাদুঃখাববোদে ৪ প্রত্তী ৪ নিবর্তনে।
কপান্ধ রসম্পর্লক্ষানে ৪ বেডবং ॥
লিখিলারাণ্ড সন্ধাতা মতিকাৎ পৃত্যক্ষনং।
লিয়োদ্ধল দেখাব্যাঃ পেখাঃ পেখাল মান্তিডাং ॥
তেতু ভেনু ৪ ভাবের দেখবাবের মুন্দনাঃ।

কম্পাদানা: কম্পাদ্ধে সম্ভলুদক তৎক্ৰাই । জন্য বিকম্প কেনেন জ্ঞান কেনে। ভবেদ্ বহু:। অভো মঞ্জিক মেবৈকে, জ্ঞানছেই: প্ৰকীৰ্ন্তিঃ। করোটি গজরাত্তমদ্ বসেনাজ্ঞ সুপেনবদ্। সুখ্যক্রকা সমত্য নাভিন্নক বিধোপরি।

न्ना है।

স্বারু সকল স্ত্রের নার স্থা ও **अ**ज्ञवर्ग भाषी। देशाता निथिल एमर ব্যাপিয়া অবন্ধিতি করে। চেতন (জীব) দিলের চৈতন্য সম্পাদনে সুখহু:খজান, কার্য্যে কারণ স্বরুপ। खतुछि, कार्या बबेटक निद्रवि এवः क्रम, गक्त, द्रम, म्लार्च ७ भक्त छ्वात्नद्र প্রতি স্বাধ্দকলই হেতুভ্ত। স্বার্গণ মস্তিজ্ श्रुष्ठेवश्मीय मञ्जा वहेटक ममुद्रुक हहे-রাছে। মন্তিকজাত স্নার্রা শিরোমতলে **७ श्रेमध्यी**रम्या रख, श्रम **७** डेन्द्र প্রভাতিতে থাকে। নানাবির ভাব দেহ প্রাপ্ত হইলে তত্ততা স্নার্রা কম্পিত হইয়া তৎক্ষণাৎ মৃতিধকে কম্পিত করে। **भ**छिषकत विकम्मन एउएन ভिन्न ভिन्न ज्ञात्नत डेमग इट्या थः एक। मि अक्षे अर्थे भाज ज्ञात्मत (श्रृ । करतांष्ठि গহবরের অভ্যন্তরে মন্তিষ্ক অবস্থিত থাকে। ইহা সুন্দর শুভ্রবর্ণ ও ঘুতের नात्र षाठीव कामल भवार्थ। নিয়াংশে অসমতল ও উদ্ধে s मः, ठिळ **(पश**) বিভক্ত।

নেত্রে ক্লপবত!\ বিশ্বপতনাদের বস্ত্রসাঃ।
ভাষাত্তর\ মস্তলুক্স্ নয়তে তিন্ধি দর্শন্ম ।
পদার্থানা\ গভষতা\ গদ্ধানা\ সমাগ্রমাই।
নাসাদ্ধাঃ কুর্মতে ওয়ং তদ্মাণ্\ পরিকার্তিত্য ।
তবা রূপবতাভাণ গদমাক্রস্নান্তিতাঃ।



৪ চিত্র।

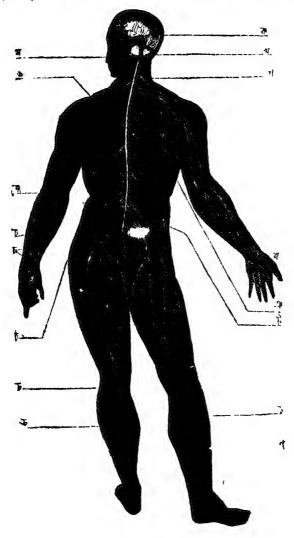
এই ৪ নং চিত্রক্ষেত্রে ১, ২, ৩, ৪, চিক্ ইত্যাদি হইতে ১৮, ১৯, ২০ চিক্ শ্রীস্ত মন্তিদ্কের নিম্নভাগের প্রতি-রূপ। তন্মধ্যে

- > क्ष्म मस्तिकः।
- ০ মন্তিষ্কের অগ্রথও।
- ৪ ভ্রাপন্মার ।
- १ पर्धन चार्।
- ५ मर्जनकाम् खरमन।
- २ व्याज्यानम् के स्रोत्र ।
- > पृष्टिम्कि।
- **३२ शक्तांक्डिमाश्चिक टारम्म** ।

जिया । जार मुक्त छ छ इमम को विशेष ॥
नी दिश्व कि अन्त का प्रमान । अह मम्मार ।
छ इस्ता कर्म कुर्म कि छानून । न्यान ।
छ इस्ता क्म कुर्म कि छानून । न्यान ।
छ इस्त मुक्त कि छान्न ।
छ इस्त मुक्त कि अन्त । क्ष्त ।
छ उस्त मुक्त कि अनि । क्षा ।
छ उस्त मुक्त कि ।
छ उस्त मुक्त कि ।
छ उस्त मुक्त कि ।
छ उस्त कि ।
छ उ

নেত্রে রপবান্ পদার্থের প্রতিবিদ্ধ পতিত হউলে নেত্রত আরু দক্ষণ মস্তি-ন্তকে ভাবান্তর প্রাপ্ত করে, ইহারই নাম দর্শন। তজ্ঞপ গন্ধবান্ পদার্থের গন্ধাণু নাদিকা সংস্কু হইলে তত্ত্বস্থ আরু দক্ষণ তাদুশ কর্ম ক্রে, তাহা হইলেই আগ করা হইল। রদবান্ দ্বোর ভাণু রদন। সংসুক্ত হটলে ত হৈত্য স্বায় গণ ত দৃশ कर्या करत्र, कारा घटेरल शामरवान घटेल । रेन्डा ७ उसाडा लाइ'ड खगगुरू भगार्थ সকল ত্বক স্পৃষ্ট হটলে সেই রূপ কর্ম বিকম্পিত হটলেই শক্তান জ্বো। করে, তাহা হইলেই স্পর্শক্তান জন্মিল।

এই রূপ দ্রব্য গণের পরস্পর অভিদাত হইলে বায়ুতে তরক বিশেষ উপছিত হয়। শেই তরক দারা কর্মধান্ত চর্ম্ম অভিহন্ত ও তত্ত্তা স্বাস্থাল মস্তিষ্ক অতএণ ইন্মিয়জনা জ্ঞান সমূহের প্রতি



স্নারুগণ হেতু। গমনাদি কার্যা বিষয়েও
স্থ বুগণ প্রধান কারণ বলিষা নির্দিপ্ত
হইগা থাকে। অথবা অধিক বলা বাজ্লা
মাত্র, জাবৈর জীবড় স্নায় হইতেই
সঞ্জাত। কোন অক্সের স্নায়্র নাশ
হইলে সেই ভান্ধ হতকর হয়। এই রপ
কারণ বিশেষেই পক্ষাভাতিদি পীড়া
জিমিয়া গাকে।

এই ? मः sित्त क-मञ्क्ष दृश्य मश्चिता।

- ধ কুদুমভিক।
- গ গ্রীবাল্প:মৃ।
- घ वधन ऋ। यू।
- s প্রগণসন্ধির। ।
- জ প্রগণস্বার্।
- ह প্रकिष्ठे द्वायु।
- ছ প্রকোষ্ঠ নিরস্বায়।
- ম করভল আ।।
- ঠ নিতম স্বায় ।
- ঞা পশুকাভান্তর হায়।
- फ कासून=612 क्वात्र ।
- ত জাম্বভিম্ব স্বায়।
- ণ প্রতপ স্থা
- हे कि जिल्लाम् ।
- ত উক্লায়।

# धकामरमार्थायः।

অথ গুহ:।,

লাই হৈ ভি এছং প্রোক্তং করে টি ক্রব্যে ব্রৈয় ।
করে 'টৌ হাডকে এই বিজ্ঞান ক্রপ্কৃতে ।
ক্রে বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রিক্র বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রি বিজ্ঞান ক্রিক্র বিজ্ঞান ক্রিক্র বিজ্ঞান ক্রিক্র বিজ্ঞান ক্রিক্র বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রে বিজ্ঞান ক্রিক্র বিজ্ঞান ক

#### खरा।

শরীর মধ্যে করোটি, বলঃ ও উদর
এই জিনটী গুহা অর্থাৎ গহরর বর্তমান
আছে। এই হেতু শরীরকে ত্রিগুহ
বলাযার। ইহার মধ্যে উর্জ গুহা
অর্থাৎ বলে উগুক, ফুপ্কুদ ও জ্ব-কোঠ এবং নিম গুহা অর্থাৎ উদরে
সকৎ, পিতাশর, আমাশর, ক্লোম ধমনী
কল ক্ষুদার, ফুলার প্লীহা, ব্রুদ্ধ,
মূত্র নাড়া, বস্তি ও গুদ (ফুলারের
নিমান্ত) বর্তমান থাকে। ইহাদের
প্রেত্তেরের গুল ও কর্মা ক্রমশঃ বর্ণিত

#### मशु खरा।

্ সুভার্দ্ধ গ্রহ। পুরুষদানা প্রধানা ময়।
সংকাঠা বর্ণাতে বহুলা নিশাময়ত ভছু ভং ।
উরোহক্ষি শহুকোপা হৈ পশুকা অভিভঃ হিছে।
পার্শ্বরোহ পশুকাং সভি পশ্চাহ পৃথকশেরকাং ॥
পশ্ধকাদ্যোগ্ধি পট্টলচ শিরসাস্যাভিষ্ঠতে।
আন্দেহর্মার্কার বক্ষ্মলপ্রেলী চ বক্ষ্যং ॥

#### ग्राज्य।

উদ্ধি গুহার বিবরণ লাযুগণের বিব-রণের দক্তি ব্যাখ্যাত হটয়াছে। একাণে
মধাগুহা অর্থাং বক্ষের বিবরণ বণিত
হইতেছে। এই গুহার দাযুগ ভাগে উরো-হন্তি, পশুকোপান্তি ও পশুকাগণ,
পার্শ্বহের পশুকাগণ, পশ্চাদ্ভাগে
পৃষ্ঠকলেককা দকল, উপরিভাগে প্রপম পশুকা ও উদ্ধি পট (বক্ষের উপরিশ্বিভ বন্ধবং পদার্থ বিশেষ) এবং নিয়ভাগে
বক্ষান্তল পেশী বর্ত্তমান পাকে। भएक श्रवाहा बडना। स्टरकारकेष क क्ल्क्नाः। महावोषार बद्यानाक बनीव श्रवकर्षनी ।

এই গুলায় জংকোষ্ঠ, উণ্ড,ক ও ফুপ্-ফুল বর্ত্তমান থাকে। ইহাদের গুণ ও কম্ম ক্রেম্শঃ লিখিত হইতেছে।

# अर्टकार्छः।

উরোমনাগভা কোঙো সবনীফল গর্জঃ।
রক্তাধার শত্তুর্গত আবরণাা সমানুতঃ।
তিহাঁ ক্ষো ধমনীভূমিঃ ফুপ্ফ্লছয় শীর্থকঃ।
ক্ষাতাা কুঞ্চন শীলোহসৌ ছৎকেণ্ঠ ইভি
কার্তিভঃ।

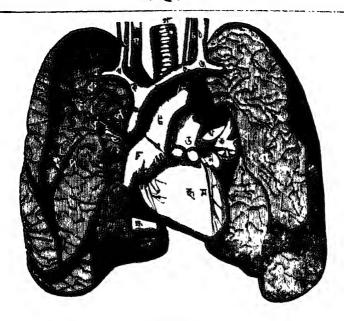
# ज्राकार्छ।

লংকাঠ বংলাগহনতের মধান্তানে ভির্মাণ ভাবে অবন্ধিক, ইহার আকৃতি লোনা ফলের নায়। ইহা একটা আবরনী দ্বারা আরুত থাকে। ইহার উপরি ফুপ্ ফুশ দ্বর (এক ফুপ্ফুশ বামাংশ ও দ্বিশাংশে ভেদা দ্বিধা) বিরাজমান। ল্থানাটাই বিভার রক্তের আধার এবং ইহা হইভেই ধমনী উথিত হইরাছে। ইহাতে চারিটা গর্ভ প্রকেট আছে, তুইটা উর্জে

ও তুট্টী নিয়ে। পূর্মে উল্লিখিত হই-রাছে, যে যাবজীয় শির। মিলিভ হটরা তুট্টী মহাশিরা রূপে পরিণত হইরাছে, ঐ শিরাদ্রর উদ্ধান্ত দক্ষিণ হৃদ্পর্ভে সমাগত र्षेत्रा भंबीद्वत गावछात्र मदमाय बद्धादक उशात्र व्यर्भण करता व्यशःष्ट रामगर्ड इटेरक मूल अमनी फेल्लक इटेब्राएए। मरमाष बक्त वह गर्ड हफुहरत्र क्रमायरत মাদিরা বিশুদ্ধ হইরা দেহে আলুত্তণ विकत्र कतिया जीवत्क खीविक दार्थ। লংকোঠ সভাবতঃ একবার স্ফীত ও একবার সংকৃতিত হইরা থাকে। জীবের ভূমিষ্ঠ হইবার পর আবদি মৃত্যু পর্যান্ত অবিরামে এই ক্রিয়া হইতে থাকে। ङः-পিও আকৃষ্ণিত হট্বা মাত্র ভত্রস্থ রক্ত गानिरवरण भगनीमुरम खरवर्ग ७ जला इटेटक धननी मम्द लटल मम्लाव एवट পরিভ্রমণ করিয়া থাকে। ক্ৎপিতের আকৃঞ্ন প্রদর্গ ক্ষণমাত্র নিরুত্ত হইলে তৎক্ষণাৎ মৃত্যু সংঘটিত হয়, ইহাতে (कान मत्मर नारे।

# कृ श्कृमः।

ফুপ্লুসম্ভ ছিবা ভিলে। ব'ৰ দক্ষিণ ভেৰত:।
পেল্যাং বজ্ঞজনছাবাং স্বাসহোহণুলীবিকঃ ছ
আবো বিল'লো বছভিঃ কোবৈরিক মধুক্রব:।
দুউলোগিত সংস্কৃতি কোবোংলং পরিকার্তিত: ছ
ভক্তগাহ্রিয়া নাড়া ভিজ্ঞায়ুকার প্রধাবিতা।
অবং লাঝান্ত্রমতা কুপ্কনন্ত্র বাগতা ছ
ভতঃ লাঝান্ত্রমত কুপ্কন্ত্র বাগতা ছ
ভতঃ লাঝান্ত্রমত কুপ্কন্ত্র বাগতা হ
কোবেরু কুপ্কৃত্রমের্ সুসুজ্জা: সমুপ্রিভাঃ ছ
নালাযুথ স্বাভ্রতঃ প্রনঃ ভালাক্ষ্ম্বা।
ভালাযুথ স্বাভ্রতঃ প্রনঃ ভালাক্ষ্ম্বা।
ভালাযুথ স্বাভ্রতঃ প্রনঃ ভালাম্ প্রবিশভালায়



৬ চিত্র।

এই ৬ শং চিত্রকেতে গ খঃসনাড়ী, ইহার ঘাণা ম্থনাদাক্ট বাহাবায়, কৃপ্কৃদে প্রবেশ করে।

- ग मूलजनगढ़ी।
- ভ আভ্যন্তর কণ্ঠ শিরা।
- জ, ছ. ঝ, থ টহারা বিশেষ বিশেষ শিরা। এঃ উর্দ্ধ সুল মহাশিরা।
- हे समनीयून।
- ठ उक्कि प्रक्षिण क्रथाताष्ठ ।
- फ पिक्निक कुल कुन धमनी।
- व शायिक खनानी।
- क दाम क्ल्क्न धमनी।
- ल निम्न प्रकिन ल्या कार्या है।
- ন জ্লগ্ডীর বুতি।
- य निम्न न मशानिता।
- १ ऐक्ट वाम स्थाना है।
- ल निज्ञ वाम क्श्मात्काहे।

क्ष्यम् ।

क मृश्युक्तात्र सिक्षं प्रश

म क्ल्क्लात महाच । छनिया निस्व ।

মহাবিরাভ্যাৎ হৃৎকোঙ্ সংপ্রাপ্ত দুউপোবি-ভদ।

নাজীচিবেৰো নিয়ত ওলান্যতি কুপ্কুসৰ্ ।
খাসাকুকৌইনিলক্ত সম্পান্ত্রাণ তলঃ।
নির্দ্ধোষ্ পোণিত সুধাৎ পুৰোভক সুলোক্তিম ॥

कप्र को क्रम्मा कृत्रः अविकेष सम्मोनितः। सिद्धक्रमा महाद्वाराहा स्मृत्यात्र स्मृतिकार अस्मर ह

# क्ष्यम ।

কুপ্কৃদ ড্টভাবে বিভক্ত বাম ফুপ্কুদ্ও দক্ষিণ কুপ্কৃদ। ইহা বক্ষতলম্ব
পেশীর উপর আদীন। ইহার উর্দ্ধাংশ
স্কাও নিয়াংশ বিস্তা। যে কপ
মধুক্রম অর্থি, মৌগাকে কোম থাকে,

সেই রূপ ইহাতেও অগণা কোষ বিদা-क्ष्यक्षर इष्ठ भाषिक मान चारह। त्नाभटनद्र काछ। জিহ্বামূলের নিয়-रहेट डेला किम्बी अक्षी नाड़ी क्रमणः নিমাভিমুখে গমন করিয়া অংশভাবে তুইটী শাখায় শরিণত হইয়া ছুই ফুপ্ফুস পর্যান্ত উপস্থিত ও পরিশেষে বছস্কা श्का भाषा প्रभाषात विकक्त बहेश कं श् क्मीत्र প্রত্যেক কোষে মিলিত তইগাছে। বাস:ক্রেয়া দ্বারা এই বাহাবার, নাসিকা ও मूथ पिशा भाग नाड़ीएड खरवन कविशा প্রচ্ছাক কোষে উপস্থিত হয়। পুরে উল্লিখিত হইয়াছে যে যাবভার শিরা মিলিভ হইয়া তুইটী মহাশিরায় পরিণত হুইয়া দক্ষিণ জ্বলতে মিলিক হুইয়াছে, ঐ শিরাম্বর দার। তা নীত রক্ত নাড়াবিশেষ দারা জদ্বত হটতে ফ্লুটো আনীত **बहे दक भागाद है दाय माह** 🗲 বিশুদ্ধ, সুখোফা ও লোহিত বর্ণ হটরা कर्रकारके क्षरवर्ग ७ छणा इहेटछ भमनो मार्ट्स खिलियल खर्म समुनाय एमर পরিভ্রমণ করিয়া থাকে।

খাসাকুটোছনিলে ছপ্রায় সম্পান্ত্রধান স্থান্। অস্ত্রধান্ত সমালায় অপ্কুলাল্ল নিঃসরেছ। অসৌ খাসক্রিয়া সা চ কালেন যাবতা হতি। বারান্ প্রবর্ততে নাডাঃ স্কুছানে পুরা ময়।। ব্রিডাং গুরুতেলালী (বেডুং বাচাং প্রবর্তনে ।

খাদাকট বারু ফুপ্কুনে উপছিত

হইর। তত্রভা রক্তকে আত্ম শুভগুণ
বিভরণ ও তাহার অশুভ গুণ গ্রহণ
করির। ফুপ্ফুন হইতে নির্গত হইর। যার।
ইহার নাম খাদক্রিরা। এই খাদক্রিরা
মৃত সমরে যত বার হইর। থাকে এবং

নাড়ীর স্পক্ষন সংখ্যা ইত্যাদি বিষয় সমস্ত স্ক্রন্থানে বর্ণিত হইয়াছে। এক্ষর্ণে ৰাক্য প্রবৃত্তির হেতু কবিত হইতেছে।

উদ্ধাৎপঃ খাসনাড্যা হি বাগ্যক্রবিভি কীর্তিভঃ। खब्रवास्य यहा बच्छा विशेषाञ्च कनावरेवः ह निर्मातः करेत्वरण खर भूत्रश्राविवर्षत्त । ত্ৰোণান্তি বিশেষদ্য তে পক্ষে পক্ষিপঞ্চাং ৷ गर्छ' ब्रामध्य सम्बद्धा विक्या व श्रीमार्थ । अक्षार्छ क्कूरेयरेन्य कोवानाक विस्थवतः 🛭 चमानू भे वे वाग्यकान् भिक्का चित्रसंख। व्यव अर्गकाल या मानवस् । श्राप्ताभाष्ट्र । सनग्न वाकायकना (क्ष्मा नमवाधिनाम्। कक्टिक्रानवस्त्राः सहान् सनग्रस् वर्म् ॥ निष्मानिन चक्षामा बरेतवृष्ट् खिखकार। বিহুত্ব গাওলুনি ভিঃ কোন যুহাতি অন্তৰুঃ अवोक्टब्रां क क्षप्र श्वामाना मुख्या अहर । ক্রাপন ধ্রনিভিঃ কদ) ন গলভাঞ্চ নেত্রতঃ। मुरेचेद्रमुङ निश्म।रेम्पर (कः मरेमर का मिनी बरेद्रश । म्बामुबनद्बरपृष् को न पूष् छि मर्सन। ह किट्य केडाल्पसारेपात्रामानगं किहरेटः स्तरः। करके कियः को प्रविद्यस्यानं श्रव्यानस्य ॥ न नहीं विटर्डवा । उद्यक्ताकृति । जुन श्रिक्तः। निर्माल (निर्मुनी (लक्ष्णान राष्ट्रम् यस। सब्दः ॥

উলিখিত খাদনাড়ীর উদ্ধাংশকে বাগ্যস্ত্র কহে। বাগ্যস্ত্র তরুণাছি, ধমনী, রজ্জু, পেশী, স্নাসু ও কলা সমূহ হারা নিশ্মিত। ইহা কওঁদেশের অগ্রাদকে থাকে। বাগ্যস্ত্রায় একথানি উপাস্থির, পালার প্রক্রের নাার ভূইটী পক্ষ আছে. ঐ পাল্যর পরস্পার মিলিত হইয়া কঠোংগের (টুটি) উৎপাদন করে, ইহা চকুর্নার (বিশেষতঃ ক্রীশ্র দারীরে) লাক্ষিত হব। এই বাগ্যন্তের উপরিভাগে উপাক্তরা অবহিত্ত আছে, ইহা আহারকালে খালরছা আছোদিত করিয়া রাখু, তক্ষনা ভোজ্য পানীরাদি খাল-

ब्राप्त खिरिष्ठ हरेत्रा भावाञ्चन स्टेट्ड शांद्र ना ( रेमवा९ के ब्रह्म स्कान खवा शिक्ष रहेल खडाड कामि डेलव्य बहेता ভাহাতে निःमाबिक क्रिया दम्म, देश-(कहे विषय नागा कटर )। এই वाकाषद्वत ममवात्री अर्थाद डेलामान कावन ममस्ख्य व्यवचा विष्यं मश्यदेन कविशा विविध चटतत डेरलामन कता शहेरक शादता শিংহ, ব্যান্ত ও গতার প্রভৃতির ভীমরবে कद्यान मृष्ट्रिक रहेश। थाटक। विरुक्तम গণের সন্থীত ধ্বনিজে কে না মোহিত र्त्र १ कानक गर्वत प्रवेश प्रव क्रम्बर्क क्रमन भानि खर्ग खबीज्ज करम । क्रिट्रिक काश्रात ना निज रहेए क्रम विश-लिक दत्त ? कामिनी भटनत्र सूरम, व्यम्क निःमानी, मृतकामन अत्रख्यवत्व बन्नादः क ना मुक्क ७ आइडे क्षत्र द्व १

কণ্ঠনাড়ীর ন্যার জিহবা, ওঠ, তালু ও

মন্ত প্রভৃতিও বাগ্যরের অক বলিরা
নীর্তিত হইরা থাকে। কর্তোন্তির স্বর

ইহাদের পরম্পর অভিযাত দ্বারা ক, প,
চ, ত ইত্যাদি বর্ণ স্বরূপ হইরা প্রকাশ
পার।

মমুষ্য দিগের বাগ্যন্তের যে রূপ সুশংস্থান ও যে রূপ ভাবে নিশ্মাণ, ইকর প্রাণী-দিগের দে রূপ নহে এই জনা উহারা মুষ্য জাতির নাার কবা কহিতে পারে না।

# हेल्कः ।

कृश्कृतमावित्रत्यो (व वित्ववस्था प्रशीः । वेक्कारेनीयर वया नवारिक वदकाः न वि ॥

# डेज्क ।

ছুইটী আৰমণী বানা ফুপ্ছুস্ম্ন আর্ড থাকে, ইহাদের মধ্যােলে বাল্য-কালে উত্ক বিদামান থাকে। ব্রো-র্দ্ধি হইলে শৈশবাবদার সহিত ইহাও বিলুপ হইন। যান। উত্ক একটী প্রাপ্তৰং পদার্থ।

#### व्यटमा श्रा

বহানাৎ ভিস্বাৎ জেয়া ধহাৰাত্বা বহুক্তা। কিবছজ্জাওবদ্বুতা আনৎ পাকাৰি কৰ্মবাধ এ উৰ্ন্নং বজ্ঞজন্মসাঃ পেলী ৰঞ্জিবং ক্তিটা কৰ্মবিদ্যালয় পেলী ব্যৱহাৰ ক্তিটা কৰ্মবিদ্যালয় কৰ্মবিদ্যালয় কৰ্মবিদ্যালয় এই ক্ষা ।

#### जादशंखरा।

গুং ব্রেরের মধ্যে অধোপ্ত হ। অর্থাৎ উদরগহ্বর বৃহত্তম। ইহাতে অনেক শারীর ঘর আছে। ইহা অগুবৎ পোলা-কার। ইহাই আর পরিপাকাদি ক্রিয়ার ছান। এই গুং ার উর্দ্ধে বক্ষত্তলম্ভ পেশী অধ্যোদিগে শতিবেদশ, পার্ম্ব হরে ও সন্মুখে উদরীর পেশী এবং পশ্চাদ্দিকে উদরীর পেশা ও কলেকুকাগণ অবস্থিত। উব্দিক্ষাবি বক্ষাবি স্ক্রাব্যুক্ত বেক্টনী। স্ক্রাব্যুক্ত খোপায়েক্তি ব্যক্তরে ব্রুক্ত।

উদরবেস্টনী শুদরীর যন্ত্রগণকে শর্মন-তেভাভাবে আরুড করিয়া রক্ষা করে।

# वानत्नार्थात्रः ।

অম্বিপাক ক্রিয়া। ইয় বিংশভিদমান ফলা পেনীবিনিছিছ। মনশাককিয়াবা চ পাক্ষাড়ী প্রকীবিতা চ छक्षीराणी यूर्वमायांत्र) व्यावाहर राणी छवनायकः ।
क्रिक्षायांच्यः यावव्य माक्षीण क्रवाटकः ।
छक्षणायांच्यः क्रवादः क्रूबादः खूनम्द्रकः ।
धवनी हाश्चानिकार दूरिश्वारिष्णः श्रक्षेत्रकः ।
छक्षः পक्षायदः श्राकः भक्षाय भविषाद्रभारः ।
छक्षः भक्षायदः श्राकः भक्षाय भविषाद्रभारः ।
क्रवाद्यागोभार्याणांच्यः मत्रत्म। छप् मर्ष्कः ।
व्याविष्ठेर मन् मर्कः विकित्ताव्यक्षणांच्यः ।
व्याविष्ठेर मन् मर्कः भक्षायः माक्ष्मवादिनो ।
व्यवहर क्रिक्षेत्रका भक्षायः स्वावादिनो ।
व्यवहर क्रिक्षेत्रका भक्षायः स्वावाद्यक्षायः ।
क्रिक्षार क्रिक्षं माक्षे (हाव्यक्षः व्यवाप्तः ।
क्रिक्षायः व्यवहर्षको श्राविष्ठः यद्याध्याम् ॥

### প আমপরিপাক ক্রিয়া।

জন্ম পরিপাকার্থ বিংশতি হস্ত পরি-মিত, কলা ও পেশাদারা নিমিতি একটি भाकनाषी मानवरमटर वर्डमान **व्याट** हेरांत उद्गारणटक म्य ७ निमारणटक श्वम वरल । देशात जिम्न जिम्न जारण, कान ও ক্রিয়া শাধকতা ভেবে ভিন্ন ভিন্ন নামে অভিহিত হইয়। থাকে। সর্কো-कारण म्य, जर्मद्र कर्श्टर्कु आमाण्ड প্রগান্ত অল্লনাড়ী, তৎপরে আমাশর, কংশরে কুদার ও পশ্চাৎ ফুলার। আমাশর হইজে আরম্ভ করিয়া কুদ্রান্তের আদাভাগকে গ্ৰহণী व्यश्वाधिकान वा माड़ी रत्न । छ० शदा शकानंत्र, खायानंत ও গ্রহণী হইতে আর পরিপাক হইয়া এইস্থানে উপস্থিত হয়। স্পারের অধঃ शिक महल काः नंदक श्रेष वटन. ट्रा श्राक्षांत्र (भव रहेबाह्य । हेरीत वाता मल भम्छ दिनिः मृक इहेबा यात्र ।

অয়নাড়ী খাসনাড়ীর পশ্চার্থিকে অবস্থিত, চর্বিভ অয় গ্রাসাদি এই স্থানে উপস্থিত হইবা নাত্র এই নাড়ীর খাবীন পেশী হারা তৎক্ষণাৎ আমাশরে প্রেরিজ
হর। পাকনাড়ীর উদরস্থ অংশ অভিশর
কুণ্ডলাক্তি। এই মুধ্দর বিশিষ্ট পাক্ষনাড়া কণ্ঠদেশ হইতে অধোদিকে আদিরা
কক্ষেত্রস্থ পেশী ভেদ পূর্কাক উদরে প্রবেশ
করিয়াছে।

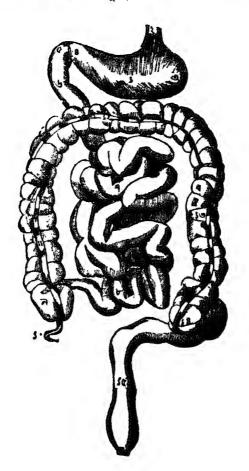
অন্ন মুধাপিতি দৰৈণ্চৰ্তিত সৃথিকা মুভদ্। পিকীভূতৎচাল্লনাড়ীৎ প্রাপিকং প্রভি ক্ষবাৎ ! व्यायानिय यकुम् यक्छन (भागा) व्रथः विष्ठः । ख्य क्षकृष्ठिष्ठ'३७।द्वा (काश्यारका निःमदब्रह्मनः 🛭 इरम्मानम ७९ क्रिष् पूर्वि शकुर् र्वार । कृषाक्षात पू वृद्धिन विरामेश मञ्जन शक्रवर ॥ व्यायाणप्रान् व विश्वा कृष्टाञ्च कृष्टाकृष्टि । च्योगाय श्रवाया कारमा अद्योखि (मस्याद B व्यममान् कोर्यमम् ७२ श्रादिना अह्वी र कनाम्। व्यक्तित्वव द्रामाञ्ज मिविष्ठः भद्रिभहाटक । ভবৈৰ যকুতে। নাড্যা পিতকোষাৎ ভব্সমাৎ। भीक अकः भित्रवरमा अवनी यूभ कि **७** । व्यवभारक ब्रामाश्त्रीय श्रवाम श्रव्या मस्यू । शिक्रदाशियादिकाम् "यक्ति भहिके। किन्तु न (क्राज्य कांज्येक बद्यभाक श्रीद्यांसम् यकः त्याविष्ठम् अकि विष्यां विव्यान खेब्दा एक्टिन भार्य छवारस भवा कांत्र्डम् । खेर्द्ध राष्ट्र वास्त्र कामा (भन) वर्ष का व बकुष्ट कोइवे। (क्रांत्र विष्क्रपुर शाक कर्माव : श्रीबक्कामात्रा मंद्रा मद्रात्स द्रोधितत्र उर । व्यायानियाभ्या नृद्वाका वर्क्षक्रमान् दिनिः मुकः। इत्मा नाको विर्वादयन कुलाक वृश्विके हैं। श्लीषानाभाग नहरम (ष्ड्यू मिक्सी द्विष्टा। वावरकाश्या द्वरंगा म वर्त्तत्व असं कातुनः । बक्रवारकाश्चलक्रिक रहाकिक मनावस् । छ:क रक्षककामा (भन्,(धा सम्बद्धकः व (खांकां भा अव्यक्ति भक्त (चंकांकर व्यववाय । विश्वांवार्यव निवित्र श्रित्रवृत्ति क्वांवप्रम् ॥ खायाणेषु क्लाठाडि ध्यमी खरूरभार्श्विणाः। गृब्द्ध क्षाप्रमेश त्मेया जक्रकाच्छित्रमञ्जू ह चाकुके प्रस्पत्र ७६ क्विटलयक शक्यर ।

দুলাত্র৲ প্রবিশেৎ পশ্চাৎ পুরীষৎ উল্লিখন্যতে। ভতঃ প্রাপ্য গুল্থ কালে সর্ক্ষরা সার্থজ্ঞিন্ত । ভদ্ বহিন্দিঃ সরেদেরাভিন্তাৎ কল্যাণ ক্তেবে ।

মুধার্পিত আন দক্তবারা চর্বিত, লালা-সংযক্ত ও পিওবৎ হইর। অল নাড়ীতে नीक इटेटन डेटा उर्क्यार आमार्था প্রেরিত হয়। আমাশয় যন্ত্র উদর গহবরে যুক্ত ও বক্ষন্তলম্ব পেশীর নিয়ে অবস্থিত। এই গল্পে ভুক্তদ্রব্য উপস্থিত হইলেই উহা হইতে এক প্রকার অভিতীত্র অন্নরদ নিঃস ত হইয়া ঐ ভুক্ত পদার্থের সহিত भिखिल इन्ता डेश्टल खीर्न कविटल थाटक। कामानव नठ व्यव के गटबद খাভাবিক শক্তি হারা ক্রেমাগত ঘুর্বিভ হর। আমাদরিক অমুরস ঘূৰ্ণৰ স্বারা ভক্তরেয় मक्रम मात्र धारहा लाश दत्र. खर्थाए डेशब किश्रमर्भ ख्रुप ७ किश्रमः भ खारकात्र " शांदक। फुक व व्यवस्थात क्षाद्य श्राटवर्ग करत । व्यामा-भटत्र व प्रक्रिश्य कुण्लाकृष्ठि नाम क जाता। हेटा आभाषात्रत विकित र्टेटल आवस्र कवित्रा कित्रकृत किमीन ভাবে বামে ও নিয়মুখে আসিয়া অভি-শর কুওলীভূত হইয়াছে। ইহার পরি-बि ि नानाभिक >ा। र ए इटेरव, देशक প্রথমভাগ অর্থাৎ তির্ঘাকভাবে অংশাগামী অংশ গ্ৰহণী বা অগ্নানিষ্ঠান কলা বলিয়া की खिंछ इत्र। छ १ भद्रत व व १ भद्र भका-भन्न कटर। जुङ ख्वा व्यमभाक् ख्वाव-चात्र श्रद्धीटक डेशिक्क वहेटन वात-নিঃস্ত এক প্রক্র রস উহার সহিত मिखिक एम । এই द्वारनरे गढ़र रहेरक নাডীবিলেব দ্বারা ভদদ্বস্থিত পিত্তভোষ

रहेट शिखतम जानिता जुकारबात महिष मिनिष्ठ इर । भिख्यम भीकवर्ग । किना-शाम । देश यात्र शतिशाक विषया अकृति ध्रशम दिए। এই পিखामरे कवि वित्रा डेक इडेम्रा शांटक। यक् रम रक्ष ष्मञ्च शतिशाक विषदम्हे भादाशु कदत, এরপ মহে, ইহা খোণিত খোগমের अक ख्राम गता। **अहे** गता डेमदबब प्रश्चित পাৰ্ছে বক্ষন্তল পেশীর নিয়ে ও দক্ষিণ বুক্কের উপরে শশুকারত হইয়া আব-ছিতি করে। ক্লোম নামক আর একটী यन्त रहेटल माड़ीविटमय धाता लंगीह तम কুদ্রান্তে উপস্থিত হট্যা অল্প পরিপাক क श निकार करता अहे गम भीशाकृष्ठि, भीटा ७ मुन्मा जन मत्मा व्यवस्थित, देशा मञ्जूदब अमानत वर्खभान। উল্লিখিত মঙ্গ मक्टलत न्यात श्रीराश कात्र श्रिशाटकत **टिकु रिमिया कणिए एहा। देशा व्यक्न**य-বৰ্ণিত সম্মুখ দিকে বছরকা স্থাকীৰ। हेश डेम्ब्र शस्तद्वत वामिएक, वश्राखन পেশীর নিয়ে ও বামবুরুকের উপর পর্ত-कार्यक द्रेश व्यविश्विकरता দ্রবা পান করিলে আমাশরিক কলাছিত भगनीन कर्जक डेशात लात ममुनात जान कर्यानः काकृष्ठे रहेत्रा बस्कृत अविक मिलिक कता व्यवनिष्ठीश्म व्यक्षक भमनीगन कर्जक चाक्र हे वहेश थाटक।

ভূক অন্ন এই রূপে পরিণক ছইর। বেতবর দেবরজনে।পদোনী বারাংশ স্থোতোনাড়ী সমূহ দারা আকৃষ্ট ছইরা বিরাপ্থে ক্রেমণ: শুংকোটে উপভিত হইরা রঞ্চ রূপে পরিণ্ড ছইরা দেখের রক্ষা ও পোষণ করে। অন্নদ্ররে সার-বিহীন পক্তরে অংশ স্থলান্ত্রে প্রবেশ করে। পরে উহা স্থাসময়ে গুদ অর্থাৎ ঋজু নিমাত্র দিয়া পুরীষরপে নির্গত হইয়া থাকে।



१ हिंख ।

এই ৭ শং চিত্তে ২ চিহ্—প্ৰদালীর শেষাংশ, জন্ন নাড়ী মুধ হইছে আরম্ভ করিয়া এই স্থানে আমাশরে মিলিত ছইয়াছে। ১।২।০।৪ এই চিদ্দ গর্জ, অনুপ্রস্থ ভাবে ন পাঁচ এই আকৃতি বিশিষ্ট ষল্প আমা-শব (পাকস্থলী)। অল্ল, মুধহইডে প্রদানী দিয়া এই স্থাবে প্রভিত হয়। ৫।৬ চিহ্নাইড, অধোমুধ গামিনী নাড়ী গ্রহণী, এই স্থানে সুন্দ্র নাড়ী বিশেষ পথে ফুকুং হউডে পিন্ত রল আদির। আমাশ্রাগত অরের সহিত মিলিড হর।

বাভাগাচ চিহ্নাঞ্চিত রহৎ নাড়ী ক্ষুদ্ধান্ত,
তন্মধে বাভ চিহ্নিত আংশের নাম
গ্রহণী। গ্রহণীব পরবর্তী কিরদংশ
প্রকাশর। এই ছানে হইকে ক্ষুদ্রার
আহিশর কুণ্ডলাকৃতি হইরা অবস্থিত
আছে। ভুক দ্রবা আমাশর হইজে
সম্দার ক্ষুদ্রার পরিষ্টেন পরিরা এবং
বিবিদ্ন পাচক রদের সহিত মিশ্রিত ও
ক্ষুদ্রীর্ণ হইরা বাকে। ক্ষুদ্রান্তের নিয়বর্তী কোন কোন অংশ কারণ বিশেষে
কোষাদিতে প্রবেশ করে। ইহারই
নাম অন্তর্জি পীড়া।

না১০।১৮/১০।১৪ চিক্তিক নাড়ী স্থলান্ত,
ইহার মধ্যে না১১ চিক্তের দিকের
অর্গাৎ দক্ষিণ পার্দ্ধের অংশকে উর্দ্ধন গামী স্থলার ও ১০।১৪ চিক্তের দিকের
অর্থাৎ বাম পার্শ্বের অংশকে অপোগামী স্থলান্ত করে। এই উভবের
মধ্যে ক্ষুদ্রান্তের উর্দ্ধি অমুপ্রান্থ কংশকে অমুপ্রান্থ জুলান্র করে। প্রাহিকাদি পীড়ার স্থলান্তে, বিলেম্বরু
অধ্যোগামী স্থলন্ত্রে ক্ষর, বেদনা ও
উহা হইতে রক্ষাদি নিংক্রত হইর।
পাকে।

১৫—চিহ্নিত নিয়;ভিম্প 'অন্ত্রাংগকে গুদ
বা গুজুনিয়ায় বলে। ইহার দর্দনিয়াংশ গুহা দ্বার রূপে পরিণত হইরাছে,
প্রবাহিকাদি রোগে এই স্থানেও
ক্ষতাদি হইরা থাকে। ও ইহারই
পাত্তে অংশিংছ্র ক্ষরিয়া থাকে।

এই নিয়াভিমুধ জন্ চ ও ভাৰার উদ্ধিদ্ দ্লান্ত্রাংশ মলাশর শক্ষের বাচ্য। ভাবো-গামী অংশ ( গুল ) পুরীধ নির্গমক।

व्यक्ति कृषे विद्यो शिक्ष्यं हिया (कार्रे प्रमुखनः। विकित विविधमा लक्ष्यमा महानि क्षीवरम् ॥ व्यवशादमा ब्रोवः भिरको जानाज्ञित्वाव्यमाव्यमा चामहरू ९ मरमाहरू काविकार। मुचे९ विर्वित ह मिक्रवंद्वा, अधिका ना नर्माना यानमाविकाम्। किसा अग्राडि भक्ताक भाक्ताकी खाडाविकः । कि क्षेत्र पूर्व प्रवा विका अमृति बक्रवः। व्याकात्रक श्रांतके (हवक् कारेम निमः महत्र ॥ चिडीयम् करन्ना कर्मम श्रद्ध र्यमार । चार्डा रेनवा कि उत्रवेश (खारा भाग सकर्मान है अन्न रेत आविन १ थाना है कि का कि विद्यान :। उन्धर विधिमा (मरा) महावर व्यावनक्रमम् ॥ व्यव १ इत्मा ५ व्यव्यक्त मारममध्यनि मा स्य । (मरव'क्ष्मप्रमामा अर मामा अर सामारमा क ह व्यव रामपारे विकार कार्या व्यव विकार हराहरस्य निर्धानाः अवान्तांच मसुद्धानाः ॥ व्यथनाम विधियम्ह खरकाटल टहाहिका क्रिया। कुछ। क्ष्वितृष्टि तथमाः मज्ञभारम भूता वर्षा ॥

কি অন্ত কৌশলেট অন্ন পরিপক इट्रेश जीवगरनत कीवन तथा कत्रिर करह, टेटाटक खनमी बदबब कि आम्हर्मा महिमाहे প্রকাশিত হটকেছে: जाम शाम দারা পিষ্ট, লালারিল্ল ও পিণ্ডাভুত হটরা খাদ রক্ষ ও নাদিকার পশ্চাজিন্দু অভি-लग कदिया जाब नाशीएक छेलाविक इत. जार हे हारमत गर्भा खर्यम करत न।। अडे कार्या अहि शुरकोन्टल मन्नापिक इत्र। क्रम्'पत्र गनामःकत्रग मगदत्र প्रयदम्खाः हिम डेशिक्सा अर्थार जानकित हाहा अतुष्ठ इत्र, किस्ता किकिश श्राहाटक यात्र धनः यह नाडी किथिए छट्ड ७ सद्धा माहेत्म. ইহাতে নাদিকার পশ্চাৎস্থ ছিড় ও ক্লছ হয় ৷ অভএৰ নিৰ্ব্বিন্নে প্ৰাধঃকরণ কাৰ্যা

শম্পদ হয়। জন্নাদির কণা মাত্র যদি দৈবাৎ প্রথম ছিল্লে পতিত হর, তাহা হইলে আপনা হইছেই তৎক্ষণাৎ কাসি উপস্থিত হইরা উহাকে নিঃলান্নিত করিয়া দের, ইহাকে চলিতে কথার বিষম পাগা বলে। উহা নিগতি না হইলে খাস ক্লম্ক হইয়া প্রাণ নাশের সন্তাবনা।

আর দি শীর ছিদ্রে প্রবিষ্ট হইলে হাঁচি উপস্থিত হইরা উহাকে নিঃদারিত করে। অঙ্গএব পান ও ভাহার কার্যা আতিশর ত্রিত ভাবে নির্মাহিত করা ক্যাচ উচিত নর।

অন্নই প্রাণিগণের প্রাণ, ইহা বেদে উক্ত হইরাছে, অতএব সেই অন্ন বিধি পূর্বাক সেগনীর। দোষ বর্জ্জিত ও বল-বন্ধ ক আন্ন ভোজন করা উচিত। অন্ন হইতেই রস, অন্ন হইতেই রক্ত, আন হই-তেই মাংস, আন হইতেই রক্ত, আন হই-তেই মাংস, আন হইতেই মজা এবং অন্ন হইতেই ক্তক্তে উৎপন্ন হয়। আনুই বল, আনুই ওক্তঃ এবং আনুই মনঃ বলিয়া উক্ত হইরা থাকে। চরাচরন্দ্র যবতীর প্রজা অন্ন হইতেই সমুস্ত ত ইরাছে।

আন্ন পান বিষয়ক বিধি ও তৎকালিক কর্ত্তব্য ক্রিন্ন। ইত্যাদি সমূদার বিষয় স্ত্র-স্থানে বর্ণিত হইয়াছে।

২৭ পৃ,১১পংক্তিতে যে যন্ত্র ক্লোম বলির। উল্লিখিত হইল, অনেক প্রন্থে ভাহা তিল নামে উক্ত হইরা থাকে। ঐ যন্ত্রে ভিলবৎ বিস্তর বিন্দু বিন্দু চিহ্ন আছে, অভএব তিল নামেই উহার আধ্যা হওরা সুসম্বত হয়। আর অভি প্রাচীন গ্রন্থে কোন্ বস্ত্র ক্রোম বলিয়া উক্ত ইইরাছে,
ভাহও হঠং বলা যার না। হয়ত
বক্ষংছ কোন বস্ত্রাংশ ভন্তন্ গ্রন্থ
কার দিগের ক্রোম শব্দের বাচ্য। যে
নকল প্রস্থের কথা এপর্যান্ত উল্লিখিক ইইল
ভৎ সম্পারে যে যসকে ক্রোমবলা ইইরাছে,
ইংরাজীতে ভাহাকে প্যান্ত্রিরস্বলে ।
কিন্তু ভিল শক্ষই ঐ যন্ত্রের প্রকৃত বাচক
বলিয়া বোধ হয়। এই ফ্লে আমরা
শাস্থির সংহিতার করেকটা প্রোক নিমে
উক্ষ ভ করিয়া ভাহার অনুবাদ করিভেছি। মধা

शृक्तरवरकारिकाकारना म'त्रीवावनप्राख्यतः।
वरा वर्षानप्रः व्याक्तः खत्नो खनानरत्रो वरको इ
रक्षत्रानप्रः नामृत्रान कमानानप्रस्थः।
केत्रवर्षानरत्रा मारकर्यायकारम रावन्त्रकः इ
करमानप्रः किन् रक्षप्रः क्षत्रः नरमानप्रः।
ममानप्रस्वस्थाम् वस्त्रवृद्धानप्रस्वः इ
स्राव्यक्षाम् वस्त्रवृद्धानप्रस्वः इ
स्राव्यक्षाम् वस्त्रवृद्धानप्रस्वः इ
स्राव्यक्षान् केरत्। रक्षप्रः मक्षानप्रस्वः।

বক্ষাফ্লে খ্লেমাশর অর্থাৎ ফুপ নুদ্দ, ইহাতেই শ্লেমা দক্ষিত হইরা কাদির দারা নির্গত হর। ইহার নিম্নে আমাশ্য নাভির উপরে অধ্যাশর, উদরের বাম দিকে অবস্থিত, ইহার উপরি ভাগে তিল্যন্ত। তর্মিম প্রনাশয়। তাহার নিমে মলাশয়। তাহার নিমে মলাশয়। তাহার নিমে বন্তি বা ম্ত্রাশয়। উরঃ অর্থাৎ হুৎকে। ই জাব-রক্তাশয়। কেহমধ্যে এই দাত্টী আশয়, ক্রীদিগের অতি্তিক আর তিন্টী আশয়, জ্রাদিগের অতি্তিক আর তিন্টী আশয় আছে, যধা ধরা অর্থাৎ ক্ররারু বা গভাশয় এবং ক্রনম্ম বা ক্র্যাশয়।

এই স্থান নির্দ্ধেশ সংস্কৃত তিলশস্থ ও ইংরাজী প্যান ক্রিয়ান্শস্থ এক প্রার্থের বাচকু বিলিয়া প্রমাণ হইতেছে।



७ हिं ।

এই ৮ দং চিত্রে, ষ,ম যকুৎ। পা আমাশয়ের (পাকস্থলীর ) মধে:২ংশ। পি পিতাশয়।

- ত আমাশরের অবংস্থ ছিন্ত।
- च शहरीत जारमित्मम ।
- क डेमत्र अविष्ठे ध्यनीयका
- ৰা কোম বা ভিল সম।
- व क्याम मुक्ता।
- ভ ক্লেমদেহ।
- न द्वामनुष्ठ।
- म श्रीरा।
- व बामाभरतत देश हिछ।
- গ্গ डेन्द्र रदमारा वश्वक (रकाष्ठल ए)-

लिमीव कुई उन्छ।

ह यून शिख्यानी।

नी नीर बाछ।

# कदत्रानर्भार्थायः।

### मुख्यक्तानि।

বুকো বৌ যুত্রনাজ্যে বৈ তথা বক্তিক যুত্রবে।
জ্যোনীযাথ যত্রাধি বজ্রমে পান্ধক তথা ল
পিছাবীজ নিজে বুকে: বকুৎ দীছে বুরু বিজ্ঞান দিছে।
পাচামুদর বেইন্সাঃ কটিদেশগডো ঘডো ল
আর স্রোজাংলি ভূয়াংলি ধননাজাদপঃ নদা।
গূমুদ্ধি বোষ স্মিলা কেনাজাং ধারতাং রজেং ল
বুক কুপ্কুল চন্দীপ ধননীপো নিভালপঃ।
সদোষ্যাঃ সন্সাগদিংল পোষন্তানিলাং হি ভং ল
বুকালনিঃস্তে নাজে) বক্তিপ্ঠমদে। মতে।
বুক সঞ্জি বুকালি বক্তিশানন্তঃ শব্দিঃ ল

# मृत्यम् ।

তুই সুকক, তুই মৃত্রনাড়ী, বস্তি ও উপছ (মেতু ও গোনি) রক্ষু এই গুলি মৃত্রগন্ধ নামে থাতে। পুরুক সংগ্রে আকার লিমবীজ্বের ন্যার, ইহারা উভর কটিলেশে গকুৎ ও লীহার নিম্নে উপরবেউনীর পদ্যাতে অবছিত। গুরুছ স্লোত্যোনাড়ী সমূহ ধমনীছ রক্ত হইতে সংদাধ জলীরাংশ আক্ষর করিয়া শইরা রক্তকে

নির্দোষ করে। ঐ সদোষ জলারাংশ
মূত্রনামে অভিহিত হইরা থাকে। বুক,
ফুপ্ফুস্ও চর্পাইহারারক্তের অসারাংশ গ্রহণ
করিরা সর্কাদা ভাহাকে বিশুদ্ধ করিছেছে।
বুক্ষর হইতে চুইটা নাটা নিঃস্ত হইরা
বস্তির পশ্চাদ্দিকে নিয়াংশে মিলিত
হইরাছে। ইহারা বুক্ষয় মৃত্রকোষ হইতে
দানৈ, শানাং বস্তিতে মৃত্র আন্রন্ম করে।

#### विश्वः ।

কলাপেণা)াজ্যকা বন্ধি গ্রান্য পুরতঃ হিতা।
পশ্চাদৌপাক্কাক্যোপ মুকাশয় ইতি ফাতা র
বন্ধের্গ্ধ মুখা রক্জা নাজৌ সংবদ্ধ দেকরা।
অপরাভিনিবভা চ বন্ধি আন্দেহবভিঠতে র
আারু যোনিধরা চালি গুল্মা পুরতঃ হিতা।
ওয়োভ পুরতো বন্ধি বিলেখেছেরমুলীরভঃ র
বন্ধে সংকুচিতা নিমা মুখা রক্জেব সংমুত্য ।
উপদ্ধিকেন মুক্রা বন্ধিনিহলরণায় রি র
আলারে সঞ্জিতা মুক্রমভিনাক যাল ভবেহ।
ওব্লোপাক্ষিক রক্জেব রংহ্যা নিঃসরেন্ বন্ধিঃ র
বিস্তি।

ৰন্তি ভাগাৎ মৃত্যাশার ८भर्भो ও কল। স্বারা নিম্মিত। हेश अज मञ्जूदश ও ঔপস্থিকান্থির निय एमन পশ্চাতে অবস্থিত। ইহা মাংসময়ী একটা রক্ষারা নাভিতে সংবন্ধ এবং আর काजना बक्दावा वक इट्डा अञ्चादन অবিভিত থংকে। जीटमटर अज निमा-मृत्ज्यत मण्द्र यानि ७ जतात् विमामान ध्वर हेशायत मन्त्रूत्व विश्व वर्डमान থাকে। বভির নিমুখ্ব সংকৃতিত এবং डेश छेनचिक ब्रह्म व महिल मध्युक थारक মুত্রাশরে অভিরিক্ত পরিমাণে মৃত্র সঞ্চিত रहेल छेलच्छि ब्रक्त विवा दिनिश्म छ इहेश थाटक ।

ইতিপুর্কে বন্ধিদেশকেও উদর গর্হা রের অন্তর্গত বলিয়া বর্ণনা করা হই-রাছে, উদর বেষ্ট্রনী সম্বন্ধে ধরিলে ইহাকে উক্ত গহ্বরের অন্তর্গত বলাগার না। কিন্তু অস্থ্যাদি সম্বন্ধে উদ্ধ ও বন্ধি এক গহ্ব-রের অন্তর্গত বলা ঘাইজে পারে।

### कन्दनिश्चरम्।

জীবজোতলি হেতুর্যন্ যদৃতে তস) স৲ছতিঃ। ইজিয়ে জননাখ্য তদুপদ্দেশতি কথ্যতে । উৎপত্তো জীবসংখ্যা ছারং নান্যকি বিদ্যুতে। বলাদ্ বিহ্যানে তৎসকে জীবোৎপত্তিঃ খিনী-ভবেৎ ।

যক্ত্ৰ বিভিন্ন নিৰ্মাণ মধো ধানা বিভক্তি। ধাাত্বা ধাাত্বেৰ এছ'ল বিভিন্ত নিপুণেন ভং । আহে। যন্ত্ৰৰ) পক্তিং ভাং কো বংৰং পক্তিমান্ ভূবি।

नमार्ग सामांकि नियाती है एटखरेकेर हि छन्छन्म यमा नंका। अभवाभिन् भारेनदिव वनीमुचीः। जुकादि अवत्या निका वर्तना मुख मानमाः । विद्यामानम महोन देशमादः क्रूवी क्रमा। मा किमा क्या माखिका रेमजी तह विवास छ। उविक्रियक्षर स्रोता निकार जुक्कि सर मूर्यम् । विक्रिता देव बर्भा कता मांखानमा कृति ॥ वनानपाक युन्ता कृषाः श्रामाव रामिनः। কুটারুছ: ছবিদ্রাশ্চ সর্বে তেন বিভা ধুবৰ ঃ भूमारता निविवा ब्लाट्क खोदनकाः कियुवर्वा । अव वृत्री स वर्षाः कावप्रदेश मूर्व ने छर । नारको छविष्यप्र (व्यु विद्यादव ह मब्द्र)नि । म (इसान वक्कन) कः मा। म म विक्रवीचनः क्षीरक्षराव ब्रक्शर्व । याचि न श्वानमाप छ। विश्वास्त्र सन् वातः विविश्वा विश्वकृष्येवा । व्यक्तियंतीवमीयु (हम मा) एमा रकीयमी। हेस्वामन्य मिनद्रा वद्यस वहवी क्रत्र ।

> बात्तः हा कार्यः निर्वतः अक्षेत्रः । क्षेत्री निकाका समुब्रुक कीर्याः ।

#### 

त्य हे लाव की बटल का विवद विकृ এवर यन्त्राजित्तरक काहाद मरशंत्र रव, कादारक कनरम खित्र वर्ष । समान खिरवर खानव नाम छे १ छ । सन्दर्शस्त्र वा छि द्रारक कोटरार्शिख बाना डेगीय नारे। জনবোশ্রম সমু, প্রতিজ্ঞাপুর্মক পরিকাাগ क्रिल कौरवार्शित लिक्स इडेवा মাস। এই সম্ভের নির্দ্মণ আতি বিভিন্ন, ইহা কি অপুর্স কৌণলেই 'নর্স্মিক হই यार्छ, इटेप्त ज्ञन्न लाहान्न मसुपारम्य श्व न्मात मश्क ७ कियादिमान कर्द्र इ मा क खनिक्तिनोत्र । हेश्रहे में किए उक्ता ७ व के देशन व्यवन ४९ मुद्र मान्स बहेया धान वश्व वानद्यत ना'ग नित्रष्ठव नृका कवि Cक्टा हेगावह अखादन खानम खाराह. क (र्चाट्यार, प्रश्ना, अप्रमा, भाषि प्राचिना, षाञ्चिका छ रेमची व्यदम मध्दल निग्र विहास कविटाट । की वनन नित्र ह विटड-তন হইরা এড দি জ্রির সম্ভূত লগীর সুখ ममुन या चाश्रुकी च्रुवनरञ्जा करते, পৃথিবীতে ভাষার উপমা নাই। বনবাদী ঋণিরা, প্রাসাদ বাদী ভূথাপথৰ এবং কুটীর বাদী দঙিত্র সমূহ, সকলেই এডছি-ষ্বে পরাজিত। যাবভীর জন্তুদিগের যৌবনম্ব পৃংকাতি ও যৌবনম্ব স্ত্রী জাতি नित्रस्य এই चूर्यंत्र म्लृ हा करत्। हेलियहे महाठी भाषित ७ महानृ विद्या-(रव (रट्डूहा। छोरश्वार बचा चान्त्रि मः छाणनार्थ विश्वकर्त्ता अहे हेसिस्त्र व এবস্থ ত অম্বৃত প'ক্তে প্রদান করিয়াছেন। यमि हेरात जेवन थारन अ वानका मक्तित्र स्वरंग इत्र, छ। हा हहेल बहे

व्यानम् शंभ धवशी व्यवकात्मरे भक्त कृषि भक्त परेवा गांव।

হে মৃঢ় জীবগণ! জনলেজির স্থানীর
নিবিল ভাব আলোচনা করিরা, চিরলক্ষিত সন্দেহ নিরাকৃত ও বোধনেত্র
উন্নীলিত করিরা অচিন্ডা শক্তি সম্পন্ন
জগদাশরের গড়া ও শক্তি নিরীকণ কর।
আধারাকার ভেবেন পৌ\ন্ধ কৈন ইভি বিধা।
বিশিষ্যত উপদ্যুল চেডনাবানিব নিডঃ।
পিখো৷ বেড়ো ব্যক্তিকে নেছনং পৌকনেকনী।
পুরুবেন্দ্রিয় নাধান ধ্বন্দে প্রেট্ চ নাধন্য।
ক্রাঞ্জিয়ন। তুলাবানি বোনু।সংগ্রুতপ্রাংর।
তর্গ বচ্নান্টোর সম্প্রত্মে দিব্রাণ ক্রের।
তর্গ বচ্নান্টোর সম্প্রত্মে দিব্রাণ ক্রের।

আধার এবং আকার ভেদে উপস্থ विदित, भूक्रयाशादब (भी अ अ जो ज्यादादब বৈশ্ব উপ্ত আৰ্থিছত। উপস্থ স্থ (५ छन। विभिष्टित न।। य श्राह्म समान सम्र । भिर्म, ८५०, दाक, लिक, ८००क, ८००क, (भय , ( म् ), मृज, डेशफ ७ माध्य अह र्शित भूरकन्ति स्तित नाम। (गःनि, प्रे+, फ ७१ ७ काश्व त वहे छान क्को जनदन[स्पर्धत नाम। डेशक करमत काया मानन महात्र मुक्ताम ( भूरकालिएक ) এবং ध्विरक,म প্রভৃতিও ( श्रीकाकिटंड) वह छेखा विश् कनदन सिम्न श्रम वाहा। 737 क्रमण इ इडेट्र'ड

> অধ পু: জননে স্তিয়াণি। মেচু ভূ'ম।

ববোপান্দ স্থাযোগাহদিনী বিভিন্নে উক্ত।
ঐপন্তিকে অধন্তন্তাৎ পশ্চাহ য'ন্তি এলাগনা। র দুচ। এমিনিকা পাঙ্গ সংযোগ যন্তিকভ্যান। বুত্রভাক্তাহওরত্বক দা কৈট্র) কৃষিক্ষরাকে চ

# ब्याङ्क्ष ।

ষে স্থানে উপস্থিক অস্থিয়র উপাস্থি ষোলে পরস্পর মিলিত ইইরাছে, তাহার নিয়ে ও পশ্চাদ্ভাগে ঋজু নিমুণ্টের উপরি অবস্থিত দৃঢ়ও পাতৃবর্ণ গ্রন্থিবং পদার্থকৈ মেট্ ভূমি করে। ইহা বস্তি-গ্রাবাকে ও অভাস্তর্ম মূর স্রোভঃকে বেষ্টন করিরা থাকে।

# कना व्रका इव्या

त्यपुक्षि त्रमीरक रह कनावशिवयक्ता । बाह्यमा बाननीरन रहा श्रिटक रक कनाविरक ॥

### कलात्रिका घ्रम।

মেচু ভূমির নিকটে মটর কলারের
নাার আকৃতি বিশিপ্ত তু^টটী গুটিকাবৎ
পদার্থ আছে। ইহারা আয়ত হালের
সহিতে ক্রেমশ: হাসপ্রাপ্ত হইতে থাকে।
ইহা দিগকে কলাহিকা বলে।

# (महुः ।

মেটুড়'ৰ সমারত্য দ যা গুলারস'ধন:।
উপদ্ধন্দ্রেয়া সকাল চে মেটুং সম'তবর্ততে ।
বুলাল্যমুপন্ধান্দ্রেয়া কোবিকেন চ চর্মানা।
সংসকো বেফিডল্ডা'ল পরং মুর্ছনি কেমনমু ।
আরুড়ো ব চ সংসক্তর্মান্নমায় চর্মান।
পদ্ধান্দ্রেটা 'লক্ষা, মৃত্য বা কং প্রকাশতে ।
কলা কুসুনাফারং লিক্ষ্মতান চ সোচাতে ।
করা কালা ক্রিল্যান্দ্রিলিক্সান চ সোচাতে ।
করা বাং হসঃ পৃতিনিংস্তবেহ কার্হমানান্।
কত্যক্রমানাক গামং লিক্ষ্য স্বতিত ।
ক্রেড়া ব্রহ্মবিল চ লিক্ষ্যনাল্ বর্তত ।
ব্রহ্মবিল ক্রেড্রা লিক্ষ্যনাল্ বর্তত ।
ব্রহ্মবিল স্থান্য স্থান্দ্রিলিশ ক্রহর্ত্বের ।
কর্মবিল ব্রহ্মবিল স্থান্য স্থান্দ্রিলণ ক্রহর্ত্বের ।
কর্মবিল ক্রেড্রা পুশ্বন স্থান্দ্রিলিশ ক্রহর্ত্বের ।
কর্মবিল ক্রেড্রা পুশ্বন স্থান্দ্রিলিশ ক্রহর্ত্বের ।
কর্মবিল ক্রেড্রা পুশ্বন স্থান্দ্রিলণ ক্রহর্ত্বের ।

### त्या ।

डेन छ। चित्रदश्य ममीरन स्मह ज्या रहेट्ड भए डेकाड बहेब्राट्ड। हेटाहे मक्य माधन देखिया। देश यून छात रहेटक डेनचाचित्रतत ४ व्यक्ताद्वत আবরক চর্ম দ্বার। সংস্কু 😵 বেষ্টিস্কু एहेता थाटक । मुश्रूष के हुन् मामा (करन चातु ठ शास्त्र, शरगस्त्र शास्त्र म् १८वष्टक हर्ष श्राक्षां विदय আনিশে লিম্মু প্রকাশিত হইয়া পড়ে। লিক্ষমুত্তের আকার মোচার নাাষ এবং डेश भट्डबन्दर। निषमु एव श्रम्हाटक লিঞ্সরিৎ বা লিক্সগ্রাবা। **बहे च**ात নিরস্তর একপ্রকার দুর্গন্ধ বিশিষ্ট ক্ষারণ্মী तम निःक्ष्ण रहेश। थाटक। निम्नश्रीयाः পশ্চাতে চর্ম্ম সংসক্ত অংশ লিম্বগাত্ত। তদনত্তর লিক্ষ্মল। মূত্রলোভঃ বন্ধি জীবা হটতে লিক্সের অভ্যন্তর দিয়া আশিয়া लिएकत मूर्छ भ्ष्य दहेत्राट्छ। र्थावचार लिक भिषिल ७ छटछत्र नात्र श्टर्य । मृद्य বত্লাকার পাকে। দৃঢ় ও তিভুকাকৃতি হয়।

# व्य उद्दर्ग

রেড। সুত্রমালভং কোষপর্কেছব তিওছে।
রেড। ফাল্ডর্গল এছ্যাডং চাত বর্তু লৃষ্ ।
ক্রেন্সে ছরলেউন্সাং পশ্চ'পুন্তমজ্বে।
ভিত্তেংশ্র কৃশ্যান।প্তুমেং কোষমায়াভি ভদ্রমুষ্ ।
বিক্রমাংস্কুলভরং বাংনাত ৷ নিম্নালি চা
বাবং রৈডলৈকং সূত্র বভা লাইভিরং পরাং ।
ক্রেন্সে রৈজনেক সূত্র বভাছত পুর্বলং ভরা ।
ভর্মোয়াভ্যভারে রক্তা স্ক্ডেড্ন প্রাপ্তিভা ।
ভরেন বাংমশ্রম্মব্রো লোম্ভিং কভিভিশ্যন ।

স্তর' ৯৫ জরবান্তরে কয়া ভিদ্ তে ছিবা। তদ্যভয়েমধাতে পুংসোহত মুখলং নমু । উদ্ধান্তে লা সূত্র পশ্চাদ্ভাগ ব্রাভয়ো। নিয়তং স্বয়ুপ্রাপ্তে ব্যাহায়াণ্ড নির্মিতে ।

#### का अपूर्व

चा रह षा १ वर्ष (त्रष्ठः शृत होत्रा ৰাকিয়া কোষগৰ্ভে অবস্থিতি कद्र । হহারা এতের নাার বর্ত লাকার। मिटनंत्र द्वाता वीदी कात्रिक दहेता बाटक। গভাবস্থার ইহারা উদর গহবরে বেষ্ট্রনীর পশ্চাতে অবস্থিত থাকে, ভূমিষ্ট इहेवाद शृदर्श काट्य खन्छद्र कटद्र। বামদিকের অওটী অধার অত অংশকা किकिर दृहर এवः वाम द्रिकः पृद्धिम रिवर्ष। विका ८२७ कि कि ९ व्यक्ति निस्म बुलित। शाटक। देशारमत व्यापत्रक रकाय উপর্যাপুরি সংস্থিত তুট্টী স্তর দারা निर्मिक, এই कांच मत्या दिएः एक च्टाइ नियारण ७ व्य उ वत्र व्यवस्थिति करत । धी ন্তর হবের মধ্যে আভান্তরিক ন্তর সংকা-हन अनम्बुक भ तक्कवर्ग, वाण्य छत हर्ष्ममञ्ज, এই স্তবে কছকওলি লোম থাকে, অন্ত:-ন্তর এক খানি তিরক্ষরণী অর্থাৎ পদ্মার नात शमार्थ दात्रा कुई छाटा विख् क इहेत्र। कुहेरी नर्स्ड लिंबिक द्र । এই गर्ड द्र রেভঃসূত্র দ্বর উদর खाउम्रत बाटक। হইছে অভয়রের পশ্চাদ্ভাগ প্রাস্ विक छ थाटक । हेरावा धमनी भ नाबू প্রভৃতি দ্বারা বিশ্বিষ্ঠ।

# वीक्दकादवो ।

विश्वम् स्रशास्त्रको वीस्राद्धः स्वाभ्यः (७) । दोस्रः थात्रवरको वर्षस्यस्य दृषं कात्रवम् ॥ ,क्षरोस्रः स्टब्सः क्षासः स्वाः वस्रवर्षस्य । दिख्यां विशिष्ठाक्षेत्र दिख्य खळत् खण्डा ।
साध्या खळ्यां दिव्या क्ष्म्यां थ्या देव खळः ।
स्वे विश्वयां क्ष्म्यां याद्यां स्वाद्य ।
साधाव्या विश्वयां याद्यां याद्य ।
साधाव्या विश्वयां याद्य ।
साधाव्या विश्वयां याद्य ।
साधाव्या विश्वयां याद्य ।
साधाव्या विश्वयां ।
साधाव्या व्याप्तां ।

# वीक्रकाषच्या ।

विख्यूम 😉 अर्जु निमाद्यत वीजरकायद्वत्र व्यवश्विष्ठ । देदात्रा नर्स्छाद-পতির হেতৃভূত বাজ ধারণ वे वीक चन, छल ७ विटमंब शक्तर्रक **अक अकीद कदन शमार्थ, हेश वह ८५कम** व्यन् वात्रा वाश्य । वीक, दबका थ सक প্রভৃতি নামে আখাত হয়। এ बीका विकारन एक श्रहादिनी नाड़ी बाबा व्या जामिता एवा दहेरक खेलच्छि सम् दाता निर्माण व्हेत्रा शाटक। अहे स्टाइ আহারজাত প্রধান সার পদার্থ, ইয়াই বল রক্ষা ও জীবন ধারণের হেডুজুত, ইহার অভিকরে মৃত্যু নিশ্চিত। আকএয জীবনকাঙ্কী ব্যক্তি নিতা সর্ব্ধ প্রয়য়ে हेटात्र मक्षत्र १८ १ चार्थ ग्रुवान इहेटवन । दीई। णशिक পরিমাণে শঞ্চিত एইলে পুরুষের व्यकाञ्च द्रम्योङ्का डेलिक्क द्रम् । अहे मभव गयानाञ्च विहास श्रक्षक खित्रक्रमा নারীর সহিত রভিকর্মে প্রয়ুত্ত হওয়া উচিত। वावात्र शतिकाारम स्वष्ट, स्वरमा-বুদ্ধি ও মেহের শিথিলত। উপস্থিত হইয়া অভএৰ ভাষ প্ৰবৃত্তিৰ অভি निश्र विष्यानक नरह ।



व्र हिज्ञ ।

धारे क मः हिटात क विश्व वा मृतामंत्र ।

ধ ঔপশ্চিক ভি দক্ষি।

छ, छ सम् ज्मा

फ कनाशिका।

क जाउटकाम ।

.च वैक्षदकाव, छक्तानंत्रः

क, हे इहेटक ल अर्घा छ स्मह ।

मु निश्मु ।

य निष्मिति र वा निष्ठाीवा।

ल जारमक जातान्य।

প লিছ গাত্ত।

म विश्वित खादमादम्म ।

व मृत ভোভ: ।

**ह** दिखानाड़ी, खक्कवाहिनी

थ मृजनाष्ट्री दक्षा

ছ তুক।

ন শলাকা বাবহারের অবছা, লিক্ষ এই রূপে আরম্ভ ও ঝজু ক'রয়া উহার রন্ধ মধ্যে শলাকা প্রবিষ্ট করিকে হয়।

# चार जीवनत्न स्वाति।

कथर्य (क्ट्रिग'रके) ह कथ्य कहत्वः छवा । कथ्य किक्क स्थानि मह कथा रख्य ह कशाग्रिरक ह स्थाञ्जू (क्येंच वाहिरम्) विचरकारयो अ'क्यरको । स्टरम् ( टक्टोस्क्रियरवा साडीवा २ क्येंच्या गुरैवः ह

# क्वीत्नारकत्र कनदनस्मित्र ।

ভগমণি, ভগে। ঠহর, ভগণক্ষর, ভগণিক, যোনি, কলারিকাহর, জরার, ডিম্ববাহিনীছয়, ডিম্বকোষ্ট্র, ডিম্ব সকল ও জনহর এই গুলি স্ত্রীদিগের জননে-জ্রিয়। ইহাদের প্রভ্যেকের বিবরণ জ্রমশঃ লিখিত হইভেছে।

# ज्ञामिशः।

#### जनभि ।

ন্ত্রপদ্ধিকান্থিছরের সম্পুথে ত্বক্ ও বদান্থানা নির্মিত, উচ্চ, গোলাকার স্কোমল স্থানকে জগমণি করে। স্ত্রী গণ বাল্যকাল স্থিতিক্ম করিরা গৌংন দীমার পদার্পন করিলে ইহর ( ভগ-মণির') গাত্তের চতুর্দিকে লোম উদ্ভূত হইরাথাতে।

# ख्लोटको ।

ভগবিষয়স্থবেটো ভগোঠে পীৰটো মৰে:।
মূলাবারারনীবানং নিজে যাবজুভন্তবন্ত বুবৈ:।
পুংসাং কোষভূগবি ক্তে ব্রুবি:।
বহিশ্চক্ষর্থ চাতঃ কলাবদ্ যৌবনে পুন:।
লোঘভিত্রিয়তে স্বায়ুধরারাছ্যাদি সংযুত্ধ।

# खरगोष्ठेषत्र ।

ভগবিষর সংকেইক সুল অম্মরকে ভগেতি কছে।, ইছারা ভগমণি হইকে আরম্ভ কবিরা মুলাধাবের ( গুহা ও উপচ্ছের মধাবন্তী ছালকে মূলাধার করে) অগ্রসীমা পর্যাস্ত বিস্তুত। ভগোত্তির পুংজাভিত্ত অপুক্রেয় স্বরূপ। ইহাবের বহির্দেশ চন্দ্র দারা এবং আভ্যন্তর প্রবেশ কশাদ্বার। নির্দ্রিক। ইহারা খৌন্দে লোম সমূহ ছারা আরুজ হটর। খালে। টহাদের আভাজরে বিশুর স্থারু, ধমনী ও প্রস্থিতাতে।

#### खन गटको ।

भन्तामञ्ज्ञानं देवा क्रक्रे कनायका मृहकाबहनी । भिन्न क्रमुख्य भक्को 'कक्षि'ध्रम्' नवायको ॥

#### खन्याम् हता।

ভাগে। উদ্দেশ্য আভাস্তর দিকে উর্জ্ন ভাগে কলা নির্দ্ধিত স্কোমল অঙ্গন্ধনক ভগপক্ষ বলে। ইহার। ভগলিক্ষ হইতে আরম্ভ করিস। উভব পাথে কিঞ্ছিৎ দূর নিয় প্রাস্ত বিস্তুত থাকে।

# खनिष्म् ।

करनाकरण कर्तनाकः श्राट्सन द्वाम् कामसः। ८५७ना भीर्यद्वस्य कष्ट्राक्षिक मिठि खाल्यः। कर्मक्रमा याना गुरुतार सम्बन्धः सक्ष्रकृत्वस्यः।

#### G11'17

ভগোষ্ঠ মধ্যের উর্দ্ধ সন্ধির প্রায় ছুই অঞ্পলি নিয়ে দ্বীঘাকৃতি চৈতনা বিশিষ্ট অঞ্প বিশেষকে ভগলিক্ষ করে। ইয়া আকার প্রকারে পুংক্ষাতির মেত্রের ন্যায়।

### नामिठसः।

व्यवस्य (यानितस्य न) स्वृत्तस्यार्कं नवित्रः। कोशास्त्र सामग्रेगं नावित्रस्या नात्रीपूर्णास्य इ

# नाबिक्स

বোনিরজুর নিরভাগে অর্থ চস্তা-কৃতি, পাতলা পর্যার ন্যায় প্রার্থিক সামি চন্দ্র করে। ইহা কুমাীকালেই প্রায় দেখিতে পাওগা বার।

কলায়িক। হয়মূ। খোনরজু মুভয়ত। জীনা৲ পুৰৎকলায়িকে।• কলায়িকাছয়।

পুরুষ্জাভিতে যে রূপ কলারিকাদর অব্থিত থাকে স্ত্রীজাভিতে গোনিরজের উত্তরাদকে দেই রূপ উহার। অব্যিতি করে।

### रशनिश

(यामिः क्लायम्नो माको यक्तिगर्क रावित्रका। स्रम्मा नुरुषः भण्डायाज्ञायासमा (कायला ॥ स्राम्बिमी स्रमोकीय स्रमासूर मयूनस्थि।। स्रमास्य तरुष्ठमा यूर्यर (यास्महत्वस्यस्य ॥

# যোৰি।

যোন একটা কলা নিশ্মিত নাড়া বিশেষ। বস্তিগহবরে অকু নিমাজের সমাধে ও মুরাধারের পশ্চাতে অবস্থিত এবং ভগোঠ হইকে জনায় পর্যান্ত বিস্তৃত ইহা অতীব কোমলা ও আবর্তমনী। মুর রক্ষের্ণনেয়ে, হানির মুধ অবস্থিত।

# क्षताबुः ।

छए युवानवादारका सवावुर्वस्थिनिकः । सवावुर्गार्थं मारको एवं किएमारको असीर्वेरक । किएरकायदवाक्कियः मदस्या वर्धमावन् । सवाबुरकायः मात्रोनाः सासस्याः स्थायकः ।

# क्रवाश् ।

বস্তু বিষায় ও সুরাশরের বব্যে জরায়ু আংছিত। এই স্থানেই ক্রণ

নঞ্জ ও বৃদ্ধি প্রাপ্ত হইরা ধবা নমরে ভূমিষ্ঠ হয়। জরায়ুর পার্থে তুইটা ডিম্বনাড়ী অবস্থিত বাকিয়। ডিম্ব কোষ্ট্রের হেড্ভূড ডিম্ব বহন করিব। আনে।

### ऋभो ।

सत्नो (स) म्रचारा माजार स्थितं क पुरूष स्वी।
ठाकृत्व कु स्थित्र भीत्म स्वर्धकाकित्यावत्नो ह
असं काग्रस्कीयाम बानव वकीवृत्तार स्वतः।
सारुक्षक कृष्णमाना वर्कतृत्वो मृत्कावालो ह
सारक वर्षस्को सर्क माजाकालि भग्नियत्नो।
स्थारम अमृकाम तृक्षायाः स्थारक त्यो ह
स्मत्त्राकृष्णा (स्कृता त्या क्ष्मिया वस्तः।
हिम्स सम्बद्ध माज्य स्थार स्थारक विश्व स्वतः।

# खनवर् ।

र्यानिक्रतात्र अञ्कित नात छन्छ জননোক্রে বলিয়া অভিহিত হইয়া পাকে ইহার। সংখ্যার তুইটী। স্ত্রী, পুরুষ উভর জাতিতেই স্তন আছে, কিন্তু পুরুষ জাতিতে ইহারা চিরকাল ক্লাবস্থাতেই ন্ত্ৰীজাতিতে ষৌৰনাৰস্থাতে वाटक ! ইহার৷ প্রীনোমুড ও অভি মনোহর দর্শন হইয়া থাকে। উপরে ভৃতীয় भर्क हरेएड निम्न वर्ष **भर्क** नि श्रीष এवः **উরো**হण **इहेट क**क ( काल ) প্রান্ত বিজ্ঞ থাকে। ইহারা অন্ধর্ভাকার 🔏 অভি ভ্রেষণ। গর্ভাবস্থার অপেক্ষাকৃত বৃহৎ ও চুত্ত विनिष्ठे रहा। अन्छ। जी द छन्दह ब्निहा भएक, युद्धारणात्र हेरात्रा <del>७का</del>हेश सात्र । पश्चित खन प्यानका वायकी किंकू वृहर । -सनाअष वृक्षस् वाश्नदक हुरूक वा

# जीवनदमक्षित्राणि।

তানর্ভ বলে। ইহা বছ চুগ্ধনাড়ীর হারা বাতি।

### मुनाशातः ।

भाजूनचाकतत्त्वाहरमो वृत्तावात क्षकीर्विकः । वर्रवीहम्मानितित्वरुगुवा वन्मानामा वर्षा करवर

# मृणाशाम ।

গুহায়ার ও উপত্তের মধ্যস্থিত আদকে মূলাধার কছে। রিরংস্ ব্যক্তি-দিনোরু অন্যান। ইন্সেরাজের ন্যার ইছা-রও হর্ব অর্থাৎ উত্তেজন ছইরা থাকে।



# > foa 1

এই ১ मः **চ**রে ভ ভর্মণি।

- न खरशोहें।
- ধ ভগণক।
- ए छश्निक।
- छ दशनि श जीखित्र विवत्र ।
- नान अवाबु वा नर्कनवा।

- य फिचटकाम।
- हे मृत्य माफी।
- छ विश्व वा मृद्धानत ।
- ल बस् निम्राह्म।
- र्ठ खेलांच्यांचि मधि।
- य धन्द्रमञ्जू

ক কটিছ ক্রিক্স কলেক কা। চ,চ.চ ত্রিকাভিব উর্জাংশ। ব ত্রিকাভিব নিয়ংশ। ধ,ধ কলাবত নিয়ার

# ठकूर्मः गार्थायः।

লাথ ত্বেক্।

ত্বচায়ৰ খিলং কারং সংসুক্তো রিখকর্মন।
নাথোপ লবসংঘাত ল'কত সাধ্য তিওঁতি ॥
শুর্ম্বরতীয়া তুক তদন হাক্তেম কলাতে।
শুর্মিন পোচ কেংগুর্গু চুমিং পোনে শুর্মিন সামা ॥
শৈশ্যুগরি বিশ্বীন সরমপ্তাক সামানতে।
শান্ধানি সামানতা কৈ ৬৮ ছিতি চ মনাতে॥
ভোগনি সালি সামানতা বেছলা চ কিনিমান।
বৈদ্যিক সোলাবা। বক্ষা ত্বচা সম্পাদ্যতে পুর্ম্ ॥

জাদাধার 'ইক্ছারা সমূদ্য দেহ
আবৃত্ত ক'বরা সাষ্ট কারিয়াছেন, তেওঁ না
দেহ বাহা উপদ্য সমূহ হইতে রক্ষা
পাইবা থাকে। তৃইটী স্তর উপায়াপরি
সংস্থিত হইয়া 'কুক' নামে আ'ভহিত
হয়। জন্মধ্যে উপারিস্ত স্তরের, নাম শ্রা
ও অভাস্তর্যন্তরের নাম অপ্তস্ত্।
'কুক্ ম্পার্শের আধার। কোন কোন
পাতিতের মতে উপায়াপরি বিস্তর্গানতী
স্তরের সংখাতে ইক্ নিম্ভি। তুক্ হারা
জ্পবায় প্রভ্তির শোহন, জেল নিগ্ম ও
দৈহিক উন্থার রক্ষা হইয়া থাকে।

# शकतरमार्थाय ।

স্মাণ গাড়ে ২৭ বি কৃম: । ক্তাদান্তিৰ প্ৰবুতি বিবংশম্ । বদা বাল্যদন্তিক্ৰম্য ভাক্লন্য মাঙি বোৰিভঃ । কাৰ্যক্ত ম'নবাে ভাষত্ত্ব। ভাসাং বিবর্ততে ॥ শুনৌ লীনোমতৌ স্যাভাৎ যোমিক পরিষ্ঠ্য ।
সনুস্তবন্ধ লোমানি বভিদেশে সমস্তবং ।
সনুস্তবন্ধ লোমানি বভিদেশে সমস্তবং ।
অবারু কে যাই ভয়ুস্ত্ শোণিতভ প্রবর্ততে।
তবার্তবং রুমানের ভ প্রস্তানারা চ গায়তে ।
যাস মানি অবে ডকং লাশালা চ গায়তে ।
সাক্ষার্য নিভং বাশি ভ্রদেশে বিনিম্নিশের ।
ভিন্তবংলা বা প্রাপানুস্থাভি ভ্রিলা।
অভেন্তবংলা বা প্রাপানুস্থাভি ভ্রিলা।
অভেন্তবংলা রুমানী যান ঘানানার দ্বাবস্দ্

অক্রানামলোকানা থ প্রাকৃত্য প্রবাহিত তদ্ বর্মন দ্বাপানুদ্ধি আজি প্রাকৃতি হন্দুন্ধ । আর্তব্যাপা দিবস দৃত্য ঘোডল রাক্রন। গাড় এন নাগা, দ্বাস্থা করা করা নাগা, দ্বাস্থা করা করা নাগা, দ্বাস্থা করা করা নাগা, দ্বাস্থা নাগা, দ্বাস্থা নাগা, দ্বাস্থা নাগা, নাগা, দ্বাস্থা নাগা, নাগা,

गर्ड। २ लिख क्याः।

হা ভার প্রস্তুর

রমণীর বা'শকাবস্থা অতিক্রম করিয়া ন্যাবনে পদার্থনি করিলে উহিলাদেশের লাথীপ্লক ও মান'শক ভাবের অনেক পরিছে সংঘটিত ইইখা থাকে। এই সম্যাপ্তন্দ্র পানে লাক্ত মোনি বিকৃত্ব ও বিভিন্নেল সমন্তাহ লোম সমূহ সমূভূত হয়। জাগু কোষ হইকে পাতলা ও স্বজ্ব কলে নাগজ হয়, এ বক্তকে আতিব, রজাও পূজা বলে। মাসে মানে এক এক বাব করিয়া শালাক্ত হালাধাকে। এট

क्रण् बर्दाव ज्यार्डन (माय विश्व । अ'क মাশাস্তর ভিন, চারি বা পাঁচ দিবস ছায়ী ब्रक्टायाद एवं, हेराव जानावा रहेला के दकः भएम्। ए विभिन्न। कः नित्न। द्रोत्रामाक विकाल की मिरनद आम हामन दर्गत বয়দের পর হটকে রছ. প্রবৃত্তির আরম্ভ स लकाम वर्गादव शव (लाल इडें) क (द्वरा प्राप्तः का खंत खाद्भवत खाल्य कहेटक (माफ्रम मिनम ९ माफ्र मग्र अ: काल रिलिश की र्जिक हम अनर ही कालहे गई গ্রহণ গোগা। কিন্তু স্থা দিগের প্রকৃতি **उद्यास अक्टू कर्णात, सुरुद्दार अर्ड शहर** ্যোগা ক'লেঃও জানাথা হ'ইরা থাকে। দিবভোগ আৰীক ক্টকো গে কণ পল্ল मुम्ब इटेगा शतक, त्महे तम अह्कल অনৌত ভটকে নারী দেলের করায়ু সংবুত अकृतात्व दम्पीदा श्रक्ष **एटे ह**। मृश्यः मद्रभुष्तु, किलाधियों बहेश बादकन । अ भग्नवह लाकृत विकास कं निरंत এवर ঐ काटलत ब्रह्मित्राः क्षण्याविनीः ভিন্ন जान। मगदम्ब भुकाव गढ़रकरङ रे क প্ৰের নায়ে নিরর্থক। উপস্কু কংখ বিশান্ত যোলি, হুছান্তি ও হুছ গোই नार्दे प्रिट्यः डेशपुक श्रन मल्लग्न श्रुक्कह्रव শহিত উপযুক্ত রভিজেয়। व्यमितिमी इडेशा शाटक । 🎠

जनकर क्रिकेट

क्षेत्र क्षया गोव बन् व व विच्छ अन्किः । क्षेत्राज्यमे हे अञ्चन छवट्या देन वटका व रक्ष्य ॥ ब्रद्यानिकार गुणियो । न्यु व विङ्यु स्टार्थानय कुनाम् अक्षाना च । धिवोना । इन्यो । इटक्ष्य म् इक्ष्या ॥ ब्राह्मकार स्टार वृत्य की । ट्याक विक्की कुछ ख्वीन) (यशाकांख १ अम्बार स इत्युष्ट अकावी ह (यशाका भूरका मृद्ध असूद्रक्ष काटल प्रमान विश्वमा व्यवस्था । सटलो यथा अ त्वि वीक्षम् सः

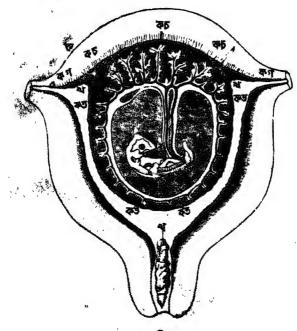
भिविक वोकार कनवम् सुवर मार्थः नमाक्कृत्वे गर्भा (क्याड (काग्रीमाटक स्वर्भाविदक) केश्वर कारल सकर दोसबसूतः भानितः, बरबर इ क्रमा - भाष विवर्धका (ब्रह्मा ध्यांत्मी मर्यार्गक्षम् । 🖖 कारन मोप्रामनगरम भरका ना मा। कारमध्य सम् । । । । भू रतोया १ का लंड १ नाया। यह ९ विषक्ति **३९६मा** ४ उट्डा किश मध्य य कि क्रम सम्म **ध्रम अदस**्के रकीकृत गराग ८७. कहाशुर विषद्धक्रमो <u>।</u> हिंदी व्यानद्रवा १२८७ छ व म् ऋरकरकः व्यवस्थ्य ॥ कारमा रिन्यू नरण कोता ब्लंड श्रंडालश्वर क्रिक्केंद्री বদ্যাদিনিভে মালাজভুরস্কাতা **কবেছ** 🕍 जिलकार लड्डा मा फ प्रश्न क्षिप्रकाष्ट्रकर । मानवराषाचा चन इत्रा बुजिडाकर यनावनम् ॥ मामक्ष क गर्जमा भरतर, मस्त्री क मारिक्ष क्ष कडा यना मनगढा शामिका महस्य । भ्यां कर्ति विषयः अतः वर्षः । १ दक्ष्मेनस्वतः । मल्लास म भगमा महत्तर आयुष्टि सुनम् । माम भी म करवस शर है सुसू कियानविक्ति। कटन मार्क के हरदना अन में मानिस कायटक ह कुक्त दू वहा क्रमत म'मा क्ष्म विमाधकान्। फ्रमा ७७: सहस्रम् चरार्च मनीरम् अञ्चरस्र समार ॥ 研1學到1

রা দিনের উদরে যে রুপে জানৈরজনা।
নির্ভ গাতার পরিবৃদ্ধি ও কালে ভাষ্ট্র প্রকার বিশ্ব কালে ভাষ্ট্র প্রকার কানাবেশসুথে ক্রিনী নিভ্য বা কালে কালেন্স, স্পাধিত ঘোনি, বা কালেন্স, স্পাধিত ঘোনি, বা কালেন্স, স্পাধিত ঘোনি, বা কালেন্স, স্পাধিত ঘোনি, বা কালেন্স, স্পাধিত ঘানি, বা কালেন্স, স্পাধিত ঘানি, বা কালেন্স, স্পাধিত ঘানি, বা কালেন্স, কালেন্স, কালেন্স, বা কালেন

ক্ষাণ করিলৈ বিশ্বিক্ত বীর্গা সফল হর।
লখ্যক প্রেক্তিক করি তালেকি উপায়ুক্ত
কর্প ক্ষান্তর ক্ষান্তর নালেরি
বীঞ্জীন করির। পালন করিলে যেমন
কাছা ঘটতে অন্ধুর উৎপন্ন হর; সেই
রূপ অন্দোষ নোনিকে গোগাবিদ্যরে
আনোষ শুক্তা আহিক ঘটলে উহ। গর্জ
রূপে পরিশ্ব ঘটরা থাকে।

চিক্রির। দ্বারা পুরুষের বীর্যা
শালিত হটরা অভিবেলে প্রথমকঃ নারীর
শাল্লির তালেশ করে। অনস্তর তথা
হটতে ডিয়াশরে গমন করিয়া রূপান্তর
প্রাপ্তর । অনস্তর ডিয়াও ও একটি কাবরুণী দ্বারা আবৃত হটরা নিরন্তর বুদ্ধি
গাইতে থাকে। জাব প্রথমতঃ নারীর
ক্ষরাযুতে বিশ্ব পুলা হইরা আবিছিতি

करतः। मानात्स कुरनत चाहित नाहि ও তৎপরে চতুরজাকার হয়। ত্রিপ-काटक देवा विश्वक्रिक महेदबन्न मात्र रहेता थाटक। हुई भारमत शरद मूध-मत्र त्रिक रह किंद्र हक्कः वृत्तिक बाद्य। তিন মাদে ভ্রাণের সমুদার অক প্রভাক क हे उन रव हे राव शव वर्ष भाग शर्याख क्रमाशक वृद्धि इंटेड शास्त्र खरः खरे म्बदब्दे भिन्न हेमब मध्या व्यक्तिक इब हर मारमद शव किएमा शक् वह मक्षम मारम हक्कुः रक्षः हि । जाह्रेम मारम क्षा विश्वाक करण व्यविष्ठि लाश दहा। नवम मारम मक्षक व्यवामितक ७ हत्रवद्य উর্ফে করিরা নিঃসরণে'রা ধ হর। এট क्रटल चिछ नत्र माम नत्र पिन नर्ख वाम कविशा मध्य बारम श्रकृष्ठि वर्ष जुशक्तिक दहेत्र। शादक ।



33 FEB 1